



॥ श्रीः ॥

श्रीमद्भेस्वामी तुलसीदासजीविरचित

# श्रीरामचरितमानस

[ मूल-मञ्जली साइज ]

( सचित्र )



गीताप्रेस, गोरखपुर

[ भारत-सरकारद्वारा उपलब्ध कराये गये रियायती  
मूल्यके कागजपर मुद्रित ]

सं०	१९९९	से	२०३७	तक	१२,८१,२५०
सं०	२०३८	इकतीसवाँ	संस्करण		५०,०००
सं०	२०३८	बत्तीसवाँ	संस्करण		५०,०००
सं०	२०३८	तेतीसवाँ	संस्करण		५०,०००

कुल १४,३१,२५०

चौदह लाख इकतीस हजार दो सौ पचास

मूल्य पाँच रुपये

## प्रथम संस्करणका निवेदन

गीताप्रेमसे श्रीरामचरितमानसका एक मटीक एवं सचित्र संस्करण कुछ अन्य उपयोगी सामग्रीके साथ 'कल्याण'के विशेषाङ्कके रूपमें तेरहवें वर्षके प्रारम्भमें निकल चुका है। उसमें बहुत-सी त्रुटियाँ होनेपर भी मानसप्रेमी जनताने उसका कितना आदर किया, यह सब लोगोंको विदित ही है। मानसाङ्क निकालते समय यह विचार था और उसे सम्पादकीय निवेदनमें व्यक्त भी कर दिया गया था कि इसके बाद जल्दी ही मानसका एक मूल संस्करण मोटे अक्षरोंमें अलग निकाला जाय, जिसमें पाठभेद आदि दिये जायँ तथा आवश्यक टिप्पणियाँ भी रहँ और उसके बाद उम्मीके आधारपर मूल तथा मटीक, छोटे-बड़े कई संस्करण निकाले जायँ। परंतु इच्छा रहनेपर भी कई कारणोंसे वह संस्करण जल्दी नहीं निकल सका। पहले तो यह आशा थी कि भगवान्की कृपासे सम्भवतः कहींसे गोम्बामी-जीके हाथकी लिखी हुई कोई पूरी प्रामाणिक प्रति मिल जाय; जिससे शुद्ध-से-शुद्ध पाठ मानसप्रेमियोंके पास पहुँचाया जा सके; परंतु जब यह आशा जल्दी पूरी होती नहीं देखी गयी तो मानसाङ्कके पाठको ही एक बार फिरसे देखकर तथा मानसके कतिपय मर्मज्ञोंका परामर्श लेकर उसीमें आवश्यकतानुसार यत्र-तत्र कुछ संशोधन करके छपनेको दे दिया गया।

अभी यह संस्करण छप ही नहीं पाया था कि कई मित्रोंका यह अनुरोध हुआ कि नवीन संवत्सरारम्भके पहले ही श्रीरामचरितमानसका एक गुटका बहुत शीघ्र छापकर तैयार किया जाय, जिसमें नवरात्रमें होने-वाले मानसपारायणके लिये (जिसकी सूचना कई मामसे 'कल्याण' में छपी जा रही थी) मानसप्रेमियोंको एक पाठोपयोगी छोटा एवं सस्ता संस्करण मिल जाय। इसलिये जो उतना बड़ा मानसाङ्क नहीं परीक्षकते, उनकी सुविधाके लिये वह गुटका छपा गया। जनताने उसका बहुत अधिक आदर किया। लगभग दो ही वर्षमें उसकी एक लाख तीस हजार प्रतियाँ छप गयीं।

इसी बीचमें पाठभेदवाला मूल-मोटे टाइपका संस्करण भी छपकर तैयार हो गया। परंतु उसमें मानस-व्याकरण, भूमिका और प्राचीन प्रतियोंके अनेक पाठभेद रहनेसे तथा बहुत मोटे टाइप होनेके कारण उसका

मूल्य ३॥) रखना पड़ा। इसलिये सर्वसाधारण लोगोंको उसे खरीदनेमें कठिनाई पड़ती है, इधर गुटकाके टाइप बहुत छोटे होनेसे बहुत-से लोगोंको उसे पढ़नेमें असुविधा रहती है, इसलिये अनेक सज्जनोंने यह आग्रह किया कि एक ऐसा संस्करण निकाला जाय जिसमें टाइप भी कुछ बड़े हों और दाम भी ठीक-ठीक हो। यद्यपि वर्तमान महायुद्धकी विकट परिस्थितिके कारण कागज, स्याही आदिके दाम अत्यधिक बढ़ जानेसे इस समय यह संस्करण निकालना बहुत कठिन था, किंतु फिर भी लोगोंके लगातार आग्रहके कारण किसी प्रकार यह छापकर तैयार किया गया है, जो मानस-प्रेमी पाठकोंके सम्मुख प्रस्तुत है।

यों तो हमारा सारा ही प्रयास भूलोंसे भरा है। पूज्य गोस्वामीजीले हाथकी लिखी हुई कोई पूरी ग्रामाणिक प्रति प्रयास करनेपर भी न मिल सकनेके कारण शुद्ध पाठका दावा तो हमलोग कर ही नहीं सकते; इसके अतिरिक्त अपनी समझसे पूरी सावधानी बरती जानेपर भी इसमें प्रूफ आदिकी भूलें रह गयी हों तो कोई आश्चर्य नहीं है। आशा है कृपालु पाठक हमारी कठिनाइयोंको समझकर इसके लिये हमें क्षमा करेंगे। पाठके सम्बन्धमें हमें इतना ही निवेदन करना है कि जो कुछ सामग्री हमें प्राप्त हो सकी, उसका हमलोगोंने अपनी समझसे ईमानदारीके साथ उपयोग किया है। प्रूफ आदिकी भूलें यदि कुछ रही हों तो वे अगले संस्करणोंमें सुधारी जा सकती हैं।

पाठके सम्बन्धमें हमें पूज्यपाद परमहंस श्रीभवधविहारीदासजी महाराज (नागाबाबा), पूज्य पं० श्रीविजयानन्दजी त्रिपाठी तथा पूज्य पं० श्रीजयरामदासजी 'दीन' रामायणीसे बहुमूल्य परामर्श प्राप्त हुए। इसके लिये हम उनके हृदयसे कृतज्ञ हैं। पाठके निर्णयमें, हमें 'मानसपीयूष'से तथा उसके सम्पादक महात्मा श्रीअंजनीनन्दनशरण शीतलासहायजीसे भी काफी सहायता मिली है, जिसके लिये हम उनके भी विशेष कृतज्ञ हैं।

अन्तमें हम सब लोगोंसे अपनी त्रुटियोंके लिये क्षमा माँगते हैं और भगवान्की वस्तु भगवान्को ही समर्पित करते हैं।

[ नृसिंहजयन्ती, सं० १९९९ वि० ]

—प्रकाशक

॥ श्रीहरि ॥

श्रीरामचरितमानसकी संक्षिप्त

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
पारायण-विधि	.... ७	अयोध्याकाण्ड	
नगद्वारागणके विश्रामस्थान	१०	मङ्गलाचरण	.... २०३
मासपारायणके विश्रामस्थान	१०	राम-राज्याभिषेककी तैयारी	२०४
रामशलाका-प्रश्नावली	११	श्रीसीता-राम-संवाद	२३१
बालकाण्ड		श्री ऽकमण-मुमित्रा-संवाद	२३७
मङ्गलाचरण	... १७	वन-गमन	२४०
श्रीनामवन्दना	३०	केसटका प्रेम	२५०
याज्ञवल्क्य-भरद्वाज-संवाद	४४	भरद्वाज-संवाद	.. २५३
सतीका मोह	५६	श्रीराम-वाल्मीकि-संवाद	२६१
शिव-पार्वती-संवाद	७५	चित्रकूट-निवास	२६५
नारदका अभिमान	.... ८४	दशम्य-मरण	.. २७५
मनु-अतरूपाका तप	९१	भरत-कोसल्या-संवाद	२८०
भानुप्रतापकी कथा	९६	भरतका चित्रकूटके लिये	
राम-जन्म	११६	प्रस्थान	२९०
विश्वामित्रकी यज्ञरक्षा	१२५	भरत-भरद्वाज-संवाद	२९९
पुण्यवाटिका-निरीक्षण	१३३	राम-भरत मित्रन	३१५
धनुष-भङ्ग	.. १५०	जनकजीका आगमन	.. ३३१
श्रीसीता-राम-विवाह	.. १७४	श्रीराम-भरत-संवाद	... ३४१

भरतजीकी विदाई	.... ३५१
नन्दिग्राममें निवास	.... ३५३

### अरण्यकाण्ड

मङ्गलाचरण	.... ३५७
जयन्तकी कुटिलता	.... ३५८
श्रीसीता-अनसूया-मिलन	३६०
सुतीक्ष्णजीका प्रेम	.... ३६३
पञ्चवटी-निवास	.... ३६७
खर-दूषण-वध	.... ३७३
मारीच-प्रसंग	.... ३७६
सीता-हरण	.... ३७८
शबरीपर कृपा	.... ३८३

### किष्किन्धाकाण्ड

मङ्गलाचरण	.... ३९३
श्रीराम-हनुमान्-भेंट	.... ३९४
वालि-वध	.... ३९९

मीताजीकी खोजके लिये	
बंदरोंका प्रस्थान	.... ४०६
हनुमान्-जाम्बवन्त-संवाद	४१०

### सुन्दरकाण्ड

मङ्गलाचरण	.... ४१३
लंकामें प्रवेश	.... ४१६
सीता-हनुमान्-संवाद	.... ४२०
लंका-दहन	.... ४२७
श्रीराम-हनुमान्-संवाद	.... ४२९

लंकाके लिये प्रस्थान	.... ४३१
विभीषणकी शरणागति	.... ४३७
समुद्रपर कोप	.... ४४३

### लंकाकाण्ड

मङ्गलाचरण	.... ४४७
सेतुबन्ध	.... ४४८
अंगद-रावण-संवाद	.... ४५८
लक्ष्मण-मेघनाद-युद्ध	.... ४७७
श्रीरामकी प्रलापलीला	.... ४८०
कुम्भकर्ण-वध	.... ४८६
मेघनाद-वध	.... ४९०
राम-रावण-युद्ध	.... ४९९
रावण-वध	.... ५०९

सीताजीकी अग्नि-परीक्षा	.... ५१४
अवधके लिये प्रस्थान	.... ५२१

### उत्तरकाण्ड

मङ्गलाचरण	.... ५२५
भरत-हनुमान्-मिलन	.... ५२६
भरत-मिलाप	.... ५२९
रामराज्याभिषेक	.... ५३३
श्रीरामजीका प्रजाको उपदेश	५५१
गरुड़-भुशुण्डि-संवाद	.... ५६१
काकभुशुण्डि-लोमश-संवाद	५८९
ज्ञान-भक्ति-निरूपण	.... ५९३
रामायणकी आरती	.... ६०८

॥ श्रीहरिः ॥

## पारायण-विधि

श्रीरामचरितमानसका त्रिधिपूर्वक पाठ करनेवाले महानुभावोंको पाठारम्भके पूर्व श्रीतुलसीदासजी, श्रीवाल्मीकिजी, श्रीशिवजी तथा श्रीहनुमान्जीका आवाहन-पूजन करनेके पश्चात् तीनों भाइयोंसहित श्रीसीनारामजीका आवाहन, षोडशोपचार-पूजन और ध्यान करना चाहिये । तदनन्तर पाठका आरम्भ करना चाहिये । सबके आवाहन, पूजन और ध्यानके मन्त्र क्रमशः नीचे लिखे जाते हैं—

अथ आवाहनमन्त्रः

तुलसीक नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुचिव्रत । नैर्ऋत्य उपविश्येद  
पूजनं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ तुलसीदासाय नमः ॥ १ ॥ श्रीवाल्मीक  
नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुभप्रद । उत्तरपूर्वयोर्मध्ये तिष्ठ गृहीप्य  
मेऽर्चनम् ॥ ॐ वाल्मीकाय नमः ॥ २ ॥ गौरीपते नमस्तुभ्यमिहा-  
गच्छ महेश्वर । पूर्वदक्षिणयोर्मध्ये तिष्ठ पूजां गृहाण मे ॥ ॐ गौरी-  
पतये नमः ॥ ३ ॥ श्रीलक्ष्मण नमस्तुभ्यमिहागच्छ सहप्रियः । याम्य-  
भागे समातिष्ठ पूजन संगृहाण मे ॥ ॐ श्रीसपत्नीकाय लक्ष्मणाय  
नमः ॥ ४ ॥ श्रीशशुष्त नमस्तुभ्यमिहागच्छ सहप्रियः । पीठस्य  
पश्चिमे भागे पूजनं स्वीकुरुष्व मे ॥ ॐ श्रीसपत्नीकाय शशुष्नाय  
नमः ॥ ५ ॥ श्रीभरत नमस्तुभ्यमिहागच्छ सहप्रियः । पीठ-  
कस्योत्तरे भागे तिष्ठ पूजां गृहाण मे ॥ ॐ श्रीसपत्नीकाय भरताय  
नमः ॥ ६ ॥ श्रीहनुमन्नमस्तुभ्यमिहागच्छ रूपानिधे । पूर्वभागे  
समातिष्ठ पूजनं स्वीकुरु प्रभो ॥ ॐ हनुमते नमः ॥ ७ ॥

अथ प्रधानपूजा च कर्तव्या विधिपूर्वकम् ।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा तु ध्यानं कुर्यात्परम्य च ॥ ८ ॥

रक्ताम्भोजदलाभिरामनयनं पीताम्बुरालंकरणं

श्यामाङ्गद्विभुजं प्रसन्नवदनं श्रीसीतया शोभितम् ।



कारुण्यामृतसागरं प्रियगणैर्भ्रात्रादिभिर्भावितं  
वन्दे विष्णुशिवादिसेव्यमनिशं भक्तेष्टसिद्धिप्रदम् ॥ ९ ॥  
आगच्छ जानकीनाथ जानक्या सह राघव ।  
गृहाण मम पूजां च वायुपुत्रादिभिर्युत ॥ १० ॥

इत्यावाहनम्

सुवर्णरचितं राम दिव्यास्तरणशोभितम् ।  
आसनं हि मया दत्तं गृहाण मणिचित्रितम् ॥

इति षोडशोपचारैः पूजयेत्

ॐ अस्य श्रीमन्मानसरामायणश्रीरामचरितस्य श्रीशिव-  
काकभुशुण्डियाक्षवल्क्यगोस्वामितुलसीदासा ऋषयः श्रीसीता-  
रामो देवता श्रीरामनाम बीजं भवरोगहरी भक्तिः शक्तिः, मम  
नियन्त्रिताशेषविघ्नतया श्रीसीतारामप्रीतिपूर्वकसकलमनोरथ-  
सिद्धयर्थं पाठे विनियोगः ।

अथाचमनम्

श्रीसीतारामाय नमः । श्रीरामचन्द्राय नमः ।

श्रीरामभद्राय नमः । इति मन्त्रत्रितयेन आचमनं कुर्यात् ॥  
श्रीयुगलबीजमन्त्रेण प्राणायामं कुर्यात् ॥

अथ करन्यासः

जग मंगल गुनग्राम राम के । दानि मुकुति धन धरम धाम के ॥

अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

राम राम कहि जे जमुहाहीं । तिन्हहि न पापपुंज समुहाहीं ॥

तर्जनीभ्यां नमः

राम सकल नामःह ते अधिका । होउ नाथ अब खग गन वधिका ॥

मध्यमाभ्यां नमः

उमा दारु जोपित की नाई । सबहि नचावत रामु गोसाई ॥

अनामिकाभ्यां नमः

सन्मुख होइ जीवमोहि जवहीं । जन्म कोटि अब नासहिं तवहीं ॥

कनिष्ठिकाभ्यां नमः

मामभिरक्षय रघुकुलनायक । धृत वर चाप रचिर कर म्पायक ॥

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

इति करन्यासः ।

अथ हृदयादिन्यासः

जग मंगल गुनग्राम राम के । दानि मुकुति धन धरम धाम के ॥

हृदयाय नमः ।

राम राम कहि जे जमुहाही । तिन्हहि न पापपुंज समुहाही ॥

शिरसे स्वाहा ।

राम सकल नामन्ह ते अधिका । होउ नाथ अघ खग गन यधिका ॥

शिखायै वषट् ।

उमा दारु जोपित की नाई । सबहि नचावत रामु गोसाई ॥

कचचाय हुम् ।

मन्मुत होइ जीव मोहि जवहो । जन्म कोटि अघ नासहि तवहो ॥

नेत्राभ्यां वौषट् ।

मामभिरक्षय रघुकुलनायक । धृत वर चाप रचिर कर म्पायक ॥

अस्त्राय फट् । इति हृदयादिन्यासः ।

अथ ध्यानम्

मामवलोकय पंकजलोचन । कृपा विलोकनि सोच विमोचन ॥

नोल तामरस स्वाम काम भरि । हृदय कंज मकरंद मधुप हरि ॥

जातुधान बरूथ चल भंजन । मुनि सञ्जन रंजन अघ गजन ॥

भूसुर मसि नव वृंद यलाहक । अमरन मरन दीन जन गाहक ॥

भुजपल विपुल भार महिसंडित । म्वर दूपन विराध यध पंडित ॥

रावनारि सुररूप भूपवर । जय दमरथ कुल कुमुद सुधाकर ॥

सुजम पुरान विदित निगमागम । गावत मुर मुनि संत ममागम ॥

कारनीक व्यलीक मद् खंडन । सब विधि कुसलकोमला मंडन ॥

कलि मल मधन नाम ममताहन । तुलसिदाम प्रभु पाहि प्रनत जन ॥

इति ध्यानम्

## नवाह्नपारायणके विश्राम-स्थान

पहला विश्राम	पृष्ठ	छठा विश्राम	पृष्ठ
दूसरा	८१	सातवाँ	३८०
तीसरा	१३९	आठवाँ	४५४
चौथा	१९९	नवाँ	५३३
पाँचवाँ	२५७		६०७
	३१३		

## मासपारायणके विश्राम-स्थान

पहला विश्राम	पृष्ठ	सोलहवाँ विश्राम	पृष्ठ
दूसरा	३३	सत्रहवाँ	२५७
तीसरा	४९	अठारहवाँ	२६५
चौथा	६५	उन्नीसवाँ	२८५
पाँचवाँ	८१	बीसवाँ	३०३
छठा	९६	इक्कीसवाँ	३१३
सातवाँ	१११	बाईसवाँ	३५५
आठवाँ	१२६	तेईसवाँ	३९१
नवाँ	१३९	चौबीसवाँ	४११
दसवाँ	१५४	पचीसवाँ	४४५
ग्यारहवाँ	१६९	छब्बीसवाँ	४७४
बारहवाँ	१८३	सत्ताईसवाँ	५०५
तेरहवाँ	२०१	अट्ठाईसवाँ	५२३
चौदहवाँ	२१६	उन्तीसवाँ	५६१
पंद्रहवाँ	२३१	तीसवाँ	५९३
	२४६		६०७

# श्रीरामशलाका प्रश्नावली

मानसानुरागी महानुभावोंको श्रीरामशलाका प्रश्नावलीका विशेष परिचय देनेकी कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होनी, उसकी महत्ता एवं उपयोगितासे प्रायः सभी मानसन्नेमी परिचित होंगे। अन. नीचे उसका स्वरूपमात्र अङ्कित करके उससे प्रश्नोत्तर निकालनेकी विधि तथा उसके उत्तर-फलोंका उल्लेख कर दिया जाता है। श्रीरामशलाका प्रश्नावलीका स्वरूप इस प्रकार है—

मु	प्र	उ	वि	हो	मु	ग	व	सु	नु	वि	ष	पि	इ	द
र	रु	फ	सि	सि	रें	बस	है	म	ल	न	ल	य	न	अ
मुज	सो	ग	सु	कुं	म	स	ग	त	न	ई	ल	धा	वे	नो
त्य	र	न	कु	जो	म	रि	र	र	अ	को	हो	स	रा	य
पु	सु	थ	सो	जे	इ	ग	म	स	क	रे	हो	स	स	नि
त	र	त	र	स	इ	इ	व	व	प	चि	स	य	स	दु
म	वा	।	र	र	मा	मि	मी	म्हा	।	जा	हू	ही	।	जू
ता	रा	रे	री	ह	का	फ	खा	जि	ई	र	रा	पू	द	ल
नि	को	मि	गो	न	म	ष	य	ने	मनि	क	ज	प	स	ल
दि	रा	म	स	रि	ग	द	न	प	म	रि	जिमनि	त	ज	र
सि	मु	न	न	को	मि	ज	र	ग	धु	ख	सु	का	स	र
गु	क	म	अ	ध	नि	म	ल	।	न	व	तो	न	रि	भ
ना	पु	व	अ	दा	र	ल	का	ए	तु	र	न	नु	य	य
सि	इ	सु	म्ह	रा	र	स	हि	र	त	न	प	।	जा	।
र	सा	।	ला	यो	।	री	ज	हू	हों	पा	जू	ई	रा	रे

इस रामशलाका प्रश्नावलीके द्वारा जिस किसीको जब कभी अपने अभीष्ट प्रश्नका उत्तर प्राप्त करनेकी इच्छा हो तो सर्वप्रथम उस व्यक्तिको भगवान् श्रीरामचन्द्रजीका ध्यान करना चाहिये। तदनन्तर श्रद्धा-सिद्धासूर्वक मनसे अभीष्ट प्रश्नका चिन्तन करते हुए

## नवाहपारायणके विश्राम-स्थान

	पृष्ठ		पृष्ठ
पहला विश्राम	.... ८१	छठा विश्राम	.... ३८०
दूसरा ”	.... १३९	सातवाँ ”	.... ४५४
तीसरा ”	.... १९९	आठवाँ ”	.... ५३३
चौथा ”	.... २५७	नवाँ ”	.... ६०७
पाँचवाँ ”	.... ३१३		

## मासपारायणके विश्राम-स्थान

	पृष्ठ		पृष्ठ
पहला विश्राम	.... ३३	सोलहवाँ विश्राम	.... २५७
दूसरा ”	.... ४९	सत्रहवाँ ”	.... २६५
तीसरा ”	.... ६५	अठारहवाँ ”	.... २८५
चौथा ”	.... ८१	उन्नीसवाँ ”	.... ३०३
पाँचवाँ ”	.... ९६	बीसवाँ ”	.... ३१३
छठा ”	.... १११	इक्कीसवाँ ”	.... ३५५
सातवाँ ”	.... १२६	बाईसवाँ ”	.... ३९१
आठवाँ ”	.... १३९	तेईसवाँ ”	.... ४११
नवाँ ”	.... १५४	चौबीसवाँ ”	.... ४४५
दसवाँ ”	.... १६९	पचीसवाँ ”	.... ४७४
ग्यारहवाँ ”	.... १८३	छब्बीसवाँ ”	.... ५०५
बारहवाँ ”	.... २०१	सत्ताईसवाँ ”	.... ५२३
तेरहवाँ ”	.... २१६	अट्ठाईसवाँ ”	.... ५६१
चौदहवाँ ”	.... २३१	उन्तीसवाँ ”	.... ५९३
पंद्रहवाँ ”	.... २४६	तीसवाँ ”	.... ६०७

# श्रीरामशलाका प्रश्नावली

मानसानुरागी महानुभावोंको श्रीरामशलाका प्रश्नावलीका विशेष परिचय देनेकी कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती, उसकी महत्ता एवं उपयोगितासे प्रायः सभी मानसप्रेमी परिचित होंगे । अतः नीचे उसका स्वरूपमात्र अङ्कित करके उससे प्रश्नोत्तर निकालनेकी विधितया उसके उत्तर-फलकोंका उल्लेख कर दिया जाता है । श्रीरामशलाका प्रश्नावलीका स्वरूप इस प्रकार है—

मु	प्र	उ	वि	हो	मु	ग	व	सु	नु	प्रि	ष	धि	इ	द
र	रु	फ	सि	सि	रे	वस	हे	म	ल	न	ल	य	न	अ
मुज	सो	ग	सु	कु	म	स	ग	त	न	ई	ल	धा	ये	नो
त्य	र	न	कु	जा	म	रि	र	र	अ	की	हो	स	रा	य
पु	सु	य	सो	जे	इ	ग	म	स	क	रे	हो	स	स	नि
त	र	त	र	स	इ	ह	व	व	प	चि	स	य	स	तु
म	का	।	र	र	मा	मि	मो	म्हा	।	जा	हू	हो	।	जू
ता	रा	रे	रो	ह	का	फ	रा	जि	ई	र	रा	पू	द	ल
नि	को	मि	गो	न	म	ज	य	ने	मनि	क	ज	प	स	ल
दि	रा	म	स	रि	ग	द	न	प	म	खि	जिमनि	त	ज	
सि	मु	न	न	को	मि	ज	र	ग	धु	र	सु	का	स	र
गु	क	म	अ	घ	नि	म	ल	।	न	व	ती	न	रि	भ
ना	पु	व	अ	डा	र	ल	का	ए	तु	र	न	नु	य	थ
सि	ए	सु	म्हा	रा	र	स	हि	र	त	न	प	।	जा	।
र	सा	।	ला	बी	।	री	ज	हू	हो	पा	जू	ई	रा	रे

इस रामशलाका प्रश्नावलीके द्वारा जिस किसीको जव कभी अपने अभीष्ट प्रश्नका उत्तर प्राप्त करनेकी इच्छा हो तो सर्वप्रथम उस व्यक्तिको भगवान् श्रीरामचन्द्रजीका ध्यान करना चाहिये । तदनन्तर श्रद्धा-विश्वासपूर्वक मनसे अभीष्ट प्रश्नका चिन्तन करते हुए

प्रश्नावलीके मनचाहे कोष्ठकमें अँगुली या कोई शलाका रख देना चाहिये और उस कोष्ठकमें जो अक्षर हो उसे अलग किसी कोरे कागज या स्लेटपर लिख लेना चाहिये । प्रश्नावलीके कोष्ठकपर भी ऐसा कोई निशान लगा देना चाहिये, जिससे न तो प्रश्नावली गंदी हो और न प्रश्नोत्तर प्राप्त होनेतक वह कोष्ठक भूल जाय । अब जिस कोष्ठकका अक्षर लिख लिया गया है, उससे आगे बढ़ना चाहिये तथा उसके नवें कोष्ठकमें जो अक्षर पड़े उसे भी लिख लेना चाहिये । इस प्रकार प्रति नवें अक्षरके नवें अक्षरको क्रमसे लिखते जाना चाहिये और तबतक लिखते जाना चाहिये, जबतक उसी पहले कोष्ठकके अक्षरतक अँगुली अथवा शलाका न पहुँच जाय । पहले कोष्ठकका अक्षर जिस कोष्ठकके अक्षरसे नवाँ पड़ेगा, वहाँतक पहुँचते-पहुँचते एक चौपाई पूरी हो जायगी, जो प्रश्नकर्ताके अभीष्ट प्रश्नका उत्तर होगी । यहाँ इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि किसी-किसी कोष्ठकमें केवल 'आ' की मात्रा ( १ ) और किसी-किसी कोष्ठकमें दो-दो अक्षर हैं । अतः गिनते समय न तो मात्रावाले कोष्ठकको छोड़ देना चाहिये और न दो अक्षरोंवाले कोष्ठकको दो बार गिनना चाहिये । जहाँ मात्राका कोष्ठक आवे वहाँ पूर्वलिखित अक्षरके आगे मात्रा लिख लेना चाहिये और जहाँ दो अक्षरोंवाला कोष्ठक आवे वहाँ दोनों अक्षर एक साथ लिख लेना चाहिये ।

अब उदाहरणके तौरपर इस रामशलाका प्रश्नावलीसे किसी प्रश्नके उत्तरमें एक चौपाई निकाल दी जाती है । पाठक ध्यानसे देखें । किसीने भगवान् श्रीरामचन्द्रजीका ध्यान और अपने प्रश्नका

चिन्तन करते हुए यदि प्रश्नावलीके \* इस चिह्नसे संयुक्त 'म' वाले कोष्ठकमें अँगुली या शल्का रक्खा और वह ऊपर बनाये कमके अनुसार अक्षरोंको गिन-गिनकर लिखता गया तो उत्तरस्वरूप यह चौपाई बन जायगी—

हो इ है मो ई जो रा मळ र चि रा र्सा ।

को क रि त र क ब दा ष हिं मा पा ॥

यह चौपाई बालकान्तरगत शिव और पार्वतीके संवादमें है । प्रश्नकर्ताको इस उत्तरस्वरूप चौपाईसे यह आशय निकालना चाहिये कि कार्य होनेमें सन्देह है, अतः उसे भगवान्पर छोड़ देना श्रेयस्कर है ।

इस चौपाईके अतिरिक्त श्रीरामशलाका-प्रश्नावलीसे और भी जितनी चौपाइयाँ बनती हैं, उन सबका स्थान और फलसहित उल्लेख नीचे किया जाता है ।

१-मुनु मिय सत्य भसीस हमारी । पूजहि मन कामना तुम्हारी ॥

स्थान—यह चौपाई बालकान्तरमें श्रीसीताजीके गौरीपूजनके प्रसङ्गमें है । गौरीजीने श्रीसीताजीको आशीर्वाद दिया है ।

फल—प्रश्नकर्ताका प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा ।

२-प्रथिम नगर कीजे सब बाजा । हृदय राति फोसलपुर राजा ॥

स्थान—यह चौपाई सुन्दरकान्तरमें हनुमान्जीके लक्ष्मि प्रवेश करनेके समयकी है ।

फल—भगवान्का स्मरण करके कार्यारम्भ करो, सफलता मिलेगी ।

३-उधरें अंत न हांड निचाहू । कालनेम जिमि रावन राहू ॥

स्थान—यह चौपाई बालकान्तरके आरम्भमें सप्तहर्षणके प्रसङ्गमें है ।

फल—इस कार्यमें भयार्ह नहीं है । कार्यकी सफलतामें सन्देह है ।



४-विधि वस सुजन कुसंगत परहीं । फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं ॥  
**स्थान**-यह चौपाई भी बालकाण्डके आरम्भमें ही सत्सङ्गवर्णनके प्रसङ्गकी है ।

**फल**-खोटे मनुष्योंका सङ्ग छोड़ दो । कार्य पूर्ण होनेमें सन्देह है ।

५-मुद्ग मंगलमय संत समाजू । जिमि जग जंगम तीरथ राजू ॥  
**स्थान**-यह चौपाई बालकाण्डमें संत-समाजरूपी तीर्थके वर्णनमें है ।

**फल**-प्रश्न उत्तम है । कार्य सिद्ध होगा ।

६-गरल सुधा रिपु करय मितार्ह । गोपद सिंधु अनल सितलार्ह ॥  
**स्थान**-यह चौपाई श्रीहनुमान्जीके लंकामें प्रवेश करनेके समयकी है ।

**फल**-प्रश्न बहुत श्रेष्ठ है । कार्य सफल होगा ।

७-वरुन कुचेर सुरेस समीरा । रन सनमुख धरि काह न धीरा ॥  
**स्थान**-यह चौपाई लंकाकाण्डमें रावणकी मृत्युके पश्चात् मन्दोदरीके विलापके प्रसङ्गमें है ।

**फल**-कार्य पूर्ण होनेमें सन्देह है ।

८-सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे । रामु लखन सुनि भणु सुखारे ॥  
**स्थान**-यह चौपाई बालकाण्डमें पुष्पवाटिकासे पुष्प लानेपर विश्वा-  
 मित्रजीका आशीर्वाद है ।

**फल**-प्रश्न बहुत उत्तम है । कार्य सिद्ध होगा ।

इस प्रकार रामशलाका प्रश्नावलीसे कुल नौ चौपाइयाँ बनती हैं, जिनमें सभी प्रकारके प्रश्नोंके उत्तराशय सन्निहित हैं ।



॥ श्रीरामाय नमः ॥

# श्रीरामचरितमानस

बालकाण्ड



गीताप्रेम, गोरखपुर

मायामुक्त नारदजी



तव मुनि अति सभित हरि चरना ।

गहे पाहि प्रनतारति हरना ।





श्रीरामकी दौकी

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

# श्रीरामचरितमानस



प्रथम सोपान



( बालकाण्ड )

श्लोक

वर्णानामर्थसङ्घानां रसानां छन्दसामपि ।  
मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥  
भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।  
याभ्यां विनान पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमोक्षरम् ॥ २ ॥  
वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् ।  
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥ ३ ॥  
सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ।  
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥ ४ ॥  
उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ।  
सर्वश्रेयस्करिणीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥ ५ ॥  
यन्मायावशवर्त्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा  
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ।  
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां  
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमोक्षं हरिम् ॥ ६ ॥

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्  
 रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि ।  
 स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा-  
 भाषानिवन्धमतिमञ्जुलमातनोति ॥ ७ ॥

सो०—जो सुमिरत सिधि होइ गन नायक करिवर वदन ।  
 करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ॥ १ ॥  
 मूक होइ वाचाल पंगु चढ़इ गिरिवर गहन ।  
 जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलिमल दहन ॥ २ ॥  
 नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन वारिज नयन ।  
 करउ सो मम उर धाम सदा छीरसागर सयन ॥ ३ ॥  
 कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन ।  
 जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन ॥ ४ ॥  
 बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि ।  
 महामोह तम पुंज जासु वचन रवि कर निकर ॥ ५ ॥  
 बंदउँ रु पद पदुम परागा । सुरुचि अनुरागा ॥  
 अमिअ मूरिमय चूरन चारू । समन ल भव रुज परिवारू ॥  
 सुकृति संभु तन विमल विभूती । मंजुल मंगल मोद प्रसूती ॥  
 जन मन मंजु मुकुर मल हरनी । किँ तिलक गुन गन करनी ॥  
 श्रीगुर पद नख मनि गन जोतीं । सुमिरत दिव्य दृष्टि हियँ होती ॥  
 दलन मोह तम सो सप्रकास । वड़े भाग उर आवइ जासू ॥  
 उघरहिं विमल विलोचन ही के । मिटहिं दोष दुख भव रजनी के ॥  
 सझहिं राम चरित मनि मानिक । गुपुत प्रगट जहँ जेहि खानिक ॥

दो०—जथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान ।

कौतुक देखत सैल बन भूतल भूरि निधान ॥ १ ॥

गुरु पद रजमृदु मंजुल अंजन । नयन अमिअ दृगदोष विभंजन ॥  
 तेहिं करि विमल त्रिवेक त्रिलोचन । वरनउँ राम चरित भव मोचन ॥  
 वंदउँ प्रथम महीसुर चरना । मोह जनित संसय सब हरना ॥  
 सुजन समाज सकल गुन खानी । करउँ प्रनाम सप्रेम सुबानी ॥  
 साधु चरित सुभ चरित कपास । निरस विसद गुनमय फल जास ॥  
 जो सहि दुख परछिद्र दुरावा । वंदनीय जेहिं जग जस पावा ॥  
 मुद मंगलमय संत समाज । जो जग जंगम तीरथराज ॥  
 राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा । सरसइ ब्रह्म विचार प्रचारा ॥  
 विधि निषेधमय कलि मल हरनी । करम कथा रविन्दनि वरनी ॥  
 हरि हर कथा विराजति बेनी । सुनत सकल मुद मंगल देनी ॥  
 बटु विस्वास अचल निज धरमा । तीरथराज समाज सुकरमा ॥  
 सवहि सुलभ सव दिन सव देसा । सेवत सादर समन कलेसा ॥  
 अकथ अलौलिक तीरथराज । देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ ॥

दो०—सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग ।

लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग ॥ २ ॥

मजन फल पेखिअ । काक होहिं पिक बकउ मराला ॥  
 सुनि आवरज करै जनि कोई । सतसंगति महिमा नहिं गोई ॥  
 चालमीक नारद घटजोनी । निज निज मुखनि कही निज होनी ॥  
 जलचर थलचर नभचर नाना । जे जड़ चेतन जीव जहाना ॥  
 भति कीरति गति भूति भलाई । जब जेहिं जतन जहाँ जेहिं पाई ॥



सो जानव सतसंग प्रभाऊ। लोकहुँ वेद न आन उपाऊ ॥  
 विनु सतसंग विवेक न होई। राम कृपा विनु सुलभ न सोई ॥  
 सतसंगत सुद मंगल मूला। सोइ फल सिधि सब साधन फूला ॥  
 सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परस कुधात सुहाई ॥  
 विधि वस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं ॥  
 विधि हरि हर कवि कोविद बानी। कहत साधु महिमा सकुचानी ॥  
 सो मो सन कहि जात न कैसैं। साक वनिक मनि गुन गन जैसैं ॥  
 दो०—वंदउँ संत समान चित हित अनहित नहिं कोइ ।

अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोइ ॥ ३ (क) ॥

संत सरल चित जगत हित जानि सुभाउ सनेहु ।

वालविनय सुनि करि कृपाराम चरन रति देहु ॥ ३ (ख) ॥

बहुरि वंदि खल गन सतिभाएँ। जे विनु काज दाहिनेहु चाएँ ॥  
 पर हित हानि लाभ जिन्ह करै। उजरें हरप विपाद वसेरें ॥  
 हरि हर जस राकेस राहु से। पर अकाज भट सहसवाहु से ॥  
 जे परदोष लखहि सहसाखी। पर हित घृत जिन्ह के मन माखी ॥  
 तेज कृसानु रोष महिपेसा। अब अवगुन धन धनी धनेसा ॥  
 उदय केत सम हित सबही के। कुंभकरन सम सोवत नीके ॥  
 पर अकाजु लागि तनु परिहरहीं। जिमि हिम उपल कृपी दलि गरहीं ॥  
 वंदउँ खल जस सेप सरोषा। सहस नदन वरनइ पर दोषा ॥  
 पुनि प्रनवउँ पृथुराज समाना। फ  
 बहुरि सक्र सम विनवउँ तेही। सं  
 बचन बज्र जे पिआरा। स

दो०—उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिं खल रीति ।

जानि पानि जुग जोरि जन विनती करइ सप्रीति ॥ ४ ॥

मैं अपनी दिांसि कीन्ह निहोरा । तिन्ह निज ओर न लाउव भोरा ॥  
 वायस पलिअहिं अति अनुरागा । होहिं निरामिप कवहुं कि कागा ॥  
 बंदउ संत असज्जन चरना । दुखप्रद उभय बीच कहुवरना ॥  
 बिछुरन एक प्राण हरि लेहीं । मिलत एक दुख दारुन देहीं ॥  
 उपजहिं एक संग जग माहीं । जलज जाँक जिमिगुन विलगाहीं  
 सुधा सुरा सम साधु असाधु । जनक एक जग जलधि अगाधु ॥  
 भल अनभल निज निज करतूती । लहत सुजस अपलोक विभूती ॥  
 सुधा सुधाकर सुरसरि साधु । गरल अनल कलिमल सरि व्याधु  
 गुन अवगुन जानत सब कोई । जो जेहि भाव नीक तेहि सोई ॥

दो०—भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु ।

सुधा सराहिअ अमरताँ गरल सराहिअ मीचु ॥ ५ ॥

खल अघ अगुन साधु गुन गाहा । उभय अपार उदधि अवगाहा ॥  
 तेहि तें कहु गुन दोष बखाने । मंग्रह त्याग न विनु पहिचाने ॥  
 भलेउ पोच सब विधि उपजाए । गनि गुन दोष वेद विलगाए ॥  
 कहहिं वेद इतिहास पुराना । विधि प्रपंचु गुन अवगुन साना  
 दुख सुख पाप पुन्य दिन राती । साधु असाधु सुजाति कुजाती ॥  
 दानव देव ऊँच अरु नीचू । अमिअ सुजीवनु माहुरु मीचू ॥  
 माया ब्रह्म जीव जगदीसा । लच्छिअलच्छिअंक अवनीसा ॥  
 कासी मग सुरसरि क्रमनासा । मरु मारव महिदेव गवासा ॥  
 सरग नरक अनुराग विगागा । निगमागम गुन दोष विभागा ॥

दो०—जड़ चेतन गुन दोषमय बिख कीन्ह करतार ।

संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि वारि विकार ॥ ६ ॥

अस बिबेक जब देइ बिधाता । तब तजि दोष गुनहिं मनु राता ॥  
 काल सुभाउ करम बरिआई । भलेउ प्रकृति बस चुकइ भलाई ॥  
 सुधारि हरिजन जिमि लेहीं । दलि दुख दोष विमल ज देहीं ॥  
 खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू । मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू ॥  
 लखि सुबेष जग बंचक जेऊ । बेष प पूजिअहिं तेऊ ॥  
 उघरहिं अंत न होइ निवाहू । लनेमि जिमि रावन राहू ॥  
 किएहुँ कुबेषु साधु सनमानू । जिमि जग जामवंत हनु नू ॥  
 हानि कुसंग सुसंगति लाहू । ले हूँ बेद विदित सब काहू ॥  
 गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा । कीचहिं मिलइ नीचजल संग्गा ॥  
 साधु असाधु सदन सुक रीं । सुमिरहिं राम देहिं गनि गारीं ॥  
 धूम कुसंगति कारिख होई । लिखिअ पुरान मंजु मसि सोई ॥  
 सोई जल अनल अनिल संघाता । होइ जलइ जग जीवन दाता ॥

दो०—ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग ।

होहिं कुवस्तु सुवस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग ॥७(क)॥

सम प्रकास तम पाख दुहुँ नाम भेद विधि कीन्ह ।

ससि सोषक पोषक समुझि जग जस अपजस दोन्ह ॥७( )॥

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि ।

बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि ॥७(ग)॥

देव दनुज नर ग खग पितर गंधर्व ।

बंदउँ किंनर रजनिचर कृपा करहु अब सर्व ॥७(घ)॥

आकर चारि लाख चौरासी । जाति जीव जल थल नभ वासी ॥  
 सीय राममय सब जग जानी । करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी ॥  
 जानि कृपाकर किंकर मोहू । सब मिलि करहु छाड़ि छल छोहू  
 निज बुधि बल भरोस मोहि नार्हीं । तातें विनय करउँ सब पाहीं ॥  
 करन चहउँ रघुपति गुन गाहा । लघु मति मोरि चरित अवगाहा ॥  
 स्रज न एकउ अंग उपाऊ । मन मति रंक मनोरथ राऊ ॥  
 मति अति नीच ऊँचि रुचि आछी । चहिअ अमिअ जग जुइ न छाछी  
 छमिहहिं सजन मोरि दिठार्ई । सुनिहहिं बालबचन मन लाई ॥  
 जौं बालक कह तोतरि वाता । सुनिहहिं मुदित मन पितु अरु माता  
 हँसिहहिं कूर कुटिल कुविचारी । जे पर दूपन भूपनधारी ॥  
 निज कवित्त केहि लाग न नीका । सरस होउ अथवा अति फीका ॥  
 जे पर भनिति सुनत हरपाहीं । ते वर पुरुष बहुत जग नार्हीं ॥  
 जग बहु नर सर सरि सम भाई । जे निज बाढ़ि बढ़हिं जल पाई ॥  
 सजन सकृत सिंधु सम कोई । देखि पूर विधु बाढ़इ जोई ॥  
 दो०—भाग छोट अभिलाषु बड़ करउँ एक विस्वास ।

पैहहिं सुख सुनि सुजन सब खल करिहहिं उपहास ॥ ८ ॥

खल परिहास होइ हित मोरा । काक कहहिं कलकंठ कठोरा ॥  
 हंसहिं बक दादुर चातकही । हँसहिं मलिन खल विमल बतकही  
 कवित रसिक न राम पद नेहू । तिन्ह कहँ सुखद हासरस एहू ॥  
 भाषा भनिति भोरि मति मोरी । हँसिबे जोग हँसैं नहिं खोरी ॥  
 प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी । तिन्हहिं कथा सुनि लागिहिं फीकी

हरि हर पद रति मति न कुतरकी । तिन्ह कहँ मधुर कथा रघुवर की  
 राम भगति भूपित जियँ जानी । सुनिहहिँ सुजन सराहि सुवानी ॥  
 कवि न होउँ नहिँ ववन प्रवीनू । सकल कला सब विद्या हीनू ॥  
 आखर अरथ अलंकृति नाना । छंद प्रबंध अनेक विधाना ॥  
 भाव भेद रस भेद अपारा । कवित दोष गुन विविध प्रकारा ॥  
 कवित विवेक एक नहिँ मोरें । सत्य कहउँ लिखि कागद कोरें ॥  
 दो०—भनिति मोरि सब गुन रहित विस्व विदित गुन एक ।

सो विचारि सुनिहहिँ सुमति जिन्ह कें विमल विवेक ॥ ९ ॥

एहि महँ रघुपति नाम उदारा । अति पावन पुरान श्रुति सारा ॥  
 मंगल भवन अमंगल हारी । उमा सहित जेहि जपत पुरारी ॥  
 भनिति विचित्र सुकवि कृत जोऊ । राम नाम विनु सोह न सोऊ ॥  
 विधुवदनी सब भाँति सँवारी । सोह न वसन विना वर नारी ॥  
 सब गुन रहित कुकवि कृत वानी । राम नाम जस अंकित जानी ॥  
 सादर कहहिँ सुनहिँ बुध ताही । मधुकर सरिस संत गुनग्राही ॥  
 जदपि कवित रस एकउ नाहीं । राम प्रताप प्रगट एहि माहीं ॥  
 सोइ भरोस मोरें मन आवा । केहिँ न सुसंग वड़प्पनु पावा ॥  
 धूमउ तजइ सहज करुआई । अगरु प्रसंग सुगंध वसाई ॥  
 भनिति भदेस वस्तु भलि वरनी । राम कथा जग मंगल करनी ॥

छं०—मंगल करनि कलि मल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की ।  
 गति कूर कविता सरित को ज्यों सरित पावन पाथ की ॥  
 प्रभु सुजस संगति भनिति भलि होइहि सुजन मन भावनी ।  
 भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी ॥

दो०—प्रिय लागिहि अति सवहि मम भनिति राम जस संग ।

दारु विचारु कि करइ कोउ वंदिअ मलय प्रसंग ॥१०(क)॥

स्याम मुरभि पय विसद अति गुनद करहिं सव पान ।

गिरा ग्राम्य सिय राम जस गावहिं सुनहिं सुजान ॥१०(ख)॥

मनि भानिक मुकुता छवि जैसो । अहि गिरि गज सिर सोह न तैसी  
नृप किरीट तरुनी तनु पाई । लहहिं सकल सोभा अधिकार्इ ॥  
तैसेहि सुकवि कवित बुध कहहीं । उपजहिं अनत अनत छवि लहहीं  
भगति हेतु विधि भवन विहाई । सुमिरत सारद आवति धाई ॥  
राम चरित सर विनु अन्हवाएँ । सो थ्रम जाइ न कोटि उपाएँ ॥  
कवि कोविद अस हृदयँ विचारी । गावहिं हरि जस कलि मल हारी ॥  
कीन्हें प्राकृत जन गुन गाना । सिर धुनि गिरा लगत पछिताना  
हृदय सिंधु मति सीप समाना । स्वाति सारदा कहहिं सुजाना ॥  
जौं बरपइ बर वारि विचारु । होहिं कवित मुकुतामनि चारु ॥

दो०—जुगुति वेधि पुनि पोहिअहिं राम चरित बर ताग ।

पहिरहिं सजन विमल उर सोभा अति अनुराग ॥११॥

जे जनमे कलिकाल कराला । करतव चायस वेप मराला ॥  
चलत कुपंथ वेद मग छोड़े । कपट कलेवर कलि मल भोंड़े ॥  
बंचक भगत कहाइ राम के । किंकर कंचन कोह काम के ॥  
तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी । धींग धरमध्वज धंधक धोरी ॥  
जौं अपने अवगुन सव कहऊँ । वाढ़इ कथा पार नहिं लहऊँ ॥  
ताते मैं अति अल्प बखाने । थोरे महँ जानिहहिं सयाने ॥  
समुझि विविधि विधि विनती मोरी । कोउ न कथा सुनि देखि खोरी ॥

एतेहु पर करिहहिं जे असंका । मोहि ते अधिक ते जड़ मति रंका ॥  
 कवि न होउं नहिं चतुर कहावउं । मति अनुरूप राम गुन गावउं ॥  
 कहँ रघुपति के चरित अपारा । कहँ मति मोरि निरत संसारा ॥  
 जेहिं मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं । कहहु तूल केहि लेखे माहीं ॥  
 समुझत अमित राम प्रभुताई । करत कथा मन अति कदराई ॥

दो०—सारद सेस महेस विधि आगम निगम पुरान ।

नेति नेति कहि जासु गुन करहिं निरंतर गान ॥१२॥

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई । तदपि कहें बिनु रहा न कोई ॥  
 तहाँ वेद अस कारन राखा । भजन प्रभाउ भाँति बहु भाषा ॥  
 एक अनीह अरूप अनामा । अज सच्चिदानंद पर धामा ॥  
 व्यापक विस्वरूप भगवाना । तेहिं धरि देह चरित कृत नाना ॥  
 सो केवल भगतन हित लागी । परम कृपाल प्रनत अनुरागी ॥  
 जेहि जन पर ममता अति छोहू । जेहिं करुना करि कीन्ह न कोहू ॥  
 गई बहोर गरीब नेवाजू । सरल सबल साहिब रघुराजू ॥  
 बुध बरनहिं हरि जस अस जानी । करहिं पुनीत सुफल निज बानी ॥  
 तेहिं बल मै रघुपति गुन गाथा । कहिहउं नाइ राम पद माथा ॥  
 मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई । तेहिं मग चलत सुगम मोहि भाई ॥

दो०—अति अपार जे सरित वर जौं नृप सेतु कराहिं ।

चढ़ि पिपीलिकउ परम लघु बिनु श्रम पारहि जाहिं ॥१३॥

एहि प्रकार बल मनहि देखाई । करिहउं रघुपति कथा सुहाई ॥  
 व्यास आदि कवि पुंगव नाना । जिन्ह सादर हरि सुजस बखाना ॥  
 चरन कमल बंदउं तिन्ह केरे । पुरवहुँ सकल मनोरथ मेरे ॥

कलि के कविन्ह करउँ परनामा । जिन्ह बरने रघुपति गुन ग्रामा ॥  
 जे प्राकृत कवि परम सयाने । भापाँ जिन्ह हरि चरित बखाने ॥  
 भए जे अहहिं जे होइहहि आगें । प्रनवउँ सबहि कपट सब त्यागें ॥  
 होहु प्रसन्न देहु बरदानू । साधु समाज भनिति सनमानू ॥  
 जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं । सो श्रम बादि बाल कवि करहीं ॥  
 कीरति भनिति भृति भलि सोई । सुरसरि सम सब कहँ हित होई ॥  
 राम सुकीरति भनिति भदेसा । असमंजस अस मोहि अँदेसा ॥  
 तुम्हरी कृपाँ सुलभ सोउ भोरे । सिअनि सुहावनि टाट पटोरे ॥

दो०—सरल कवित कीरति विमल सोइ आदरहिं सुजान ।

सहज बयर विसराइ रिपु जो सुनि करहिं बखान ॥१४(क)॥

सो न होइ विनु विमल मति मोहि मति बल अति थोर ।

करहु कृपा हरि जस कहउ पुनि पुनि करउँ निहोर ॥१४(ख)॥

कवि कोविद रघुवर चरित मानस मंजु मराल ।

बाल विनय सुनि सुरुचि लखि मो पर होहु कृपाल ॥१४(ग)॥

सो०—बंदउँ मुनि पद कंजु रामायन जेहिं नरमयउ ।

सखर सुकोमल मंजु दोष रहित दूपन सहित ॥१४(घ)॥

बंदउँ चारिउ वेद भव चारिधि बोहित सरिस ।

जिन्हहि न सपनेहुँ खेद बरनत रघुवर विसद जसु ॥१४(ङ)॥

बंदउँ विधि पद रेनु भव सागर जेहिं कीन्ह जेहँ ।

संत सुधा ससि धेनु प्रगटे खल विष वारुनी ॥१४(च)॥

दो०—विबुध विप्र बुध ग्रह चरन वंदि कहउँ कर जोरि ।

होइ प्रसन्न पुरवहु सकल मंजु मनोरथ मोरि ॥१४(छ)॥

पुनि बंदउँ सारद सुरसरिता । जुगल पुनीत मनोहर चरिता ॥



मज्जन पान पाप हर एका । कहत सुनत एक हर अविवेका ॥  
 गुर पितु मातु महेस भवानी । प्रनवउँ दीनबंधु दिन दानी ॥  
 सेवक स्वामि सखा सिय पी के । हित निरुपधि सब विधि तुलसी के ॥  
 कलि विलोकि जग हित हर गिरिजा । सावर मंत्र जाल जिन्ह सिरिजा  
 अनमिल आखर अरथ न जायू । प्रगट प्रभाउ महेस प्रतापू ॥  
 सो उमेस मोहि पर अनुकूला । करिहिं कथा सुद मंगल मूला ॥  
 सुमिरि सिवा सिव पाइ पसाऊ । वरनउँ राम चरित चित चाऊ ॥  
 भनिति मोरि सिव कृपाँ विभाती । ससि समाज मिलि मनहुँ सुराती  
 जे एहि कथहि सनेह समेता । कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता  
 होइहहिं गम चरन अनुरागी । कलि मल रहित सुमंगल भागी ॥

दो०—सपनेहुँ साचेहुँ मोहि पर जाँ हर गौरि पसाउ ।

तौ फुर होउ जो कहेउँ सब भाषा भनिति प्रभाउ ॥१५॥

बंदउँ अवध पुरी अति पावनि । सरजू सरि कलि कलुप नसावनि ॥  
 प्रनवउँ पुर नर नारि बहोरी । ममता जिन्ह पर प्रभुहिन थोरी ॥  
 सिय निंदक अघ ओघ नसाए । लोक विसोक बनाइ बसाए ॥  
 बंदउँ कौसल्या दिसि प्राची । कीरति जासु सकल जग माची ॥  
 प्रगटेउ जहँ रघुपति ससि चारू । विश्व सुखद खल कमल तुसारू ॥  
 दसरथ राउ सहित सब रानी । सुकृत सुमंगल सूरति मानी ॥  
 करउँ प्रनाम करम मन वानी । करहु कृपा सुत सेवक जानी ॥  
 जिन्हहि विरचि बड़ भयउ विधाता । महिमा अवधि राम पितु माता

सो०—बंदउँ अवध भुआल सत्य प्रेम जेहि राम पद ।

विछुरत दीनदयाल प्रिय तनु तन इव परिहरेउ ॥१६॥

प्रनवउँ परिजन सहित विदेहू। जाहि राम पद गूढ़ सनेहू ॥  
 जोग भोग महँ राखेउ गोई। राम विलोकत प्रगटेउ सोई ॥  
 प्रनवउँ प्रथम भरत के चरना। जासु नेम व्रत जाइन वरना ॥  
 राम चरन पंकज मन जासू। लुबुध मधुप इव तजइन पासू ॥  
 वंदउँ लछिमन पद जलजाता। सीतल सुभग भगत सुख दाता ॥  
 रघुपति कीरति विमल पताका। दंड समान भयउ जस जाका ॥  
 सेप सहस्रसीस जग कारन। जो अवतरेउ भूमि भय टारन ॥  
 सदा सो सानुकूल रह मो पर। कृपासिंधु सौमित्रि गुनाकर ॥  
 रिपुसूदन पद कमल नमामी। सूर सुसील भरत अनुगामी ॥  
 महावीर विनवउँ हनुमाना। राम जासु जस आप वखाना ॥

सो०—प्रनवउँ पवनकुमार खल वन पावक ग्यानवन।

जासु हृदय आगार वसहिं राम सर चाप धर ॥ १७ ॥

कपिपति रीछ निसाचर राजा। अंगदादि जे कीस समाजा ॥  
 वंदउँ सब के चरन सुहाए। अधम सरीर राम जिन्ह पाए ॥  
 रघुपति चरन उपासक जेते। खगभृग सुर नर असुर समेते ॥  
 वंदउँ पद सरोज सब केरे। जे विनु काम राम के चेरे ॥  
 सुक तनकादि भगत मुनि नारद। जे मुनिवर विग्यान विसारद ॥  
 प्रनवउँ सबहि धरनि धरि सीसा। करहु कृपा जन जानि मुनीसा ॥  
 जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधान की  
 ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ ॥  
 पुनि मन वचन कर्म रघुनायक। चरन कमल वंदउँ सब लायक ॥  
 राजिव नयन धरें धनु सायक। भगत विपति भंजन सुख दायक ॥

दो०—गिरा अरथ जल वीचि सम कहिअत भिन्न न भिन्न ।

वंदउँ सीता राम पद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न ॥ १८ ॥  
 वंदउँ नाम राम रघुवर को । हेतु कृसानु भानु हिमकर को ॥  
 विधि हरि हर मय वेद ग्रान सो । अगुन अनूपम गुन निधान सो ॥  
 महामंत्र जोइ जपत महेस्र । कासीं मुकुति हेतु उपदेस्र ॥  
 महिमा जासु जान गनराऊ । प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ ॥  
 जान आदिकवि नाम प्रतापू । भयउ सुद्र करि उलटा जापू ॥  
 सहस नाम सम सुनि सिव वानी । जपि जेई पिय संग भवानी ॥  
 हरपे हेतु हेरि हर ही को । किय भूपन तिय भूपन ती को ॥  
 नाम प्रभाउ जान सिव नीको । कालकूट फलु दीन्ह अमी को ॥

दो०—वरपा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास ।

राम नाम वर वरन जुग सावन भादव मास ॥ १९ ॥

आखर मधुर मनोहर दोऊ । वरन विलोचन जन जिय जोऊ ॥  
 सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू । लोक लाहू परलोक निवाहू ॥  
 कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके । राम लखन सम प्रिय तुलसी के ॥  
 वरनत वरन प्रीति बिलगाती । ब्रह्म जीव सम सहज सँधाती ॥  
 नर नारायन सरिस सुभ्राता । जग पालक विसेपि जन त्राता ॥  
 भगति सुतिय कल करन विभूपन । जग हित हेतु विमल विधु पूषन  
 खाद तोष सम सुगति सुधा के । कमठ सेप सम धर वसुधा के ॥  
 जन मन मंजु कंज मधुकर से । जीह जसोमति हरि हलधर से ॥

दो०—एकु छत्रु एकु मुकुटमनि सब वरननि पर जोड ।

तुलसी रघुवर नाम के वरन विराजत दोड ॥ २० ॥

समुद्गत सरिस नाम अरु नामी । प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी ॥  
 नाम रूप दुइ ईस उपाधी । अकथ अनादि सुसामुझि साधी ॥  
 को बड़ छोट कहत अपराधू । सुनि गुन भेदु समुझिहहिं साधू ॥  
 देखिअहिं रूप नाम आधीना । रूप ग्यान नहिं नाम विहीना ॥  
 रूप विसेप नाम विनु जानें । करतल गत न परहिं पहिचानें ॥  
 सुमिरिअ नाम रूप विनु देखें । आवत हृदयँ सनेह विसेपें ॥  
 नाम रूप गति अकथ कहानी । समुद्गतसुखद न परति बखानी ॥  
 अगुन सगुन विच नाम सुसाखी । उभय प्रबोधक चतुर दुभापी ॥

दो०—राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरीं द्वार ।

तुलसी भीतर वाहेरहुँ जौं चाहसि उजिआर ॥ २१ ॥

नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी । विरति विरंचि प्रपंच वियोगी ॥  
 ब्रह्मसुखहि अनुभवहिं अनूपा । अकथ अनामय नाम न रूपा ॥  
 जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ । नाम जीहँ जपि जानहिं तेऊ ॥  
 साधक नाम जपहिं लय लाएँ । होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ ॥  
 जपहिं नामु जन आरत भारी । मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी ॥  
 राम भगत जग चारि प्रकारा । सुकृती चारिउ अनघ उदारा ॥  
 चहुँ चतुर कहुँ नाम अधारा । ग्यानी प्रभुहि विसेपि पिआरा ॥  
 चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ । कलि विसेपि नहिं आन उपाऊ ॥

दो०—सकल कामना हीन जे राम भगति रस लीन ।

नाम सुप्रेम पिपूष हृद तिन्हहुँ किए मन मीन ॥ २२ ॥

अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा । अकथ अगाध अनादि अनूपा ॥  
 मोरें मत बड़ नामु दुहू तें । किए जेहिं जुग निज वस निज बूतें ॥

प्रौढ़ि सुजन जनि जानहिं जन की । कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की  
 एकु दारुगत देखिअ एकू । पावक सम जुग ब्रह्म विवेकू ॥  
 उभय अगम जुग सुगम नाम तैं । कहेउँ नामु बड़ ब्रह्म राम तैं ॥  
 व्यापकु एकू ब्रह्म अविनासी । सत चेतन घन आनँद रासी ॥  
 अस प्रभु हृदयँ अछत अविकारी । सकल जीव जग दीन दुखारी ॥  
 नाम निरूपन नाम जतन तैं । सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तैं ॥  
 दो०—निरगुन तैं एहि भाँति बड़ नाम प्रभाउ अपार ।

कहउँ नामु बड़ राम तैं निज विचार अनुसार ॥ २३ ॥  
 राम भगत हित नर तनु धारी । सहि संकट किए साधु सुखारी ॥  
 नामु सप्रेम जपत अनयासा । भगत होहिं मुद संगल वासा ॥  
 राम एक तापस तिय तारी । नाम कोटि खल कुमति सुधारी ॥  
 रिषि हित राम सुकेतुसुता की । सहित सेन सुत कीन्हि विवाकी ॥  
 सहित दोष दुख दास दुरासा । दलइ नामु जिमि रवि निसि नासा  
 भंजेउ राम आपु भव चापू । भव भय भंजन नाम प्रतापू ॥  
 दंडक वनु प्रभु कीन्ह सुहावन । जन मन अमित नाम किए पावन ॥  
 निसिचर निकर दले रघुनंदन । नामु सकल कलि कलुप निकंदन ॥

दो०—सवरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ ।

नाम उधारे अमित खल वेद विदित गुन गाथ ॥ २४ ॥

राम सुकंठ विभीषन दोऊ । राखे सरन जान सधु कोऊ ॥  
 नाम गरीव अनेक नेत्राजे । लोक वेद वर विरिद विराजे ॥  
 राम भालु कपि कटकु चटोरा । सेतु हेतु श्रमु कोन्ह न थोरा ॥  
 नामु लेत भवसिंधु सुखाहीं । करहु विचारु सुजन मन माहीं ॥

राम सकुल रन रावनु मारा। सीय सहित निज पुर पगु धारा ॥  
 राजा रामु अवध रजधानी। गावत गुन सुर मुनि वरवानी ॥  
 सेवक सुमिरत नामु सप्रीती। विनु श्रम प्रवल मोह दलु जीती ॥  
 फिरत सनेहँ मगन सुख अपने। नाम प्रसाद सोच नहिँ सपनेँ ॥  
 दो०—ब्रह्म राम तेँ नामु बड़ वरदायक वर दानि ।

रामचरित सत कोटि महेँ लिय महेस जियँ जानि ॥२५॥

### भासपारायण, पहला विश्राम

नाम प्रसाद संभु अविनासी। साजु' अमंगल मंगल रासी ॥  
 सुकसनकादि सिद्ध मुनिजोगी। नाम प्रसाद ब्रह्मसुख भोगी ॥  
 नारद जानेउ नाम प्रतापू। जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू ॥  
 नामु जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू। भगत सिरोमनि भे प्रह्लादू ॥  
 ध्रुवँ सगलानि जपेउ हरि नाऊँ। पायउ अचल अनूपम ठाऊँ ॥  
 सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू ॥  
 अपतु अजामिलु गजु गनिकाऊ। भए मुकुत हरि नाम प्रभाऊ ॥  
 कहाँ कहाँ लागि नाम बड़ाई। रामु न सकहिँ नाम गुन गाई ॥  
 दो०—नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु ।

जो सुमिरत भयो भाँग तेँ तुलसी तुलसीदासु ॥२६॥  
 चहुँ जुग तोनि काल तिहुँ लोका। भए नाम जपि जीव विसोका ॥  
 वेद पुरान संत मत एहू। सकल सुकृत फल राम सनेहू ॥  
 ध्यानु प्रथम जुग मखविधि दूजेँ। द्वापर परितोपत प्रभु पूजेँ ॥  
 कलि केवल मल मूल मलीना। पाप पयोनिधि जन मन मीना ॥  
 नाम कामतरु काल कराला। सुमिरत समन सकल जग जाला ॥

राम नाम कलि अभिमत दाता । हित परलोक लोक पितु माता ॥  
 नहीं कलि करम न भगति विवेकू । राम नाम अवलंबन एकू ॥  
 कालनेमि कलि कपट निधानू । नाम सुमति समरथ हनुमानू ॥

दो०—राम नाम नरकेसरी कनककसिपु कलिकाल ।

जापक जन प्रह्लाद जिमि यालिहिदलि रसाल ॥ २७ ॥

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ । नाम जगत मंगरु दिसि दसहूँ ॥  
 सुमिरि सो नाम राम गुन गाथा । करउँ नाइ रघुनाथहि माथा ॥  
 मोरि सुधारिहि सो सब भाँतो । जासु कृपा नहीं कृपाँ अघातो ॥  
 राम सुखामि कुसेवकु मोसो । निज दिसि देखि दयानिधि पोसो ॥  
 लोकहुँ वेद सुसाहिव रीतो । विनय मुनत पहि वानत प्रोतो ॥  
 गनी गरीव ग्रामनर नागर । पंडित मूढ़ मलोन उजागर ॥  
 सुकवि कुकवि निज मति अनुशरो । नृपहि सराहत नर नारी ॥  
 साधु सुजान सुसोल नृपाला । ईस अंस भव परम कृपाला ॥  
 सुनिसनमानहिं सवहिं सुवानो । भनिति भगनि नति गति पहिचानी ॥  
 यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ । जान सिरोमनि कोसलराऊ ॥  
 रीझत राम सनेह निसोतें । को जग मंद मलिनमति मोतें ॥

दो०—सठ सेवक की प्रीति रुचि रखिइहिं राम कृपालु ।

उपल किए जलजान जेहिं सचिव सुमति कपि भालु ॥ २८ ( ) ॥

हौंहु कहावत सबु कहत राम सइत उपहास ।

साहिव सीतानाथ सो सेवक तुलसोदास ॥ २८ ( ) ॥

अति वडि मोरं डिडाई खोरो । मुनि अब नरकहुँ नाक सकोरो ॥  
 समुझि सहम मोहि अपडर अपनें । सो सुधि राम कोन्हि नहीं सपनें ॥

सुनि अवलांकि सुचित चख चाही । भगति मोरि मति स्वामि सराही  
 कहत नसाइ होइ हियँ नीकी । रीझत राम जानि जन जी की ॥  
 रहति न प्रभु चित चूक किए की । करत सुरति सय बार हिए की ॥  
 नेहिं अघ वधेउ ब्याध जिमि बाली । फिरि सुकंठ सोइ कीहि कुचाली ॥  
 सोइ करतूति विभीषन केरी । सपनेहुँ सो न राम हियँ हेरी ॥  
 ते भरतहि भेंटत सनमाने । राजसभाँ रघुवीर बखाने ॥

दो०—प्रभु तरु तर कपि डार पर ते किए आपु समान ।

तुलसी कहँ न राम से साहिव सीलनिधान ॥२९(क)॥

राम निकाइँ रावरी है सब ही को नोक ।

जौं यह साँची है सदा तौ नीको तुलसीक ॥२९(ख)॥

एहि विधि निज गुन दोष कहि सवहि बहुरि सिरु नाइ ।

बरनउँ रघुवर विसद जसु सुनि कलि कलुप नसाइ ॥२९(ग)॥

जागवलिक जो कथा सुहाई । भरद्वाज मुनिवरहि सुनाई ॥

कहिहउँ सोइ संवाद बखानी । सुनहुँ सकल सजन सुखु मानी ॥

संभु कीन्ह यह चरित सुहावा । बहुरि कृपा करि उमहि सुनावा ॥

सोइ सिव कागभुसुंडिहि दीन्हा । राम भगत अधिकारी चीन्हा ॥

तेहि सन जागवलिक पुनि पात्रा । तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गात्रा ॥

ते श्रोता वक्ता समसीला । सबँदरसी जानहिं हरिलाला ॥

जानहिं तीनि काल निज ग्याना । करतल गत आमलक समाना ॥

औरउ जे हरिभगत सुजाना । कहहि सुनहिं समुझहिं विधि नाना ॥

दो०—मैं पुनि निज गुर सन सुनी कथा सो स्रकरखेत ।

समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत ॥३०(क)॥



श्रोता वक्ता ग्याननिधि कथा राम कै गूढ़ ।

किमि समुझौ मैं जीव जड़ कलिमल ग्रसित विमूढ़ ॥ ३० (ख) ॥

तदपि कही गुर बारहिं वारा । समुझि परी कछु मति अनुसार ॥  
 भाषावद्ध करवि मैं सोई । मोरें मन प्रबोध जेहिं होई ॥  
 जस कछु बुधि विवेक बल मेरें । तस कहिहउँ हियँ हरि के प्रेरें ॥  
 निज संदेह मोह भ्रम हरनी । करउँ कथा भव सरिता तरनी ॥  
 बुध विश्राम सकल जन रंजनि । रामकथा कलि कलुष विभंजनि ॥  
 रामकथा कलि पंनग भरनी । पुनि विवेक पावक कहँ अरनी ॥  
 रामकथा कलि कामद गाई । सुजन सजीवनि मूरि सुहाई ॥  
 सोइ वसुधातल सुधा तरंगिनि । भय भंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि ॥  
 असुर सेन सम नरक निकंदिनि । साधु विबुध कुल हित गिरिनंदिनि  
 संत समाज पयोधि रमा सी । बिस्व भार भर अचल छमा सी ॥  
 जम गन मुहँ मसि जग जमुना सी । जीवन मुकुति हेतु जनु कासी ॥  
 रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी । तुलसिदास हित हियँ हुलसी सी ॥  
 सिवप्रिय मेकल सैल सुता सी । सकल सिद्धि सुख संपति रासी ॥  
 सदगुन सुरगन अंब अदिति सी । रघुवर भगति प्रेम परमिति सी ॥

दो०—रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु ।

तुलसी सुभग सनेह वन सिय रघुवीर विहारु ॥ ३१ ॥

रामचरित चिंतामनि चारु । संत सुमति तिय सुभग सिंगारु ॥  
 जग मंगल गुन ग्राम राम के । दानि मुकुति धन धरम धाम के ॥  
 सदगुर ग्यान विराग जोग के । विबुध वैद भव भीम रोग के ॥  
 जननि जनक सिय राम प्रेम के । बीज सकल व्रत धरम नेम के ॥

समन पाप संताप सोक के । प्रिय पालक परलोक लोक के ॥  
 सचिव सुभट भूपति विवार के । कुंभज लोभ उदधि अपार के ॥  
 काम कोह कलिमल करिगन के । केहरि सावक जन मन वन के ॥  
 अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के । कामद धन दारिद्र दवारि के ॥  
 मंत्र महामनि विषय व्याल के । भेटत कठिन कुअंक भाल के ॥  
 हरन मोह तम दिनकर कर से । सेवक सालि पाल जलधर से ॥  
 अभिमत दानि देवतरु वर से । सेवत सुलभ सुखद हरिहर से ॥  
 सुकवि सरद नभ मन उडगन से । रामभगत जन जीवन धन से ॥  
 सकल सुकृत फल भूरि भोग से । जग हित निरुपधि साधु लोग से ॥  
 सेवक मन मानस भराल से । पावन गंग तरंग माल से ॥

दो०—कुपथ कुतरक कुचालि कलि कपट दंभ पापंड ।

दहन राम गुन ग्राम जिमि ईंधन अनल प्रचंड ॥३२(क)॥

रामचरित राकेस कर सरिस सुखद सव काहु ।

सजन कुमुद चकोर चित हित विसेपि बड़ लाहु ॥३२(ख)॥

कीन्हि प्रस्न जेहि भाँति भवानी । जेहि विधि मंकर कहा बखानी ॥  
 सो सव हेतु कहव मैं गाई । कथाप्रबंध विचित्र बनाई ॥  
 जेहि यह कथा सुनी नहिं होई । जनि आचरजु करै सुनि सोई ॥  
 कथा अलौकिक सुनहिं जे ग्यानी । नहिं आचरजु करहिं अस जानी ॥  
 रामकथा कै मिति जग नाहीं । असि प्रतीति तिन्ह के मन माहीं ॥  
 नाना भाँति राम अवतारा । रामायन सत कोटि अपारा ॥  
 कल्पभेद हरि चरित सुहाए । भाति अनेक सुनीसन्ह गाए ॥  
 करिअन संसय अस उर आनी । सुनिअ कथा सादर रति मानी ॥

दो०—राम अनंत अनंत गुन अमित कथा बिस्तार ।

सुनि आचरजु न मानिहहिं जिन्ह कें बिमल विचार ॥ ३३ ॥

एहि विधि सब संसय करि दूरी । सिर धरि गुर पद पंकज धूरी ॥  
 पुनि सबही बिनवउँ कर जोरी । करत कथा जेहिं लाग न खोरी ॥  
 सादर सिवहि नाइ अब माथा । बरनउँ बिसद राम गुन गाथा ॥  
 संबत सोरह सै एकतीसा । करउँ कथा हरि पद धरि सीसा ॥  
 नौमी भौस वार मधु मासा । अवधपुरीं यह चरित प्रकासा ॥  
 नेहि दिन राम जनम श्रुति गावहिं । तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं ॥  
 असुर नाग खग नर मुनि देवा । आइ करहिं रघुनायक सेवा ॥  
 जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना । करहिं राम कल कीरति गाना ॥

दो०—मज्जहिं सज्जन वृंद बहु पावन सरजू नीर ।

जपहिं राम धरि ध्यान उर सुंदर स्याम सरीर ॥ ३४ ॥

दरस परस मज्जन अरु पाना । हरइ पाप कह वेद पुराना ॥  
 नदी पुनीत अमित महिमा अति । कहिन सकइ सारदा बिमलमति ॥  
 राम धामदा पुरी सुहावनि । लोक समस्त विदित अति पावनि ॥  
 चारि खानि जग जीव अपारा । अवध तजें तनु नहिं संसारा ॥  
 सब विधि पुरी मनोहर जानी । सकल सिद्धिग्रद मंगल खानी ॥  
 बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा । सुनत नसाहिं काय मद दंभा ॥  
 रामचरितमानस एहि नामा । सुनत श्रवन पाइअ विश्रामा ॥  
 मन करि विषय अनल वन जरई । होइ सुखी जौं एहिं सर परई ॥  
 रामचरितमानस मुनि भावन । विरचेउ संभु सुहावन पावन ॥  
 त्रिबिध दोष दुख दारिद दावन । कलि कुचालि कलि कलष नसावन ॥

रवि महेस निज मानस राखा । पाइ सुसमउ सिवा सन भाषा ॥  
 तातें रामचरितमानस चर । धरेउ नाम हियँ हेरि हरपिहर ॥  
 कहउँ कथा सोइ सुखद सुहाई । सादर सुनहु सुजन मन लाई ॥

दो०—जस मानस जेहि विधि भयउ जग प्रचार जेहि हेतु ।

अब सोइ कहउँ प्रसंग सब सुमिरि उमा वृषकेतु ॥ ३५ ॥

संभु प्रसाद सुमति हियँ हुलसी । रामचरितमानस कवि तुलसी ॥  
 करइ मनोहर मति अनुहारी । सुजन सुवित सुनि लेहु सुधारी ॥  
 सुमति भूमि थल हृदय अगाध । वेद पुरान उदधि घन साधू ॥  
 परपहि राम सुजस चर चारी । मधुर मनोहर मंगलकारी ॥  
 लीलासगुन जो कहिं बखानी । सोइ खण्डता करइ मळ हानी ॥  
 प्रेम भगति जो बरनि न जाई । सोइ मयुरता सुसांतलताई ॥  
 सो जल सुकृत सालि हित होई । राम भगत जन जीवन सोई ॥  
 मेधा महि गत सो जल पावन । सकलि श्रवन मग चलेउ सुशवन  
 भरेउ मुमानस सुथल थिराना । सुखद सोत रुचि चारु विराना ॥

दो०—सुठि सुंदर संवाद चर विरचे बुद्धि विचारि ।

तेइ एहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि ॥ ३६ ॥

सप्त प्रबंध सुभग सांपाना । ग्यान नयन निरखत मन माना ॥  
 रघुपति महिमा अगुन अवाधा । वरनत्र सोइ चर चारि अगाधा ॥  
 राम सोय जस सलिल सुधासम । उपमा बोचि विनास मनोरम ॥  
 पुरइनि सवन चारु चौपाई । जुगुति मंजु मनि सीप सुहाई ॥  
 छंद सोरठा सुंदर दाहा । साइ बहुरंग कनक कुल साहा ॥  
 अरथ अनूप सुभाव सुभासा । साइ पराग महारंद सुभासा ॥

सुकृत पुंज मंजुल अलि माला । ग्यान विराग विचार मराला ॥

नि अवरैव कवित गुन जाती । मीन मनोहर ते बहुभाँती ॥

अरथ धरम कामादिक चारी । कहव ग्यान विग्यान विचारी ॥

नव रस जप तप जोग विरागा । ते सब जलचर चारु तड़ागा ॥

सुकृती साधु नाम गुन गाना । ते विचित्र जलविहग समाना ॥

सभा चहुँ दिसि अवर्राई । श्रद्धा रितु बसंत सम गाई ॥

भगति निरूपन विविध विधाना । छमा दया दम लता बिताना ॥

जम नियम फूल फल ग्याना । हरि पद रतिरस बेद बखाना ॥

औरउ कथा अनेक प्रसंगा । तेइ सुक पिक बहुबरन बिहंगा ॥

दो०—पुलक चाटिका बाग बन सुख सुबिहंग बिहारु ।

माली सुमन सनेह जल सींचत लोचन चारु ॥ ३७ ॥

जे गावहिं यह चरित सँभारे । तेइ एहि ताल चतुर रखवारे ॥

सदा सुनहिं सादर नर नारी । तेइ सुरवर मानस अधिकारी ॥

अति खल जे विषई वग कागा । एहि सर निकट न जाहिं अभागा ॥

संबुक भेक सेवार समाना । इहाँ न विषय कथा रस नाना ॥

तेहि कारन आवत हियँ हारे । कामी काक बलाक विचारे ॥

आवत एहिं सर अति कठिनाई । राम कृपा विनु आइ न जाई ॥

कठिन कुसंग कुपंथ कराला । तिन्ह के वचन बाध हरि व्याला ॥

गृह कारज नाना जंजाला । ते अति दुर्गम सैल विसाला ॥

बन बहु विषम मोह मद माना । नदीं कुतर्क भयंकर नाना ॥

दो०—जे श्रद्धा संवल रहित नहिं संतन्ह कर साथ ।

तिन्ह कहँ मानस अगम अति जिन्हहि न प्रियरघुनाथ ॥ ३८ ॥

जौं करि कष्ट जाइ पुनि कोई। जातहि नोद जुड़ाई होई ॥  
 जड़ता जाइ विषम उर लागी। गएहुँ न मज्जन पाव अभागी ॥  
 करि न जाइ सर मज्जन पाना। फिरि आवइ समेत अभिमाना ॥  
 जौं बहोरि कोउ पूछन आवा। सर निंदा करि ताहि बुझावा ॥  
 सकल विघ्न व्यापहि नहिं तेही। राम सुकृपाँ बिलोकहिं जेही ॥  
 सोइ सादर सर मज्जनु करई। महा घोर त्रयताप न जरई ॥  
 ते नर यह सर तजहिं न काऊ। जिन्ह के राम चरन भल भाऊ ॥  
 जो नहाइ चह एहिं सर भाई। सो सतसंग करउ मन लाई ॥  
 अस मानस मानस चख चाही। भइ कवि बुद्धि विमल अवगाही ॥  
 भयउ हृदयँ आनंद उछाहू। उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू ॥  
 चली सुभग कविता सरिता सो। राम विमल जसजल भरिता सो ॥  
 सरजू नाम सुमंगल मूल। लोक वेद मत मंजुल कूल ॥  
 नदी पुनीत सुमानस नंदिनि। कलिमल वृन तरु मूल निकंदिनि ॥  
 दो०—श्रोता त्रिविध समाज पुर ग्राम नगर दुहुँ कूल ।

संतसभा अनुपम अवध सकल सुमंगल मूल ॥ ३९ ॥

रामभगति सुरसरितहि जाई। मिली सुकीरति सरजु सुहाई ॥  
 सानुज राम समर जसु पावन। मिलेउ महानदु सोन सुहावन ॥  
 जुग विच भगति देवधुनि धारा। सोहति सहित सुविरति विचारा ॥  
 त्रिविध ताप त्रासक तिमुहानी। राम सरूप सिंधु समुहानी ॥  
 मानस मूल मिली सुरसरिही। सुनत गुजन मन पावन करिही ॥  
 विच विच कथा विचित्र विभागा। जनु सरि तीर तीर बन वागा ॥  
 उमा महेस विवाह चराबी। ते जलचर अगनित बहु भाँती ॥

रघुवर जनम अनंद वधाई। भवँ तरंग मनोहरताई ॥

दो०—वालचरित चहु बंधु के वनज विपुल बहुरंग ।

नृप रानी परिजन सुकृत मधुकर वारिविहंग ॥ ४० ॥

सीय स्वयंवर कथा सुहाई। सरित सुहावनि सो छवि छाई ॥

नदी नाव पट्ट प्रस्न अनेका। केवट कुसल उतर सविवेका ॥

सुनि अनुकथन परस्पर होई। पथिक समाज सोह सरि सोई ॥

घोर धार भृगुनाथ रिसानी। घाट सुबद्ध राम वर वानी ॥

सानुज राम विवाह ।हू। सो भ उमग सुखद सब काहू ॥

कहत सुनत हरषहि पुलकाहीं। ते सुकृती मन मुदित नहाहीं ॥

राम तिलक हित मंगल साजा। परब जोग ज जुरे जा ॥

काई कुमति केकई केरी। परी जासु फल विपति बनेरी ॥

दो०—समन अमित उतपात भरतचरित जपजाग ।

कलि अघखल अवगुन कथन ते जलमल वग काग ॥ ४१ ॥

कीरति सरित छहँ रितु रूरी। समय सुहावनि पावनि भूरी ॥

हिम हिमसैलसुता सिव व्याहू। सि सि सुखद प्रभु जनम उछाहू ॥

वरनच राम विवाह समाजू। मुद मंगलमय रितुराजू ॥

ग्रीषम दुसह राम वनगवन्। पंथकथा खर आतष पवन् ॥

वरपा घोर निसाचर रारी। सुरकुल सालि सुमंगलकारी ॥

राम राज सुख विनय बड़ाई। विसद सुखद सोइ सरद सुहाई ॥

सती सिरोमनि सिय गुन गाथा। सोइ गुन अमल अनूपम पाथा ॥

भरत सुभाउ सुसीतलताई। सदा एकरस वरनि न जाई ॥

बो०—अवलोकनि बोलनि मिळनि प्रीति नरसपर हास ।

भायप भलि चहु वंधु की जल माधुरी सुवास ॥ ४२ ॥

आरति विनय दीनता मोरी । लघुता ललित सुचारि न थोरी ॥

अदभुत सलिल मुनत गुनकारी । आस पिआस मनोमल हारी ॥

राम मुप्रेमहि पोपत पानी । हरत सकल कलि कलुष गळानी ॥

भव श्रम सोपक तोपक तोषा । समन दुरित दुख दारिद दोषा ॥

काम कोह मद मोह नसावन । विमल विवेक विराग वढावन ॥

सादर मज्जन पान किए तें । मिटहिं पाप परिताप हिए तें ॥

जिन्ह एहिं चारि न मानस धोए । ते कायर कलिहाल विगोए ॥

तृपित निरखि रवि कर भव चारो । फिरिहहिं मृग जिमि जीव दुखारी

बो०—मति अनुहारि सुचारि गुन गन गनि मन अन्हवाइ ।

सुमिरि भवानो संकरहि कइ कवि कथा सुहाइ ॥ ४३(क) ॥

अत्र रघुपति पद पंकरुइ हियँ धरि पाइ प्रसाद ।

कहउँ जुगल मुनिवर्ष कर मिलन सुभग संवाद ॥ ४३(ख) ॥

भरद्वाज गुनि बसहिं प्रयागा । तिन्हहि राम पद अति अनुरागा

तास सम दम दया निधाना । परमारथ पथ परम सुजाना ॥

माघ मकरगत रवि जब होई । तोरथपतिहिं आव सब कोई ॥

देव दनुज किंनर नर श्रेणी । सादर मज्जहिं सकल त्रिवेणी ॥

पूजहिं माधव पद जलजाता । परसि अखय बडु हरपहिं गाता ॥

भरद्वाज आश्रम अति पावन । परम रम्य मुनिवर मन भावन ॥

तहां होइ गुनि रिपय सनाजा । जाहिं जे मज्जन तोरथराजा ॥

मज्जहिं प्रात समेव उज्जहा । कहहिं परसपर हरि गुन गाहा ॥





जैसें मिटै मोर भ्रम भारी। कहहु सो कथा नाथ विस्तारी ॥  
जागवलिक बोले मुसुकाई। तुम्हहि विदित रघुपति प्रभुताई ॥  
रामभगत तुम्ह मन क्रमवानी। चतुराई तुम्हारि मैं जानी ॥  
चाहहु सुनै राम गुन गूढ़ा। कीन्हिहु प्रसन्न मनहुँ अति मूढ़ा ॥  
तात सुनहु सादर मनु लाई। कहउँ राम कै कथा सुहाई ॥  
महामोहु महिपेसु विसाला। रामकथा कालिका कराला ॥  
रामकथा ससि किरन समाना। संत चकोर करहिं जेहि पाना ॥  
ऐसेइ संसय कीन्ह भवानी। महादेव तव कहा बखानी ॥  
दो०—कहउँ सो मति अनुहारि अब उमा संभु संवाद ।

भयउ समय जेहि हेतु जेहि सुनु मुनि मिटिहि विपाद ॥४७॥

एक वार त्रेता जुग माहीं। संभु गए कुंभज रिपि पाहीं ॥  
संग सती जगजननि भवानी। पूजे रिपि अखिलेस्वर जानी ॥  
रामकथा मुनिवर्ज बखानी। सुनी महेस परम सुखु मानी ॥  
रिपि पूछी हरिभगति सुहाई। कही संभु अधिकारी पाई ॥  
कहत सुनतरघुपति गुन गाथा। कछु दिन तहाँ रहे गिरिनाथा ॥  
मुनि सन विदा मागि त्रिपुरारी। चले भवन सँग दच्छकुमारी ॥  
तेहि अवसर भंजन महिभारा। हरि रघुवंस लीन्ह अवतारा ॥  
पिता वचन तजि राजु उदासी। दंडक वन विचरत अघिनासी ॥  
दो०—हृदयँ विचारत जात हर केहि विधि दरसनु होइ ।

गुप्त रूप अवतरेउ प्रभु गएँ जान सबु कोइ ॥४८(क)॥

सो०—संकर उर अति छोभु सती न जानहिं मरमु सोइ ।

तुलसी दरसन लोभु मन डरु लोचन लालची ॥४८(ख)॥

रावन मरन मनुज कर जाचा । प्रभु विधि वचनु कोन्ह चहं साचा ॥  
 जाँ नहिं जाउँ रहइ पछितावा । करत विचारु न वनत वनावा ॥  
 एहि विधि भए सोचवसईसा । तेही समय जाइ दससीसा ॥  
 लीन्ह नीच मारीचहि संगी । भयउ तुरत सोइ कपट कुरंगा ॥  
 करि छलु मूढ हरी वैदेही । प्रभु प्रभाउ विदित न तेही ॥  
 मृग वधिबंधु सहित हरि आए । आश्रमु देरि नयन जल छाए ॥  
 विरह विकल नर इव रघुराई । खोजत विपिन फिरत दोउ भाई ॥  
 कवहूँ जोग वियोग न जाकें । देखा प्रगट विरह दुखु ॥

दो०—अति विचित्र रघुपति चरित जानहिं परम सुजान ।

जे मतिमंद विमोह हृदयँ धरहिं कछु आन ॥४९॥

संभु समय तेहि रामहि देखा । उप हियँ अ हरषु विसेषा ॥  
 भरि लोचन छवि सिंधु निहारी । कुसमय जानि न कोन्हि विन्शारी ॥  
 जय सच्चिदानंद जग पावन । अस कहि चलेउ मनोज नसावन ॥  
 चले ज सिव सती समेता । पुनि पुनि पुलकत कृपानिकता ॥  
 सतीं सो दसा संभु कै देखो । उर उपजा संदेहु विषेपी ॥  
 संकरु जगतबंधु जगदीसा । सुर नर मुनि सब नावत सांसा ॥  
 तिन्ह नृपसुतहि कीन्ह परनामा । कहि सच्चिदानंद परधामा ॥  
 भए मगन छवि तासु विलोकी । अजहूँ प्रीति उर रहति न रोकी ॥

दो०—ब्रह्म जो व्यापक विरज अज अकल अनीह अभेद ।

सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत वेद ॥५०॥

विष्णु जो सुर हित नरतनु धारी । सोउ सर्वग्य जथा त्रिपुरारी ॥  
 खोजइ सो कि अग्य इव नारी । ग्यानधाम श्रोपति असुरारी ॥

संभृगिरा पुनि मृषा न होई।सिव सर्वग्य जान सवु कोई॥  
 अस संसय मन भयउ अपारा।होइ न हृदयँ प्रबोध प्रचारा॥  
 जद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी।हर अंतरजामी सव जानी॥  
 सुनहि सती तव नारि सुभाऊ।संसय अस न धरिअ उर काऊ॥  
 जासु कथा कुंभज रिपि गाई।भगति जासु मैं मुनिहि सुनाई॥  
 सोइ मम इष्टदेव रघुवीरा।सेवत जाहि सदा मुनि धीरा॥

छं०—मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत विमल मन जेहि घ्यावहीं ।  
 कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहीं ॥  
 सोइ रामु ब्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति माया धनी ।  
 अवतरेउ अपने भगत हित निजतंत्र नित रघुकुलमनी ॥

सो०—लाग न उर उपदेसु जदपि कहेउ सिवँ वार बहु ।  
 बोले विहसि महेसु हरिमाया बलु जानि जियँ ॥ ५१ ॥  
 जौं तुम्हरे मन अति संदेहू।तौं किन जाइ परीछा लेहू॥  
 तब लगि बैठ अहउँ बटछाहीं।जब लगि तुम्ह ऐहहु मोहि पाहीं॥  
 जैसें जाइ मोह भ्रम भारी।करेहु सोजतनु विवेक विचारी॥  
 चलीं सती सिव आयसु पाई।करहिं विचारु करौं का भाई॥  
 इहाँ संभु अस मन अनुमाना।दच्छसुता कहुँ नहिं कल्याना॥  
 मोरेहु कहे न संसय जाहीं।विधि विपरीत भलाई नाहीं॥  
 होइहि सोइ जो रामरचिराखा।को करि तर्क बढ़ावै साखा॥  
 अस कहि लगे जपन हरिनामा।गई सती जहँ प्रभु सुखधामा॥

दो०—पुनि पुनि हृदयँ विचारु करि धरि सीता कर रूप ।  
 आगे होइ चलि पंथ तेहिं जेहिं आवत नरभूप ॥५२॥

ललितमन दीख उमाकृत वेषा। चकित भए भ्रम हृदयँ विसेषा ॥  
 कहि न सकत कलु अति गंभीरा। प्रभु प्रभाउ जानत मतिधीरा ॥  
 सती कपटु जानेउ सुरस्वामी। सबदरसी सब अंतरजामी ॥  
 सुमिरत जाहि मिटइ अग्याना। सोइ सरवग्य रामु भगवाना ॥  
 सती कीन्ह चह तहँहुँ दुराऊ। देखहु नारि सुभाव प्रभाऊ ॥  
 निज माया बलु हृदयँ बखानी। बोले बिहसि रामु मृदु बानी ॥  
 जोरि पानि प्रभु कीन्ह प्रनामू। पिता समेत लीन्ह निज नामू ॥  
 कहेउ बहोरि कहाँ वृषकेतू। विपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू ॥

दो०—राम बचन मृदु गूढ़ सुनि उपजा अँ संकोचु ।

सती समीत महेस पहिँ चलीं हृदयँ बड़ सोचु ॥५३॥

मैं संकर कर कहा न माना। निज अग्यानु राम पर आना ॥  
 जाइ उतरु अब देहउँ काहा। उर उपजा अति दारुन दाहा ॥  
 जाना राम सतीं दुखु पावा। निज प्रभाउ कलु प्रगटि जनाव ॥  
 सतीं दीख कौतुकु मग जाता। आगें रामु सहित श्री भ्राता ॥  
 फिरि चितवा पाछें प्रभु देखा। सहित बंधु सिय सुंदर वेषा ॥  
 जहँ चितवहिँ तहँ प्रभु आसीना। सेवहिँ सिद्ध मुनीस प्रवीना ॥  
 देखे सिव विधि विष्णु अनेका। अमित प्रभाउ एक तें एका ॥  
 बंदत चरन करत प्रभु सेवा। विविध वेष देखे सब देवा ॥

दो०—सती विधात्री इंदिरा देखीं अमित अनूप ।

जेहिँ जेहिँ वेष अजादि सुर तेहिँ तेहिँ तन अनुरूप ॥५४॥

देखे जहँ तहँ रघुपति जेते। सक्तिन्ह सहित सकल सुर तेते ॥  
 जीव चराचर जो संसारा। देखे सकल अनेक प्रकारा ॥

पूजहिं प्रभुहि देव बहु बेपा । राम रूप दूसर नहिं देखा ॥  
 अवलोके रघुपति बहुतेरे । सीता सहित न बेप घनेरे ॥  
 सोइ रघुवर सोइ लछिमनु सीता । देखि सती अति भई सभिता ॥  
 हृदय कंप तन सुधिकलु नाहीं । नयन मूदि वैठीं मग माहीं ॥  
 बहुरि विलोकेउ नयन उधारी । कलु न दीख तहँ दच्छकुमारी ॥  
 पुनि पुनि नाइ राम पद सीसा । चलों तहाँ जहँ रहे गिरीसा ॥  
 दो०—गई समीप महेस तब हँसि पूछी कुसलात ।

लीन्हि परीछा कवन विधि कहहु सत्य सब वात ॥ ५५ ॥

### मासपारायण, दूसरा विश्राम

सतीं समुझि रघुवीर प्रभाऊ । भय बस सिव सन कीन्ह दुराऊ ॥  
 कलु न परीछा लोन्हि गोसाईं । कीन्ह प्रनामु तुम्हारिहि नाई ॥  
 जो तुम्ह कहा सो मृषा न होई । मोरें मन प्रतीति अति सोई ॥  
 तब संकर देखेउ धरि ध्याना । सतीं जो कीन्ह चरित सधु जाना ॥  
 बहुरि राममायहि सिरु नावा । प्रेरि सतिहि जेहिं झूठ कहावा ॥  
 हरि इच्छा भावी बलवाना । हृदयँ विचारत संभु सुजाना ॥  
 सतीं कीन्ह सीता कर बेपा । सिव उर भयउ विपाद विसेपा ॥  
 जौं अब करउँ सती सन प्रीती । मिटइ भगति पथु हाँइ अनीती ॥  
 दो०—परम पुनीत न जाइ तजि किएँ प्रेम बड़ पापु ।

प्रगटि न कहत महेस कलु हृदयँ अधिक मंतापु ॥ ५६ ॥

तब संकर प्रभु पद सिरु नावा । सुमिरत रामु हृदयँ अस आवा ॥  
 एहिं तन सतिहि भेट मोहि नाहीं । सिव संकल्पु कीन्ह मन माहीं ॥  
 अस विचारि संकरु मतिधीरा । चले भवन सुमिरत रघुवीरा ॥

चलत गगन भै गिरा सुहाई । जय महेस भलि भगति द्वाई ॥  
 अस पन तुम्ह बिनु करइ को आना । राम भगत समरथ भगवाना ॥  
 सुनि न भगिरा सती उर सोचा । पूछा सिवहि समेत सकोचा ॥  
 कीन्ह कवन पन कहहु कृपाला । सत्यधाम प्रभु दीनदयाला ॥  
 नदपि सती पूछा बहु भाँती । तदपि न कहेउ त्रिपुर आराती ॥  
 दो०—सती हृदयँ अनुमान किय सबु जानेउ सर्वग्य ।

कीन्ह कपटु मै संभु सन नारि सहज जड़ अग्य ॥५७(क)॥

सो०—जलु पय सरिस विकाइ देखहु प्रीति कि रीति भलि ।

बिलग होइ रसु जाइ कपट खटाई परत पुनि ॥५७(ख)॥

हृदयँ सोचु समुझत निज करनी । चिंता अमित जाइ नहिं वरनी ॥  
 कृपासिंधु सिव परम अगाधा । प्रगट न कहेउ मोर अपराधा ॥  
 संकर रुख अवलोकि भवानी । प्रभु मोहि तजेउ हृदयँ अकुलानी ॥  
 निज अघ समुझि न कछु कहि जाई । तपइ अवाँ इव उर अधिकाई ॥  
 सतिहि ससोच जानि वृषकेतू । कहीं कथा सुंदर सुख हेतू ॥  
 वरनत पंथ विविध इतिहासा । विखनाथ पहुँचे कैलासा ॥  
 तहँ पुनि संभु समुझि पन आपन । बैठे वट तर करि कमलासन ॥  
 संकर सहज सरूपु सम्हारा । लागि समाधि अखंड अपारा ॥

दो०—सती वसहिं कैलास तव अधिक सोचु मन माहिं ।

मरमु न कोऊ जान कछु जुग सम दिवस सिराहिं ॥ ५८ ॥

नित नव सोचु सती उर भारा । कब जैहउँ दुख सागर पारा ॥  
 मै जो कीन्ह रघुपति अपमाना । पुनि पति वचनु मृषा करि जाना ॥  
 सो फलु मोहि विधाताँ दीन्हा । जो कछु उचित रहा सोइ कीन्हा ॥

अब विधि अस बूझिअ नहिं तोही । संकर विमुख जिआवसि मोही ॥  
 कहि न जाइ कछु हृदय गलानी । मन महुँ रामहि सुमिर सयानी ॥  
 जौं प्रभु दीनदयालु कहावा । आरति हरन वेद जसु गावा ॥  
 तौ मैं विनय करउँ कर जोरी । छूटउ बेगि देह यह मोरी ॥  
 जौं मोरें सिव चरन सनेहू । मन क्रम बचन सत्य व्रतु एहू ॥

दो०—तौ सबदरसी मुनिअ प्रभु करउ सो बेगि उपाइ ।

होइ मरनु जेहिं विनहिं श्रम दुसह विपत्ति विहाइ ॥५९॥

एहि विधि दुखित प्रजेसकुमारी । अकथनीय दारुन दुख भारी ॥  
 चीतें संवत सहस सतासी । तजी समाधि संभु अविनासी ॥  
 राम नाम सिव सुमिरन लागे । जानेउ सतीं जगतपति जागे ॥  
 जाइ संभु पद बंदनु कीन्हा । सनमुख संकर आसनु दीन्हा ॥  
 लगे कहन हरिकथा रसाला । दच्छ प्रजेस भए तेहि काला ॥  
 देखा विधि विचारि सब लायक । दच्छहि कीन्ह प्रजापति नायक ॥  
 बड़ अधिकार दच्छ जय पावा । अति अभिमानु हृदयें तब आवा ॥  
 नहिं कोउ अस जनमा जग माहों । प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं ॥

दो०—दच्छ लिए मुनि बोलि सब करन लगे बड़ जाग ।

नेवते सादर सकल सुर जे पावत मख भाग ॥ ६० ॥

किंनर नाग सिद्ध गंधर्वा । बधुन्ह समेत चले सुर सर्वा ॥  
 विष्णु विरंचि महेसु विहाई । चले सकल सुर जान बनाई ॥  
 सतीं विलोके व्योम विमाना । जात चले सुंदर विधि नाना ॥  
 सुर सुंदरी करहिं कल गाना । सुनत श्रवन छूटहिं मुनि ध्याना ॥  
 पूछेउ तब सिव कहेउ बखानो । पिता जग्य मुनि कछु हरपानो ॥





समुझिसो सतिहि भयउ अति क्रोधा । बहु बिधि जननी कीन्ह प्रबोधा  
दो०—सिव अपमानु न जाइ सहि हृदयँ न होइ प्रबोध ।

सकल सभहि हठि हटकि तव बोलीं वचन सक्रोध ॥६३॥

सुनहु सभासद सकल मुनिंदा । कही सुनी जिन्ह संकर निंदा ॥  
सो फलु तुरत लहव सब काहूँ । भली भाँति पछिताव पिताहूँ ॥  
संत संभु श्रीपति अपवादा । सुनिअ जहाँ तहँ असि मरजादा ॥  
काटिअ तासु जीभ जो बसाई । श्रवन मूदि न त चलिअ पराई ॥  
जगदातमा महेसु पुरारी । जगत जनक सब के हितकारी ॥  
पिता मंदमति निंदत तेही । दच्छ सुक संभव यह देही ॥  
तजिहउँ तुरत देह तेहि हेतू । उर धरि चंद्रमौलि वृषकेतू ॥  
अस कहि जोग अग्नि तनु जारा । भयउ सकल मख झाहाकारा ॥

दो०—सती मरनु सुनि संभु गन लगे करन मख खीस ।

जग्य विधंस विलोकि भृगु रच्छा कीन्हि मुनीस ॥६४॥

समाचार सब संकर पाए । वीरभट्टु करि कोप पठाए ॥  
जग्य विधंस जाइ तिन्ह कीन्हा । सकल सुरन्ह विधिवत फलु दीन्हा  
भै जगबिदित दच्छ गति सोई । जसि कछु संभु विमुख कै होई ॥  
यह इतिहास सकल जग जानी । ताते में संछेप बखानी ॥  
सतीं मरत हरि सन बरु मागा । जनम जनम सिव पद अनुरागा ॥  
तेहि कारन हिमगिरि गृह जाई । जनमीं पारवती तनु पाई ॥  
जव तें उमा सैल गृह जाई । सकल सिद्धि संपति तहँ छाई ॥  
जहँ तहँ मुनिन्ह सुआश्रम कीन्है । उचित वास हिम भूधर दीन्हे ॥

दो०—सदा मन फल सहित सब द्रुम नव नाना जाति ।

प्रगटीं सुंदर सैल पर मनि आकर बहु भाँति ॥६५॥

सरिता सब पुनीत जलु बहहीं । खग मृग मधुप सुखी सब रहहीं ॥  
 सहज वयरु सब जीवन्ह त्यागा । गिरि पर सकल करहिं अनुरागा ॥  
 सोह सैल गिरिजा गृह आएँ । जिमि जनु रामभगति के पाएँ ॥  
 नित नूतन मंगल गृह तासू । ब्रह्मादिक गावहिं जसु जासू ॥  
 नारद समाचार सब पाए । कौतुकहीं गिरि गेह सिधाए ॥  
 सैलराज बड़ आदर, कीन्हा । पद परवारि बर आसनु दीन्हा ॥  
 नारि सहित मुनि पद सिरु नावा । चरन सलिल सत्रु भवनु सिंचावा  
 निज साभाग्य बहुत गिरि वरना । सुता बोलि मेली मुनि चरना ॥

दो०—त्रिकालग्य सर्वग्य तुम्ह गति सर्वत्र तुम्हारि ।

कहहु सुता के दोष गुन मुनिवर हृदयँ विचारि ॥६६॥

कह मुनि विशि गूढ़ मृदु बानी । सुता तुम्हारि सकल गुन खानी ॥  
 सुंदर सहज सुसील सयानी । नाम उमा अंबिका भवानी ॥  
 सब लच्छन संपन्न कुमारी । होइहि संतत पियहि पिशारी ॥  
 सदा अचल एहि कर अहिवाता । एहि तें जमु पैहहिं पितु माता ॥  
 होइहि पूज्य सकल जग माहीं । एहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं ॥  
 एहि कर नामु सुमिरि संसारा । त्रिय चढ़िहहिं प्रतिव्रत असिधारा ॥  
 सैल सुलच्छन सुता तुम्हारी । सुनहु जे अब अवगुन दुइ चारो ॥  
 अगुन अमान मातु पितु हीना । उदासीन सब संसय छोना ॥

दो०—जोगी जटिल अकाम मन नगन अमंगल वेष ।

अस स्वामी एहि कहँ मिलिहि परी इस्त असि रेख ॥६७॥

सुनि मुनि गिरा सत्य जियँ जानो । दुख दंपतिहि उमा हरयानी ॥  
 नारदहूँ यह भेदु न जाना । दसा एक समुझव विलगाना ॥  
 सकल सखीं गिरिजा गिरि मैना । पुलक सतीर भरे जल नैना ॥  
 होइ न मृषा देवरिषि भाषा । उमा सो बचनु हृदयँ धरिराखा ॥  
 उपजेउ सिव पद कमल सनेह । मिलन कठिन मन भा संदेह ॥  
 जानि कुअवसरु प्रीति दुराई । सखी उछेग बैठी पुनि जाई ॥  
 श्रुति न होइ देवरिषि बानी । सोचहिँ दंपति सखीं सयानी ॥  
 उर धरि धीर कहइ गिरिराऊ । कहहु नाथ का करिअ उपाऊ ॥

दो०—कह मुनीस हिमवंत सुनु जो विधि लिखा लिलार ।

देव दनुज नर नाग मुनि कोउ न मेटनिहार ॥६८॥

तदपि एक मैं कहउँ उपाई । होइ करै जाँ दैउ सहाई ॥  
 जस बरु मैं बरनेउँ तुम्ह पाहीं । मिलिहि उमहि तस संसय नाही ॥  
 ज जे बर के दोष बखाने । ते सब सिव पहिँ मै अनुमाने ॥  
 जाँ विवाहु संकर सन होई । दोषउ गुन सम कह सबु कोई ॥  
 जाँ अहि सेज सयन हरि करहीं । बुध कछु तिन्ह कर दोषु न भरहीं ॥  
 भानु कृसानु सर्व रस खाहीं । तिन्ह कहँ मंद कहत कोउ नाही ॥  
 सुभ अरु असुभ सलिल सब बहई । सुरसरि कोउ अपुनीत न कहई ॥  
 समरथ कहँ नहिँ दोषु गोसाई । रवि पावक सुरसरि को नाई ॥

दो०—जाँ अस हिसिपा करहिँ नर जड़ विवेक अभिमान ।

परहिँ कल्प भरि नरक महुँ जीव कि ईस समान ॥६९॥

सुरसरि जल कृत वारुनि जाना । बचहुँ न संत करहिँ तेहि पाः  
 सुरसरि मिलें सो पावन जैसे । ईस अनीसहि अंतरु वै

संभु सहज समरथ भगवाना । एहि विवाहँ सब विधि कल्याना ॥  
 दुराराध्य पै अहहिँ महेसू । आसुतोप पुनि किएँ कलेसू ॥  
 जौ तपु करै कुमारि तुम्हारी । भाविउ मेटि सकहिँ त्रिपुरारी ॥  
 जद्यपि वर अनेक जग माहीं । एहि कहँ सिव तजि दूसर नाहीं ॥  
 वर दायक प्रनतारति भंजन । कृपासिंधु सेवक मन रंजन ॥  
 इच्छित फल बिनु सिव अवराधेँ । लहिअ न कोटि जोग जय साधेँ ॥  
 दो०—अस कहि नारद सुमिरि हरि गिरिजहि दीन्हि असीस ।

होइहि यह कल्यान अब संसय तजहु गिरीस ॥७०॥

कहिअस ब्रह्मभवन मुनि गयऊ । आगिल चरित सुनहु जस भयऊ  
 पतिहि एकांत पाइ कह मैना । नाथ न मैं समुझे मुनि बैना ॥  
 जौ घरु वरु कुलु होइ अनूपा । करिअ विवाहु सुता अनुरूपा ॥  
 न त कन्या वरु रहउ कुआरी । कंत उमा मम प्रानपिआरी ॥  
 जौ न मिलिहि वरु गिरिजहि जोगू । गिरि जड़ सहज कहिहि सबु लोगू  
 सोइ विचारि पति करेहु विवाहू । जेहिँ न बहोरि होइ उर दाहू ॥  
 अस कहि परी चरन धरि सीसा । बोले सहित सनेह गिरीसा ॥  
 वरु पावक प्रगटै ससि माहीं । नारद बचनु अन्यथा नाहीं ॥

दो०—प्रिया सोचु परिहरहु सबु सुमिरहु श्रीभगवान ।

पारवतिहि निरमयउ जेहिँ सोइ करिहि कल्यान ॥७१॥

अब जौ तुम्हहि सुता पर नेहू । तौ अस जाइ सिखावनु देहू ॥  
 करै सो तपु जेहिँ मिलहिँ महेसू । आन उपायँ न मिटिहि कलेसू ॥  
 नारद बचन सगर्भ सहेतू । सुंदर सब गुन निधि वृषकेतू ॥  
 अस विचारि म्हे तजहु असंका । सबहिँ भाँति संकरु अकलंका ॥

सुनि पति वचन हरपि मन माहीं । गई तुरत उठि गिरिजा पाहीं ॥  
 उमहि विलोकि नयन भरे वारी । सहित सनेह गोद बैठारी ॥  
 वारहिं वार लेति उर लाई । गदगद कंठ न कछु कहि जाई ॥  
 जगत मातु सर्वग्य भवानी । मातु सुखद बोलों मृदु बानो ॥  
 दो०—सुनहि मातु मैं दीख अस सपन सुनावउँ तोहि ।

सुंदर गौर सुविप्रवर अस उपदेसेउ मोहि ॥ ७२ ॥

करहि जाइ तपु सैलकुमारी । नारद कहा सो सत्य चिचारी ॥  
 मातु पितहि पुनि यह मत भावा । तपु सुखप्रद दुख दोष नसावा ॥  
 तपबल रचइ प्रपंचु विधाता । तपबल बिष्नु सकल जग त्राता ॥  
 तपबल संभु करहिं संघारा । तपबल सेपु धरइ महिभारा ॥  
 तप अधार सब सृष्टि भवानी । करहि जाइ तपु अस जियँ जानी ॥  
 सुनत वचन विसमित महतारी । सपन सुनायउ गिरिहि हँकारी ॥  
 मातु पितहि बहुविधि समुझाई । चलों उमा तप हित हरपाई ॥  
 प्रिय परिवार पिता अरु माता । भए विकल मुख आव न वाता ॥

दो०—वेदसिरा मुनि आइ तत्र सचहि कहा समुझाइ ।

पारवती महिमा सुनत रहे प्रबोधहि पाइ ॥ ७३ ॥

उर धरि उमा प्रानपति चरना । जाइ विपिन लागीं तपु करना ॥  
 अति सुकुमार न तनु तप जोगू । पति पद सुमिरि तजेउ सचु भोगू ॥  
 नित नव चरन उपज अनुरागा । विसरी देह तपहिं मनु लागा ॥  
 संवत सहस मूल फल खाए । सागु खाइ सत वरप गवाँए ॥  
 कछु दिन भोजनु वारिं वतासा । किए कठिन कछु दिन उपवासा ॥  
 बेल पाती महि परइ सुखाई । तीनि सहस संवत सोइ खाई ॥

पुनि परिहरे सुखानेउ परना । उमहि नाशु तव भयउ अपरना ॥  
देखि उमहि तप खीन सरीरा । ब्रह्मगिरा भै गगन गभीरा ॥

दो०—भयउ मनोरथ सुफल तव सुनु गिरिराजकुमारि ।

परिहरु दुसह कलेस सब अब मिलिहहिं त्रिपुरारि ॥ ७४ ॥

अस तपु काहुँ नकीन्ह भवानी । भए अनेक धीर मुनि ग्यानी ॥  
अब उर धरहु ब्रह्म वर चानी । सत्य सदा संतत सुचि जानी ॥  
आवै पिता बोलावन जबहीं । हठ परिहरि घर जाएहु तवहीं ॥  
मिलहिं तुम्हहि जव सप्त रिषीसा । जानेहु तब प्रमान चागीसा ॥  
सुनत गिरा विधि गगन बखानी । पुलक गात गिरिजा हरपानी ॥  
उमा चरित सुंदर मैं गावा । सुनहु संभु कर चरित सुहावा ॥  
तैं सतीं जाइ तनु त्यागा । तब तैं सिव मनभयउ विरागा ॥  
जपहिं सदा रघुनायक नामा । जहँ तहँ सुनहिं राम गुन ग्रामा ॥

दो०—चिदानंद सुखधाम सिव विगत मोह मद काम ।

विचरहिं महि धरि हृदयँ हरि सकल लोक अभिराम ॥ ७५ ॥

कतहुँ मुनिन्ह उपदेसहिं ग्याना । कतहुँ राम गुन करहिं बखाना ॥  
जदपि अकाम तदपि भगवाना । भगत विरह दुख दुखित सुजाना ॥  
एहि विधि गयउ कालु बहु चीती । नित नै होइ राम पद श्रीती ॥  
नेमु प्रेमु संकर कर देखा । अचिबल हृदयँ भगति कै रेखा ॥  
प्रगटे रामु कृतग्य कृपाला । रूप सील निधि तेज विसाला ॥  
बहु प्रकार संकरहि सराहा । तुम्ह चिनु अस व्रतु को निरवाहा ॥  
बहुविधि राम सिवहि सपुञ्जावा । पारवती कर जन्मु सुनावा ॥  
अति पुनीत गिरिजा कै करनी । चित्तर सहित कृपानिधि चरनी ॥

दो०—अब बिनती मम सुनहु सिव जौं मो पर निज नेहु ।

जाइ विवाहहु सैलजहि यह मोहि मार्गें देहु ॥ ७६ ॥

कह सिव जदपि उचित अस नाहीं । नाथ वचन पुनि भेटिन जाहीं ॥  
 सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा । परम धरमु यह नाथ हमारा ॥  
 मातु पिता गुर प्रभु कै बानी । बिनहिं विचार करिअ सुभ जानी  
 तुम्ह सब भाँति परम हितकारी । अग्या सिर पर नाथ तुम्हारी ॥  
 प्रभु तोपेउ सुनि संकर बचना । भक्ति विवेक धर्म जुत रचना ॥  
 कह प्रभु हर तुम्हार पन रहेऊ । अब उर राखेहु जो हम कहेऊ ॥  
 अंतरधान भए अस भापी । संकर सोइ मूरति उर राखी ॥  
 तवहिं सप्तरिपि सिव पहिं आए । बोले प्रभु अति बचन सुहाए ॥

दो०—पारवती पहिं जाइ तुम्ह प्रेम परिच्छा लेहु ।

गिरिह प्रेरि पठएहु भवन दूरि करेहु संदेहु ॥ ७७ ॥

रिपिन्ह गौरि देखी तहँ कैसी । मूरतिमंत तपस्या जैसी ॥  
 बोले मुनि सुनु सैलकुमारी । करहु कवन कारन तपु भारी ॥  
 केहि अवराधहु का तुम्ह चहहु । हम सन सत्य मरमु किन कहहु ॥  
 कहत बचन मनु अति सकुचाई । हँसिहहु सुनि हमारि जड़ताई ॥  
 मनु हठ परा न सुनइ सिखावा । चहत चारि पर भीति उठावा ॥  
 नारद कहा सत्य सोइ जाना । विनु पंखन्ह हम चहहिं उड़ाना ॥  
 देखहु मुनि अविचेकु हमारा । चाहिअ सदा सिवहि भरतारा ॥  
 दो०—सुनत बचन विहसे रिपय गिरिसंभव तव देह ।

नारद कर उपदेसु सुनि कहहु बसेउ किसु गेह ॥ ७८ ॥

दच्छसुतन्ह उपदेसेन्हि नाई । तिन्ह फिरि भवनु न देखा



चित्रकेतु कर घरु उन घाला । कनककसिपु कर पुनि असहाला ॥  
 नारद सिख जे सुनहिं नर नारी । अवसि होहिं तजि भवनु भिखारी ॥  
 मन कपटी तन सजन चीन्हा । आपु सरिस स्वही चह कीन्हा ॥  
 तेहि कें वचन मानि विश्वासा । तुम्ह चाहहु पति सहज उदासा ॥  
 निर्गुन निलज कुवेष कपाली । अकुल अगेह दिगंबर व्याली ॥  
 कहहु कवन सुखु असवरु पाएँ । भल भूलिहु ठग के वौराएँ ॥  
 पंच कहें सिवँ सती चिवाही । पुनि अवडेरि मराएन्हि ताही ॥  
 दो०—अव सुख सोवत सोचु नहिं भीख मागि भव खाहिं ।

सहज एकाकिन्ह के भवन कवहुँ कि नारि खटाहिं ॥ ७९ ॥

अजहुँ मानहु कहा हमारा । हम तुम्ह कहुँ वरु नीक विचारा ॥  
 अति सुंदर सुचि सुखद सुसीला । गावहिं वेद जासु जस लीला ॥  
 दूपन रहित सकल गुन रासी । श्रीपति पुर वैकुण्ठ निवासी ॥  
 असवरु तुम्हहि मिलाउव आनी । सुनत विहसि कह वचन भवानी  
 सत्य कहेहु गिरिभव तनु एहा । हठ न छूट छूटै वरु देहा ॥  
 कनकउ पुनि पपान तें होई । जारेहुँ सहजु न परिहर सोई ॥  
 नारद वचन न मैं परिहरऊँ । वसउ भवनु उजरउ नहिं डरऊँ ॥  
 गुर कें वचन प्रतीति न जेही । सपनेहुँ सुगमन सुख सिधि तेही ॥  
 दो०—महादेव अवगुन भवन विष्णु सकल गुन धाम ।

जेहि कर मनु रम जाहि सन तेहि तेही सन काम ॥ ८० ॥

जाँ तुम्ह मिलतेहु प्रथम मुनीसा । सुनतिउँ सिख तुम्हारि धरि सीसा  
 अव मैं जन्मु संभु हित हारा । को गुन दूपन करै विचारा ॥  
 जाँ तुम्हरे हठ हृदयँ चिसेपी । रहि न जाइ विनु किएँ चरेपी ॥

तौ कौतुकिअन्ह आलसु नाहीं । वर कन्या अनेक जग माहीं ॥  
जन्म कोटि लागि रगर हमारी । वरउँ संभु न त रहउँ कुआरी ॥  
तजउँ न नारद कर उपदेसु । आपु कहहिं सत वार महेशु ॥  
मैं पा परउँ कहइ जगदंवा । तुम्ह गृह गवनहु भयउ विलंवा ॥  
देखि प्रेषु बोले मुनि ग्यानी । जय जय जगदंविके भवानी ॥

दो०—तुम्ह माया भगवान सिव सकल जगत पितु मातु ।

नाइ चरन सिर मुनि चले पुनि पुनि हरपत गातु ॥८१॥

जाइ मुनिन्ह हिमवंतु पठाए । करि बिनती गिरजहिं गृह ल्याए ॥  
बहुरि सप्तरीपि सिव पहिं जाई । कथा उमा कै सकल सुनाई ॥  
भए मगन सिव सुनत सनेहा । हरपि सप्तरीपि गवने गेहा ॥  
मनु थिर करि तत्र संभु सुजाना । लगे करन रघुनायक ध्याना ॥  
तारकु असुर भयउ तेहि काला । भुज प्रताप बल तेज विसाला ॥  
तेहिं सब लोक लोकपति जीते । भए देव सुख संपति रीते ॥  
अजर अमर सो जीति न जाई । हारे सुर करि विविध लराई ॥  
तत्र विरंचि सन जाइ पुकारे । देखे विधि सब देव दुखारे ॥

दो०—सब सन कहा बुझाइ विधि दनुज निधन तत्र होइ ।

संभु सुक्र संभूत सुत एहि जोतइ रन सोइ ॥ ८२ ॥

मोर कहा सुनि करहु उपाई । होइहि ईस्वर करिहि सहाई ॥  
सर्ता जो तजी दच्छ मख देहा । जनमी जाइ हिमाचल गेहा ॥  
तेहिं तपु कीन्ह संभु पति लागो । सिव समाधि बैठे सवु त्यागी ॥  
जदपि अहइ असमंजस भारी । तदपि वात एक सुनहु हमारी ॥  
पठवहु कामु जाइ सिव पाहा । करै छोभु संकर मन माहीं ॥

हम जाइ सिवहि सिर नाई। करवाउब विवाहु वरिआई ॥  
 एहि विधि भलेहिं देवहित होई। मत अति नीक कहइ सबु कोई ॥  
 अस्तुति सुरन्ह कीन्हि अति हेतू। प्रगटेउ विषमवान झपकेतू ॥

दो०—सुरन्ह कही निज विपति सब सुनि मन कीन्ह विचार ।

संभु विरोध न कुसल मोहि विहसि कहेउ अस मार ॥ ८३ ॥

तदपि करब मैं काजु तुम्हारा। श्रुति कह परम धरम उपकारा ॥  
 पर हित लागि तजइ जो देही। संतत संत प्रसंसहिं तेही ॥  
 अस कहि चलेउ सबहि सिरु नाई। सुमन धनुष कर सहित सहाई ॥  
 चलत मार अस हृदयँ विचारा। सिव विरोध ध्रुव मरनु हमारा ॥

आपन प्रभाउ बिस्तारा। निज वस कीन्ह सकल संसारा ॥  
 कोपेउ जवहिं वारिचरकेतू। छन महुँ मिटे सकल श्रुति सेतू ॥  
 ब्रह्मचर्ज व्रत संजम नाना। धीरज धरम ग्यान विग्याना ॥  
 सदाचार जप जोग विरागा। सभय विवेक कटकु सबु भागा ॥

छं०—भागेउ विवेकु सहाय सहित सो सुभट संजुग सहि सुरे ।

सदग्रंथ पर्वत कंदरन्हि महुँ जाइ तेहि अवसर दुरे ॥

होनिहार का करतार को रखवार जग खरभरु परा ।

दुइ माथ केहिरतिनाथ जेहि कहुँ कोपि कर धनु सरु धरा ॥

दो०—जे सजीव जग अचर चर नारि पुरुष अस नाम ।

ते निज निज मरजाद तजि भए सकल वस काम ॥ ८४ ॥

सब के हृदयँ मदन अभिलापा। लता निहारि नवहिं तरु साखा ॥

नदी उमागि अंबुधि कहुँ धाई। संगम करहिं तलाव तलाई ॥

जहँ असि दसा जइन्ह के वरनी। को कहि सकइ सचेतन करनी ॥

पसु पच्छी नभ जल थलचारी । भए कामवस समय विसारी ॥  
मदन अंध व्याकुल सब लोका । निसि दिनु नहिं अवलोकहिं कोका  
देव दनुज नर किंनर व्याला । प्रेत पिस्ताच भूत वेताला ॥  
इन्ह कै दसा न कहेउँ बखानी । सदा काम के चेरे जानी ॥  
सिद्ध विरक्त महामुनि जोगी । तेपि कामवस भए वियोगी ॥

छं०—भए कामवस जोगीस तापस पावँरन्हि की को कहै ।

- देखहिं चरावर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहे ॥

- अबला बिलांकहिं पुरुषमय जगु पुरुष सब अबलामयं ।

दुइ दंड भरि ब्रह्मांड भीतर कामकृत कौतुक अयं ॥

सो०—धरी न काहँ धीर सब के मन मनसिज हरे ।

जे राखे रघुवीर ते उवरे तेहि काल महुँ ॥८५॥

उभय घरी अस कौतुक भयऊ । जौ लगि कामु संभ्रु पहिं गयऊ ॥

सिबहि बिलोकि ससंकैउ मारु । भयउ जथाथिति सब संसारु ॥

भए तुरत सब जीव सुखारे । जिमि मइ उतरि गएँ मतवारे ॥

रुद्रहि देखि मदन भय माना । दुराधरप दुर्गम भगवाना ॥

फिरत लाज कछु करि नहिं जाई । मरनु ठानि मन रचेसि उपाई ॥

प्रगटेसि तुरत रुचिर रिंतुराजा । कुमुमित नवतरु राजि त्रिराजा ॥

चन उपवन वापिका तड़ागा । परम सुभग सब दिसा विभागा ॥

जहँ तहँ जनु उमगत अनुरागा । देखि गुएहुँ मन मनसिज जागा ॥

छं०—जागइ मनोभव गुएहुँ मन वन सुभगता न परै कही ।

सीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनल सखा सही ॥

विकसे सरन्हि बहु कंज गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा ।

कलहंस पिक सुक सरस रव करि गान नाचहिं अपछरा ॥

दो०—सकल कला करि कोटि विधि हारउ सेन समेत ।

चली न अचल समाधि सिव कोपेउ हृदयनिकेत ॥८६॥

देखि रसाल विटप वर साखा । तेहि पर चढ़ेउ मदन मन साखा ॥  
 सुमन चाप निज सर संधाने । अति रिस ताकि श्रवन लगि ताने  
 छाड़े विषम विसिष उर लागे । छूटि समाधि संभु तव जागे ॥  
 भयउ ईस मन छोभु विसेपी । नयन उधारि सकल दिसि देखी ॥  
 सौरभ पल्लव मदन विलोका । भयउ कोपु कंपेउ त्रैलोका ॥  
 तव सिवँ तीसर नयन उधारा । चितवत कामु भयउ जरि छारा ॥  
 हाहाकार भयउ जग भारी । डरपे सुर भए असुर सुखारी ॥  
 समुझि कामसुखु सोचहि भोगी । भए अकंटक साधक जोगी ॥

छं०—जोगी अकंटक भए पति गति सुनत रति मुरुछित भई ।  
 रोदति वदति बहु भाँति करुना करति संकर पहि गई ॥  
 अति प्रेम करि विनती विविध विधि जोरि कर सन्मुख रही ।  
 प्रभु आसुतोप कृपाल सिव अवला निरखि बोले सही ॥

दो०—अव तें रति तव नाथ कर होइहि नामु अनंगु ।

विनु वपु व्यापिहि सबहि पुनि सुनु निज मिलन प्रसंगु ॥८७॥

जब जदुवंस कृष्ण अवतारा । होइहि हरन महा महिभारा ॥  
 कृष्ण तनय होइहि पति तोरा । वचनु अन्यथा होइ न मोरा ॥  
 रति गवनी सुनि संकर वानी । कथा अपर अव कहउँ वरवानी ॥  
 देवन्ह समाचार सब पाए । ब्रह्मादिक ब्रैकुंठ सिधाए ॥  
 सब सुर विष्णु विरंचि समेता । गए जहाँ सिव कृपानिकेता ॥  
 पृथक पृथक तिन्ह कीन्हि प्रसंसा । भए प्रसन्न चंद्र अवतंसा ॥

बोले कृपासिंधु वृषकेतू । कहहु अमर आए केहि हेतू ॥  
 कह विधि तुम्ह प्रभु अंतरजामी । तदापि भगति बस विनवउँ स्वामी  
 दो०—सकल सुरन्ह के हृदयँ अस संकर परम उछाहु ।

निज नयनन्हि देखा चहहिं नाथ तुम्हार विवाहु ॥ ८८ ॥

यह उत्सव देखिअ भरि लोचन । सोइ कलु करहु मदन मद मोचन  
 कामु जारि रति कहँ वरु दीन्हा । कृपासिंधु यह अति भल कीन्हा ॥  
 सासति करि पुनि करहिं पसाऊ । नाथ प्रभुन्ह कर सहज सुभाऊ ॥  
 पारवतीं तपु कीन्ह अपारा । करहु तामु अब अंगीकारा ॥  
 मुनि विधि विनय समुझि प्रभु वानी । ऐसेइ होउ कहा सुखु मानी ॥  
 तत्र देवन्ह दृढुभीं बजाई । वरपि सुमन जय जय सुर साई ॥  
 अवसरु जानि सप्तारिपि आए । तुरतहिं विधि गिरिभवन पठाए ॥  
 प्रथम गए जहँ रहीं भवानी । बोले मधुर बचन छल सानी ॥  
 दो०—कहा हमार न सुनेहु तव नारद केँ उपदेस ।

अब भा झूठ तुम्हार पन जारेउ कामु महेस ॥ ८९ ॥

मासपारायण, तीसरा विश्राम

मुनि बोलों मुसुकाइ भवानी । उचित कहेहु मुनिवर विग्यानी ॥  
 तुम्हरेँ जान कामु अब जारा । अब लागि संभु रहे सधिकारा ॥  
 हमरेँ जान सदा सिव जोगी । अज अनवद्य अकाम अभोगी ॥  
 जाँ मैं सिव सेये अस जानी । प्रीति समेत कर्म मन वानी ॥  
 तौ हमार पन सुनेहु मुनीसा । करिहहिं सत्य कृपानिधि ईसा ॥  
 तुम्ह जो कहा हर जारेउ भारा । सोइ अति बड़ अचियेहु तुम्हार ॥  
 तात अनल कर सहज सुभाऊ । हिम तोहि निकट जाइ नहिं काउ ॥

गएँ समीप सो अवसि नसाई । असि मन्मथ महेस की नाई ॥

दो०—हियँ हरषे मुनि वचन सुनि देखि प्रीति विस्वास ।

चले भवानिहि नाइ सिर गए हिमाचल पास ॥ ९० ॥

सबु प्रसंगु गिरिपतिहि सुनावा । मदन दहन सुनि अति दुखु पावा ॥

बहुरि कहेउ रति कर वरदाना । सुनि हिमवंत बहुत सुखु माना ॥

हृदयँ विचारि संभु प्रभुताई । सादर मुनिवर लिए बोलाई ॥

सुदिनु सुनखतु सुघरी सोचाई । वेगि वेदविधि लगन धराई ॥

पत्री सप्तारिपिन्ह सोइ दीन्ही । गहि पद बिनय हिमाचल कीन्ही ॥

जाइ विधिहि तिन्ह दीन्हि सो पाती । वाचत प्रीति न हृदयँ समाती ॥

लगन वाचि अज सवहि सुनाई । हरषे मुनि सब सुर समुदाई ॥

सुमन वृष्टि नभ वाजन बाजे । मंगल कलसदसहुँ दिसि साजे ॥

दो०—लगे सँवारन सकल सुर वाहन विविध विमान ।

होहिं सगुन मंगल सुभद करहिं अपञ्जरा गान ॥ ९१ ॥

सिवहि संभु गन करहिं सिंगारा । जटा मुकुट अहि मौरु सँवारा ॥

कुंडल कंकन पहिरे व्याला । तन विभूति पट केहरि छाला ॥

ससि ललाट सुंदर सिर गंगा । नयन तीनि उपवीत भुजंगा ॥

गरल कंठ उर नर सिर माला । असिव वेष सिव धाम कृपाला ॥

कर त्रिसूल अरु डमरु विराजा । चले बसहँ चढ़ि वाजहिं वाजा ॥

देखि सिवहि सुरत्रिय मुसुकाहीं । वर लायक दुलहिनि जग नाहीं ॥

विष्णु विरंचि आदि सुरत्राता । चढ़ि चढ़ि वाहन चले वराता ॥

सुर समाज सब भाँति अनूपा । नहिं वरात दूलह अनुरूपा ॥

दो०—विष्णु कहा अस विहासि तब बोलि सकल दिसिगज ।

विलग विलग होइ चलहु सब निज निज सहित समाज ॥९२॥  
 बर अनुहारि बरात न भाई । हँसी करैहहु पर पुर जाई ॥  
 विष्णु बचन सुनि सुर मुसुकाने । निज निज सेन सहित विलगाने ॥  
 मनहीं मन महेसु मुसुकाहीं । हरि के विंग्य बचन नहीं जाहीं ॥  
 अति प्रिय बचन सुनत प्रिय केरे । भृंगिहि प्रेरि सकल गन टेरे ॥  
 सिव अनुसासन सुनि सब आए । प्रभु पद जलज सीस तिन्ह नाए ॥  
 नाना वाहन नाना बेषा । विहसे सिव समाज निज देखा ॥  
 कोउ मुखहीन विपुल मुख काहू । विनु पद कर कोउ बहु पद वाहू ॥  
 विपुल नयन कोउ नयन विहीना । रिष्ट पुष्ट कोउ अति तनखीना ॥

छं०—तन खीन कोउ अति पीन पावन कोउ अपावन गति धरें ।  
 भूपन कराल कपाल कर सब सद्य सोनित तन भरें ॥  
 खर स्वान सुअर सृकाल मुख गन बेष अगनित को गनै ।  
 बहु जिनस प्रेत पिसाच जोगि जमात बरनत नहीं बनै ॥

सो०—नाचहिं गावहिं गीत परम तरंगी भूत सब ।

देखत अति विपरीत बोलहिं बचन विचित्र विधि ॥९३॥  
 जस दूलहु तसि बनी बराता । कौतुक विविध होहिं मग जाता ॥  
 इहाँ हिमाचल रचेउ बिताना । अति विचित्र नहीं जाइ बखाना ॥  
 सैल सकल जहँ लगि जग माहीं । लघु बिसाल नहीं बरनि सिगहीं ॥  
 चन सागर सब नदीं तलावा । हिमगिरि सब कहँ नेवत पठावा ॥  
 कामरूप सुंदर तन धारी । सहित समाज सहित बर नारी ॥  
 गए सकल तुहिनाचल मेहा । गावहिं मंगल सहित सनेहा ॥  
 प्रथमहिं गिरि बहु गृह संवराए । जथाजोगु तहँ तहँ सब छाए ॥



पुर सोभा अवलोकि सोहाई । लागइ लघु विरंचि निपुनाई ॥

छं०—लघु लाग विधि की निपुनता अवलोकि पुर सोभा सही ॥

वन वाग कूप तड़ाग सरिता सुभग सब सक को कही ।

मंगल विपुल तोरन पताका केतु गृह गृह सोहहीं ॥

वनिता पुरुष सुंदर चतुर छवि देखि मुनि मन मोहहीं ।

दो०—जगदंबा जहँ अवतरी सो पुरु वरनि कि जाइ ।

रिद्धि सिद्धि संपत्ति सुख नित नूतन अधिकाइ ॥ ९४ ॥

नगर निकट वरात सुनि आई । पुर खरभरु सोभा अधिकाई ॥

करि बनाव सजि बाहन नाना । चले लेन सादर अगवाना ॥

हियँ हरषे सुर सेन निहारी । हरिहि देखि अति भए सुखारी ॥

सिव समाज जव देखन लागे । विडरि चले बाहन सब भागे ॥

धरि धीरजु तहँ रहे सयाने । बालक सब लै जीव पराने ॥

गएँ भवन पूछहिँ पितु माता । कहहिँ बचन भयकंपित गाता ॥

कहिअ काह कहि जाइ न वाता । जम कर धार कियौं बरिआता ॥

वरु वौराह वसहँ असवारा । ब्याल कपाल विभूषन छारा ॥

छं०—तन छार ब्याल कपाल भूषन नगन जटिल भयंकरा ।

सँग भूत प्रेत पिसाच जोगिनि विकट मुख रजनीचरा ॥

जो जिअत रहिहि वरात देखत पुन्य बड़ तेहि कर सही ।

देखिहि सो उमा विवाहु घर घर वात असि लरिकन्ह कही ॥

दो०—समुझि महेस समाज सब जननि जनक मुसुकाहिँ ।

बाल बुझाए विविध विधि निडर होहु डरु नाहिँ ॥ ९५ ॥

लै अगवान वरातहि आए । दिए सबहि जनवास सुहाए ॥

मैनाँ सुभ आरती सँवारी । संग सुमंगल गावहिँ नारी ॥

कंचन थार सोह वर पानी। परिछन्न चली हरहि हरपानी॥  
 विकट वेप रुद्रहि जय देखा। अवलन्ह उर भय भयउ विसेपा॥  
 भागि भवन पैठीं अति त्रासा। गए महेस जहाँ जनवासा॥  
 मैना हृदयँ भयउ दुखु भारी। लोन्ही बोलि गिरीसकुमारी॥  
 अधिक सनेहँ गोद वैठारी। स्याम सरोज नयन भरे वारी॥  
 जेहिं विधि तुम्हहि रूपु असदीन्हा। तेहिं जड़ वरुवाउर कस कीन्हा

छं०—कस कीन्ह वरु वौराह विधि जेहिं तुम्हहि सुंदरता दर्ई।  
 जो फलु चहिअ सुरतरुहिं सो वरचस वयूरहिं लागई॥  
 तुम्हसहित गिरि तें गिरिं पावक जरौं जलनिधि महुँ परौं॥  
 घरु जाउ अपजसु होउ जग जीवत विवाहु न हौं करौं॥

दो०—भई विकल अवला सकल दुखित देखि गिरिनारि।  
 करि विलापु रोदति वदति सुता सनेहु सँभारि ॥९६॥

नारद कर में काह विगारा। भवनु मोर जिन्ह बसत उजारा॥  
 अस उपदेसु उमहि जिन्ह दीन्हा। वौरै वरहि लागि तपु कीन्हा॥  
 माचेहुँ उन्ह कें मोह न माया। उदासीन धनु धामु न जाया॥  
 पर घर घालक लाज न भीरा। चाँझ कि जान प्रसव कै पीरा॥  
 जननिहि विकल विलोकि भवानी। बोली जुत विवेक मृदु वानी॥  
 अस विचारि सोचहि मति माता। सो न टरइ जो रचइ विधाता॥  
 करम लिखा जौं वाउर नाहू। तौं कत दोसु लगाइअ काहू॥  
 तुम्हसन मिटहिं कि विधि के अंका। मातु व्यर्थ जनि लेहु कलंका॥

छं०—जनि लेहु मातु कलंकु करुना परिहरहु अवसर नहीं।  
 दुखु सुखु जो लिखा लिलार हमरें जाय जहँ पाउव तहीं॥

सुनि उमा वचन विनीत कोमल सकल अवला सोचहीं ।  
बहु भाँति विधिहि लगाइ दूपन नयन वारि विमोचहीं ॥

दो०—तेहि अवसर नारद सहित अरु रिपि सप्त समेत ।

समाचार सुनि तुहिनगिरि गवने तुरत निकेत ॥९७॥

तव नारद सवही समुझावा । पूरुव कथाप्रसंगु सुनावा ॥

मयना सत्य सुनहु मम वानी । जगदंबा तव सुता भवानी ॥

अजा अनादि सक्ति अविनासिनि । सदा संभु अरधंग निवासिनि ॥

जग संभव पालन लय कारिनि । निज इच्छा लीला वपु धारिनि ॥

जनमीं प्रथम दच्छ गृह जाई । नामु सती सुंदर तनु पाई ॥

तहँहुँ सती संकरहि विवाहीं । कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं ॥

एक वार आवत सिव संगी । देखेउ रघुकुल कमल पतंगी ॥

भयउ मोहु सिव कहा न कीन्हा । भ्रम वस बेपु सीय कर लीन्हा ॥

छं०—सिय बेपु सतीं जो कीन्ह तेहिं अपराध संकर परिहरिं ।

हर विरहँ जाइ बहोरि पितु कें जग्य जोगानल जरीं ॥

अव जनमि तुम्हरे भवन निज पति लागि दारुन तपु किया ।

अस जानि संसय तजहु गिरिजा सर्वदा संकर प्रिया ॥

दो०—सुनि नारद के वचन तव सव कर मिटा विपाद ।

छन महुँ व्यापेउ सकल पुर घर घर यह संवाद ॥९८॥

तव मयना हिमवंतु अनंदे । पुनि पुनि पारवती पद बंदे ॥

नारि पुरुष सिसु जुवा सयाने । नगर लोग सव अति हरयाने ॥

लगे होन पुर मंगलगाना । सजे सवहिं हाटक घट नाना ॥

भाँति अनेक भई जेवनारा । सूपसास्र जस कछु व्यवहारा ॥

सो जेवनार कि जाइ बखानी। बसहिं भवन जेहिं मातु भवानी ॥  
सादर बोले सकल वराती। विष्णु विरंचि देव सब जाती ॥  
विविधि पाँति बैठी जेवनारा। लागे परसन निपुन सुआरा ॥  
नारिचंद्र सुर जेवँत जानी। लगीं देन गारीं मृदु चानी ॥

छं०—गारीं मधुर स्वर देहिं सुंदरि विंग्य वचन सुनावहीं।  
भोजनु करहिं सुर अति विलंबु विनोदु सुनि सचु पावहीं ॥  
जेवँत जो बढ्यो अनंदु सो मुख कोटिहुँ न परै कस्यो।  
अचवाँइ दीन्हे पान गवने बास जहँ जाको रख्यो ॥

दो०—बहुरि मुनिन्ह हिमवंत कहँ लगन सुनाई आइ।  
समय विलोकि विवाह कर पठए देव बोलाइ ॥९९॥

बोली सकल सुर सादर लीन्हे। स्वहि जथोचित आसन दीन्हे ॥  
वेदी वेद विधान सँवारी। सुभग सुमंगल गावहिं नारी ॥  
सिंघासनु अति दिव्य सुहावा। जाइ न वरनि विरंचि वनावा ॥  
बैठे सिव विप्रन्ह सिरु नाई। हृदयँ सुमिरि निज प्रभुरघुराई ॥  
बहुरि मुनीसन्ह उमा बोलाई। करि सिंगारु सखीं लै आई ॥  
देखत रूपु सकल सुर मोहे। वरनै छवि अस जग कवि को है ॥  
जगदंवि का जानि भव भामा। सुरन्ह मनहिं मन कीन्ह प्रनामा ॥  
सुंदरता मरजाद भवानी। जाइ न कोटिहुँ वदन बखानी ॥

छं०—कोटिहुँ वदन नहिं वनै वरनत जग जननि सोभा महा।  
सकुचहिं कहत श्रुति सेप सारद भंदमति तुलसी कहा ॥  
छविखानि मातु भवानि गवनीं मध्य मंडप सित्र जहाँ।  
अवलोकि सकहिं न सकुच पति पद कमल मनु मधुकरु तहाँ ॥

दो०—मुनि अनुसासन गनपतिहि पूजेउ संभु भवानि ।

कोउ मुनि संसय करै जनि मुर अनादि जियँ जानि ॥ १०० ॥

जसि विवाह कै विधि श्रुति गाई । महामुनिन्ह सो सब करवाई ॥  
गहि गिरीस कुस कन्या पानी । भवहि समरपीं जानि भवानी ॥  
पानिग्रहन जब कीन्ह महेसा । हियँ हरषे तव सकल सुरेसा ॥  
वेदमंत्र मुनिवर उच्चरहीं । जय जयजय संकर सुर करहीं ॥  
वाजहिं वाजन विविध विधाना । सुमनवृष्टि नभ भै विधि नाना ॥  
हर गिरिजा कर भयउ विवाहू । सकल भुवन भरि रहा उछाहू ॥  
दासीं दास तुरग रथ नागा । धेनु वसन मनि वस्तु विभागा ॥  
अन्न कनकभाजन भरि जाना । दाइज दीन्ह न जाइ बखाना ॥

छं०—दाइज दियो बहु भाँति पुनि कर जोरि हिमभूधर कह्यो ।

का देउँ पूरनकाम संकर चरन पंकज गहि रख्यो ॥

सिवँ कृपासागर ससुर कर संतोषु सब भाँतिहिं कियो ।

पुनि गहे पद पाथोज मयनाँ प्रेम परिपूरन हियो ॥

दो०—नाथ उमा मम प्रान सम गृहकिंकरी करेहु ।

छमेहु सकल अपराध अब होइ प्रसन्न वरु देहु ॥ १०१ ॥

बहु विधि संभु सासु समुझाई । गवनी भवन चरन सिरु नाई ॥  
जननीं उमा बोलि तव लीन्ही । लै उछंग सुंदर सिख दीन्ही ॥  
करेहु सदा संकर पद पूजा । नारिधरमु पति देउ न दूजा ॥  
वचन कहत भरे लोचन वारी । बहुरि लाइ उर लीन्हि कुमारी ॥  
कत विधि सृजीं नारि जग माहीं । पराधीन सपनेहुँ सुखु नाहीं ॥  
भै अति प्रेम विकल महतारी । धीरजु कीन्ह कुसमय विचारी ॥

पुनि पुनि मिलति परति गहि चरना । परम प्रेमु कछु जाइ न वरना ॥  
सब नारिन्ह मिलि भेटि भवानी । जाइ जननि उर पुनि लपटानी ॥

छ०-जननिहि बहुरि मिलि चली उचित अमीस सब काहूँ दइ ।  
फिरि फिरि विलोकति मातु तन तव सर्वौ लै सिव पहि गइ ॥

। जाचक मकल संतोपि संकरु उमा सहित भवन चले ।  
। सब अमर हरषे सुमन वरपि निसान नभ बाजे भले ॥

दो०-चले मंग हिमवंतु तव पंहुँचावन अति हेतु ।

विविध भाँति परितोपु करि विदा कीन्ह धृपकेतु ॥१०२॥

तुरत भवन आए गिरिराई । सकल सैल सग लिए बोलाई ॥

आदर दान विनय बहुमाना । सब कर विदा कीन्ह हिमवानी ॥

जबहि संभु कैलासहि आए । सुर सब निज निज लोक सिधाए

जगत मातु पितु संभु भवानी । तेहि सिंगारु न कहउँ बखानी ॥

करहि विविध विधि भोग विलासा । गनन्ह समेत बसहि कैलासा ॥

हर गिरिजा विहार नित नयऊ । एहि विधि विपुल काल चलि गयऊ

तव जनमेउ पटवदन कुमारा । तारक असुरु समर जेहि मारा ॥

आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । पन्मुख जन्मु सकल जग जाना ॥

छं०-जगु जान पन्मुख जन्मु कर्मु प्रतापु पुरुपारधु महा ।

तेहि हेतु मैं धृपकेतु सुत कर चरित मंछैपहि कहा ॥

यह उमा संभु त्रिवाहु जे नर नारि कहहि जे गावहीं ।

कल्याण काज विवाह मंगल भवदा सुखु पावहीं ॥

दो०-चरित मिंधु गिरिजा रमन वेद न पावहिं पारु ।

वरनै तुलसीदासु किमि अति मतिमंद गवाँरु ॥१०३॥

संभु चरित सुनि सरस सुहावा । भरद्वाज मुनि अति सुखु पावा ॥  
 बहु लालसा कथा पर वाढी । नयनन्हि नीरु रोमावलि ठाढी ॥  
 प्रेम विवस मुख आव न बानी । दसा देखि हरषे मुनि ग्यानी ॥  
 अहो धन्य तव जन्मु मुनीसा । तुम्हहि प्रान सम प्रिय गौरीसा ॥  
 सिव पद कमल जिन्हहि रति नाहीं । रामहि ते सपनेहुँ न सोहाहीं ॥  
 विनु छल विस्वनाथ पद नेहू । राम भगत कर लच्छन एहू ॥  
 सिव सम को रघुपति व्रतधारी । विनु अघ तजी सती असि नारी  
 पनु करि रघुपति भगति देखाई । को सिव सम रामहि प्रिय भाई ॥

दो०—प्रथमहिं मैं कहि सिव चरित बूझा मरमु तुम्हार ।

सुचि सेवक तुम्ह राम के रहित समस्त विकार ॥१०४॥

मैं जाना तुम्हार गुन सीला । कहउँ सुनहु अव रघुपति लीला ॥  
 सुनु मुनि आजु समागम तोरें । कहि न जाइ जस सुखु मन मोरें ॥  
 रामचरित अति अमित मुनीसा । कहि न सकहिं सत कोटि अहीसा ॥  
 तदपि जथाश्रुत कहउँ बखानी । सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी ॥  
 सारद दारुनारि सम स्वामी । रामु सूत्रधर अंतरजामी ॥  
 जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी । कवि उर अजिर नचावहिं बानी ॥  
 प्रनवउँ सोइ कृपाल रघुनाथा । वरनउँ विसद तासु गुन गाथा ॥  
 परम रम्य गिरिवरु कैलासू । सदा जहाँ सिव उमा निवासू ॥  
 दो०—सिद्ध तपोधन जोगिजन सुर किंनर मुनिचंद्र ।

वसहिं तहाँ सुकृती सकल सेवहिं सिव सुखकंद ॥१०५॥

हरि हर विमुख धर्म रति नाहीं । ते नर तहँ सपनेहुँ नहिं जाहीं ॥  
 तेहि गिरि पर बट विटप विसाला । नित नूतन सुंदर सब काला ॥

त्रिविध समीर मुसीतलि छाया । सिव विश्राम विटप श्रुति गायाम् ॥  
 एक वार तेहि तर प्रभु गयऊ । तरु विलोकि उर अति सुखु भयऊ  
 निज कर डसि नागरिपु छाला । बैठे सहजहिं मंभु कृपाला ॥  
 कुंद इंदु दर गौर सरीरा । भुज प्रलंब परिधन मुनिचीरा ॥  
 तरुन अरुन अंबुज सम चरना । नख दुति भगत हृदय तम हरना  
 भुजग भृति भूपन त्रिपुरारी । आननु सरद चंद छवि हारी ॥

दो०—जटा मुकुट सुरसरित सिर लोचन नलिन विसाल ।

नीलकंठ लावन्यनिधि सोह बालविधु भाल ॥१०६॥

बैठे सोह कामरिपु कैमें । धरें मरीरु सांतरसु जैसे ॥  
 पारवती भल अवमरु जानी । गई मंभु पहिं मातु भवानी ॥  
 जानि प्रिया आदरु अति कीन्हा । वाम भाग आसनु हर दीन्हा ॥  
 बैठीं सिव समीप हरपाई । पूरुव जन्म कथा चित आई ॥  
 पति हिये हेतु अधिक अनुमानी । विहमि उमाचौलीं प्रिय वानी ॥  
 कथा जो सकल लोक हितकारी । सोइ पूछन चह मैलकुमारी ॥  
 विश्वनाथ मम नाथ पुगगे । त्रिभुवन महिमा विदित तुम्हारी ॥  
 चर अरु अचर नाग नर देवा । सकल करहिं पद पंकज सेवा ॥

दो०—प्रभु समग्रथ सर्वग्य मिव सकल कला गुन धाम ।

जोग ग्यान वैराग्य निधि प्रनत कलपतरु नाम ॥१०७॥

जाँ मो पर प्रसन्न सुखरासी । जानिअ सत्य मोहि निज दासी ॥  
 तौ प्रभु हरहु मोर अग्याना । कहि रघुनाथ कथा विधि नाना ॥  
 जामु भवनु सुरतरु तर होई । सहि कि दरिद्र जनित दुखु सोई ॥  
 ममि भूपन अम हृदय विचारी । हरहु नाथ मम मति भ्रम भारी ॥



प्रभु जे मुनि परमारथवादी । कहहिं राम कहूँ ब्रह्म अनादी ॥  
 सेस सारदा वेद पुराना । सकल करहिं रघुपति गुन गाना ॥  
 तुम्ह पुनि राम राम दिन राती । सादर जपहु अनंग आराती ॥  
 रामु सो अवध नृपति सुत सोई । की अज अगुन अलख गति कोई ॥

दो०—जौं नृप तनय त ब्रह्म किमि नारि विरहँ मति भोरि ।

देखि चरित महिमा सुनत भ्रमति बुद्धि अति मोरि ॥१०८॥

जौं अनीह व्यापक विभु कोऊ । कहहु बुझाइ नाथ मोहि सोऊ ॥  
 अग्य जानि रिस उर जनि धरहु । जेहि विधि मोह मिटै सोइ करहु ॥  
 में वन दीखि राम प्रभुताई । अति भय विकल न तुम्हहि सुनाई ॥  
 तदपि मलिन मन बोधु न आवा । सो फलु भली भाँति हम पावा ॥  
 अजहूँ कलु संसउ मन मोरें । करहु कृपा विनवउँ कर जोरें ॥  
 प्रभु तव मोहि बहु भाँति प्रबोधा । नाथ सो सपुङ्गि करहु जनि क्रोधा  
 तव कर अस विमोह अत्र नाहीं । राम कथा पर रुचि मन माहीं ॥  
 कहहु पुनीत राम गुन गाथा । भुजगराज भूपन सुरनाथा ॥

दो०—चंदउँ पद धरि धरनि सिरु विनय करउँ कर जोरि ।

वरनहु रघुवर विसद जसु श्रुति सिद्धांत निचोरि ॥१०९॥

जदपि जोपितानहि अधिकारी । दासी मन क्रम वचन तुम्हारी ॥  
 गूढ़उ तत्त्व न साधु दुरावहिं । आरत अधिकारी जहँ पावहिं ॥  
 अति आरति पूछउँ सुरराया । रघुपति कथा कहहु करि दाया ॥  
 प्रथम सो कारन कहहु विचारी । निर्गुन ब्रह्म सगुन त्रपु धारी ॥  
 पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा । बालचरित पुनि कहहु उदारा ॥  
 कहहु जथा जानकी त्रिवाहीं । राज तजा सो दूषन काहीं ॥

वन बसि कीन्हे चरित अपारा । कहहु नाथ जिमि रावन मारा ॥  
राज वैठि कीन्हीं बहु लीला । सकल कहहु संकर मुखसीला ॥

दो०—बहुरि कहहु करुनायतन कीन्ह जो अचरज राम ।

प्रजा सहित रघुवंसमनि किमि गवने निज धाम ॥११०॥

पुनि प्रभु कहहु सो तच्च बखानी । जेहि विग्यान मगन मुनि ग्यानी ॥  
भगति ग्यान विग्यान विरागा । पुनि सब बरनहु सहित पिभागा ॥  
औरउ राम रहस्य अनेका । कहहु नाथ अति विमल विवेका ॥  
जो प्रभु में पूछा नहिं होई । सोउ दयाल राखहु जनि गोई ॥  
तुम्ह त्रिभुवन गुर बेद बखाना । आन जीव पाँवर का जाना ॥  
प्रल उमा कै सहज सुहाई । छल विहीन मुनि सिव मन भाई ॥  
हर हियँ रामचरित सब आए । प्रेम पुलक लोचन जल छापे ॥  
श्रीरघुनाथ रूप उर आवा । परमानंद अमित मुख पावा ॥

दो०—मगन ध्यानरस दंड जुग पुनि मन वाहेर कीन्ह ।

रघुपति चरित महेस तब हरपित धरनै लोन्ह ॥१११॥

शूठेउ सत्य जाहि विनु जानें । जिमि भुजंग विनुरजु पहिचानें ॥  
जेहि जानें जग जाइ हेराई । जागें जथा सपन भ्रम जाई ॥  
वंदउं बालरूप सोइ रामू । सब सिधि सुलभ जपत त्रिमुनामू ॥  
मंगल भवन अमंगल हारी । द्रवउ सो दसरथ अजिर निहारी ॥  
करि प्रनाम रामहि त्रिपुरारी । हरपि सुधा सम गिरा उचारी ॥  
धन्य धन्य गिरिराजकुमारी । तुम्ह समान नहिं कोउ उपकारी ॥  
पूछेहु रघुपति कथा प्रसंगा । सकल लोक जग पावनि गंगा ॥  
तुम्ह रघुवीर चरन अनुरागी । कीन्हेहु प्रल जगत हित लागी ॥

दो०—राम कृपा तें पारवति सपनेहुँ तव मन माहिं ।

सोक मोह संदेह भ्रम मम विचार कहु नाहिं ॥११२॥

तदपि असंका कीन्हिहु सोई । कहत सुनत सब कर हित होई ॥  
जिन्ह हरिकथा सुनी नहिं काना । श्रवन रंध्र अहिभवन समाना ॥  
नयनन्हि संत दरस नहिं देखा । लोचन मोर पंख कर लेखा ॥  
ते सिर कटु तुंगरि समतूला । जे न नमत हरि गुर पद मूला ॥  
जिन्ह हरिभगति हृदयँ नहिं आनी । जीवत सब समान तेइ प्रानी ॥  
जो नहिं करइ राम गुन गाना । जीह सो दादुर जीह समाना ॥  
कुलिस कठोर निटुर सोइ छाती । सुनि हरिचरित न जो हरपाती ॥  
गिरिजा सुनहु राम कै लीला । सुर हित दनुज विमोहन सीला ॥

दो०—रामकथा सुरधेनु सम सेवत सब सुख दानि ।

सत समाज सुरलोक सब को न सुनै अस जानि ॥११३॥

रामकथा सुंदर कर तारी । संसय विहग उड़ावनिहारी ॥  
रामकथा कलि चिटप कुठारी । सादर सुनु गिरिराजकुमारी ॥  
राम नाम गुन चरित सुहाए । जनम करम अगनित श्रुति गाए ॥  
जथा अनंत राम भगवाना । तथा कथा कीरति गुन नाना ॥  
तदपि जथा श्रुत जसि मति मोरी । कहिहुँ देखि प्रीति अति तोरी ॥  
उमा प्रसन्न तव सहज सुहाई । सुखद संतसंमत मोहि भाई ॥  
एक बात नहिं मोहि सोहानी । जदपि मोहवस कहेहु भवानी ॥  
तुम्ह जो कहा राम कोउ आना । जेहि श्रुति गाव धरहिं मुनि ध्याना ॥

दो०—कहहिं सुनहिं अस अधम नर ग्रसे जे मोह पिसाच ।

पापंडी हरि पद विमुख जानहिं झूठ न साच ॥११४॥

अग्य अकोविद् अंध अभागी । काई विषय मुकुर मन लागी !  
 लंपट कपटी कुटिल विसेपी । सपनेहुँ संतसभा नहीं देखी ॥  
 कहहिं ते वेद असंमत यानी । जिन्ह कें सज्ञ लाभु नहीं हानी ॥  
 मुकुर मलिन अरु नयन विहीना । राम रूप देखहिं किमि दीना ॥  
 जिन्ह कें अगुन न सगुन विवेका । जल्पहिं कल्पित वचन अनेका ॥  
 हरिमाया बस जगत भ्रमाहीं । तिन्हहि कहत कछु अघटित नाहीं ॥  
 चातुल भूत विवस मतवारे । ते नहीं बोलहिं वचन विचारे ॥  
 जिन्ह कृत महामोह मद पाना । तिन्ह कर कहा करिअ नहीं काना  
 सो०—अस निज हृदयँ विचारि तजु संसय भजु राम पद ।

सुनु गिरिराज कुमारि भ्रम तम रवि कर वचन मम ॥११५॥

सगुनहि अगुनहि नहीं कछु भेदा । गावहिं मुनि पुरान बुध वेदा ॥  
 अगुन अरूप अलख अज जोई । भगत प्रेम बस सगुन सो होई ॥  
 जो गुन रहित सगुन सोइ कैसें । जलु हिम उपल विलग नहीं जैसें  
 जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा । तेहि किमि कहिअ विमोह प्रसंगा ॥  
 राम सचिदानंद दिनेसा । नहीं तहँ मोह निसा लवलेसा ॥  
 सहज प्रकासरूप भगवाना । नहीं तहँ पुनि विग्यान विहाना ॥  
 हरप विपाद ग्यान अग्याना । जीव धर्म अहमिति अभिमाना ॥  
 राम ब्रह्म व्यापक जग जाना । परमानंद परेस पुराना ॥  
 दो०—पुरुष प्रसिद्ध प्रकास निधि प्रगट परावर नाथ ।

रघुकुलमनि मम स्वामि सोइ कहि सिवँ नायउ माथ ॥११६॥

निज भ्रम नहीं समुझहिं अग्यानी । प्रभु पर मोह धरहिं जड़ प्रानी ॥  
 जथा गगन घन पटल निहारी । झाँपेउ भानु कहहिं कुविचारी ॥

हरि गुन नाम अपार कथा रूप अगनित अमित ।

मैं निज मति अनुसार कहउँ उमा सादर सुनहु ॥१२०(घ)॥

सुनु गिरिजा हरिचरित सुहाए । विपुल विसद निगमागम गाए ॥  
हरि अवतार हेतु जेहि होई । इदमित्थं कहि जाइ न सोई ॥  
राम अतर्क्य बुद्धि मन वानी । मत हमार अस सुनहि सयानी ॥  
तदपि संत मुनि वेद पुराना । जस कळु कहहिं स्वमति अनुमाना ॥  
तस मैं सुमुखि सुनावउँ तोही । समुझि परइ जस कारन मोही ॥  
जब जब होइ धरम कै हानी । वाढ़हिं असुर अधम अभिमानी ॥  
करहिं अनीति जाइ नहिं वरनी । सोदहिं विप्र धेनु सुर धरनी ॥  
तव तव प्रभु धरि विविध सरोरा । हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ॥

दो०—असुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज श्रु सेतु ।

जग विस्तारहिं विसद जस राम जन्म कर हेतु ॥१२१॥

सोइ जस गाइ भगत भव तरहीं । कृपासिंधु जन हित तनु धरहीं ॥  
राम जनम के हेतु अनेका । परम विचित्र एक तैं एका ॥  
जनम एक दुइ कहउँ वखानी । सावधान सुनु सुमति भवानी ॥  
द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ । जय अरु विजय जान सब कोऊ ॥  
विप्र श्राप तैं दूनउ भाई । तामस असुर देह तिन्ह पाई ॥  
कनककसिपु अरु हाटकलोचन । जगत विदित सुरपति मद मोचन ॥  
विजई समर वीर विख्याता । धरि वराह वपु एक निपाता ॥  
होइ नरहरि दूसर पुनि मारा । जन प्रहलाद सुजस विस्तारा ॥

दो०—भए निसाचर जाइ तेइ महावीर बलवान ।

कुंभकरन रावन सुभट सुर विजई जग जान ॥१२२॥

मुकुत न भए हते भगवाना । तीनि जनम द्विज वचन प्रवाना ॥  
 एक वार तिन्ह के हित लागी । धरेउ सरीर भगत अनुरागी ॥  
 कश्यप अदिति तहाँ पितु माता । दसरथ कौसल्या विख्याता ॥  
 एक कल्प एहि विधि अवतारा । चरित पवित्र किए संसारा ॥  
 एक कल्प सुर देखि दुखारे । समर जलंधर सन सब हारे ॥  
 संभु कीन्ह संग्राम अपारा । दनुज महाबल मरइ न मारा ॥  
 परम सती असुराधिप नारी । तेहि बल ताहि न जितहि पुरारी ॥  
 दो०—छल करि टारेउ तासु व्रत प्रभु सुर कारज कीन्ह ।

जब तेहि जानेउ मरम तब थाप कोष करि दीन्ह ॥१२३॥

तासु थाप हरि दीन्ह प्रमाना । कौतुकनिधि कृपाल भगवाना ॥  
 तहाँ जलंधर रावन भयऊ । रन हति राम परम पद दयऊ ॥  
 एक जनम कर कारन एहा । जेहि लागि राम धरी नरदेहा ॥  
 प्रति अवतार कथा प्रभु केरी । सुनु मुनि वरनी कविन्ह घनेरी ॥  
 नारद थाप दीन्ह एक वारा । कल्प एक तेहि लागि अवतारा ॥  
 गिरिजा चकित भई सुनि वानी । नारद विष्णुभगत पुनि ग्यानी ॥  
 कारन कवन थाप मुनि दीन्हा । का अपराध रमापति कीन्हा ॥  
 यह प्रसंग मांहि कहहु पुरारी । मुनि मन मोह आचरज भारी ॥

दो०—बोले विहसि महेस तब ग्यानी मूढ़ न कोइ ।

जेहि जस रघुपति करहि जब सो तस तेहि छन होइ ॥१२४(क)॥

सो०—कहउँ राम गुन गाथ भरद्वाज सादर सुनहु ।

भव भंजन रघुनाथ भजु तुलसी तजि मान मद ॥१२४(ख)॥

हिमगिरि गुहा एक अति पावनि । वह समीप सुरसरो मुहावनि ॥

आश्रम परम पुनीत सुहावा । देखि देवरिषि मन अति भावा ॥  
 निरखि सैल सरि त्रिपिन विभागा । भयउ रमापति पद अनुरागा ॥  
 सुमिरत हरिहि श्राप गति बाधी । सहज विमल मन लागि समाधी ॥  
 मुनि गे देखि सुरेस डेराना । कामहि बोलि कीन्ह सनमाना ॥  
 सहित सहाय जाहु मम हेतू । चलेउ हरषि हियँ जलचरकेतू ॥  
 सुनासीर मन महुँ असि त्रासा । चहत, देवरिषि मम पुर वासा ॥  
 जे कामी लोलुप जग माहीं । कुटिल काक इव सबहि डेराहीं ॥  
 दो०—सख हाड़ लै भाग सठ खान निरखि मृगराज ।

छीनि लेइ जनि जान जड़ तिमि सुरपतिहि न लाज ॥१२५॥

तेहि आश्रमहिं मदन जब गयऊ । निज मायाँ वसंत निरमयऊ ॥  
 कुसुमित त्रिविध विटप बहुरंगा । कूजहिं कोकिल गुंजहिं भृंगा ॥  
 चली सुहावनि त्रिविध बंयारी । काम कृसानु बढावनिहारी ॥  
 रंभादिक सुरनारि नबीना । सकल असमसर कला प्रबीना ॥  
 करहिं गान बहु तान तरंगा । बहुविधि क्रीड़हिं पानि पतंगा ॥  
 देखि सहाय मदन हंरषाना । कीन्हेसि पुनि प्रपंच विधि नाना ॥  
 काम कला कलु मुनिहिं न व्यापी । निज भयँ डरेउ मनोभव पापी ॥  
 सीम कि चाँपि सकइ कोउ ताम् । बड़ रखवार रमापति जाम् ॥  
 दो०—सहित सहाय समीत अति मानि हारि मन मैन ।

गहेसि जाइ मुनि चरन तत्र कहि सुठि आरत वैन ॥१२६॥

भयउ न नारद मन कलु रोषा । कहि प्रिय वचन काम परितोषा ॥  
 नाइ चरन सिरु आयसु पाई । गयउ मदन तव सहित संहारै ॥  
 मुनि सुसीलता आपनि करनी । सुरपति सभाँ जाइ सब चरनी ॥

मुनि सब के मन अचरजु आवा । मुनिहि प्रसंसि हरिहि सिरु नावा ॥  
 तव नारद गवने सिव पाहीं । जिता काम अहमिति मन माहीं ॥  
 मार चरित संकरहि सुनाए । अति प्रिय जानि महेस सिखाए ॥  
 बार बार बिनवउँ मुनि तोही । जिमि यह कथा सुनायहु मोही ॥  
 तिमि जनि हरिहि सुनावहु कवहूँ । चलेहुँ प्रसंग दुराएहु तवहूँ ॥

दो०—संभु दीन्ह उपदेस हित नहिं नारदहि सोहान ।

भरद्वाज कौतुक सुनहु हरि इच्छा बलवान ॥१२७॥

राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई । करै अन्यथा अस नहिं कोई ॥  
 संभु वचन मुनि मन नहिं भाए । तव चिरंजि के लोक सिधाए ॥  
 एक बार करतल वर बीना । गावत हरि गुन गान प्रवीना ॥  
 छीरसिंधु गवने मुनिनाथा । जहँ बस श्रीनिवास श्रुतिमाथा ॥  
 हरपि मिले उठि रमानिकेता । बैठे आसन रिपिहि समेता ॥  
 बोले विहसि चराचर राया । बहुते दिनन कीन्हि मुनि दाया ॥  
 काम चरित नारद सब भापे । जद्यपि प्रथम वरजि सिवँ राखे ॥  
 अति प्रचंड रघुपति कै माया । जेहि न मोह अस को जग जाया ॥

दो०—रूख बदन करि वचन मृदु बोले श्रीभगवान ।

तुम्हरे मुमिरन तैं मिटहिं मोह मार मद मान ॥१२८॥

सुनु मुनि मोह होइ मन ताकें । ग्यान विराग हृदय नहिं जाकें ॥  
 ब्रह्मचरज व्रत रत भतिधीरा । तुम्हहि कि करइ मनोभव पीरा ॥  
 नारद कहेउ सहित अभिमाना । कृपा तुम्हारि सकल भगवाना ॥  
 करुनानिधि मन दीख विचारी । उर अंकुरेउ गरब तरु भारी ॥  
 वेगि सो मैं डारिहउँ उखारो । पन हमार सेवक हितकारी ॥



मुनि कर हित मम कौतुक होई । अवसि उपाय करवि मैं सोई ॥  
 तव नारद हरि पद सिर नाई । चले हृदयँ अहमिति अधिकाई ॥  
 श्रीपति निज माया तव प्रेरी । सुनहु कठिन करनी तेहि केरी ॥

दो०—विरचेउ मग महुँ नगर तेहिं सत जोजन विस्तार ।

श्रीनिवासपुर तें अधिक रचना विविध प्रकार ॥१२९॥

वसहिं नगर सुंदर नर नारी । जनु बहु मनसिजरति तनुधारी ॥  
 तेहिं पुर वसइ सीलनिधि राजा । अगनित हय गय सेन समाजा ॥  
 सत सुरेस सम विभव विलासा । रूप तेज बल नीति निवासा ॥  
 विश्वमोहनी तासु कुमारी । श्री विमोह जिसु रूपु निहारी ॥  
 सोइ हरिमाया सब गुन खानी । सोभा तासु कि जाइ बखानी ॥  
 करइ स्वयंवर सो नृपवाला । आए तहँ अगनित महिपाला ॥  
 मुनि कौतुकी नगर तेहि गयऊ । पुरवासिन्ह सब पूछत भयऊ ॥  
 मुनि सब चरित भूप गृहँ आए । करि पूजा नृप मुनि वैठाए ॥  
 दो०—आनि देख्वाई नारदहि भूपति राजकुमारि ।

कहहु नाथ गुन दोष सब एहि के हृदयँ विचारि ॥१३०॥

देखि रूप मुनि विरति विसारी । बड़ी वार लगि रहे निहारी ॥  
 लच्छन तासु विलोकि भुलाने । हृदयँ हरप नहिं प्रगट बखाने ॥  
 जो एहि वरइ अमर सोइ होई । समरभूमि तेहि जीत न कोई ॥  
 सेवहिं सकल चराचर ताही । वरइ सीलनिधि कन्या जाही ॥  
 लच्छन सब विचारि उर राखे । कलुक बनाइ भूप सन भाषे ॥  
 सुतासुलच्छन कहि नृप पाहीं । नारद चले सोच मन माहीं ॥  
 करौं जाइ सोइ जतन विचारी । जेहि प्रकार मोहि वरै कुमारी ॥

जप तप कछु न होइ तेहि काला । हेविधि मिलइ कवन विधि बाला ॥

दो०—एहि अवसर चाहिअ परम सोभा रूप विसाल ।

जो विलोकि रीझै कुअरि तव मेलै जयमाल ॥१३१॥

हरि सन मागौं सुंदरताई । होइहि जात गहरु अति भाई ॥  
 मोरें हित हरि सम नहि कोऊ । एहि अवसर सहाय सोइ होऊ ॥  
 बहुविधि विनय कीन्हि तेहि काला । प्रगटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला ॥  
 प्रभु विलोकि मुनि नयन जुड़ाने । होइहि काजु हिएँ हरपाने ॥  
 अति आरति कहि कथा सुनाई । करहु कृपा करि होहु सहाई ॥  
 आपन रूप देहु प्रभु मोही । आन भाँति नहिँ पावौं ओही ॥  
 जेहि विधि नाथ होइ हित मोरा । करहु सो बेगि दास मैं तोरा ॥  
 निज माया बल देखि विसाला । हियेँ हँसि बोले दीनदयाला ॥

दो०—जेहि विधि होइहि परम हित नारद सुनहु तुम्हार ।

सोइ हम करव न आन कछु वचन न मृषाहमार ॥१३२॥

कुपथ माग रुज व्याकुल रोगी । वैद न देइ सुनहु मुनि जोगी ॥  
 एहि विधि हित तुम्हार मैं ठयऊ । कहिअस अंतरहित प्रभु भयऊ ॥  
 माया विवस भए मुनि मृदा । समुझी नहिँ हरि गिरा निगूढा ॥  
 गवने तुरत तहाँ रिपिराई । जहाँ स्वयंवर भूमि बनाई ॥  
 निज निज आसन बैठे राजा । बहु बनाव करि सहित समाजा ॥  
 मुनि मन हरप रूप अति मोरें । मोहितजि आनहि चरिहिन भोरें ॥  
 मुनि हित कारन कृपानिधाना । दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना ॥  
 सो चरित्र लखि काहुँ न पावा । नारद जानि सबहिँ सिर नावा ॥

दो०—रहे तहाँ दुइ रुद्र गन ते जानहिं सब भेउ ।  
विप्रवेश देखत फिरहिं परम कौतुकी तेउ ॥१३३॥

जेहिं समाज बैठे मुनि जाई। हृदयँ रूप अहमिति अधिकारि ॥  
तहँ बैठे महेस गन दोऊ। विप्रवेश गति लखइ न कोऊ ॥  
करहिं कूटि नारदहि सुनाई। नीकि दीन्हि हरि सुंदरताई ॥  
गीझिहि गजकुअँरि छवि देखी। इन्हहि वरिहि हरि जानि विसेपी ॥  
मुनिहि मोह मन हाथ पराएँ। हँसहिं संभु गन अति सचु पाएँ ॥  
जदपि सुनहिं मुनि अटपटि बानी। समुझि न परइ बुद्धि भ्रम सानी ॥  
काहुँ न लखा सो चरित विसेषा। सो सरूप नृपकन्याँ देखा ॥  
मर्कट वदन भयंकर देही। देखत हृदयँ क्रोध भा तेही ॥

दो०—सखीँ संग लै कुअँरि तव चलि जनु राजमराल ।  
देखत फिरइ महीप सब कर सरोज जयमाल ॥१३४॥

जेहि दिसि बैठे नारद फूली। सो दिसि तेहिं न विलोकी भूली ॥  
पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं। देखि दसा हर गन मुसुकाहीं ॥  
धरि नृपतनु तहँ गयउ कृपाला। कुअँरि हरपि भेलेउ जयमाला ॥  
दुलहिनि लै गे लच्छिनिवासा। नृपसमाज सब भयउ निरासा ॥  
मुनि अति विकल सोहँ मति नाठी। मनि गिरि गई छूटि जनु गाँठी ॥  
तव हर गन बोले मुसुकाई। निज मुख मुकुर विलोकहु जाई ॥  
अस कहि दोउ भागे भयँ भारी। वदन दीख मुनि वारि निहारी ॥  
वेषु विलोकि क्रोध अति वाढ़ा। तिन्हहि सराप दीन्ह अति गाढ़ा ॥

दो०—होहु निसाचर जाइ तुम्ह कपटी पापी दोउ ।  
हँसेहु हमहि सो लेहु फल वहुरि हँसेहु मुनि कोउ ॥१३५॥

पुनि जल दीख रूप निज पावा । तदपि हृदयँ संतोष न आवा ॥  
 फरकत अधर कोप मन :मार्हीं । सपदि चले कमलाशति पार्हीं ॥  
 देहउँ श्राप कि . मरिहउँ जाई । जगत मोरि उपहास कराई ॥  
 बीचहिं -पंथ -मिले- दनुजारी । संग रमा सोइ राजकुमारी ॥  
 बोले मधुर वचन सुरसाई । मुनि कहँ चले विकल की नाई ॥  
 मुनत वचन उपजा अति क्रोधा । माया बस न रहा मन बोधा ॥  
 पर संपदा सकहु नहिं देखी । तुम्हरे इरिषा कपट विसेपी ॥  
 मथत सिंधु रुद्रहि . बौरायहु । सुरन्ह प्रेरि विष पान करायहु ॥  
 दो०—असुर सुरा विष संकरहि आपु रमा मनि चारु ।

स्वारथ साधक कुटिल तुम्ह सदा कपट व्यवहारु ॥ १३६ ॥

परम स्वतंत्र न सिर पर कोई । भावइ मनहि करहु तुम्ह सोई ॥  
 भलेहि मंद मंदेहि भल करहु । निसमय हरप न हियँ कलु धरहु ॥  
 डहकि डहकि परिचेहु सब काहू । अति असंक मन सदा उछाहु ॥  
 करम सुभासुभ तुम्हहि न बाधा । अब लागि तुम्हहि न काहूँ साधा ॥  
 भले भवन अब वायन दीन्हा । पावहुगे फल आपन कीन्हा ॥  
 बंचेहु मोहि जवनि धरि देहा । सोइ तनु धरहु श्राप मम एहा ॥  
 कपि आकृति तुम्ह कीन्हि हमारी । करिहहिं कोस सहाय तुम्हारी ॥  
 मम अपकार कीन्ह तुम्ह भारी । नारि विरहँ तुम्ह होव दुखारी ॥  
 दो०—श्राप सीस धरि हरपि हियँ प्रभु बहु विनती कीन्हि ।

निज माया कै प्रबलता करपि कृपानिधि लीन्हि ॥ १३७ ॥

जब हरि माया दूर निवारी । नहिं तहँ रमा न राजकुमारी ॥  
 तब मुनि अति सभित हरि चरना । गहे पाहि प्रनतारति हरना ॥

मृषा होउ मम श्राप कृपाला । मम इच्छा कह दीनदयाला ॥  
 मैं दुर्बचन कहे बहुतेरे । कह मुनि पाप मिटिहिं किमि मेरे ॥  
 जपहु जाइ संकर सत नामा । होइहि हृदयँ तुरत विश्रामा ॥  
 कोउ नहिं सिव समान प्रिय मोरें । असि परतीति तजहु जनि भोरें ॥  
 जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी । सो न पाव मुनि भगति हमारी ॥  
 अस उर धरि महि विचरहु जाई । अव न तुम्हहि माया निअराई ॥  
 दो०—बहुविधि मुनिहि प्रबोधि प्रभु तव भए अंतरधान ।

सत्यलोक नारद चले करत राम गुन गान ॥ १३८ ॥  
 हर गन मुनिहि जात पथ देखी । विगतमोह मन हरष विसेपी ॥  
 अति सभित नारद पहिं आए । गहि पद आरत बचन सुनाए ॥  
 हर गन हम न विप्र मुनिराया । बड़ अपराध कीन्ह फल पाया ॥  
 श्राप अनुग्रह करहु कृपाला । बोले नारद दीनदयाला ॥  
 निसिचर जाइ होहु तुम्ह दोऊ । वैभव विपुल तेज बल होऊ ॥  
 भुजबल विस्व जितव तुम्ह जहिआ । धरिहिं विष्णु मनुज तनु तहिआ ॥  
 समर मरन हरि हाथ तुम्हारा । होइहहु मुकुत न पुनि संसारा ॥  
 चले जुगल मुनि पद सिर नाई । भए निसाचर कालहि पाई ॥  
 दो०—एक कल्प एहि हेतु प्रभु लीन्ह मनुज अवतार ।

सुर रंजन सज्जन सुखद हरि भंजन भुवि भार ॥ १३९ ॥  
 एहि विधि जनम करम हरि केरे । सुंदर सुखद विचित्र घनेरे ॥  
 कल्प कल्प प्रति प्रभु अवतरहीं । चारु चरित नाना विधि करहीं ॥  
 तव तव कथा मुनीसन्ह गाई । परम पुनीत प्रबंध बनाई ॥  
 विविध प्रसंग अनूप वखाने । करहिं नमुनि आचरजु सयाने ॥

हरि अनंत हरिकथा अनंता । कहहिं सुनहिं बहुविधि सब संता ॥  
 गमचंद्र के चरित सुहाए । कल्प कोटि लागि जाहिं न गाए ॥  
 यह प्रमंग मैं कहा भवानी । हरि मायों मोहहिं मुनि ग्यानी ॥  
 प्रभु कौतुकी प्रनत हितकागी । सेवत सुलभ मकल दुखहारी ॥  
 सो०—सुर नर मुनि कोउ नाहिं जेहि न मोह माया प्रबल ।

अस विचारि मन माहिं भजिअ महामाया पतिहि ॥१४०॥

अपर हेतु सुनु मैलकुमारी । कहउँ विचित्र कथा विम्तारी ॥  
 जेहि कारन अज अगुन अरूपा । ब्रह्म भयउ कोसलपुर भूपा ॥  
 जो प्रभुविपिन फिरत तुम्ह देखा । बंधु ममेत धरें मुनिवेपा ॥  
 जासु चरित अवलोकि भवानी । सती सरार रहिहु शौरानी ॥  
 अजहुँ न छाया मिटति तुम्हारी । तासु चरित सुनु भ्रम रुज हारी ॥  
 लीला कीन्हि जो तेहिं अपतारा । मो मव कहिहुँ मति अनुमारा ॥  
 भरद्वाज मुनि मंरुग बानो । मकुचि सप्रेम उमा मुसुकानी ॥  
 लगे बहुरि बरनै वृषकेतु । मो अवतार भयउ जेहि हेतु ॥  
 दो०—सो मैं तुम्ह सन कहउँ मयु सुनु मुनीस मन लाइ ।

राम कथा कलि मल हरनि मंगल करनि सुहाइ ॥१४१॥

स्वायंभू मनु अरु मतरूपा । जिन्ह ते भैं नरसृष्टि अनूपा ॥  
 दंपति धरम आचरन नीका । अजहुँ गाव श्रुति जिन्ह कैलासा ॥  
 नृप उत्तानपाठ सुत तासु । ध्रुव हरिभगत भयउ सुत जासु ॥  
 लघु सुत नाम प्रियव्रत ताही । वेद पुरान प्रमंमहिं जाही ॥  
 देवहृति पुनि तासु कुमारी । जो मुनि कर्दम कै प्रिय नारी ॥  
 आदिदेव प्रभु दीनदयाला । जठर धरेउ जेहिं कपिल कृपाला ॥

सांख्य सास्त्र जिन्ह प्रगट बखाना । तत्त्व विचार निपुन भगवाना ॥  
तेहिं मनु राज कीन्ह बहु काला । प्रभु आयसु सब विधि प्रतिपाला ॥

सो०—होइ न विषय विराग भवन बसत भा चौथपन ।

हृदयँ बहुत दुख लाग जनम गयउ हरि भगति विनु ॥१४२॥

बरवस राज सुतहि तव दीन्हा । नारि समेत गवन वन कीन्हा ॥  
तीरथ वर नैमिष विख्याता । अति पुनीत साधक सिधि दाता ॥  
बसहिं तहाँ मुनि सिद्ध समाजा । तहाँ हियँ हरषि चलेउ मनु राजा ॥  
पंथ जात सोहहिं सतिधीरा । ग्यान भगति जनु धरें सरीरा ॥  
पहुँचे जाइ धेनुमति तीरा । हरषि नहाने निरमल नीरा ॥  
आए मिलन सिद्ध मुनि ग्यानी । धरम धुरंधर नृपरिषि जानी ॥  
जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाए । मुनिन्ह सकल सादर करवाए ॥  
कृस सरीर मुनिपट परिधाना । सत समाज नित मुनिहिं पुराना ॥

दो०—द्वादस अच्छर मंत्र पुनि जपहिं सहित अनुराग ।

वासुदेव पद पंकरुह दंपति मन अति लाग ॥१४३॥

करहिं अहार साक फल कंदा । सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानंदा ॥  
पुनि हरि हेतु करन तप लागे । वारि अधार मूल फल त्यागे ॥  
उर अभिलाष निरंतर होई । देखिअ नयन परम प्रभु सोई ॥  
अगुन अखंड अनंत अनादी । जेहि चिंतहिं परमाश्रवादी ॥  
नेति नेति जेहि वेद निरूपा । निजानंद निरूपाधि अनूपा ॥  
संभु विरंचि विष्णु भगवाना । उपजहिं जासु अंस तें नाना ॥  
ऐसेउ प्रभु सेवक बस अहई । भगत हेतु लीलातनु गहई ॥  
जौ यह वचन सत्य श्रुति भाषा । तौ हमार पूजिहि अभिलाषा ॥

दो०—एहि विधि चीते वरप पट सहस वारि आहार ।

संवत सप्त सहस्र पुनि रहे समीर अधार ॥१४४॥

वरप सहस दस त्यागेउ सोऊ । ठाढ़े रहे एक पद दोऊ ॥

विधिहरि हर तप देखि अपारा । मनु समीप आए बहु वारा ॥

मागहु वर बहु भाँति लोभाए । परम धीर नहिं चलहिं चलाए ॥

अस्थिमात्र होइ रहे सरीरा । तदपि मनाग मनहिं नहिं पीरा ॥

प्रभु सर्वग्य दास निज जानी । गति अनन्य तापस नृप रानी ॥

भागु भागु चरु भै नभ बानी । परम गभीर कृपामृत सानी ॥

मृतक जिआवनि गिरा सुहाई । श्रवन रंध्र होइ उर जव आई ॥

दृष्टपुष्ट तन भए सुहाए । मानहुँ अवहिं भवन ते आए ॥

दो०—श्रवन सुधा सम वचन सुनि पुलक प्रफुल्लित गात ।

बोले मनु करि दंडवत प्रेम न हृदयँ समात ॥१४५॥

सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनु । विधि हरि हर वंदित पद रेनु ॥

सेवत सुलभ सकल सुख दायक । प्रनतपाल सचराचर नायक ॥

जौ अनाथ हित हम पर नेहू । तौ प्रसन्न होइ यह वर देहू ॥

जो सरूप बस सिव मन माहीं । जेहि कारन मुनि जतन कराहीं ॥

जो भुसुंदि मन मानस हंसा । सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा ॥

देखहिं हम सोरूप भरि लोचन । कृपा करहु प्रनतारति मोचन ॥

दंपति वचन परम प्रिय लागे । मृदुल विनीत प्रेम रस पागे ॥

भगत बल्लल प्रभु कृपानिधाना । विस्ववास प्रगटे भगवाना ॥

दो०—नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम ।

लाजहिं तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम ॥१॥



सरद मयंक वदन छवि सीवा । चारु कपोल चिबुकदर ग्रीवा ॥  
 अधर अरुन रद सुंदर नासा । विधु कर निकर विनिंदक हासा ॥  
 नव अंबुज अंबक छवि नोकी । चितवनि ललित भावँती जीकी ॥  
 भृकुटि मनोज चाप छवि हारी । तिलक ललाट पटल दुतिकारी ॥  
 कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा । कुटिल केस जनु मधुप समाजा ॥  
 उर श्रीवत्स रुचिर वनमाला । पदिक हार भूपन मनिजाला ॥  
 केहरि कंधर चारु जनेऊ । बाहु विभूपन सुंदर तेऊ ॥  
 करिकर सरिस सुभग भुजदंडा । कटि निपंग कर सर कोदंडा ॥  
 दो०—तडित विनिंदक पीत पट उदर रेख वर तीनि ।

नाभि मनोहर लेति जनु जमुन भवँर छवि छीनि ॥१४७॥

पद राजीव वरनि नहिं जाही । मुनि मन मधुप वसहिं जेन्ह माहीं ॥  
 वाम भाग सोभति अनुकूला । आदिसक्ति छविनिधि जगमूला ॥  
 जासु अंस उपजहिं गुनखानी । अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी ॥  
 भृकुटि विलास जासु जग होई । राम वाम दिसि सीता सोई ॥  
 छविसमुद्र हरि रूप विलोकी । एकटक रहे नयन पट रोकी ॥  
 चितवहिं सादर रूप अतूपा । तृप्ति न मानहिं मनु सतरूपा ॥  
 हरप विवस तन दसा भुलानी । परे दंड इव गहि पद पानी ॥  
 सिर परसे प्रभु निज कर कंजा । तुरत उठाए करुनापुंजा ॥  
 दो०—बोले कृपानिधान पुनि अति प्रसन्न मोहि जानि ।

मागहु वर जोइ भाव मन महादानि अनुमानि ॥१४८॥

सुनि प्रभु वचन जोरि जुग पानी । धरि धीरजु बोली मृदु वानी ॥  
 नाथ देखि पद कमल तुम्हारे । अब पूरे सब काम हमारे ॥

एक लालसा बड़ि उर माहीं । सुगमअगम कहिजाति सो नाहीं ॥  
 तुम्हहि देत अति सुगम गोसाईं । अगम लाग मोहि निज कृपनाईं ॥  
 जथा दरिद्र विवुधतरु पाईं । बहु संपति मागत सकुचाईं ॥  
 तासु प्रभाउ जान नहिं सोईं । तथा हृदयें मम संसय होईं ॥  
 सो तुम्ह जानहु अंतरजामी । पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी ॥  
 सकुच विहाइ मागु नृप मोही । मोरें नहिं अदेय कछु तोही ॥  
 दो०—दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहउं सतिभाउ ।

चाहउं तुम्हहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ ॥१४९॥  
 देखि प्रीति सुनि वचन अमोले । एवमस्तु करुनानिधि बोले ॥  
 आपु सरिस खोजौ कहें जाईं । नृप तव तनय होव मैं आईं ॥  
 सतरूपहि विलोकि कर जोरें । देवि मागु वरु जो रुचि तोरें ॥  
 जो वरु नाथ चतुर नृप मागा । सोइ कृपाल मोहि अति प्रिय लागा  
 प्रभु परंतु सुठि होति ठिठार्ड । जटपि भगत हित तुम्हहि सोहाईं ॥  
 तुम्ह ब्रह्मादि जनक जग स्वामी । ब्रह्म सकल उर अंतरजामी ॥  
 अस समुझत मन संसय होईं । कहा जो प्रभु प्रवान पुनि मोईं ॥  
 जे निज भगत नाथ तव अहही । जो मुख पावहिं जो गति लहहीं ॥  
 दो०—सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति सोइ निज चरन सनेहु ।

सोइ विवेक सोइ रहनि प्रभु हमहि कृपा करि देहु ॥१५०॥  
 सुनि मृदु गूढ रुचिर वर रचना । कृपामिधु बोले मृदु वचना ॥  
 जो कछु रुचि तुम्हरे मन माही । मैं मो दीन्ह भव भंमय नाही ॥  
 मातु विवेक अलौकिक तोरें । कवहुं न मिटिहि अनुग्रह मोरें ॥  
 वंदि चरन मनु कहेउ बहोरी । अवर एक पिनती प्रभु मोरी ॥

सुत विपद्क तव पद रति होऊ । मोहि बड़ सूढ़ कहँ किन कोऊ ॥  
 मनि धिनु फनि भिगि जल धिनु गीना । मम जीवन तिगि तुम्हहि अधीना ॥  
 अस बरु मागि चरन गहि रहेऊ । एवमस्तु करुनानिधि कहेऊ ॥  
 अब तुम्ह मम अनुसासन मानी । बसहु जाइ सुरपति रजधानी ॥

सो०—तहँ करि भोग बिसाल तात गएँ कछु काल पुनि ।

होइहहु अवध भुआल तव मैं होब तुम्हार सुत ॥१५१॥

इच्छामय नखेप सँवारें । होइहउँ प्रगट निकेत तुम्हारें ॥  
 अंसन्ह सहित देह धरि ताता । करिहउँ चरित भगत सुखदाता ॥  
 जे सुनि सादर नर बड़भागी । भव तरिहहिँ ममता मद त्यागी ॥  
 आदिसक्ति जेहिँ जग उपजाया । सोउ अवतरिहि मोरि यह माया ॥  
 पुरउव मैं अभिलाष तुम्हारा । सत्य सत्य पन सत्य हमारा ॥  
 पुनि पुनि अस कहि कृपानिधाना । अंतरधान भए भगवाना ॥  
 दंपति उर धरि भगत कृपाला । तेहिँ आश्रम निवसे कछु काला ॥  
 समय पाइ तनु तजि अनयासा । जाइ कीन्ह अमरावति वासा ॥

सो०—यह इनिहास पुनीत अति उमहि कही वृपकेतु ।

भरद्वाज सुनु अपर पुनि राम जनम कर हेतु ॥१५२॥

सासपारायण, पाँचवाँ विश्राम

सुनु गुनि कथा पुनीत पुरानी । जो गिरिजा प्रति संभु बखानी ॥  
 विख विदित एक कैकय देख । सत्यकेतु तहँ बसइ नरेसू ॥  
 धरम धुरंधर नीति निधाना । तेज प्रताप सील बलवाना ॥  
 तेहिँ कें भए जुगल सुत वीरा । सब गुन धाम महा रनधीरा ॥

राज धनी जो जेठ सुत आही । नाम प्रतापभानु अस ताही ॥  
 अपर सुतहि अरिर्मर्दन नामा । भुज बल अतुल अचल संग्रामा ॥  
 भाइहि भाइहि परम समीती । सकल दोष छल वरजित प्रीती ॥  
 जेठे सुतहि राज नृप दीन्हा । हरि हित आपु गवन वन कीन्हा ॥  
 दो०—जब प्रतापरवि भयउ नृप फिरी दोहाई देस ।

प्रजा पाल अति वेदविधि कतहुँ नहीं अघ लेस ॥१५३॥  
 नृप हितकारक सचिव सयाना । नाम धरमरुचि सुक समाना ॥  
 सचिव सयान बंधु चलवीरा । आपु प्रतापपुंज रनधीरा ॥  
 सेन संग चतुरंग अपारा । अमित सुभट सब समर जुझारा ॥  
 सेन विलोकि राउ हरपाना । अरु वाजे गहगहे निसाना ॥  
 विजय हेतु कटकई बनाई । सुदिन साधि नृप चलेउ वजाई ॥  
 जहँ तहँ परीं अनेक लराई । जीते सकल भूप वरिआई ॥  
 सप्त दीप भुजबल बस कीन्हे । लै लै दंड छाड़ि नृप दीन्हे ॥  
 सकल अवनि मंडल तेहि काला । एक प्रतापभानु महिपाला ॥  
 दो०—स्वयस विस्व करि बाहुबल निज पुर कीन्ह प्रवेश ।

अरथ धरम कामादि सुख सेवइ ममयँ नरेसु ॥१५४॥  
 भूप प्रतापभानु बल पाई । कामधेनु भै भूमि सुहाई ॥  
 सब दुख वरजित प्रजा सुखारी । धरमसील सुंदर नर नारी ॥  
 सचिव धरमरुचि हरि पद प्रीती । नृप हित हेतु सिखव नित नीती ॥  
 गुर सुर संत पितर महिदेवा । करइ सदा नृप सब कै सेवा ॥  
 भूप धरम जे वेद बखाने । सकल करइ सादर सुख माने ॥  
 दिन प्रति देइ विविध विधि दाना । सुनइ सास्त्र वर वेद पुराना ॥

नाना वापीं कूप तडागा । सुमन वाटिका सुंदर वागा ॥  
 विप्रभवन सुरभवन सुहाए । सब तीरथन्ह विचित्र बनाए ॥  
 दो०—जहँ लगी कहे पुरान श्रुति एक एक सब ज ।

बार सहस्र सहस्र नृप किए सहित अनुराग ॥१५५॥  
 हृदयँ न कलु फल अनुसंधाना । भूप विवेकी परम सुजाना ॥  
 करइ जे धरम करम मन वानी । वासुदेव अर्पित नृप ग्यानी ॥  
 चढ़ि वर वाजि वार एक राजा । मृगया कर सब साजि समाजा ॥  
 विंध्याचल गभीर वन गयऊ । मृग पुनीत बहु मारत भयऊ ॥  
 फिरत विपिन नृप दीख वराहू । जनु वन दुरेउ ससिहि ग्रसि राहू ॥  
 बड़ विधु नहिँ समात मुख माहीं । मनहुँ क्रोध वस उगिलत नाहीं ॥  
 कोल कराल दसन छवि गाई । तनु विसाल पीवर अधिकार्ई ॥  
 घुरुघुरात हय आरौ पाएँ । चकित विलोकत कान उटाएँ ॥  
 दो०—नील महीधर सिखर सम देखि विसाल वराहू ।

चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप हाँकि न होइ निवाहू ॥१५६॥  
 आघत देखि अधिक रव वाजी । चलेउ वराह मरुत गति भाजी ॥  
 तुरत कीन्ह नृप सर संधाना । महि मिलि गयउ विलोकत वाना ॥  
 तकि तकि तीर महीस चलावा । करि छल सुअर सरीर बचावा ॥  
 प्रगटत दुरत जाइ मृग भागा । रिस वस भूप चलेउ सँग लागा ॥  
 गयउ दूरि घन गहन वराहू । जहँ नाहिन गज वाजि निवाहू ॥  
 अति अकेल वन विपुल कलेसू । तदपि न मृग मग तजइ नरेसू ॥  
 कोल विलोकि भूप बड़ धीरा । भागि पैठ गिरिगुहाँ गभीरा ॥  
 अगम देखि नृप अति पछितार्ई । फिरेउ महावन परेउ भुलार्ई ॥

दो०—खेद खिन्न छुद्रित वृषित राजा बाजि समेत ।

खोजत व्याकुल सरित सर जल त्रिनु भयउ अचेत ॥१५७॥

फिरत विपिन आश्रम एक देखा । तहँ वस नृपति कपट मुनिबेषा ॥

जासु देस नृप लीन्ह छड़ाई । समर सेन तजि गयउ पराई ॥

समय प्रतापभानु कर जानी । आपन अति असमय अनुमानी ॥

गयउ न गृह मन बहुत गलानी । मिला न राजहि नृप अभिमानी ॥

रिस उर मारि रंक जिमि राजा । विपिन बसइ तापस कें साजा ॥

तासु समीप गवन नृप कीन्हा । यह प्रतापरवि तेहिं तव चीन्हा ॥

राउ वृषित नहिं सो पहिचाना । देखि सुवेष महापुनि जाना ॥

उतरि तुरग तें कीन्ह प्रनामा । परम चतुर न कहेउ निज नामा ॥

दो०—भूपति वृषित विलोकि तेहिं सरवरु दीन्ह देखाइ ।

मज्जन पान समेत हय कीन्ह नृपति हरपाइ ॥१५८॥

गँ श्रम सकल सुखी नृप भयऊ । निज आश्रम तापस लै गयऊ ॥

आसन दीन्ह अत्त रवि जानी । पुनि तापस बोलेउ मृदु बानी ॥

को तुम्ह कस वन फिरहु अकैलें । सुंदर जुवा जीव परहेलें ॥

चक्रवर्ति के लच्छन तोरें । देखत दया लागि अति मोरें ॥

नाम प्रतापभानु अवनीसा । तासु सचिव में सुनहु मुनीसा ॥

फिरत अहेरें परेउँ भुलाई । बड़ें भाग देखेउँ पद आई ॥

हम कहँ दुर्लभ दरस तुम्हारा । जानत हीं कछु भल होनिशारा ॥

कह मुनि तात भयउ अँधिआरा । जोजन सत्तारि नगरु तुम्हारा ॥

दो०—निसा घोर गंभीर वन पंथ न सुनहु सुजान ।

बसहु आजु अस जानि तुम्ह जाएहु होत विहान ॥१५९(क)॥



सो०—तुलसी देखि सुवेपु भूलहिं मूढ़ न चतुर नर ।

सुंदर केकिहि पेखु वचन सुधा सम असन अहि ॥१६१(ख)॥

ताते गुपुत रहउँ जग माहीं । हरि तजि किमपि प्रयोजन नाहीं ॥  
 प्रभु जानत सब बिनहिं जनाएँ । कहहु कवनि सिधिलोक रिझाएँ ॥  
 तुम्ह सुचि सुमति परम प्रिय मोरें । प्रीति प्रतीति मोहि पर तोरें ॥  
 अब जौं तात दुरावउँ तोही । दारुन दोष घटइ अति मोही ॥  
 जिमि जिमि तापसु कथइ उदामा । तिमि तिमि नृपहि उपज विश्वासा ॥  
 देखा स्वयस कर्म मन बानी । तब बोला तापस बगध्यानी ॥  
 नाम हमार एकतनु भाई । सुनि नृप बोलेउ पुनि सिरु नाई ॥  
 कहहु नाम कर अरथ बखानी । मोहि सेवक अति आपन जानी ॥

दो०—आदिसृष्टि उपजी जबहिं तब उत्पति भै मोरि ।

नाम एकतनु हेतु तेहि देह न धरी बहोरि ॥१६२॥

जनि आचरजु करहु मन माहीं । सुत तप तें दुर्लभ कछु नाहीं ॥  
 तपबल तें जग सृजइ विधाता । तपबल विष्णु भए परित्राता ॥  
 तपबल संभु करहिं संघारा । तप तें अगम न कछु संसारा ॥  
 भयउ नृपहि सुनि अति अनुरागा । कथा पुरातन कहै सो लागा ॥  
 करम धरम इतिहास अनेका । करइ निरूपन विरति विवेका ॥  
 उद्भव पालन प्रलय कहानी । कहेसि अमित आचरज बखानी ॥  
 सुनि महीप तापस बस भयऊ । आपन नाम कहन तब लयऊ ॥  
 कह तापस नृप जानउँ तोही । कीन्हेहु कपट लाग भल मोही ॥

सो०—सुनु महीस असि नीति जहँ तहँ नाम न कहहिं नृप ।

मोहि तोहि पर अति प्रीति सोइ चतुरता विचारि तवा ॥१६३॥



नाम तुम्हार प्रताप दिनेसा । सत्यकेतु तव पिता नरेसा ॥  
 गुर प्रसाद सब जानिअ राजा । कहिअ न आपन निअकाजा ॥  
 देखि तात तव सहज सुधाई । प्रीति प्रतीति नीति पुनाई ॥  
 उपजि परी ममता मन मोरें । कहउँ कथा निज पूछे तोरें ॥  
 अब प्रसन्न मैं संसय नाहीं । मागु जो भूप भाव मन माहीं ॥  
 सुनि सुबचन भूपति हरषाना । गहिपद विनय कीन्हि विधि नाना  
 कृपासिंधु मुनि दरसन रें । चारि पदारथ करतल मोरें ॥  
 प्रभुहि तथापि प्रसन्न बिलोकी । गि अगम बर होउँ असोकी ॥

दो०—जरा मरन दुख रहित तनु समर जितै जनि कोउ ।

एकछत्र रिपुहीन महि राज कल्प सत होउ ॥१६४॥

कह ता नृप ऐसेइ होऊ । कारन एक कठिन सुनु सोऊ ॥  
 कालउ तुअ पद नाइहि सीसा । एक विप्रकुल डि महीसा ॥  
 तपबल विप्र सदा बरिआरा । तिन्ह के कोप न कोउ रखवारा ॥  
 जौं विप्रन्ह बस करहु नरेसा । तौ तुअ बस विधि विष्नु महेसा ॥  
 चल न ब्रह्मकुल सन बरिआई । सत्य कहउँ दोउ भुजा उठाई ॥  
 विप्र श्राप विनु सुनु महिपाला । तोर नास नहिं कवनेहुँ काला ॥  
 हरषेउ राउ बचन सुनि तास । नाथ न होइ मोर अब नास ॥  
 तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना । मो कहूँ सर्व काल कल्याना ॥

दो०—एवमस्तु कहि कपटमुनि बोला कुटिल बहोरि ।

मिलव हमार भुलाव निज कहहु त हमहि न खोरि ॥१६५॥

तातें मैं तोहि बरजउँ राजा । कहें कथा तव परम अकाजा ॥  
 छठें श्रवन यह परत कहानी । नास तुम्हार सत्य मम बानी ॥

यह प्रगटें अथवा द्विजश्रापा । नास तोर सुनु भानुप्रतापा ॥  
 खान उपायँ निधन तव नाहीं । जौं हरि हर कोपहिं मन माहीं ॥  
 सत्य नाथ पद गहि नृप भापा । द्विज गुर कोप कहहु को राखा ॥  
 राखइ गुर जौं कोप विधाता । गुर विरोध नहिं कोउ जगत्राता ॥  
 जौं न चलव हम कहे तुम्हारें । होउ नास नहिं सोच हमारें ॥  
 एकहिं डर डरपत मन मोरा । प्रभु महिदेव श्राप अति घोरा ॥  
 दो०—होहिं विप्र वस कवन विधि कहहु कृपा करि सोउ ।

तुम्ह तजि दीनदयाल निज हितू न देखउँ कोउ ॥१६६॥

सुनु नृप विविध जतन जग माहीं । कष्टसाध्य पुनि होहिं कि नाहीं ॥  
 बहइ एक अति सुगम उपाई । तहाँ परंतु एक कठिनाई ॥  
 मम आधीन जुगुति नृप सोई । मोर जाव तव नगर न होई ॥  
 आजु लगें अरु जव तें भयऊँ । काहू के गृह ग्राम न गयऊँ ॥  
 लौं न जाउँ तव होइ अकाजू । वना आइ असमंजस आजू ॥  
 सुनि महीस बोलेउ मृदु वानी । नाथ निगमअसि नीति वखानी  
 बड़े सनेह लघुन्ह पर करहीं । गिरि निज सिरनि सदा तन धरहीं  
 बलधि अगाध मौलि वह फेनू । संतत धरनि धरत सिर रेनू ॥  
 दो०—अस कहि गहे नरेस पद स्वामी होहु कृपाल ।

मोहि लागि दुख सहिअ प्रभु सज्जन दीनदयाल ॥१६७॥

जानि नृपहि आपन आधीना । बोला तापस कपट प्रवीना ॥  
 सत्य कहउँ भूपति सुनु तोही । जग नाहिन दुर्लभ कछु मोही ॥  
 बवसि काज मैं करिहउँ तोरा । मन तन वचन भगत तैं मोरा ॥  
 जोग जुगुति तप मंत्र प्रभाऊ । फलइ तवहिं जव करिअ दुराऊ ॥

जाँ नरेस मैं करौँ रसोई । तुम्ह परुसहु मोहि जान न कोई ॥  
 अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई । सोइ सोइ तव आयसु अनुसरई ॥  
 पुनि तिन्ह के गृह जेवँइ जोऊ । तव बस होइ भूप सुनु सोऊ ॥  
 जाइ उपाय रचहु नृप एहू । संवत भरि संकल्प करेहू ॥  
 दो०—नित नूतन द्विज सहस सत वरेहु सहित परिवार ।

मैं तुम्हरे संकल्प लागि दिनहिं करबि जेवनार ॥१६८॥

एहि विधि भूप अति थोरें । होइहहिं सकल विप्र बस तोरें ॥  
 करिहहिं विप्र होम मख सेवा । तेहिं प्रसंग सहजेहिं बस देवा ॥  
 और एक तोहि कहउँ लखाऊ । मैं एहिं वैष न आउब काऊ ॥  
 तुम्हरे उपरोहित कहूँ राया । हरि आनब मैं करि निज माया ॥  
 तपबल तेहि करि आपु समाना । रखिहउँ इहाँ बरष परवाना ॥  
 मैं धरि तासु वेषु सुनु राजा । सब विधि तोर सँवारब काजा ॥  
 गै निसि बहुत सयन अब कीजे । मोहि तोहि भूप भेंट दिन तीजे ॥  
 मैं तपबल तोहि तुरग समेता । पहुँचैहउँ सोवतहि निकेता ॥  
 दो०—मैं आउब सोइ वेषु धरि पहिचानेहु तव मोहि ।

जब एकांत बोलाइ सब कथा सुनावौँ तोहि ॥१६९॥

सयन कीन्ह नृप आयसु मानी । आसन जाइ बैठ छलग्यानी ॥  
 श्रमित भूप निद्रा अति आई । सो किमि सोव सोच अधिकारी ॥  
 कालकेतु निसिचर तहँ आवा । जेहिं स्रकर होइ नृपहि भुलावा ॥  
 परम मित्र तापस नृप केरा । जानइ सो अति कपट घनेरा ॥  
 तेहि केसत सुत अरु दस भाई । खल अति अजय देव दुखदाई ॥  
 प्रथमहिं भूप समर सब मारे । विप्र संत सुर देखि दुखारे ॥

तेहिं खल पाछिल बयरु सँभारा । तापस नृप मिलि मंत्र विचारा ॥  
जेहिं रिपु छय सोइ रचेन्हि उपाऊ । भावी बस न जान कछु राऊ ॥

दो०—रिपु तेजसी अकेल अपि लघु करि गनिअन ताहु ।

अजहुँ देत दुख रवि ससिहि सिर अवसेपित राहु ॥१७०॥

तापस नृप निज सखहि निहारी । हरपि मिलेउ उठि भयउ मुखारी ॥  
मित्रहि कहि सत्र कथा सुनाई । जातुधान बोला सुख पाई ॥  
अव साधेउँ रिपु सुनहु नरेसा । जौं तुम्ह कीन्ह मोर उपदेसा ॥  
परिहरि सोच रहहु तुम्ह सोई । विनु औपधत्रिआधि विधि खोई ॥  
कुल समेत रिपु मूल बहाई । चौथे दिवस मिलव मै आई ॥  
तापस नृपहि बहुत परितोपी । चला महाकपटी अतिरोपी ॥  
भानुप्रतापहि बाजि समेता । पहुँचाएसि छन माझ निकेता ॥  
नृपहि नारि पहिं गयन कराई । हयगृहँ चाँधेसि बाजि बनाई ॥

दो०—राजा के उपरोहितहि हरि लै गयउ बहोरि ।

लै राखेसि गिरि खोह महुँ मायाँ करि मति भोरि ॥१७१॥

आपु विरचि उपरोहित रूपा । परेउ जाइ तेहि सेज अनूपा ॥  
जागेउ नृप अनभएँ विहाना । देखि भवन अति अचरजु माना ॥  
मुनि महिमा मन महुँ अनुमानी । उठेउ गवँहि जेहिं जान न रानी ॥  
कानन गयउ बाजि चढ़ि तेहीं । पुर नर नारि न जानेउ केहीं ॥  
गएँ जाम जुग भूपति आवा । घर घर उत्सव बाज बधावा ॥  
उपरोहितहि देख जय राजा । चकित बिलोक सुमिरि सोइ काजा ॥  
जुग सम नृपहि गए दिन तीनी । कपटी मुनि पद रह मति लीनी ॥  
समय जानि उपरोहित आवा । नृपहि मते सब कहि समुझावा ॥

दो०—नृप हरषेउ पहिचानि गुरु बस रहा न चेत ।

बरे तुरत सत सहस बर बिप्र कुटुंब समेत ॥१७२॥

उपरोहित जेवनार बनाई। छरस चारि बिधि जसि श्रुति गाई ॥

मायामय तेहिं कीन्हि रसोई। बिंजन बहु गनि सकइ नकोई ॥

बिबिध मृगन्ह कर आमिष राँधा। तेहि महुँ बिप्र माँ ल साँधा ॥

भोजन कहूँ सब बि बोलाए। पद प रि सादर बैठाए ॥

परुसन जबहिँ लाग महिपाला। भै अ नी तेहि ॥

बिप्रचंद्र उठि उठि गृह जाहू। है बड़ि हानि अन्न जनि खाहू ॥

भयउ रसोई भूसुर माँसू। सब द्विज उठे नि विस्वासू ॥

भूप विकल मति मोहँ भुलानी। भावी बस न आव मुख बानी ॥

दो०—बोले ि सकोप नहिँ कछु कीन्ह बिचार ।

जाइ निसाचर होहु नृप सहित परिवार ॥१७३॥

छत्रबंधु तैं बिप्र बोलाई। घालै लिए सहित समुदाई ॥

ईस्वर रा धरम हमारा। जैहसि तैं समेत परिवारा ॥

संवत मध्य नास तव होऊ। जलदाता न रहिहि कुल कोऊ ॥

नृप सुनि श्राप विकल अति त्रासा। भै बहोरि बर गिरा अकासा ॥

बिप्रहु श्राप विचारि न दीन्हा। नहिँ अपराध भूप कछु कीन्हा ॥

चकित बिप्र सब सुनि नभ बानी। भूप गयउ जहँ भोजन खानी ॥

तहँ न असन नहिँ बिप्र सुआरा। फिरेउ राउ मन सोच अपारा ॥

सब प्रसंग महिसुरन्ह सुनाई। त्रसित परेउ अघनीं अकुलाई ॥

दो०—भूपति भावी मिटइ नहिँ जदपि न दूषन तोर ।

किएँ अन्यथा होइ नहिँ बिप्रश्राप अति घोर ॥१७४॥

अस कहि सब महिदेव सिधाए । समाचार पुरलोगन्ह पाए ॥  
 सोचहिं दूपन दैवहि देहीं । विरचत हंस काग किय जेहीं ॥  
 उपरोहितहि भवन पहुँचाई । असुर तापसहि खवरिजनाई ॥  
 तैहिं खल जहँ तहँ पत्र पठाए । सजि सजि सेन भूप सब धाए ॥  
 धेरेन्हि नगर निसान बजाई । विविध भाँति नित होइ लराई ॥  
 लक्ष्मे सकल सुभट करि करनी । बंधु समेत परेउ नृप धरनी ॥  
 सत्यकेतु कुल कोउ नहिं वाँचा । विप्रश्राप किमि होइ असाँचा ॥  
 रिपु जिति सब नृप नगर बसाई । निजपुर गवने जय जसु पाई ॥

दो०—भरद्वाज सुनु जाहि जव होइ विधाता वाम ।

धूरि मेरुसम जनक जम ताहि ब्यालसम दाम ॥१७५॥

काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा । भयउ निसाचर सहित समाजा ॥  
 दस सिर ताहि बीस भुजदंडा । रावन नाम वीर वरिवंडा ॥  
 भूप अनुज अरिमर्दन नामा । भयउ सो कुंभकरन बलधामा ॥  
 सचिव जोरहा धरमरुचि जास्य । भयउ विमात्र बंधु लघु तास्य ॥  
 नाम विभीषन जेहि जग जाना । विष्णुभगत विग्यान निधाना ॥  
 रहे जे सुत सेवक नृप केरे । भए निसाचर घोर घनेरे ॥  
 कामरूप खल जिनस अनेका । कुटिल भयंकर विगत विवेका ॥  
 कृपा रहित हिंसक सब पापी । वरनि न जाहिं विश्व परितापी ॥

दो०—उपजे जदपि पुलस्त्यकुल पावन अमल अनूप ।

तदपि महीसुर श्राप बस भए सकल अघरूप ॥१७६॥

कीन्ह विविध तप तीनिहुँ भाई । परम उग्र नहिं वरनि सो जाई ॥  
 गयउ निकट तप देखि विधाता । मागहु वर प्रसन्न मैं ताता ॥



दसमुख कतहुँ खबरि असि पाई। सेन साजि गढ़ घेरेसि जाई॥  
 देखि विकट भट बड़ि कटकाई। जच्छ जीव लै गए पराई॥  
 फिरि सब नगर दसानन देखा। गयउ सोच सुख भयउ विसेपा॥  
 सुंदर सहज अगम अनुमानी। कीन्हि तहाँ रावन रजधानी॥  
 जेहि जस जोग वाँटि गृह दीन्हे। सुखी सकल रजनीचर कीन्हे॥  
 एक वार कुबेर पर धावा। पुष्पक जान जीति लै आवा॥

दो०—कौतुकहीं कैलास पुनि लीन्हेसि जाइ उठाइ ।

मनहुँ तौलि निज बाहुबल चला बहुत सुख पाइ ॥१७९॥

सुख संपति सुत सेन सहाई। जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई॥  
 नित नूतन सब वाढ़त जाई। जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई॥  
 अतिबल कुंभकरन अस भ्राता। जेहि कहुँ नहिं प्रतिभट जग जाता  
 करइ पान सोवइ पट मासा। जागत होइ तिहूँ पुर त्रासा॥  
 जाँ दिन प्रति अहार कर सोई। बिख वेगि सब चौपट होई॥  
 समर धीर नहिं जाइ बखाना। तेहि सम अमित वीर बलवाना॥  
 बारिदनाद जेठ सुत ताम्र। भट महुँ प्रथम लोक जग जाम्र॥  
 जेहि न होइ रन सनमुख कोई। सुरपुर नितहिं परावन होई॥

दो०—कुमुख अकंपन कुलिसरद धूमकेतु अतिकाय ।

एक एक जग जीति सक ऐसे सुभट निकाय ॥१८०॥

कामरूप जानहिं सब माया। सपनेहुँ जिन्ह केंधरम न दाया॥  
 दसमुख बैठ सभाँ एक वारा। देखि अमित आपन परिवारा॥  
 सुत समूह जन परिजन नाती। गनै को पार निसाचर जाती॥  
 सेन विलोकि महज अभिमानी। बोला बचन क्रोध मद मानी॥



सुनहु सकल रजनीचर जूथा। हमरे बैरी विबुध बरूथा ॥  
 ते सनमुख नहिं करहिं लराई। देखि सबल रिपु जाहिं पराई ॥  
 तेन्ह कर मरन एक विधि होई। कहउँ बुझाइ सुनहु अव सोई ॥  
 द्विजभोजन मख होम सराधा। सब कै जाइ करहु तुम्ह वाधा ॥  
 दो०—छुधा छीन बलहीन सुर सहजेहिं मिलिहहिं आइ ।

तव मारिहउँ कि छाड़िहउँ भली भाँति अपनाइ ॥१८१॥

मेघनाद कहूँ पुनि हँकरावा। दीन्ही सिख बलु बयरु बढ़ावा ॥  
 जे सुर समर धीर बलवाना। जिन्ह कें लरिवे कर अभिमाना ॥  
 तिन्हहि जीति रन आनेसु बाँधी। उठि सुत पितु अनुसासन काँधी ॥  
 एहि विधि सबही अग्या दीन्ही। आपुनु चलेउ गदा कर लीन्ही ॥  
 चलत दसानन डोलति अवनी। गर्जत गर्भ स्रवहिं सुर रवनी ॥  
 रावन आवत सुनेउ सकोहा। देवन्ह तके मेरु गिरि खोहा ॥  
 दिगपालन्ह के लोक सुहाए। सूने सकल दसानन पाए ॥  
 पुनि पुनि सिंघनाद करि भारी। देइ देवतन्ह गारि पचारी ॥  
 रन मद मत्त फिरइ जग धावा। प्रतिभट खोजत कतहुँ न पावा ॥  
 रवि ससि पवन बरुन धनधारी। अगिनिकाल जम सब अधिकारी ॥  
 किंनर सिद्ध मनुज सुर नागा। हठि सबही के पंथहिं लागा ॥  
 ब्रह्मसृष्टि जहँ लगि तनुधारी। दसमुख बसवतीं नर नारी ॥  
 आयसु करहिं सकल भयभीता। नवहिं आइ नित चरन विनीता ॥  
 दो०—भुजबल विख बस्य करि राखेसि कोउ न सुतंत्र ।

मंडलीक मनि रावन राज करइ निज मंत्र ॥१८२(क)॥

देव जच्छ गंधर्व नर किंनर नाग कुमारि ।

जोति वरीं निज बाहुबल बहु सुंदर बर नारि ॥१८२(ख)॥

इंद्रजीत सन जो कछु कहेऊ । सो सब जनु पहिलेहिं करि रहेऊ ।  
 प्रथमहिं जिन्ह कहँ आयसु दीन्हा । तिन्ह कर चरित सुनहु जो कीन्हा  
 देखत भीमरूप सब पापी । निसिचर निकर देव परितापी ॥  
 करहिं उपद्रव असुर निकाया । नाना रूप धरहिं करि माया ॥  
 जेहि विधि होइ धर्म निर्मूला । सो सब करहिं वेद प्रतिकूला ॥  
 जेहिं जेहिं देस घेनु द्विज पावहिं । नगर गाउँ पुर आगि लगावहिं ॥  
 सुभ आचरन कतहुँ नहिं होई । देव विप्र गुरु मान न कोई ॥  
 नहिं हरिभगति जग्य तप ग्याना । सपनेहुँ सुनिअ न वेद पुराना ॥

छं०—जप जोग विरागा तप मख भागा श्रवन सुनइ दससीसा ।  
 आपुनु उठि धावइ रहै न पावइ धरि सब घालइ खीसा ॥  
 अस भ्रष्ट अचारा भा संसारा धर्म सुनिअ नहिं काना ।  
 तेहि बहुविधि त्रासइ देस निकासइ जो कह वेद पुराना ॥

सो०—बरनि न जाइ अनीति घोर निसाचर जो करहिं ।

हिंसा पर अति प्रीति तिन्ह के पापहि कवनि मिति ॥१८३॥

मासपारायण, छठा विश्राम

वाड़े खल बहु चोर जुआरा । जे लंपट परधन परदारा ॥  
 मानहिं मातु पिता नहिं देवा । साधुन्ह सन करवावहिं सेवा ॥  
 जिन्ह के यह आचरन भवानी । ते जानेहु निसिचर सब प्राणी ॥  
 अतिसय देखि धर्म कै ग्लानी । परम सभोत धरा अकुलानी ॥  
 गिरि सरि सिंधु भार नहिं मोही । जस मोहि गरुअ एक परद्रोही ॥

सकल धर्म देखइ विपरीता । कहि न सकइ रावन भय भीता ॥  
 धेनु रूप धरि हृदयँ विचारी । गई तहाँ जहँ सुर मुनि झारी ॥  
 निज संताप सुनाएसि रोई । काहू तें कछु काज न होई ॥

छं०—सुर मुनि गंधर्वा मिलि करि सर्वा गे विरंचि के लोका ॥  
 संग गोतनुधारी भूमि विचारी परम विकल भय सोका ॥  
 ब्रह्माँ सब जाना मन अनुमाना मोरं कछु न बसाई ।  
 जा करि तैं दासी सो अविनासी हमरेउ तोर सहाई ॥

सो०—धरनि धरहि मन धीर कह विरंचि हरिपद सुमिरु ।

की पीर प्रभु भंजिहि दारुन विपति ॥१८४॥

बैठे सुर सब करहि विचारा । कहँ पाइअ प्रभु करिअ पुकारा ॥  
 पुर वैकुण्ठ जान कह कोई । कोउ कह पयनिधि वस प्रभु सोई ॥  
 जाके हृदयँ भगति जसि प्रीती । प्रभु तहँ प्रगट सदा तेहिं रीती ॥  
 तेहिं समाज गिरिजा मैं रहेऊँ । अवसर पाइ वचन एक कहेऊँ ॥  
 हरि व्यापक सर्वत्र समाना । प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना ॥  
 देस काल दिसि विदिसिहु माहीं । कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं ॥  
 अग जगमय सब रहित विरागी । तें प्रभु प्रगटइ जिमि आगी ॥  
 मोर वचन सब के मन माना । साधु साधु करि ब्रह्म बखाना ॥

दो०—सुनि विरंचि मन हरप तन पुलकि नयन वह नीर ।

अस्तुति करत जोरि कर सावधान मतिधीर ॥१८५॥

छं०—जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता ।  
 गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता ॥

पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई ।  
 जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सांई ॥  
 जय जय अविनासी सब घट वासी व्यापक परमानंदा ।  
 अविगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा ॥  
 जेहि लागि विरागी अति अनुरागी विगतमोह मुनिबुंदा ।  
 निसि वासर ध्यावहिं गुन गन गावहिं जयति सच्चिदानंदा ॥  
 जेहिं सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दूजा ।  
 सो करउ अचारी चित हमारी जानिअ भगति न पूजा ॥  
 जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन विपति वरूथा ।  
 मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुरजूथा ॥  
 सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहूँ कोउ नहिं जाना ।  
 जेहि दीन पिआरे वेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना ॥  
 भव वारिधि मंदर सब विधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा ।  
 मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा ॥

दो०—जानि सभय सुर भूमि सुनि बचन समेत सनेह ।

गगनगिरा गंभीर भइ हरनि सोक संदेह ॥१८६॥

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा । तुम्हहि लागि धरिहउँ नर बेसा ॥  
 अंसन्ह सहित मनुज अवतारा । लेहउँ दिनकर बंस उदारा ॥  
 कस्यप अदिति महातप कीन्हा । तिन्ह कहूँ मैं पूरव वर दीन्हा ॥  
 ते दसरथ कौसल्या रूपा । कोसलपुरीं प्रगट नरभूपा ॥  
 तिन्ह कें गृह अवतरिहउँ जाई । रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई ॥  
 नारद बचन सत्य सब करिहउँ । परम सक्ति समेत अवतरिहउँ ॥  
 हरिहउँ सकल भूमि गरुआई । निर्भय होहु देव समुदाई ॥

गगन ब्रह्मवानी सुनि काना । तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना ॥  
तव धरनिहि समुझावा । अभय भई भरोस जियँ आ ॥

दो०—निज लोकहि विरंचि गे देवन्ह इहइ सिखाइ ।

बानर तनु धरि धरि महि हरि पद सेवहु जाइ ॥१८७॥

गए देव सब निज निज धामा । भूँ सहित मन कहँ विश्वा ॥

जो क आयसु ब्रह्माँ दीन्हा । हरषे देव बिलंब न कीन्हा ॥

बनचर देह धरी छिति माहीं । अतुलित बल अप तिन्ह पाहीं ॥

गिरि तरु नख आयुध सब वीरा । हरि मारग चितवहिं मतिधीरा ॥

गिरि कानन जहँ तहँ भरि पूरी । रहे निज निज अनीकरचि रूरी ॥

यह सब रुचिर चरित मैं भाषा । अब सो सुनहु जो बीचहिं राखा ॥

अवधपुरीं रघुकुलमनि राऊ । वेद विदित तेहि दसरथ ॥

धरम धुरंधर गुननिधि ग्यानी । हृदयँ भगति मति रँगपानी ॥

दो०—कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत ।

पति अनुकूल प्रेम दृढ़ हरि पद कमल विनीत ॥१८८॥

एक वार भूपति मन माहीं । भै गलानि मोरें सुत नाहीं ॥

गुर गृह गयउ तुरत महिपाला । चरन लागि करि विनय विसाला ॥

निज दुख सुख सब गुरहि सुनायउ । कहि वसिष्ठ बहुविधि समुझायउ

धरहु धीर होइहहिं सुत चारी । त्रिभुवन विदित भगत भय हारी ॥

सृंगी रिपिहि वसिष्ठ बोलावा । पुत्रकाम सुभ जग्य करावा ॥

भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें । प्रगटे अग्नि चरू कर लीन्हें ॥

जो वसिष्ठ कलु हृदयँ विचारा । सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा ॥

यह हवि वाँटि देहु नृप जाई । जथा जोग जेहि भाग बनाई ॥

दो०—तव अदृश्य भए पावक सकल सभहि समुझाइ ।

परमानंद मगन नृप हरप न हृदयँ समाइ ॥१८९॥

तवहिं रायँ प्रिय नारि बोलाई । कौसल्यादि तहाँ चलि आई ॥  
 अर्थ भाग कौसल्यहि दीन्हा । उभय भाग आधे कर कीन्हा ॥  
 कैकेई कहँ नृप सो दयऊ । रह्यो सो उभय भाग पुनि भयऊ ॥  
 कौसल्या कैकेई हाथ धरि । दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि ॥  
 एहि विधि गर्भ सहित सव नारी । भई हृदयँ हरपित सुख भारी ॥  
 जा दिन तँ हरि गर्भहिं आए । सकल लोक सुख संपति छाए ॥  
 मंदिर महँ सव राजहिं रानी । सोभा सील तेज की खानी ॥  
 सुख जुत कष्टुक काल चलि गयऊ । जेहि प्रभु प्रगट सो अवसर भयऊ

दो०—जोग लगन ग्रह वार तिथि सकल भए अनुकूल ।

चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुखमूल ॥१९०॥

नौमी तिथि मधु मास पुनीता । सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता ॥  
 मध्यदिवस अति सीत न धामा । पावन काल लोक विश्रामा ॥  
 सीतल मंद सुरभि वह वाऊ । हरपित सुर संतन मन चाऊ ॥  
 बन कुसुमित गिरिगन मनिआरा । स्रवहिं सकल सरिताऽमृतधारा ॥  
 सो अवसर विरंचि जव जाना । चले सुकल सुर साजि विमाना ॥  
 गगन विमल संकुल सुर जूथा । गावहिं गुन गंधर्व ब्रह्मा ॥  
 षरपहिं सुमन सुअंजुलि साजी । गहगहि गगन दुंदुभी बाजी ॥  
 अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा । बहुविधि लावहिं निज निज सेवा

दो०—सुर समूह विनती करि पहुँचे निज निज धाम ।

जगनिवास प्रभु प्रगटे अखिल लोक विश्राम ॥१९१॥

ॐ०—भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी ।  
 हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप विचारी ॥  
 लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी ।  
 भूषन बनमाला नयन विसाला सोभासिंधु खरारी ॥  
 कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करौ अनंता ।  
 माया गुन ग्यानातीत अमाना वेद पुरान भनंता ॥  
 करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता ।  
 सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता ॥  
 ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहै ।  
 मम उर सो वासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर नरहै ॥  
 उपजा जव ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत विधि कीन्ह चहै  
 कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥  
 माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।  
 कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ॥  
 सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक खरभूपा ।  
 यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ॥

दो०—विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार ।

निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ॥१९२॥

सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी । संभ्रम चलि आई सब रानी ॥  
 हरषित जहँ तहँ धाई दासी । आनँद मगन सकल पुरवासी ॥  
 दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना । मानहुँ ब्रह्मानंद समाना ॥  
 परम प्रेम मन पुलक सरीरा । चाहत उठन करत मति धीरा ॥  
 जाकर नाम सुनत सुभ होई । मोरें गृह आवा प्रभु सोई ॥

परमानंद पूरि मन राजा। कहा बोलाइ बजावहु बाजा ॥  
गुर बसिष्ठ कहें गयउ हँकारा। आए द्विजन सहित नृपद्वारा ॥  
अनुपम बालक देखेन्हि जाई। रूप रासि गुन कहि न सिराई ॥

दो०—नंदीमुख सराध करि जातकरम सब कीन्ह ।

हाटक घेनु बसन मनि नृप विप्रन्ह कहँ दीन्ह ॥१९३॥

ध्वज पताक तोरन पुर छावा। कहिन जाइ जेहि भौंति बनावा ॥  
सुमनवृष्टि अकास तें होई। ब्रह्मानंद भगन सब लोई ॥  
बृंद बृंद मिलि चली लोगाई। सहज सिंगार किएँ उठि धाई ॥  
कनक कलस मंगल भरि थारा। गावत पैठहिँ भूप दुआरा ॥  
करि आरति नेवछावरि करहीं। बार बार सिसु चरनन्हि परहीं ॥  
मागध सूत वंदिगन गायक। पावन गुन गावहिँ रघुनायक ॥  
मर्बस दान दीन्ह सब काहू। जेहिँ पावा राखा नहि ताहू ॥  
मृगमद चंदन कुंकुम कीचा। मची सकल वीथिन्ह विच वीचा ॥

दो०—गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटे सुपमा कंद ।

हरपवंत सब जहँ तहँ नगर नारि नर बृंद ॥१९४॥

कैकयसुता सुमित्रा दोऊ। सुंदर सुत जनमत भैं आंऊ ॥  
वह सुख संपत्ति समय समाजा। कहिन सकइ सारद अहिराजा ॥  
अवधपुरी सोहइ एहि भाँती। प्रभुहि मिलन आई जनु राती ॥  
देखि भानु जनु मन सकुचानी। तदपि बनी संध्या अनुमानी ॥  
अगर धूप बहु जनु अँधिआरी। उड़इ अबीर मनहुँ अरुनारी ॥  
मंदिर मनि समूह जनु तारा। नृप गृह कलस सो इंदु उदारा ॥  
भवन वेदधुनि अति मृदु बानी। जनु खग मुखर समयँ जनु सानी ॥



कौतुक देखि पतंग भुलाना । एक मास तेई जात न जाना ॥

दो०—मास दिवस कर दिवस भा मरम न जानइ कोइ ।

रथ समेत रवि थाकेउ निसा कवन विधि होइ ॥१९५॥

यह रहस्य काहूँ नहिं जाना । दिनमनि चले करत गुनगाना ॥  
 देखि महोत्सव सुर मुनि नागा । चले भवन बरनत निज भागा ॥  
 औरउ एक कहउँ निज चोरी । सुनु गिरिजा अति दृढ़ मति तोरी  
 काकभुसुंडि संग हम दोऊ । मनुज रूप जानइ नहिं कोऊ ॥  
 परमानंद प्रेममुख फूले । वीथिन्ह फिरहिं मगन मन भूले ॥  
 यह सुभ चरित जान पै सोई । कृपा राम कै जापर होई ॥  
 तैहि अवसर जो जेहि विधि आवा । दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा ॥  
 बज रथ तुरग हेम गो हीरा । दीन्हे नृप नानाविधि चीरा ॥

दो०—मन संतोषे सवन्हि जहँ तहँ देहिं असीस ।

सकल तनय चिर जीवहुँ तुलसिदास के ईस ॥१९६॥

दिवस बीते एहि भाँती । जात न जानिअ दिन अरु राती ॥  
 नामकरन कर अवसरु जानी । भूप बोलि पठए मुनि ज्यानी ॥  
 करि पूजा भूपति अस भाषा । धरिअ नाम जो मुनि गुनि राखा ॥  
 इन्ह के नाम अनेक अनूपा । मैं नृप कहव स्वमति अनुरूपा ॥  
 जो आनंद सिंधु सुखरासी । सीकर तें त्रैलोक सुपासी ॥  
 सो सुख धाम राम अस नामा । अखिल लोक दायक विश्रामा ॥  
 बि भरन पोषन कर जोई । ताकर नाम भरत अस होई ॥  
 जाके सुमिरन तें रिपु नासा । नाम सत्रुहन वेद प्रकासा ॥

दो०—लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार ।

गुरु वसिष्ठ तेहि राखा लछिमन नाम उदार ॥१९७॥

धरे नाम गुर हृदयँ विचारी । वेद तत्व नृप तव सुत चारी ॥  
 मुनि धन जन सरवस सिव प्राणा । बाल केलि रस तेहिँ सुख माना ॥  
 वारेहि ते निज हित पति जानी । लछिमन राम चरन रति मानी ॥  
 भरत सत्रुहन दूनउ भाई । प्रभु सेवक जसि प्रीति बढ़ाई ॥  
 स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी । निरखहिँ छवि जननी वृन तोरी ॥  
 चारिउ सील रूप गुन धामा । तदपि अधिक सुखसागर रामा ॥  
 हृदयँ अनुग्रह इंदु प्रकासा । सूचत किरन मनोहर हासा ॥  
 कवहुँ उछंग कवहुँ वर पलना । मातु दुलारइ कहि प्रिय ललना ॥

दो०—व्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन विगत विनोद ।

सो अज प्रेम भगति वस कौसल्या कें गोद ॥१९८॥

काम कोटि छवि स्याम सरीरा । नील कंज वारिद गंभीरा ॥  
 अरुन चरन पंकज नख जोती । कमल दलन्हिँ बैठे जनु मोती ॥  
 रेख कुलिस ध्वज अंकुस सोहे । नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहे ॥  
 कटि किंकिनी उदर त्रय रेखा । नाभि गभीर जान जेहिँ देखा ॥  
 भुज विसाल भूपन जुत भूरी । हियँ हरि नख अति सोभा रूरी ॥  
 उर मनिहार पदिक की सोभा । विप्र चरन देखत मन लोभा ॥  
 कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई । आनन अमित मदन छवि छाई ॥  
 दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे । नासा तिलक को चरनैँ पारे ॥  
 सुंदर श्रवन सुचारु कपोला । अति प्रिय मधुर तोतरे बोला ॥  
 चिकन कच कुंचित गभुआरे । बहु प्रकार रचि मातु सँवारे ॥



दो०-देखरावा मातहि निज अद्भुत रूप अखंड ।

गेम गेम प्रति लागे कोटि कोटि ब्रह्मंड ॥२०१॥

अगनित रात्रि मसि मिव चतुरानन । बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन  
काल कर्म गुन ग्यान सुभाऊ । सोउ देखा जो सुना न काऊ ॥  
देखां माया मत्र विधि गाढ़ी । अति सभित जोरें कर ठाढ़ी ॥  
देखा जीव नचावइ जाही । देखी भगति जो छोरइ ताही ॥  
तन पुलकित मुख पचन न आवा । नषन मूदि चरननि सिरु नावा ॥  
पिममयवंत देखि महतारी । भए बहुगि मिसुरूप खरारी ॥  
अस्तुति करि न जाइ भय माना । जगत पिता में सुत करि जाना ॥  
हरि जननी बहुविधि ममुझाई । यह जनि कतहुँ कहसि मुनु माई ॥

दो०-चार चार कौसल्या विनय करइ कर जोरि ।

अब जनि कवहुँ व्यापै प्रभु मांहि माया तोरि ॥२०२॥

बालचरित हरि बहु विधि कीन्हा । अति अनंद टामन्ह कहें दीन्हा ॥  
कलुक काल वीतें सब भाई । वड़े भए परिजन सुखदाई ॥  
चूड़ाकरन कीन्ह गुरु जाई । विप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई ॥  
परम मनोहर चरित अपारा । करत फिरत चारिउ सुकुमारा ॥  
मत्त क्रम वचन अगोचर जोई । दमग्रथ अजिर विचर प्रभु मोई ॥  
भोजन करत बोल जब राजा । नहि आवत तजि बाल ममाजा ॥  
कौसल्या जय बोलन जाई । ठुमुकु ठुमुकु प्रभु चलहि पराई ॥  
निगम नेति मिव अंत न पावा । ताहि धरें जननी हाठि धावा ॥  
धूमर धूरि भरें तनु आए । भूपति विहसि गोद

दो०—भोजन करत चपल चित इत उत अवसरु पाइ ।

भाजि चले किलकत मुख दधि ओदन लपटाइ ॥२०३॥  
 बालचरित अति सरल सुहाए । सारद सेप संभु श्रुति गाए ॥  
 जिन्ह कर मन इन्ह सन नहिं राता । ते जन वंचित किए विधाता ॥  
 भए कुमार जवहिं सब आता । दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता ॥  
 गुरगृहँ गए पढ़न रघुराई । अल्प काल विद्या सब आई ॥  
 जाकी सहज खास श्रुति चारी । सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी ॥  
 विद्या विनय निपुन गुन सीला । खेलहिं ल सकल नृपलीला ॥  
 करतल वान धनुष अति सोहा । देखत रूप चराचर मोहा ॥  
 जिन्ह वीथिन्ह विहरहिं सब भाई । थकित होहिं सब लोग लुगाई ॥

दो०—कोसलपुर वासी नर नारि वृद्ध अरु बाल ।

प्राणहु ते प्रिय लागत सब कहँ राम कृपाल ॥२०४॥  
 बंधु सरवा सँग लेहिं बोलाई । वन मृगया नित खेलहिं जाई ॥  
 पावन मृग मारहिं जियँ जानी । दिन प्रति नृपहिं देखावहिं आनी ॥  
 जे मृग राम वान के मारे । ते तनु तजि सुरलोक सिधारे ॥  
 अनुज सरवा सँग भोजन करहीं । मातु पिता अग्या अनुसरहीं ॥  
 जेहि विधि सुखी होहिं पुर लोगा । करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा ॥  
 वेद पुरान सुनहिं मन लाई । आपु कहहिं अनुजन्ह समुझाई ॥  
 प्रातकाल उठि कै रघुनाथा । मातु पिता गुरु नावहिं माथा ॥  
 आयसु मागि करहिं पुर काजा । देखि चरित हरपइ मन राजा ॥  
 दो०—व्यापक अकल अनीह अज निर्गुन नाम न रूप ।

भगत हेतु नाना विधि करत चरित्र अनूप ॥२०५॥

यह सब चरित कहा मैं गाई। आगिलि कथा सुनहु मन लाई ॥  
 विस्वामित्र महामुनि ग्यानी। बसहिं विपिन सुभ आश्रम जानी ॥  
 जहँ जप जग्य जोग मुनि करहीं। अति मारीच सुबाहुहि डरहीं ॥  
 देखत जग्य निसाचर धावहिं। करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं ॥  
 गाधितनय मन चिंता व्यापी। हरिविनुमरहिं न निसिचर पापी ॥  
 तब मुनिवर मन कीन्ह विचारा। प्रभु अवतरेउ हरन महि भारा ॥  
 एहँ मिस देखौं पद जाई। करि विनती आनौं दोउ भाई ॥  
 ग्यान बिराग सकलगुन अयना। सो प्रभु मैं देखब भरि नयना ॥

दो०—बहुविधि करत मनोरथ जात लागि नहिं वार।

करि मञ्जन सरऊ जल गए भूप दरवार ॥२०६॥

मुनि आगमन सुना जब राजा। मिलन गयउ लै विप्र समाजा ॥  
 करि दंडवत मुनिहि सनमानी। निज आसन बैठारेन्हि आनी ॥  
 चरन परवारि कीन्हि अति पूजा। मो सम आजु धन्य नहिं दूजा ॥  
 विविध भाँति भोजन करवावा। मुनिवर हृदयँ हरप अति पावा ॥  
 पुनि चरननि मेले सुत चारी। राम देखि मुनि देह विसारी ॥  
 भए मगन देखत मुख सोभा। जनु चक्रोर पूरन साँसे लोभा ॥  
 तब मन हरपि वचन कह राऊ। मुनि अस कृपान कीन्हिहु काऊ ॥  
 केहि कारन आगमन तुम्हारा। कहहु सो करत न लावउँ वारा ॥  
 असुर समूह सतावहिं मोही। मैं जाचन आयउँ नृप तोही ॥  
 अनुज समेत देहु रघुनाथा। निसिचर वध मैं होव सनाथा ॥

दो०—देहु भूप मन हरपित तजहु मोह अग्यान।

धर्म सुजस प्रभु तुम्ह कौं इन्ह कहँ अति कल्याण ॥२०७॥

सुनि राजा अति अग्रिय वानी । हृदय कंप मुख दुति लानी ॥  
 चौथेंपन पायउँ सुत चारी । विप्रवचन नहिं कहेहु विचारी ॥  
 मागहु भूमि धेनु धन कोसा । सर्वस देउँ आजु 'सहरासा ॥  
 देह प्रान तें प्रिय कछु नाहीं । सोउ मुनि देउँ निमिष एक माहीं ॥  
 सब सुत प्रिय मोहि प्रान कि नाई । राम देत नहिं बनइ गोसाई ॥  
 कहँ निसिचर अति घोर कठोरा । कहँ सुंदर सुत परम किसोरा ॥  
 सुनि नृप गिरा रस सानी । हृदयँ हरष माना मुनि ग्यानी ॥  
 तव बसिष्ट बहुविधि समुझावा । नृप संदेह नास कहँ पावा ॥  
 अति आदर दोउ तनय बोलाए । हृदयँ लाइ बहु भाँति सिखाए ॥  
 मेरे प्रान नाथ सुत दोऊ । तुम्ह मुनि पिता आन नहिं कोऊ ॥

दो०—सौंपे भूप रिपिहि सुत बहु विधि देइ असीस ।

जननी भवन गए प्रभु चले नाइ पद सीस ॥२०८(क)॥

सो०—पुरुषसिंह दोउ वीर हरषि चले मुनि भय हरन ।

कृपासिंधु मतिधीर अखिल विश्व कारन करन ॥२०८(ख)॥

अरुन नयन उर बाहु विसाला । नील जलज तनु स्याम तमाला ॥  
 कटि पट पीत कसेँ बर भाथा । रुचिर चाप सायक दुहुँ हाथा ॥  
 स्याम गौर सुंदर दोउ भाई । विश्वामित्र महानिधि पाई ॥  
 प्रभु ब्रह्मन्यदेव मैं जाना । मोहि निति पिता तजेउ भगवाना ॥  
 चले जात मुनि दीन्हि देखाई । सुनि ताडका क्रोध करि धाई ॥  
 एकहिं वान प्रान हरि लीन्हा । दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा ॥  
 तव रिपि निज नाथहि जिअँ चीन्ही । विद्यानिधि कहँ विद्या दीन्ही ॥  
 जाते लाग न छुधा पिपासा । अतुलित बल तनु तेज प्रकासा ॥

दो०-आयुध सबे समर्पि कै प्रभु निज आश्रम आनि ।

कंद मूल फल भोजन दीन्ह भगति हित जानि ॥२०९॥

प्रात कहा मुनि सन रघुराई । निर्भय जग्य करहु तुम्ह जाई ॥  
होम करन लागे मुनि झारी । आपु रहे मख कीं रखवारी ॥  
मुनि मारीच निसाचर क्रोही । लै सहाय धावा मुनिद्रोही ॥  
बिनु फर वान राम तेहि मारा । सत जोजन गा सागर पारा ॥  
पावक सर सुबाहु पुनि मारा । अनुज निसाचर कटकु सँघारा ॥  
मारि असुर द्विज निर्भयकारी । अस्तुति करहिं देव मुनि झारी ॥  
तहँ पुनि कलुक दिवस रघुराया । रहे कीन्हि विप्रन्ह पर दाया ॥  
भगति हेतु बहु कथा पुराना । कहे विप्र जद्यपि प्रभु जाना ॥  
तब मुनि सादर कहा चुझाई । चरित एक प्रभु देखिअ जाई ॥  
धनुपजग्य मुनि रघुकुल नाथा । हरपि चले मुनिवर के साथ ॥  
आश्रम एक दीख मग माहीं । खगमृगजीवजंतु तहँ नाहीं ॥  
पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी । सकल कथा मुनि कहा विसेपी ॥

दो०-गौतम नारि श्राप बस उपल देह धरि धीर ।

चरन कमल रज चाहति कृपा करहु रघुवीर ॥२१०॥

छं०-परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सही ।  
देखत रघुनायकजन सुखदायक सनमुख होइ कर जोरि रही ॥  
अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिं आवइ वचन कही ॥  
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलधार वही  
धीरगु मन कीन्हा प्रभु कहँ चीन्हा रघुपति कृपाँ भगति पाई ।  
अति निर्मल वानी अस्तुति ठानी ग्यानगम्य जय रघुराई ॥



में तारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई ।  
 राजीव विलाचन भव भय मोचन पाहि पाहि मरनहि आई ॥  
 मुनि थाप जो दीन्हा अनि भल कीन्हा परम अनुग्रह में माना ।  
 देवेउं भरि लोचन हरि भवमोचन इहइ लाभ मंकर जाना ॥  
 विनती प्रभु सोरी में मति भोगी नाथ न मागउं बर आना ।  
 पद कमल पगगा रग्य अनुगगा मम मन मधुप करै पाना ॥  
 जेहि पद सुगमरिता परम पुनीता प्रगट भई मिव सीम धरी ।  
 सोई पद पकज जेहि पूजत अज मम मिर धरेउ कृपाल हरी ॥  
 गहि भौंति मिथारी गौतम नारी वार वार हरि चरन परी ।  
 जो अनि मन भावा गो बरु पावा गै पतिलोक अनंद भरी ॥  
 अथ प्रभु दीनबंधु हरि कागन रहित दयाल ।

तुलसि दास मठ तेहि भजु छाड़ि कपट जंजाल ॥२११॥

साम्पारायण, मानवाँ विश्राम

यत्र राम लच्छमन मुनि गंगा । गए जहाँ जग पावनि गंगा ॥  
 गांधारनु सब कथा सुनाउं । जेहि प्रकार सुगमरि सहि आई ॥  
 तापसु रिपिन्ह समेत नहाए । विविध दान सहिदेवन्हि पाए ॥  
 हरषि बडे मुनि बृह नदाया । वेगि विदेह नगर निअगया ॥  
 पूर सम्यक्ता राम जव देख्यो । हरषे अनुज समेत विसेयो ॥  
 तासो रूप मरित मर नाता । मल्लि सुधानम मति सोपाना ॥  
 गुंजन मंडु मन रग्य भुंगा । कृजन कल बहुवरन विहंगा ॥  
 वरन वरन विकसे वनजाता । विविध समर मदा सुखदाता ॥  
 अथ समत शक्ति काग वन विदुल विहंग निराम ।

कूलन फलन सुखधन मोहन पुर चहुं राम ॥२१२॥

बनइ न बरनत नगर निकाई । जहाँ जाइ मन तहँई लोभाई ॥  
 चारु बजारु विचित्र अँवारी । मनमय विधिजनु स्वकर सँवारी ॥  
 धनिक बनिक वर धनद समाना । बैठे सकल बस्तु लै नाना ॥  
 चौहट सुंदर गलीं सुहाई । संतत रहहि सुगंध सिंचाई ॥  
 मंगलमय मंदिर सब केरें । चित्रित जनु रतिनाथ चितेरें ॥  
 पुर नर नारि सुभग सुचि संता । धरमसील ग्यानी गुनवंता ॥  
 अति अनूप जहँ जनक निवास । विथकहिं विबुध विलोकि विलास ॥  
 होत चकित चित कोट विलोकी । सकल भुवन सोभा जनु रोकी ॥  
 दो०—धवल धाम मनि पुरट पट सुघटित नाना भाँति ।

सिय निवास सुंदर सदन सोभा किमि कहि जाति ॥२१३॥

सुभग द्वार सब कुलिस कपाटा । भूप भीर नट मागध भाटा ॥  
 बनी विसाल बाजि गज साला । हय गय रथ संकुल सब काला ॥  
 छर सचिव सेनप बहुतेरे । नृपगृह सरिम सदन सब केरे ॥  
 पुर बाहेर सर सरित समीपा । उतरे जहँ तहँ विपुल महीपा ॥  
 देखि अनूप एक अँवराई । सब सुपास सब भाँति सुहाई ॥  
 कौसिक कहेउ मोर मनु माना । इहाँ रहिअ रघुवीर सुजाना ॥  
 भलेहिं नाथ कहि कृपानिकेता । उतरे तहँ मुनिवृंद समेता ॥  
 बिस्वामित्र महामुनि आए । समाचार मिथिलापति पाए ॥

दो०—संग सचिव सुचि भूरि भट भूसुर वर गुरग्याति ।

चले मिलन मुनिनायकहि मुदित राउ एहि भाँति ॥२१४॥

कोन्ह प्रनामु चरन धरि माथा । दीन्हि असीस मुदित मुनिनाथा ॥  
 बिप्रवृंद सब सादर बंदे । जानि भाग्य बड़ राउ अनंते ॥

कुसल प्रसन्न कहि वारहिं बारा । विस्वामित्र नृपहि बैठारा ॥  
 तेहि अवसर आए दोउ भाई । गए रहे देखन फुलवाई ॥  
 स्याम गौर मृदु वयस किसोरा । लोचन सुखद चित चोरा ॥  
 उठे सकल जब रघुपति आए । विस्वामित्र निकट बैठाए ॥  
 भए सब सुखी देखि दोउ भ्राता । वारि बिलोचन पुलि गाता ॥  
 मूरति मधुर मनोहर देखी । भयउ विदेहु विदेहु विसेषी ॥

श्लो०—प्रेम मगन मनु जानि नृपु करि बिबेकु धरि धीर ।

बोलेउ मुनि पद नाइ सिरु गदगद गिरा गभीर ॥२१५॥

कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक । मुनिकुल तिलक कि नृपकुल पालक  
 ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा । उभय बेष धरि की सोइ आवा ॥  
 सहज विरागरूप मनु मोरा । थकित होत जिमि चंद चकोरा ॥  
 ताते प्रभु पूछउँ सतिभाऊ । कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ ॥  
 इन्हहि बिलोकत अति अनुरागा । बरबस ब्रह्मसुखहि मन त्यागा ॥  
 कह मुनि विहसि कहेहु नृप नीका । वचन तुम्हार न होइ अलीका ॥  
 ए प्रिय सबहि जहाँ लागि प्रानी । मन मुसुकाहिं रामु सुनि बानी ॥  
 रघुकुल मनि दसरथ के जाए । मम हित लागि नरेस पठाए ॥

श्लो०—रामु लखनु दोउ बंधुवर रूप सील बल धाम ।

मख राखेउ सबु साखि जगु जिते असुर संग्राम ॥२१६॥

मुनि तव चरन देखि कह राऊ । कहि न सकउँ निज पुन्य प्रभाऊ ॥  
 सुंदर स्याम गौर दोउ भ्राता । आनंदहू के आनंद दाता ॥  
 इन्ह कै प्रीति परसपर पावनि । कहि न जाइ मन भाव सुहावनि ॥  
 सुनहु नाथ कह मुदित विदेहू । ब्रह्म जीव इय सहज सनेहू ॥

पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू । पुलक गात उर अधिक उछाहू ॥  
 मुनिहि प्रसंसि नाइ पद सीस । चलेउ लवाइ नगर अवनिसू ॥  
 सुंदर सदन सुखद सब काला । तहाँ वासु लै दीन्ह भुआला ॥  
 करि पूजा सब विधि सेवकाई । गयउ राउ गृह विदा कराई ॥  
 दो०—रिपय संग रघुवंस मनि करि भोजनु विथामु ।

बंटे प्रभु भ्राता सहित दिवसु रहा भरि जामु ॥२१७॥

लखन हृदयँ लालसा विसेपी । जाइ जनकपुर आइअ देखी ॥  
 प्रभु भय बहुरि मुनिहि सकुचाहीं । प्रगट न कहहिं मनहिं मुसुकाहीं ॥  
 राम अनुज मन की गति जानी । भगत बछलता हियँ हुलसानी ॥  
 परम विनीत सकुचि मुसुकाई । बोले गुर अनुसासन पाई ॥  
 नाथ लखनु पुरु देखन चहहीं । प्रभु सकोच डर प्रगट न कहहीं ॥  
 जाँ राउर आयसु मैं पावौं । नगर देखाइ तुरत लै आवौं ॥  
 मुनि मुनीसु कह वचन सप्रीती । कस न राम तुम्ह राखहु नीती ॥  
 धरम सेतु पालक तुम्ह ताता । प्रेम विवस सेवक सुखदाता ॥  
 दो०—जाइ देखि आवहु नगरु सुख निधान दोउ भाइ ।

करहु सुफल सब के नयन सुंदर वदन देखाइ ॥२१८॥

मुनि पद कमल वंदि दोउ भ्राता । चले लोक लोचन सुखदाता ॥  
 बालक वृंद देखि अति सोभा । लगे संग लोचन मनु लोभा ॥  
 पीत वसन परिकर कटि भाथा । चारु चाप सर मोहत हाथा ॥  
 तन अनुहरत सुचंदन खोरी । स्वामल गौर मनोहर जोरी ॥  
 कंहरि कंधर बाहु विसाला । उर अति रुचिर नागमनि माला ॥  
 सुभग मोन सरसीरुह लोचन । वदन मयंक तापत्रय मोचन ॥

कानन्हि कनक फूल छवि देहीं । चितवत चितहि चोरि जनु लेहीं ॥  
चितवनि चारुभृकुटि वर बाँकी । तिलक रेख सोभा जनु चाँकी ॥

दो०—रुचिर चौतनीं सुभग सिर मेचक चित केस ।

नख सिख सुंदर बंधु दोउ सोभा सकल सुदेस ॥२१९॥

देखन नगरु भूपसुत आए । समाचार पुरवासिन्ह पाए ॥  
धाए धाम काम सब त्यागी । मनहुँ रंक निधि लूटन लागी ॥  
निरखि सहज सुंदर दोउ भाई । होहिं सुखी लोचन फल पाई ॥  
जुवतीं भवन झरोखन्हि लागीं । निरखहिं राम रूप अनुरागीं ॥  
कहहिं परसपर बचन सग्रीती । सखि इन्ह कोटि काम छवि जीती ॥  
सुर नर असुर नाग मुनि माहीं । सोभा असि कहुँ सुनिअति नाहीं ॥  
बिण्णु चारि भुज विधि मुख चारी । बिकट वेप मुख पंच पुरारी ॥  
अपर देउ अस कोउ न आही । यह छवि सखी पटतरिअ जाही ॥

दो०—बय किसोर सुपमा सदन स्याम गौर सुख धाम ।

अंग अंग पर वारिअहिं कोटि कोटि सत काम ॥२२०॥

कहहु सखी अस को तनुधारी । जो न मोह यह रूप निहारी ॥  
कोउ से बोली मृदु बानी । जो मैं सुना सो सुनहु सयानी ॥  
ए दोऊ दसरथ के ढोटा । बाल मरालन्हि के कल जोटा ॥  
मुनि कौसिक मुख के रखवारे । जिन्ह रन अजिर निसाचर मारे ॥

स गात कल कंज विलोचन । जो मारीच सुभुज मृदु मोचन ॥  
कौसल्या सुत सो सुख खानी । नामु रामु धनु सायक पानी ॥  
गौर किसोर वेपु वर काछें । कर सर चाप राम के पाछें ॥  
लछिमनु नामु राम लघु भ्राता । सुनु सखि तासु सुमित्रा माता ॥

दो०-विप्रकाजु करि बंधु दोउ मग मुनिवधु उधारि ।

आए देखन चापमख सुनि हरपीं सब नारि ॥२२१॥

देखि राम छवि कोउ एक कहई । जोगु जानकिहि यह वरु अहई ॥  
जौं सखि इन्हहि देख नरनाहू । पन परिहरि हठि करइ बिवाहू ॥  
कोउ कह ए भूपति पहिचाने । मुनि समेत सादर सनमाने ॥  
सखि परंतु पनु राउ न तजई । विधि वस हठि अविबेकहि भजई  
कोउ कह जौं भल अहइ विधाता । सब कहँ सुनिअ उचित फलदाता  
तौ जानकिहि मिलिहि वरु एहू । नाहिन आलि इहाँ संदेहू ॥  
जौं विधि वस अस वनै सँजोगू । तौ कृतकृत्य होइ सब लोगू ॥  
सखि हमरें आरति अति तातें । कबहुँक ए आवहिँ एहि नातें ॥

दो०-नाहिँ त हम कहँ सुनहु सखि इन्ह कर दरसनु दूरि ।

यह संघटु तव होइ जत्र पुन्य पुराकृत भूरि ॥२२२॥

बोली अपर कहेहु सखि नोका । एहिँ विआह अति हित सबही का ॥  
कोउ कह संकर चाप कठोरा । ए स्यामल मृदुगात किसोरा ॥  
सघु असमंजस अहइ सयानी । यह सुनि अपर कहइ मृदु वानी ॥  
सखि इन्ह कहँ कोउ कोउ अस कहहीं । बड़ प्रभाउ देखत लघु अहईं  
परसि जामु पद पंकज धूरी । तरी अहल्या कृत अघ भूरी ॥  
सो कि रहिहि विनु सिवधनु तारें । यह प्रतौनि परिहरिअ न भारें ॥  
जेहिँ विरंचि रचि मीय सँचारी । तेहिँ स्यामल वरु रचेउ विचारो ॥  
तासु वचन सुनि सब हरपानीं । ऐसेइ होउ कहहिँ मृदु वानी ॥

दो०-दियँ हरपहिँ वरपहिँ सुमन सुमुखि सुलोचनि वृंद ।

जाहिँ जहाँ जहँ बंधु दोउ तहँ तहँ परमानंद ॥२२३॥

पुर पूरब दिसि गे दोउ भाई । जहँ धनुमख हित भूमि बनाई ॥  
 अति बिस्तार चारु गच ठारी । बिमल वेदिका रुचिर सँवारी ॥  
 चहुँ दिसि कंचन मंच बिसाला । रचे जहाँ बैठहिं महिपाला ॥  
 तेहि पाछें समीप चहुँ पासा । अपर मंच मंडली बिलासा ॥  
 कलुक ऊँचि सब भाँति सुहाई । बैठहिं नगर लोग जहँ जाई ॥  
 तिन्ह के निकट बिसाल सुहाए । धवल धाम बहुबरन बनाए ॥  
 जहँ बैठें देखहिं सब नारी । जथाजोगु निज कुल अनुहारी ॥  
 पुर बालक कहि कहि मृदु बचना । सादर प्रभुहि देखावहिं रचना ॥

दो०—सब सिसु एहि मिस प्रेमबस परसि मनोहर गात ।

तन पुलकहिं अति हरषु हियँ देखि देखि दोउ भ्रात ॥२२४॥

सिसु सब राम प्रेमबस जाने । प्रीति समेत निकेत बखाने ॥  
 निज निज रुचि सब लेहिं बोलाई । सहित सनेह जाहिं दोउ भाई ॥  
 राम देखावहिं अनुजहि रचना । कहि मृदु मधुर मनोहर बचना ॥  
 लव निमेष महुँ भुवन निकाया । रचइ जासु अनुसासन माया ॥  
 भगति हेतु सोइ दीनदयाला । चितवत चकित धनुष मखसाला ॥  
 कौतुक देखि चले गुरु पाहीं । जानि बिलंबु त्रास मन माहीं ॥  
 जासु त्रास डर कहुँ डर होई । भजन प्रभाउ देखावत सोई ॥  
 कहि बातें मृदु मधुर सुहाई । किए बिदा बालक वरिआई ॥

दो०—सभय सप्रेम विनीत अति सकुच सहित दोउ भाइ ।

गुर पद पंकज नाइ सिर बैठे आयसु पाइ ॥२२५॥

निसि प्रवेश मुनि आयसु दीन्हा । सबहीं संध्याबंदनु कीन्हा ॥  
 कहत कथा इतिहास पुरानी । रुचिर रजनि जुग जाम सिरानी ॥

मुनिवर सयन कीन्हि तव जाई । लगे चरन चापन दोउ भाई ॥  
 जिन्ह के चरन सरोरुह लागी । करत विविध जप जोग विरागी ॥  
 तेइ दोउ बंधु प्रेम जनु जीते । गुर पद कमल पलोटत प्रीते ॥  
 वार वार गुनि अग्या दीन्ही । रघुवर जाइ सयन तव कीन्ही ॥  
 चापत चरन लखनु उर लाएँ । मभय सप्रेम परम सचु पाएँ ॥  
 पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता । पाँडे धरि उर पद जलजाता ॥

दो०—उठे लखनु निसि विगत सुनि अरुनसिखा धुनि कान ।  
 गुर तें पहिलेहिं जगतपति जागे रामु सुजान ॥२२६॥

सकल सौच करि जाइ नहाए । नित्य निवाहि मुनिहि सिर नाए ॥  
 समय जानि गुर आयसु पाई । लेन प्रखन चले दोउ भाई ॥  
 भूप बागु वर देखेउ जाई । जहँ वसंत रितु रही लोभाई ॥  
 लागे विटप मनोहर नाना । वरन वरन वर वेलि विताना ॥  
 नव पल्लव फल सुमन सुहाए । निज संपति सुर रूख लजाए ॥  
 चातक कोकिल कीर चकोरा । कूजत विहग नटत कल मोरा ॥  
 मध्य बाग सरु सोह सुहावा । मनि सोपान विचित्र बनावा ॥  
 विमल सलिलु सरसिज बहुरंगा । जल खग कूजत गुंजत भृंगा ॥

दो०—बागु तड़ागु विलोकि प्रभु हरये बंधु समेत ।

परम रम्य आरामु यहु जो रामहि सुख देत ॥२२७॥

चहुँ दिसि चितइ पूँछि मालीगन । लगे लेन दल फूल मुदित मन ॥  
 तेहि अवसर सीता तहँ आई । गिरिजा पूजन जननि पठाई ॥  
 संग सखीं सत्र सुभग सयानीं । गावहिं गीत मनोहर बानीं ॥  
 सर समीप गिरिजा गृह सोहा । वरनि न जाइ देखि मनु मोहा ॥



मञ्जनु करि सर सखिन्ह समेता । गई मुदित मन गौरि निके ॥  
 पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा । निज अनुरूप सुभग वरु मागा ॥  
 एक सखी सिय संगु चिहाई । गई रही देखन फुलवाई ॥  
 तेहिं दोउ बंधु विलोके जाई । प्रेम बिबस सीता पहिं आई ॥  
 दो०—तासु दसा देखी सखिन्ह पुलक गात जलु नैन ।

कहु कारनु निज हरप कर पूछहिं सव मृदु वैन ॥२२८॥

देखन बागु झुअँर दूइ आए । वय किसोर सव भाँति सुहाए ॥  
 स्याम गौर किमि कहीं बखानी । गिरा अनयन नयन त्रिनु वानो ॥  
 सुनि हरपीं सव सखीं सयानी । सिय हियँ अति उतकंठा जानी ॥  
 एक कहइ नृपसुत तेइ थाली । सुने जे मुनि सँग आए काली ॥  
 जिन्ह निज रूप मोहनी डारी । कीन्हे खवस नगर नर नारी ॥  
 वरनत छवि जहँ तहँ सब लोगू । अवसि देखिअहिं देखन जोगू ॥  
 तासु वचन अति सियहि सोहाने । दरस लागि लोचन अकुलाने ॥  
 चली अग्र करि प्रिय सखि सोई । प्रीति पुरातन लखइ न कोई ॥

दो०—सुमिरि सीय नारद वचन उपजी प्रीति पुनीत ।

चकित विलोकति सकल दिसि जनु सिमु मृगो सभोत ॥२२९॥

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि । कहत लखन सन राघु हृदयँ गुनि ॥  
 मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही । मनसा विस्व विजय कहँ कीन्ही ॥  
 अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा । सिय मुख ससि भए नयन चकोरा ॥  
 भए विलोचन चारु अचंचल । मनहुँ सकुचि निमि तजे दिगंचल ॥  
 देखि सीय सोभा सुखु पावा । हृदयँ सराहत वचनु न आवा ॥  
 जनु विरंचि सव निज निपुनाई । विरचि विस्व कहँ प्रगटि देखाई ॥

सुंदरता कहूँ सुंदर करई । छविगृहें दीपसिखा जनु बरई ॥  
सब उपमा कवि रहे जुठारी । केहि पदतरां विदेहकुमारी ॥

दो०—सिय सोभा हियँ बरनि प्रभु आपनि दसा विचारि ।

बोले सुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि ॥२३०॥

तात जनकतनया यह सोई । धनुपजग्य जेहि कारन होई ॥  
पूजन गौरि सखीं लै आई । करत प्रकासु फिरइ फुलवाई ॥  
जासु विलोकि अलौकिक सोभा । सहज पुनीत मोर मनु छोभा ॥  
सो सधु कारन जान विधाता । फरकहिं सुभद अंग सुनु भ्राता ॥  
रघुवंसिन्ह कर सहज सुभाऊ । मनु कुपंथ पगु धरइ न काऊ ॥  
मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी । जेहि सपनेहुँ परनारि न हेरी ॥  
जिन्ह कै लहहिं न रिपु रन पीठी । नहि पावहिं परतिय मनु डीठी ॥  
मंगन लहहिं न जिन्ह कै नाहीं । ते नखर थोरे जग माहीं ॥

दो०—करत बतकही अनुज सन मन सिय रूप लोभान ।

मुख सरोज मकरंद छवि करइ मधुप इव पान ॥२३१॥

चितवति चकित चहूँ दिसि सीता । कहँ गए नृपकिसोर मनु चिता ॥  
जहँ विलोक मृग सावक नैनी । जनु तहँ बरिस कमल सित श्रेनी ॥  
लता ओट तव सखिन्ह लखाए । स्वामल गौर किसोर सुहाए ॥  
देखि रूप लोचन ललचाने । हरये जनु निज निधि पहिचाने ॥  
थके नयन रघुपति छवि देखे । पलकन्हिहूँ परिहरीं निमेषे ॥  
अधिक सनेहँ देह भै भोरी । सरद ससिहि जनु चितव चकोरी ॥  
लोचन मग रामहि उर आनी । दीन्हे पलक कपाट सयानी ॥  
जय सिय सखिन्ह प्रेमवस जानी । कहिन सकहिं कछु मन सकचानी ॥

दो०—लताभवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ ।

निकसै जनु जुग विमल विधु जलद पटल बिलगाइ ॥२३२॥

सोभा सीवँ सुभग दोउ बीरा । नील पीत जलजाभ सरीरा ॥  
 मोरपंख सिर सोहत नीके । गुच्छ बीच बिच कुसुम कली के ॥  
 भाल तिलक श्रमबिंदु सुहाए । श्रवन सुभग भूपन छवि छाए ॥  
 बिकट भृकुटि कच घूघरवारे । नव सरोज लोचन रतनारे ॥  
 चारु चिदुक्क नासि कपोला । हास बिलास लेत मनु मोला ॥  
 मुखछवि कहि न जाइ मोहि पाहीं । जो बिलोकि बहु काम लजाहीं ॥  
 उर मनि माल कंबु कल गीवा । काम कलभ कर भुज बल सींवा ॥  
 सुमन समेत कर दोना । सावँर कुअँर सखी सुठि लोना ॥

दो०—केहरि कटि पट पीत धर सुषमा सील निधान ।

देरि भानुकुलभूषनहि बिसरा सखिन्ह अपान ॥२३३॥

धरि धीरजु एक आलि सयानी । सीता सन बोली गहि पानी ॥  
 बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू । भूपकिसोर देखि किन लेहू ॥  
 सकुचि सीयँ तव नयन उघारे । सनमुख दोउ रघुसिंघ निहारे ॥  
 नख सिख देखि राम कै सोभा । सुभिरि पिता पनु मनु अति छोभा ॥  
 परवस सखिन्ह लखी जब सीता । भयउ गहरु सब कहहिं समीता ॥  
 पुनि आउव एहि वेरिआँ काली । अस कहि मन विहसी एक आली ॥  
 गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी । भयउ विलंबु मातु भय मानी ॥  
 धरि बडि धीर रामु उर आने । फिरी अपनपउ पितुवस जाने ॥

दो०—देखन मिस मृग विहग तरु फिरइ बहोरि बहोरि ।

निरखि निरखि रघुवीर छवि वाढ़इ प्रीति न थोरि ॥२३४॥

जानि कठिन सिवचाप विसरति । चली राखि उर स्यामल मूरति ॥  
 प्रभु जय जात जानकी जानी । सुख सनेह सोभा गुन खानी ॥  
 परम प्रेममय मृदु ममि कोन्ही । चारु चित्त भीतीं लिखि लीन्ही ॥  
 गई भवानो भवन बहोरी । वंदि चरन बोली कर जोरी ॥  
 जय जय गीरवगराज किमोरी । जय गहस मुख चंद चकोरी ॥  
 जय गजवदन पडानन माता । जगत जननि दामिनि दुति गाता  
 नहिं तत्र आदि मध्य अवसाना । अमित प्रभाउ बैदु नहिं जाना ॥  
 भव भव विभय पराभव कारिनि । विश्व विमोहनि स्वप्नसिद्धारिनि  
 दो०—पतिदेवता सुतीय महँ मातु प्रथम तव रेख ।

महिमा अमित न सकहि कहि सहस सारदा सेष ॥२३५॥

सेवत तोहि सुलभ फल चारी । बरदायनो पुरारि पिआरी ॥  
 देवि पूजि पद कमल तुम्हारे । सुरनरमुनि सब होहिं सुखारे ॥  
 मोर मनोरथु जानहु नीकें । बसहु सदा उर पुर सबही कें ॥  
 कीन्हेउं प्रगट न कारन तेहीं । अस कहि चरन गहे वैदेहीं ॥  
 विनय प्रेम बस भई भवानी । खसी माल मूरति सुसुकानी ॥  
 मादर मिये प्रमादु मिर धरेऊ । बोली गौरि हरषु हियँ भरेऊ ॥  
 सुनु मिय मत्य अर्पाम हमारी । पूजिहि मन कामना तुम्हारी ॥  
 नान्द वचन मदा सुचि माचा । सो बरु मिलिहि जाहिं मनु राचा ॥

८०—मनु जाहिं गचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवगं ।

करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरां ॥  
 एहि भौंति गौरि अर्पाम मुनि मिय सहित हियँ दरपी अली ॥  
 तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥

सो०—जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।

मंजुल मंगल मूल वाम अंग फरकन लगे ॥२३६॥

हृदयँ सराहत सीय लोनाई । गुर समीप गवने दोउ भाई ॥

राम कहा सब कौसिक पाहीं । सरल सुभाउ अत नाही ॥

सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही । पुनि असीस दुहु भाइन्ह दीन्ही ॥

सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे । रामु लखनु सुनि भए सुखारे ॥

करि भोजनु मुनिवर विग्यानी । लगे कहन कछु कथा पुरानी ॥

विगत दिवसु गुरु आयसु पाई । संध्या करन चले दोउ भाई ॥

ग्राची दिसि ससि उयउ सुहावा । सिय मुख सरिस देखि सुखु पावा ॥

बहुरि विचारु कीन्ह मन माहीं । सीय बदन सम हिमकर नाही ॥

दो०—जनमु सिंधु पुनि बंधु विषु दिन मलीन सकलंक ।

सिय मुख समता पाव किमि चंदु बापुरो रंक ॥२३७॥

घटइ बढइ विरहिनि दुखदाई । ग्रसइ राहु निज संधिहिं पाई ॥

कोक सोकप्रद पंकज द्रोही । अवगुन बहुत चंद्रमा तोही ॥

वैदेही मुख पटतर दीन्हे । होइ दोषु बड़ अनुचित कीन्हे ॥

सिय मुख छवि विधु ब्याज बखानी । गुर पहिं चले निसा बड़ि जानी ॥

करि मुनि चरन सरोज प्रनामा । आयसु पाइ कीन्ह विश्रामा ॥

विगत निसा रघुनायक जागे । बंधु विलोकि कहन अस लागे ॥

उयउ अरुन अवलोकहु ताता । पंकज कोक लोक सुखदाता ॥

बोले लखनु जोरि जुग पानी । प्रभु प्रभाउ सूचक मृदु वानी ॥

दो०—अरुनोदयँ सकुचे कुमुद उडगन जोति मलीन ।

जिमि तुम्हार आगमन सुनि भए नृपति बलहीन ॥२३८॥

नृप सब नखत करहिं उजिआरी । टारिन सकहिं चाप तम भारी ॥  
 कमल कोक मधुकर खग नाना । हरपे सकल निसा अवसाना ॥  
 ऐसेहिं प्रभु सब भगत तुम्हारे । होइहहिं टूटें धनुष सुखारे ॥  
 उयउ भानु त्रिनु भ्रम तम नासा । दुरे नखत जग तेजु प्रकासा ॥  
 रवि निज उदय व्याजरघुराया । प्रभु प्रतापु सब नृपन्ह दिखाया ॥  
 तव भुज बल महिमा उदघाटी । प्रगटी धनु विघटन परिपाटी ॥  
 बंधु बचन सुनि प्रभु मुसुकाने । होइ सुचि सहज पुनीत नहाने ॥  
 नित्य क्रिया करि गुरु पहिं आए । चरन सरोज सुभग सिर नाए ॥  
 सतानंदु तव जनक बोलाए । कौसिक मुनि पहिं तुरत पठाए ॥  
 जनक विनय तिन्ह आइ सुनाई । हरपे बोलि लिए दोउ भाई ॥  
 दो०—सतानंद पद बंदि प्रभु बैठे गुरु पहिं जाइ ।

चलहु तात मुनि कहेउ तव पठवा जनक बोलाइ ॥२३९॥

मासपारायण, आठवाँ विश्राम

नवाह्नपारायण, दूसरा विश्राम

सीय स्वयंवरु देखिअ जाई । ईसु काहि धीं देइ बढाई ॥  
 लखन कहा जस भाजनु सोई । नाथ कृपा तव जापर होई ॥  
 हरपे मुनि सब मुनि घर बानी । दीन्हि असीस सबहिं सुसु मानी ॥  
 पुनि मुनिवृंद समेत कृपाला । देखन चले धनुषमख साला ॥  
 रंगभूमि आए दोउ भाई । असि सुधि सब पुरबासिन्ह पाई ॥  
 चले सबल गृह काज विसारी । बाल जुवान जरठ नर नारी ॥  
 देखी जनक भीर भै भारी । सुचि सेवक सब लिए हँकारी ॥

तुरत सकल लोगन्ह पहिं जाहू । आसन उचित देहु सब काहू ॥

दो०—कहि मृदु बचन विनीत तिन्ह वैठारे नर नारि ।

उत्तम मध्यम नीच लघु निज निज थल अनुहारि ॥२४०॥

राजकुअँर तेहि अवसर आए । मनहुँ मनोहरता तन छाए ॥  
 गुन सागर नागर बर वीरा । सुंदर स्यामल गौर सरीरा ॥  
 राज समाज विराजत रूरे । उडगन महुँ जनु जुग विधुपूरे ॥  
 जिन्ह कें रही भावना जैसी । प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी ॥  
 देखहिं रूप महा रनधीरा । मनहुँ वीर रसु धरें सरीरा ॥  
 डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी । मनहुँ भयानक मूरति भारी ॥  
 रहे असुर छल छोनिप वेषा । तिन्ह प्रभु प्रगट कालसम देखा ॥  
 पुरवासिन्ह देखे दौड भाई । नरभूषन लोचन सुखदाई ॥

दो०—नारि विलोकहिं हरषि हियँ निज निज रुचि अनुरूप ।

जनु सोहत सिंगार धरि मूरति परम अनूप ॥२४१॥

विदुषन्ह प्रभु विराटमय दीसा । बहु मुख कर पग लोचन सीसा ॥  
 जनक जाति अवलोकहिं कैसैं । सजन सगे प्रिय लागहिं जैसैं ॥  
 सहित विदेह विलोकहिं रानी । सिसु सम प्रीति न जाति बखानी ॥  
 जोगिन्ह परम तत्त्वमय भासा । सांत सुद्व सम सहज प्रकासा ॥  
 हरिभगतन्ह देखे दौड आता । इष्टदेव इव सब सुख दाता ॥  
 रामहि चित्तव भायँ जेहि सीया । सो सनेहु सुखु नहिं कथनीया ॥  
 उर अनुभवति न कहि सक सोऊ । कवन प्रकार कहै कवि कोऊ ॥  
 एहि विधि रहा जाहि जस भाऊ । तेहिं तस देखेउ कोसलराऊ ॥

दो०—राजत राज समाज महुँ कोसलगज किमोर ।

सुंदर स्वामल गौर तन विश्व विलोचन चोर ॥२४२॥

सहज मनाहर मूरति दोऊ।कोटि काम उपमा लघु सोऊ॥  
 मरद चंद निंदक मुख नीकै।नीरज नयन भावते जी के॥  
 चितवनि चारु मार मनु हरनी।भावति हृदय जाति नहीं बरनी॥  
 कल कपोल श्रुति कुंडल लोला।चिबुक अधर सुंदर मृदु बोला॥  
 कुमुदबंधु कर निंदक हाँसा।भृकुटी विकट मनोहर नासा॥  
 भाल विसाल तिलक झलकाहीं।कच विलोकि अलि अवलिलजाहीं  
 पीत चँतनी सिरन्हि सुहाई।कुमुम कलों विच बीच बनाई॥  
 रखें रुचिर कंबु कल गीवाँ।जनु त्रिभुवन सुपमा की सीवाँ॥

दो०—कुंजर मनि कंठा कलित उरन्हि तुलसिका माल ।

वृषभ कंध केहरि ठवनि बल निधि बाहु विसाल ॥२४३॥

काटि तूनीर पीत पट बाँधे।कर सर धनुष बाम बर काँधे॥  
 पीत जग्य उपवीत मुहाए।नख सिख मंजु महाछवि छाए॥  
 देखि लोग सब भए सुखारे।एकटक लोचन चलत न तारे॥  
 हरपे जनकु देखि दोउ भाई।मुनि पद कमल गहे तब जाई॥  
 करि विनती निज कथा मुनाई।रंग अवनि सब मुनिहि देख्वाई॥  
 जहँ जहँ जाहिँ कुअँर बर दोऊ।तहँ तहँ चकित चितव सवु कोऊ  
 निज निज रुख रामहि सवु देखा।कोउ न जान कलु मरमु विसेपा॥  
 भलि रचना मुनि नृप सन कहेऊ।गजाँ मुदित महासुख लहेऊ॥

दो०—सब मंचन्ह ते मंचु एक सुंदर विसद विसाल ।

मुनि समेत दोउ बंधु तहँ बैठारे महिपाल ॥२४४॥



प्रभुहि देखि सब नृप हियँ हारे । जनु राकेस उदय भएँ तारे ॥  
 अस्ति प्रतीति सब के मन माहीं । राम चाप तोरव सक नाहीं ॥  
 बिनु भंजेहुँ भव धनुषु बिसाला । सेलिहि सीय राम उर माला ॥  
 अस बिचारि गवनहु घर भाई । जसु प्रतापु व तेजु गवाँई ॥  
 विहसे अपर भूप सुनि वानी । जे अविवेक अंध अभिमानी ॥  
 तोरेहुँ धनुषु व्याहु अवगाहा । बिनु तोरें को कुअँरि विआहा ॥  
 एक बार कालउ किन कोऊ । सिय हित समर जितव हम सोऊ ॥  
 यह निअवर महिप मुसुकाने । धरमसील हरिभगत सयाने ॥

सो०—सीय विआहवि राम गरव दूरि करि नृपन्ह के ।

जीति को सक संग्राम दसरथ के रन बाँकुरे ॥२४५॥  
 व्यर्थ मरहु जनि गाल बजाई । मन मोदकन्हि कि भूख बुताई ॥  
 सिख हमारि सुनि परम पुनीता । जगदंवा जानहु जियँ सीता ॥  
 जगत पिता रघुपतिहि विचारी । भरि लोचन छवि लेहु निहारी ॥  
 सुंदर सुखद सकल गुन रासी । ए दोउ बंधु संभु उर वासी ॥  
 सुधा समुद्र समीप विहाई । मृगजलु निरखि मरहु कत धाई ॥  
 करहु जाइ जा कहुँ जोइ भावा । हम तौ आजु जनम फलु पावा ॥  
 अस कहि भले भूप अनुरागे । रूप अनूप विलोकन लागे ॥  
 देखहिं सुर नभ चढ़े विमाना । बरपहिं सुमन करहिं कल गाना ॥  
 दो०—जानि सुअवसरु सीय तव पठई जनक बोलाइ ।

चतुर सर्वाँ सुंदर सकल सादर चलीं लयाइ ॥२४६॥  
 सिय सोभा नहिं जाइ बखानी । जगदंविक्का रूप गुन खानी ॥  
 उपमा सकल मोहि लघु लागीं । प्राकृत नारि अंग अनुरागीं ॥

सिय वरनिअ तेइ उपमा देई । कुकवि कहाइ अजसु को लेई ॥  
 जौं पटतरिअ तीय सम सीया । जग असि जुवति कहाँ कमनीया  
 गिरा मुखर तन अरध भवानी । रति अति दुखित अतनु पति जानी  
 विप चारुनी बंधु प्रिय जेही । कहिअ रमासम किमि वंदेही ॥  
 जौं छवि सुधा पयोनिधि होई । परम रूपमय कच्छपु सोई ॥  
 सोभा रजु मंदरु सिंगारु । मयै पानि पंकज निज मारु ॥

दो०—एहि विधि उपजै लच्छि जव सुंदरता सुख मूल ।

तदपि सकोच समेत कवि कहहिं सीय समतूल ॥२४७॥  
 चलीं संग लै सखीं सयानी । गावत गीत मनोहर चानी ॥  
 सोह नवल तनु सुंदर मारी । जगत जननि अतुलित छवि भारी  
 भूपन सकल सुदेस सुहाए । अंग अंग रचि सखिन्ह वनाए ॥  
 रंगभूमि जव सिय पगु धारी । देखि रूप मोहे नर नारी ॥  
 हरपि सुरन्ह दुंदुभीं वजाई । वरपि प्रसून अपछरा गाई ॥  
 पानि सरोज सोह जयमाला । अबचट चितए सकल भुआला ॥  
 सीय चकित चित रामहि चाहा । भए मोहवस सब नरनाहा ॥  
 गुनि समीप देखे दोउ भाई । लगे ललकिलोचन निधि पाई ॥

दो०—गुरजन लाज समाजु वड़ देखि सीय सकुचानि ।

लागि विलोकन सखिन्ह तन रघुवीरहि उर आनि ॥२४८॥  
 राम रूपु अरु सिय छवि देखें । नर नारिन्ह परिहरौं निमेषें ॥  
 सोचहिं सकल कहत सकुचाहीं । विधि सन विनय करहिं मन माहीं ॥  
 हरु विधि वेगि जनक जड़ताई । मति हमारि असि देहि सुहाई ॥  
 विनु विचार पनु तजि नरनाह । सीय राम कर करै विवाह ॥

जगु भल कहिहि भाव सब काहू । हठ कीन्हें अंतहुँ उर दाहू ॥  
 एहिं लालसाँ मगन सब लोगू । वरु साँवरो जानकी जोगू ॥  
 तव बंदीजन जनक बोलाए । विरिदावली कहत चलि आए ॥  
 कह नृपु जाइ कहहु पन मोरा । चले भाट हियँ हरषु न थोरा ॥  
 दो०—बोले बंदी वचन वर सुनहु सकल महिपाल ।

पन विदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ विसाल ॥२४९॥

नृप भुजबलु विधु सिवधनु राहू । गरुअ कठोर विदित सब काहू ॥  
 रावनु बानु महाभट भारे । देखि सरासन गवँहिं सिधारे ॥  
 सोइ पुरारि कोदंडु कठोरा । राज समाज आजु जोइ तोरा ॥  
 त्रिभुवन जय समेत वैदेही । विनहिं विचार वरइ हठि तेही ॥  
 सुनि पन सकल भूप अभिलाषे । भटमानी अतिसय मन माखे ॥  
 परिकर वाँधि उठे अकुलाई । चले इष्टदेवन्ह सिर नाई ॥  
 तमकि ताकि तकि सिव धनु धरहीं । उठइ न कोटि भाँति बलु करहीं ॥  
 जिन्ह के कलु विचारु मन माहीं । चाप समीप महीप न जाहीं ॥

दो०—तमकि धरहिं धनु सूढ़ नृप उठइ न चलहिं लजाइ ।

मनहुँ पाइ भट बाहुबलु अधिकु अधिकु गरुआइ ॥२५०॥

भूप सहस दस एकहि वारा । लगे उठावन टरइ न टारा ॥  
 डगइ न संभु सरासनु कैसैं । कामी वचन सती मनु जैसैं ॥  
 सब नृप भए जोगु उपहासी । जैसैं विनु विराग संन्यासी ॥  
 कीरति विजय वीरता भारी । चले चाप कर वरवस हारी ॥  
 श्रीहत भए हारि हियँ राजा । बैठे निज निज जाइ समाजा ॥  
 नृपन्ह बिलोकि जनकु अकुलाने । बोले वचन रोप जनु साने ॥

दीप दीप के भूपति नाना । आए सुनि हम जो पनु ठाना ॥  
 देव दनुज धरि मनुज सरीरा । विपुल वीर आए रनधीरा ॥  
 दो०—कुअँरि मनोहर विजय बड़ि कीरति अति कमनीय ।

पावनिहार विरंचि जनु रचेउ न धनु दमनीय ॥२५१॥

कहहु काहि यहु लासु न भावा । काहुँ न संकर चाप चढ़ावा ॥  
 रहउ चढ़ाउव तोरव भाई । तिलु भरि भूमि न सके छड़ाई ॥  
 अत्र जनि कोउ माखै भट मानी । वीर विहीन मही में जानी ॥  
 तजहु आस निज निज गृह जाहु । लिखा न विधि वैदेहि विवाह ॥  
 सुकृतु जाइ जाँ पनु परिहरऊँ । कुअँरि कुआरि रहउ का करऊँ ॥  
 जाँ जनतेउँ विनु भट भुवि भाई । तौ पनु करि होतेउँ न हँसाई ॥  
 जनक वचन सुनि सब नर नारी । देखि जानकिहि भए दुखारी ॥  
 माखे लखनु कुटिल भई भौहैं । रदपट फरकत नयन रिसौहैं ॥

दो०—कहि न सकत रघुवीर डर लगे वचन जनु वान ।

नाइ राम पद कमल सिरु बोले गिरा प्रमान ॥२५२॥

रघुवंसिन्ह महुँ जहँ कोउ होई । तेहिं समाज अस कहइ न कोई ॥  
 कही जनक जसि अनुचित बानी । विद्यमान रघुकुल मनि जानी ॥  
 सुनहु भानुकुल पंकज भानू । कहउँ सुभाउन कलु अभिमानू ॥  
 जाँ तुम्हारि अनुसासन पावौं । कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं ॥  
 काचे घट जिमि डारों फोरी । सकउँ मेरु मूलक जिमि तोरी ॥  
 तव प्रताप महिमा भगवाना । को वापुरो पिनाक पुराना ॥  
 नाथ जानि अस आयसु होऊ । कौतुकु करौं विलोकिअ सोऊ ॥  
 कमल नाल जिमि चाप चढ़ावौं । जो जन सत प्रमान लै धावौं ॥

दो०—तोरौ छत्रक दंड जिमि तव प्रताप बल नाथ ।

जौ न करौ प्रभु पद सपथ न धरौ धनु भाथ ॥२५३॥

लखन सक्रोप बचन जे बोले । डगमगानि महि दिग्गज डोले ॥

सकल लोग सब भूप डेराने । सिय हियँ हरषु जनकु सकुचाने ॥

गुर रघुपति सब मुनि मन माहीं । मुदित भए पुनि पुनि पुलकाहीं ॥

सयनहिं रघुपति लखनु नेवारे । प्रेम समेत निकट बैठारे ॥

विस्वामित्र समय सुभ जानी । बोले अति सनेहमय बानी ॥

उठहु राम भंजहु भवचापा । भेटहु तात जनक परितापा ॥

मुनि गुरु बचन चरन सिरु नावा । हरषु विषादु न कळु उर आवा ॥

ठाढ़े भए उठि सहज सुभाएँ । ठवनि जुबामृगराजु लजाएँ ॥

दो०—उदित उदयगिरि मंच पर रघुवर बालपतंग ।

विकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग ॥२५४॥

नृपन्ह केरि आसा निसि नासी । बचन नखत अवली न प्रकासी ॥

मानी महिष कुमुद सकुचाने । कपटो भूप उलूक लुकाने ॥

भए विसोक कोक मुनि देवा । बरिसहिं सुमन जनावहिं सेवा ॥

गुर पद वंदि सहित अनुरागा । राम मुनिन्ह सन आयसु सागा ॥

सहजहिं चले सकलजग स्वामी । मत्त मंजु वर कुंजर गायी ॥

चलत राम सब पुर नर नारी । पुलक पूरि तन भए सुखारी ॥

वंदि पितर सुर सुकृत सँभारे । जौ कळु पुन्य प्रभाउ हमारे ॥

तौ सिवधनु मृनाल की नाई । तोरहुँ रामु गनेस गोसाई ॥

दो०—रामहि प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाइ ।

सीता मातु सनेह बस बचन कहइ विलखाइ ॥२५५॥

सखि सव कौतुकु देखनिहारे । जेउ कहावत हितू हमारे ॥  
 कोउ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं । ए बालक असि हठ भलि नाहीं ॥  
 रावन वान छुआ नहिं चापा । हारे सकल भूप करि दापा ॥  
 सो धनु राजकुअँर कर देहीं । बाल मराल कि मंदर लेहीं ॥  
 भूप सथानप सकल सिरानी । सखि विधि गति कछु जाति न जानी ॥  
 बौली चतुर सखी मृदु बानी । तेजवंत लघु गनिअ न रानी ॥  
 कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा । सोपेउ सुजसु सकल संसारा ॥  
 रवि मंडल देखत लघु लागा । उदयँतासु तिभुवन तम भागा ॥  
 दो०—मंत्र परम लघु जासु वस विधि हरि हर सुर सर्व ।

महामत्त गजराज कहँ वस कर अंकुस खर्व ॥२५६॥  
 काम बुसुम धनु सायक लीन्हे । सकल भुवन अपनै वस कीन्हे ॥  
 देवि तजिअ संसउ अस जानी । भंजव धनुष राम सुनु रानी ॥  
 सखी वचन सुनि भै परतीती । मिटा विपादु बड़ी अति प्रीती ॥  
 तव रामहि विलोकि वैदेही । सभय हृदयँ विनवति जेहि तेही ॥  
 मनहीं मन मनाव अकुलानी । होहु प्रसन्न महेस भवानी ॥  
 करहु सफल आपनि सेवकाई । करि हितु हरहु चाप गरुआई ॥  
 गननायक वरदायक देवा । आजु लगै कीन्हिउँ तुअ सेवा ॥  
 वार वार विनती सुनि मोरी । करहु चाप गुस्ता अति धोरी ॥  
 दो०—देखि देखि रघुवीर तन सुर मनाव धरि धीर ।

भरै विलोचन प्रेम जल पुलकावली सरार ॥२५७॥

नीकें निरखि नयन भरि सोभा । पितु पनु सुमिरि बहुरि मनु छोभा ॥  
 अहह तात दारुनि हठ ठानी । समुझत नहिं कछु लाभु न हानी ॥

सचिव सभय सिख देइ न कोई । बुध समाज बड़ अनुचित होई ॥  
 कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा । कहँ स्यामल मृदुगात किसोरा ॥  
 विधि केहि भाँति धरौं उर धीरा । सिरस सुमन कन बेधिअ हीरा ॥  
 सकल सभा कै मति भै भोरी । अब मोहि संभुचाप गति तोरी ॥  
 निज जड़ता लोगन्ह पर डारी । होहि हरुअरघुपतिहि निहारी ॥  
 अति परिताप सीय मन माहीं । लव निमेष जुग सय सम जाहीं ॥  
 दो०—प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि राजत लोचन लोल ।

खेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधु मंडल डोल ॥२५८॥  
 गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी । प्रगट न लाज निसा अवलोकी ॥  
 लोचन जलु रह लोचन कोना । जैसें परम कृपन कर सोना ॥  
 सकुची व्याकुलता बड़ि जानी । धरि धीरजु प्रतीति उर आनी ॥  
 तन मन बचन मोर पनु साचा । रघुपति पद सरोज चितुराचा ॥  
 तौ भगवानु संकल उर बासी । करिहि मोहि रघुबर कै दासी ॥  
 जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू । सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू ॥  
 प्रभु तन चितइ प्रेम तन ठाना । कृपानिधान राम सबु जाना ॥  
 सियहि बिलोकि ताकेउ धनु कैसें । चितव गरुरु लघु ब्यालहि जैसें  
 दो०—लखन लखेउ रघुवंसमनि ताकेउ हर कोदंडु ।

पुलकि गात बोले बचन चरन चापि ब्रह्मांडु ॥२५९॥  
 दिसिकुंजरहु कमठ अहि कोला । धरहु धरनि धरिधीर न डोला ॥  
 रामु चहहिं संकर धनु तोरा । होहु सजग सुनि आयसु मोरा ॥  
 चाप समीप रामु जब आए । नरनारिन्ह सुर सुकृत मनाए ॥  
 सब कर संसउ अरु अग्यानु । मंद महीपन्ह कर अभिमानु ॥

भृगुपति केरि गरव गरुआई । सुर मुनिवरन्ह केरि कदराई ॥  
 सिय कर सोचु जनक पछितावा । रानिन्ह कर दारुन दुख दावा ॥  
 मंभुचाप बड़ बोहितु पाई । चढ़े जाइ सब संगु बनाई ॥  
 राम बाहुबल सिंधु अपारु । चहत पारु नहिं कोउ कड़हारु ॥  
 दो०—राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि ।

चितई सीय कृपायतन जानी विकल विसेपि ॥२६०॥

देखी विपुल विकल वैदेही । निमिपविहात कलप सम तेही ॥  
 तृपित वारि विनु जो तनु त्यागां । भ्रुएँ करइ का सुधा तड़ागा ॥  
 का वरपा सब कृपी सुखानें । समय चुकें पुनि का पछितानें ॥  
 अस जियँ जानि जानकी देखी । प्रभु पुलके लखि प्रीति विसेपी ॥  
 गुरहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा । अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा ॥  
 दमकेउ दामिनि जिमि जव लयऊ । पुनि नभ धनु मंडल सम भयऊ  
 लेत चढ़ावत खँचत गाढ़ें । काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़ें ॥  
 तेहि छन राम मध्य धनु तोरा । भरे भुवन धुनि घोर कठोरा ॥

छं०—भरे भुवन घोर कठोर रव रवि वाजि तजि मारगु चले ।

चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कलमले ॥  
 सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें सकल विकल विचारहीं ।  
 कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति वचन उचारहीं ॥

सो०—संकर चापु जहाजु सागरु रघुवर बाहुबलु ।

बूड़ सो सकल समाजु चढ़ा जो प्रथमहिं मोढ वस ॥२६१॥

प्रभु दोउ चापखंड महि डारे । देखि लोग सब भए सुखारे ॥  
 कौंसिकरूप पयोनिधि पावन । प्रेम वारि अवगाहु सुहावन ॥



रामरूप राकेसु निहारी । बढत बीचि पुलकावलि भारी ॥  
 बाजे नभ गहगहे निसाना । देवबधू नाचहिं करि गाना ॥  
 ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा । प्रभुहि प्रसंसहिं देहिं असीसा ॥  
 बरिसहिं सुमन रंग बहु माला । गावहिं किंनर गीत रसाला ॥  
 रही भुवन भरि जय जय बानी । धनुषभंग धुनि जात न जानी ॥  
 मुदित कहहिं जहँ तहँ नर नारी । भंजेउ राम संभुधनु भारी ॥

दो०—बंदी मागध सूतगन विरुद बदहिं मतिधीर ।

करहिं निछावरि लोग सब हय गय धन मनि चीर ॥२६२॥

झाँझि मृदंग संख सहनाई । भेरि ढोल दुंदुभी सुहाई ॥  
 बाजहिं बहु बाजने सुहाए । जहँ तहँ जुबतिन्ह मंगल गाए ॥  
 सखिन्ह सहित हरषी अति रानी । सूखत धान परा जनु पानी ॥  
 जनक लहेउ सुखु सोचु बिहाई । पैरत थकें थाह जनु पाई ॥  
 श्रीहत भए भूष धनु टूटे । जैसें दिवस दीप छबि छूटे ॥  
 सीय सुखहि बरनिअ केहि भाँती । जनु चातकी पाइ जलु खाती ॥  
 रामहि लखनु विलोकत कैसें । ससिहि चकोर किसोरकु जैसें ॥  
 सतानंद तब आयसु दीन्हा । सीताँ गमनु राम पहिं कीन्हा ॥

दो०—संग सर्खी सुंदर चतुर गावहिं मंगलचार ।

गवनी बाल मराल गति सुषमा अंग अपार ॥२६३॥

सखिन्ह मध्य सिय सोहति कैसें । छविगन मध्य महाछवि जैसें ॥  
 कर सरोज जयमाल सुहाई । बिस्व बिजय सोभा जेहिं छाई ॥  
 तन सकोचु मन परम उछाहू । गूढ़ प्रेसु लखि परइ न काहू ॥  
 जाइ समीप राम छवि देखी । रहि जनु कुअरि चित्र अवरेश्वरी ॥

चतुर सर्खीं लखि कहा बुझाई । पहिरावहु जयमाल सुहाई ॥  
 सुनत जुगल कर माल उठाई । प्रेम विवस पहिराई न जाई ॥  
 सोहत जनु जुग जलज सनाला । ससिहि सभोत देत जयमाला ॥  
 गावहिं छवि अवलोकि सहेली । सियँ जयमाल राम उर मेली ॥

सो०—रघुवर उर जयमाल देखि देव वरिसहिं सुमन ।

सकुचे सकल भुआल जनु विलोकि रवि कुमुदगन ॥२६४॥

पुर अरु व्योम वाजने वाजे । खल भए मलिन साधु सव राजे ॥  
 सुर किंनर नर नाग मुनीसा । जयजयजय कहि देहिं असोसा ॥  
 नाचहिं गावहिं विबुध बधूटीं । वार वार कुसुमांजलि छूटीं ॥  
 जहँ तहँ विप्र वेदधुनि करहीं । वंदी विरिदावलि उचरहीं ॥  
 महि पाताल नाक जसु व्यापा । राम वरी सिय भंजेउ चापा ॥  
 करहिं आरती पुर नर नारी । देहिं निछावरि वित्त विसारी ॥  
 सोहति सीय राम कै जोरी । छवि सिंगारु मनहुँ एक ठोरी ॥  
 सर्खीं कहहिं प्रभुपद गहु सीता । करति न चरन परस अति भीता ॥

दो०—गौतम तिय गति सुरति करि नहिं परसति पग पानि ।

मन विहसे रघुवंसमनि प्रीति अलौकिक जानि ॥२६५॥

तव सिय देखि भूप अभिलाषे । कूर कपूत मूढ़ मन माखे ॥  
 उठि उठि पहिरि सनाह अभागे । जहँ तहँ गाल वजावन लागे ॥  
 लेहु छड़ाइ सीय कह कोऊ । धरि बाँधहु नृप बालक दोऊ ॥  
 तोरें धनुषु चाड़ नहिं सरई । जीवत हमहि कुअँरि को वरई ॥  
 जाँ विदेहु कछु करै सहाई । जीतहु समर सहित दोउ भाई ॥  
 साधु भूप बोले सुनि वानी । राजसमाजहि लाज लजानी ॥

बलु प्रतापु वीरता बड़ाई। नाक पिनाकहि संग सिधाई ॥  
सोइ सूरता कि अब कहूँ पाई। असि बुधि तौ विधि मुहँ मसि लाई

दो०—देखहु रामहि नयन भरि तजि इरिया महु कोहु ।

लखन रोपु पावकु प्रबल जानि सलभ जनि होहु ॥२६६॥

बैनतेय बलि जिमि चह कागू। जिमिससु चहै नाग अरि भागू ॥  
जिमि चह कुसल अकारन कोही। सब संपदा चहै सिवद्रोही ॥  
लोभी लोलुप कल कीरति चहई। अकलंकता कि कामी लहई ॥  
हरि पद विमुख परम गति चाहा। तस तुम्हार लालचु नरनाहा ॥  
कोलाहलु सुनि सीय सकानी। सर्वाँ लवाइ गई जहँ रानी ॥  
राष्टु सुभायँ चले गुरु पाहीं। सिय सनेहु वरनत मन माहीं ॥  
रानिन्ह सहित सोचवस सीया। अब धौं विधिहि काह करनीया ॥  
भूप वचन सुनि इत उत तकहीं। लखनु राम डर बोलि न सकहीं ॥

दो०—अरुन नयन भृकुटी कुटिल चितवत नृपन्ह सकोप ।

मनहुँ भक्त गजगन निरखि सिंघकिसोरहि चोप ॥२६७॥

खरभरु देखि विकल पुर नारीं। सब-मिलि देहिं महीपन्ह गारीं ॥  
तेहिं अवसर सुनि सिवधनु भंगा। आयउ भृगुकुल कमल पतंगा ॥  
देखि महीप सकल सकुचाने। वाज झपट जनु लवा लुकाने ॥  
गौरि सरीर भूति भल भ्राजा। भाल विसाल त्रिपुंड विराजा ॥  
सीस जटा ससिवदनु सुहावा। रिस बस कलुक अरुन होइ आवा  
भृकुटी कुटिल नयन रिस राते। सहजहुँ चितवत मनहुँ रिसाते ॥  
वृपभ कंध उर वाहु विसाला। चारु जनेउ माल मृगछाला ॥

कटि मुनिवसन तून दुइ बाँधे । धनु मर कर कुठारु कल काँधे ॥

दो०—सांत वेषु करनी कठिन वरनि न जाइ सरूप ।

धरि मुनितनु जनु वीर ग्मु आयउ जहँ सब भूप ॥२६८॥

देखत भृगुपति वेषु कराला । उठे सकल भय विकल भुआला ॥  
पितु ममेत कहि कहि निज नामा । लगे करन सब दंड प्रनामा ॥  
जेहि सुभायँ चितवहिँ हितु जानी । सो जानइ जनु आइ खुटानी ॥  
जनक बहोरि आइ सिरु नावा । सीय बोलाइ प्रनामु करावा ॥  
आसिप दीन्हि सखीं हरपानीं । निज समाज लै गई सयानीं ॥  
विस्वामित्रु मिले पुनि आई । पद सरोज गेले दोउ भाई ॥  
गमु लखनु दसरथ के ढोटा । दीन्हि असीम देखि भल जोटा ॥  
रामहि चितइ रहे थकि लोचन । रूप अपार मार मद मोचन ॥

दो०—बहुरि विलोकि विदेह सन कहहु काह अति भीर ।

पूँछत जानि अजान जिमि व्यापेउ कोपु मरीर ॥२६९॥

ममाचार कहि जनक मुनाए । जेहि कारन महीप मव आए ॥  
सुनत वचन फिरि अनत निहारे । देखे चापखंड महि डारे ॥  
अति रिम बोले वचन कठोरा । कहु जइ जनक धनुप कै तोरा ॥  
वेगि देखाउ मूढ़ न त आजू । उलटउं महि जहँ लहि तव गजू ॥  
अति डरु उत्तरु देत नृपु नाहीं । कुटिल भूप हरपे मन माहीं ॥  
सुर मुनि नाग नगर नर नागी । मोचहिँ सकल त्राम उर भारी ॥  
मन पछिताति सीय महतारी । विधि अत्र संवरी वात विगारी ॥  
भृगुपति कर सुभाउ मुनि मीता । अरध निमेष कल्प मम वीता ॥

दो०—सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु ।

हृदयँ न हरषु विषादु कछु बोले श्रीरघुवीरु ॥२७०॥

भासपारायण, नवाँ विश्राम

नाथ संभुधनु भंजनिहारा । होइहि केउ एक दास तुम्हारा ॥  
 आयसु काह कहिअ किन मोही । सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही ॥  
 सेवकु सो जो करै सेवकाई । अरि करनी करि करिअ लराई ॥  
 सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा । सहसवाहु सम सो रिपु मोरा ॥  
 सो बिलगाउ बिहाइ समाजा । न त मारे जैहहिं सब राजा ॥  
 सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने । बोले परसुधरहि अपमाने ॥  
 बहु धनुहीं तोरीं लरिकाई । कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं ॥  
 एहि धनु पर ममता केहि हंतू । सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू ॥

दो०—रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार ।

धनुही सम तिपुरारि धनु विदित सकल संसार ॥२७१॥

लखन कहा हँसि हसरें जाना । सुनहु देव सब धनुष समाना ॥  
 का छति लाभु जून धनु तोरें । देखा राम नयन के भोरें ॥  
 छुअत टूट रघुपतिहु न दोस्र । मुनि विनु काज करिअ कत रोस्र ॥  
 बोले चितइ परसु की ओरा । रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा ॥  
 बालकु बोलि वधउँ नहिं तोही । केवल मुनि जड़ जानहि मोही ॥  
 बाल ब्रह्मचारी अति कोही । विस्व विदित छत्रियकुल द्रोही ॥  
 भुजवल भूमि भूप दिनु कीन्ही । विपुल वार महिदेवन्ह दीन्ही ॥  
 सहसवाहु भुज छेदनिहारा । परसु विलोकु महीपङ्कमारा ॥

दो०—मातु पितृहि जनि सोचवस करमि महीसकिमोर ।

गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर ॥२७२॥

विहसि लखनु बोले मृदु वानी । अहो मुनीसु महा भटमानी ॥  
 पुनि पुनि मोहि देखवाव कुठारु । चहत उड़ावन फूँकि पहारु ॥  
 इहाँ कुम्हड़वतिया कोउ नाहीं । जे तरजनी देखि मरि जाहीं ॥  
 देखि कुठारु मरासन बाना । मैं कछु कहा सहित अभिमाना ॥  
 भृगुसुत समुझि जनेउ विलोकी । जो कछु कहहु सहउ रिम रोकी ॥  
 मुर महिसुर हरिजन अरु गाई । हमरें बुल इन्ह पर न सुराई ॥  
 वधें पापु अपकीरति हारें । मारतहूँ पा परिअ तुम्हारें ॥  
 कोटिकुलिस समवचनु तुम्हारा । व्यर्थ धरहु धनु वान कुठारा ॥

दो०—जो विलोकि अनुचित कहेउ छमहु महापुनि धीर ।

सुनि सरोप भृगुसंभमनि बोले गिरा गभीर ॥२७३॥

कौमिक सुनहु मंद यहु बालक । कुटिल कालवस निज कुल बालक  
 भानु वंस राकेस कलंक । निपट निरंकुम अघुध असंक ॥  
 काल कवलु होइहि छन माहीं । कहउं पुकारि खोरि मोहि नाहीं ॥  
 तुम्ह हटकहु जौं चहहु उवारा । कहि प्रतापु बलु रोपु हमारा ॥  
 लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा । तुम्हहि अछन को वरनै पारा ॥  
 अपने मुँह तुम्ह आपनि करनी । वार अनेक भाति बहु वरनी ॥  
 नहिं मंतोपु त पुनि कहु कहहु । जनि रिम रोकि दुमह दुख महहु ॥  
 वीरवती तुम्ह धीर अछांभा । गारी देत न पावहु मोभा ॥

दो०—सुर ममर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु ।

निद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु ॥२७४॥

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा । बार बार मोहि लागि बोलावा ॥  
 सुनत लखन के बचन कठोरा । परसु सुधारि धरेउ कर घोरा ॥  
 अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू । कटुबादी बालकु बधजोगू ॥  
 बाल विलोकि बहुत मैं बाँचा । अब यहु मरनिहार भा साँचा ॥  
 कौसिक कहा छसिअ अपराधू । बाल दोष गुन गनहिं न साधू ॥  
 खर कुठार मैं अकरुन कोही । आगें अपराधी गुरुद्रोही ॥  
 उतर देत छोड़ुँ बिनु मारें । केवल कौसिक सील तुम्हारें ॥  
 न त एहि काटि कुठार कठोरें । गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरें ॥

दो०—गाधिसूनु कह हृदयँ हँसि मुनिहि हरिअरइ सज्ज ।

अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ ॥२७५॥

कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा । को नहिं जान विदित संसारा ॥  
 माता पितहि उरिन भए नीकें । गुर रिनु रहा सोचु बड़ जीकें ॥  
 सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा । दिन चलि गए ब्याज बड़ बाढ़ा ॥  
 अब आनिअ व्यवहरिआ बोली । तुरत देउँ मैं थैली खोली ॥  
 सुनि कटु बचन कुठार सुधारा । हाय हाय सब सभा पुकारा ॥  
 भृगुवर परसु देखावहु मोही । बिप्र बिचारि बचउँ नृपद्रोही ॥  
 मिले न कवहुँ सुभट रन गाढ़े । द्विज देवता घरहि के बाढ़े ॥  
 अनुचित कहि सब लोग पुकारे । रघुपति सयनहिं लखनु नेवारे ॥

दो०—लखन उतर आहुति सरिस भृगुवर कोपु कृसानु ।

वदत देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु ॥२७६॥

नाथ करहु बालक पर छोहू । सूध दूधमुख करिअ न कोहू ॥  
 जौ पै प्रभु प्रभाउ कलु जाना । तौ कि वरावरि करत अयाना ॥

जाँ लरिका कछु अचगरि करहीं । गुर पितु मातु मोद मन भरहीं ॥  
 करिअ कृपा सिसु सेवक जानी । तुम्ह सम नील धीर मुनि ग्यानी ॥  
 राम वचन सुनि कछुक जुडाने । कहि कछु लखनु बहुरि मृसुकाने ॥  
 हँमत देखिनख सिखरिम व्यापी । राम तोर भ्राता बड़ पापी ॥  
 गौर सरीर स्याम मन माहीं । कालकूट मुख पयमुख नाहीं ॥  
 सहज टेढ़ अनुहरइ न तोही । नीचु मीचु सम देखन मोही ॥  
 दो०—लखन कहेउ हँमि सुनहु मुनि क्रोधु पाप कर मूल ।

जेहि बस जन अनुचित करहिं चरहिं त्रिस्व प्रतिकूल ॥ २७७ ॥

मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया । पग्गिहरि कौपु करिअ अवदाया ॥  
 टूट चाप नहिं जुरिहि रिसाने । वैठिअ होइहिं पाय पिराने ॥  
 जाँ अति प्रिय तौ करिअ उपाई । जोरिअ कौउ बड़ गुनी बोलार्ड ॥  
 बोलत लखनहिं जनकु डेरार्हीं । मए करहु अनुचित भल नाहीं ॥  
 धर धर कौपहिं पुर नर नारी । छोट बुमार खोट बड़ भारी ॥  
 भृगुपति सुनि सुनि निरभय वानी । रिस तन जरइ होइ बलहानी ॥  
 बोले रामहि देइ निहोरा । वचउँ त्रिचारि बंधु लघु तोरा ॥  
 मनु मलीन तनु सुंदर कैमें । त्रिप रम भरा कनक घटु जैमें ॥  
 दो०—सुनि लछिमन त्रिहसे बहुरि नयन तरेरे राम ।

गुर समीप गवने सकुचि परिहरि वानी वाम ॥ २७८ ॥

अति पिनीत मृदु सीतल वानी । बोले रामु जोगि जुग पानी ॥  
 सुनहु नाथ तुम्ह सहज सुजाना । बालक वचनु करिअ नहिं काना ॥  
 घरँ बालकु एकु सुभाऊ । इन्हहि न संत त्रिदूपहिं काऊ ॥  
 तेहिं नाहीं कछु काज बिगारा । अपराधी मैं नाथ तुम्हारा ॥



कृपा कोपु बधु बँधव गोसाईं । मो पर करिअ दास की नाई ॥  
 कहिअ बेगि जेहि विधि रिस जाई । मुनिनायक सोइ करौं उपाई ॥  
 कह मुनि राम जाइ रिस कैसें । अजहुँ अनुज तव चितव अनैसें ॥  
 एहि केँ कंठ कुठारु न दीन्हा । तौ सैं काह ेपु करि कीन्हा ॥  
 दो०—गर्भ स्रवहिँ अवनिप रवनि मुनि कुठार गति घोर ।

परसु अछत देखउँ जिअत बैरी भूपकिसोर ॥२७९॥

बहइ न हाथु दहइ रिस छाती । भा कुठारु कुंठित नृपघाती ॥  
 भयउ बाम विधि फिरेउ सुभाऊ । सोरे हृदयँ कृपा कसि काऊ ॥  
 आजु दया दुखु दुसह सहावा । मुनि सौमित्र विहसि सिरु नावा ॥  
 वाउ कृपा सूरति अनुकूला । बोलत वचन झरत जनु फूला ॥  
 जौं पै कृपाँ जरिहिँ मुनि गाता । क्रोध भएँ तनु राख विधाता ॥  
 देखु जनक हठि बालकु एहू । कीन्ह चहत जड़ जमपुर गेहू ॥  
 बेगि करहु किन आँखिन्ह ओटा । देखत छोट खोट नृप ढोटा ॥  
 विहसे लखनु कहा मन माहीं । सूदँ आँखि कतहुँ कोउ नाहीं ॥  
 दो०—परसुरासु तव राम प्रति बोले उर अति क्रोधु ।

संभु सरासनु तोरि सठ करसि हमार प्रबोधु ॥२८०॥

बंधु कहइ कटु संमत तोरें । तूछल विनय करसि कर जोरें ॥  
 करु परितोषु मोर संग्रामा । नाहिँ त छाड़ कहाउव रामा ॥  
 छलु तजि करहि समरु सिवद्रोही । बंधु सहित न त मारउँ तोही ॥  
 भृगुपति बकहिँ कुठार उठाएँ । मन मुसुकाहिँ राशु खिर नाएँ ॥  
 गुनह लखन कर हम पर रोषू । कतहुँ सुधाइहु ते बड़ दोषू ॥  
 टेढ़ जानि सब बंदइ काहू । बक्र चंद्रमहि ग्रसइ न राहू ॥

राम कहेउ रिस तजिअ गुनीसा। कर कुठारु आगें यह सीसा ॥  
जेहिं रिस जाइ करिअ सोइ स्वामी। मोहि जानिअ आपन अनुगामी ॥

दो०—प्रभुहि सेवकहि समरु कस तजहु विप्रवर रोसु।

वेषु विलोकें कहेसि कछु बालकहु नहिं दोसु ॥२८१॥

देखि कुठार धान धनु धारी। भैलरि कहि रिस वीरु विचारी ॥  
नामु जान पै तुम्हहि न चीन्हा। वंस सुभायँ उतरु तेहिं दीन्हा ॥

जाँ तुम्ह औतेहु मुनि की नाई। पदरज सिर सिसु धरत गोसाईं ॥

छमहु चूक अनजानत केरी। चहिअ विप्र उर कृपा घनेरी ॥

हमहि तुम्हहि सरिवरि कसि नाथा। कहहु न कहाँ चरन कहँ माथा ॥

राम मात्र लघु नाम हमारा। परसु सहित बड़ नाम तोहारा ॥

देव एकु गुनु धनुष हमारें। नव गुन परम पुनीत तुम्हारें ॥

सब प्रकार हम तुम्ह सन हारे। छमहु विप्र अपराध हमारे ॥

दो०—चार बार मुनि विप्रवर कहा राम सन राम।

बोले भृगुपति सरूप हसि तहूँ बंधु सम वाम ॥२८२॥

निपटहिं द्विज करि जानहि मोही। में जस विप्र सुनावउँ तोही ॥

चाप सुवा सर आहुति जानू। कोपु मोर अति घोर कृसानू ॥

सर्माधि सेन चतुरंग सुहाई। महा महीप भए परसु आई ॥

में एहि परसु काटि बलि दीन्हे। समर जग्य जप कोटिन्ह कीन्हे ॥

मोर प्रभाउ विदित नहिं तोरें। बोलसि निदरि विप्र ने भोरें ॥

भंजेउ चापु दापु बड़ वाढ़ा। अहमिति मनहुँ जीति जगु ठाढ़ा ॥

राम कहा मुनि कहहु विचारी। रिस अति बड़ि लघु चूक हमारी ॥

छुअतहिं टूट पिनाक पुराना। में केहि हेतु करौं अभिमाना ॥

दो०—जौं हम निदरहिं विप्र बदि सत्य सुनहु भृगुनाथ ।

तौ अस कां जग सुभट्ट जेहि भय वस नावहिं माथ ॥२८३॥

देव दनुज भूपति भट नाना । समबल अधिक होउ बलवाना ॥

जौं रन हमहि पचारै कोऊ । लरहिं सुखेन कालु किन होऊ ॥

छत्रिय तनु धरि समर सकाना । कुल कलंकु तेहि पावँर आना ॥

कहउँ सुभाउ न कुलहि प्रसंसी । कालहु डरहिं न रन रघुवंसी ॥

विप्रवंस कै असि प्रभुताई । अभय होइ जो तुम्हहि डेराई ॥

सुनि मृदु गूढ़ वचन रघुपति के । उधरे पटल परसुधर मति के ॥

राम रमापति कर धनु लेहू । खैंचहु मिटै मोर संदेहू ॥

देत चापु आपुहिं चलि गयऊ । परसुराम मन विसमय भयऊ ॥

दो०—जाना राम प्रभाउ तव पुलक प्रफुल्लित गात ।

जोरि पानि बोले वचन हृदयँ न प्रेमु अमात ॥२८४॥

जय रघुवंस वनज वन भानू । गहन दनुज कुल दहन कृसानू ॥

जय सुर विप्र धेनु हितकारी । जय मद मोह कोह भ्रम हारी ॥

विनय सील करुना गुन सागर । जयति वचन रचना अति नागर ॥

सेवक सुखद सुभग सब अंगा । जय सरीर छवि कोटि अनंगा ॥

करोँ काह मुख एक प्रसंसा । जय महेस मन मानस हंसा ॥

अनुचित बहुत कहेउँ अग्याता । छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता ॥

कहि जय जय जय रघुकुलकेतू । भृगुपति गए वनहि तय हेतू ॥

अपभयँ कुटिल महोय डेराने । जहँ तहँ कायर गवँहिं पराने ॥

दो०—देवन्ह दीन्हीं दुंदुभीं प्रभु पर वरपहिं फूल ।

हरषे पुर नर नारि सब मिटी मोहमय खूल ॥२८५॥

अति गहगहे धाजने धाजे । सवहिं मनोहर मंगल साजे ॥  
 जूथ जूथ मिलि सुमुखि सुनयनीं । करहिं गान कल कोकिल वयनीं ॥  
 सुसु विदेह कर वरनि न जाई । जन्मदरिद्र मनहुँ निधि पाई ॥  
 विगत श्रास भइ सीय सुखारी । जनु विधु उदयँ चकोरकुमारी ॥  
 जनक कीन्ह कौंसिकहि प्रनामा । प्रभु प्रसाद धनु भंजेउ रामा ॥  
 मोहि कृतकृत्य कीन्ह दुहुँ भाई । अब जो उचित सो कहिअ गोसाईं  
 कह मुनि मुनु नरनाथ प्रवीना । रहा विवाहु चाप आधीना ॥  
 दूटतही धनु भयउ विवाह । सुरनर नाग विदित सब काह ॥

दो०—तदपि जाइ तुम्ह करहु अब जथा वंस व्यवहार ।

शुद्धि विप्र कुलशुद्ध गुर वेद विदित आचारु ॥२८६॥

दूत अवधपुर पठवहु जाई । आनहिं नृप दसरथहि बोलाई ॥  
 श्रुदित राउ कहि भलेहि कृपाला । पठए दूत बोलि तेहि काला ॥  
 चहुँरि महाजन सकल बोलाए । आइ सबन्हिं सादर सिर नाए ॥  
 हाट चाट मंदिर सुरवासा । नगरु सँवारहु चारिहुँ पासा ॥  
 हरपि चले निज निज गृह आए । पुनि परिचारक बोलि पठाए ॥  
 रचहु विचित्र वितान बनाई । सिर धरि वचन चले सबु पाई ॥  
 पठए बोलि गुनी तिन्ह नाना । जे वितान विधि कुसल सुजाना ॥  
 विधिहि बंदि तिन्ह कीन्ह अरंभा । विरचे कनक कदलि के खंभा ॥

दो०—हरित मनिन्ह के पत्र फल पदुमराग के फूल ।

रचना देखि विचित्र अति मनु विरंचि कर भूल ॥२८७॥

बेनु हरित मनिमय सब कीन्हे । सरल सपरव परहिं नहिं चीन्हे ॥  
 कनक कलित अहिवेलि बनाई । लखि नहिं परइ सपरन सुहाई ॥

तेहि के रचि पचि बंध बनाए । विच विच मुकुता दाम हाए ॥  
 मानिक मरकत कुलिस परोजा । चीरि कोरि पचि रचे सरोजा ॥  
 किए भृंग बहुरंग विहंगा । गुंजहिं कूजहिं पवन प्रसंगा ॥  
 सुर प्रतिमा खंभन गढ़ि ढीं । मंगल द्रव्य लिएँ सब ठाढ़ीं ॥  
 चौकें भाँति अनेक पुराईं । सिंधुर मनिमय सहज आईं ॥

दो०—सौरभ पल्लव सुभग सुठि किए नीलमनि कोरि ।

हेम बौर मरकत धवरि लसत पाटमय डोरि ॥२८८॥

रचे रुचिर वर बंदनिवारे । मनहुँ मनोभयँ फंद सँवारे ॥  
 मंगल कलस अनेक बनाए । ध्वज पताक पट चमर सुहाए ॥  
 दीप मनोहर मनिमय नाना । जाइ न वरनि विचित्र विताना ॥  
 जेहिं मंडप दुलहिनि वैदेही । वरनै असि मति कवि केही ॥  
 दूल्हु रामु रूप गुन सागर । सो वितानु तिहुँ ले उजागर ॥  
 जनक भवन कै सोभा जैसी । गृह गृह प्रति पुर देखिअ तैसी ॥  
 जेहिं तेरहुति तेहि समय निहारी । तेहि लघु लगहिं बन दस चारी ॥  
 जो संपदा नीच गृह सोहा । सां विलोकि सुरनायक मोहा ॥

दो०—वसइ नगर जेहिं लच्छि करि कपट नारि वर वेपु ।

तेहि पुर कै सोभा कहत सकुचहिं सारद सेपु ॥२८९॥

पहुँचे दूत राम पुर पावन । हरषे नगर विलोकि सुहावन ॥  
 भूप द्वार तिन्ह खवरि जनाई । दसरथ नृप सुनि लिए बोलाई ॥  
 करि प्रनामु तिन्ह पाती दीन्ही । मुदित महीप आपु उठि लीन्ही ॥  
 वारि विलोचन वाँचत पाती । पुलक गात आई भरि छाती ॥  
 रामु लखनु उर कर वर चीठी । रहि गए कहत न खाटी मीठी ॥

पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची । हरयो सभा बात सुनि साँची ॥  
 खेलत रहे तहाँ सुधि पाई । आए भरतु सहित हित भाई ॥  
 पूछत अति सनेहँ सकुचाई । तात कहाँ तें पाती आई ॥  
 दो०—कुमल प्रानप्रिय बंधु दोउ अहहिं कहहु केहिं देस ।

सुनि सनेह साने बचन बाची बहुरि नरेस ॥२९०॥

सुनि पाती पुलकें दोउ भ्राता । अधिक सनेहु समात न गाता ॥  
 प्रीति पुनीत भरत कै देखी । सकल सभों सुखु लहेउ विसेपी ॥  
 तव नृप दूत निकट वैठारे । मधुर मनोहर बचन उचारे ॥  
 भैया कहहु कुसल दोउ वारे । तुम्ह नीकें निज नयन निहारे ॥  
 स्वामल गौर धरें धनु भाथा । बय किसोर कौमिक मुनि साथा ॥  
 पहिचानहु तुम्ह कहहु सुभाऊ । प्रेम बिसस पुनि पुनि कह राऊ ॥  
 जा दिन तें मुनि गए लप्राई । तव तें आजु साँचि सुधि पाई ॥  
 कहहु विदेह कवन विधि जाने । सुनि प्रिय बचन दूत मुसुकाने ॥

दो०—सुनहु महीपति मुकुट मनि तुम्ह सम धन्य न कोउ ।

रामु लखनु जिन्ह के तनय त्रिख विभूषन दोउ ॥२९१॥

पूछन जोगु न तनय तुम्हारे । पुरुषसिंघ तिहु पुर उजिआरे ॥  
 जिन्ह के जस प्रताप के आगे । ममि मलीन रवि सीतल लागे ॥  
 तिन्ह कहै कहिअ नाथ किमि चीन्हो देखिअ रवि कि दीप कर लीन्हे ॥  
 सीय स्वयंवर भूप अनेका । समिटे सुभट एक तें एका ॥  
 संभु मरामनु काहुँ न टारा । हारे मकल धीर बरियारा ॥  
 तीनि लोक महँ जे भटमानी । सभ के सकति संभु धनु भानी ॥  
 सकइ उठाइ सरासुर मेरु । सोउ हियँ हारि गयउ करि फेरु ॥

जेहिं कौतुक सिव सैलु उठावा । सोउ तेहि सभाँ पराभउ पावा ॥

दो०—तहाँ राम रघुवंस मनि सुनिअ महा महिपाल ।

भंजेउ चाप प्रयास बिनु जिमि गज पंरुज नाल ॥२९२॥

सुनि सरोष भृगुनायकु आए । बहुत भाँति तिन्ह आँखि देख्वाए ॥  
 देखि राम बलु निज धनु दीन्हा । करि बहु बिनय गवनु बन कीन्हा  
 राजन रामु अतुलबल जैसैं । तेज निधान लखनु पुनि तैसैं ॥  
 कंपहिं भूप विलोकत जाकैं । जिमि गज हरि किसोर के ताकैं ॥  
 देव देखि तव बालक दोऊ । अब न आँखि तर आवत कोऊ ॥  
 दूत बचन रचना प्रिय लागी । अताप वीर रस पागी ॥  
 सभा समेत राउ अनुरागे । दूतन्ह देन निछावरि लागे ॥  
 कहि अनीति ते मूदहिं काना । धरमु बिचारि सबहिं सुखु माना ॥

दो०—तब उठि भूप वसिष्ट कहूँ दीन्हि पत्रिका जाइ ।

कथा नाई गुरहि सब सादर दूत बोलाइ ॥२९३॥

सुनि बोले गुर अति सुखु पाई । पुन्य पुरुष कहूँ महि सुख छाई ॥  
 जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं । जद्यपि ताहि मना नाहीं ॥  
 तिमि सुख संपति बिनहिं बोलाएँ । धरमसील पहिं जाहिं सुभाएँ ॥  
 तुम्ह गुर विप्र धेनु सुर सेवी । तसि पुनीत कौसल्या देवी ॥  
 सुकृती तुम्ह समान जग माहीं । भयउ न है कोउ होनेउ नाहीं ॥  
 तुम्ह ते अधिक पुन्य बड़ काकैं । राजन राम सरिस सुत जाकैं ॥  
 वीर विनीत धरम व्रत धारी । गुन सागर वर बालक चारी ॥  
 तुम्ह कहूँ सर्व काल कल्याना । सजहु वरात वजाइ निसाना ॥

दो०—चलहु वेगिसुनि गुर बचन भलेहिं नाथ सिरु नाइ ।

भूपति गवने भवन तव दूतन्ह वासु देवाइ ॥२९४॥

राजा सद्यु रनिवास बोलाई । जनक पत्रिका वाचि सुनाई ॥  
 सुनि संदेशु सकल हरपानी । अपर कथा सब भूप वखानी ॥  
 प्रेम प्रफुल्लित राजहिं रानी । मनहुं सिखिनि सुनि धारिद घानी  
 हृदित असीस देहिं गुर नारी । अति आनंद मगन महतारी ॥  
 लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती । हृदयँ लगाइ जुड़ावहिं छाती ॥  
 राम लखन कै क्षीरति करनी । धारहिं वार भूपवर वरनी ॥  
 सुनि प्रसादु कहि द्वार सिधाए । रानिन्ह तव महिदेव बोलाए ॥  
 दिए दान आनंद समेता । चले विप्रवर आसिप देता ॥

सो०—जाचक लिए हँकारि दीन्हि निछावरि कोटि विधि ।

चिरु जीयहुं सुत चारि चक्रवर्ति दसरत्थ के ॥२९५॥

कहत चले पहिरें पट नाना । हरपि हने गहगहे निसाना ॥  
 समाचार सब लोगन्ह पाए । लागे घर घर होन वधाए ॥  
 भुवन चारि दस भरा उछाहू । जनकसुता रघुवीर विआहू ॥  
 सुनि सुभ कथा लोग अनुरागे । मग गृह गर्ली सँवारन लागे ॥  
 जद्यपि अवध सदैव सुहायनि । राम पुरी मंगलमय पावनि ॥  
 तदपि प्रीति कै प्रीति सुहाई । मंगल रचना रची बनाई ॥  
 घज पताक पट चामर चारु । छावा परम विचित्र वजारु ॥  
 कनक कलस तोरन मनि जाला । हरद दूब दधि अच्छत माला ॥

दो०—मंगलमय निज निज भवन लोगन्ह रचे बनाइ ।

वीधीं सींचीं चतुरसम चौकें चारु पुराइ ॥२९६॥



जहँ तहँ जूथ जूथ मिलि भाभिनि । सजि नव सप्त सकल दुति दामिनि  
 विधुवदनीं मृग सावक लोचनि । निज सरूप रति मानु विमोचनि ॥  
 गावहिं मंगल मंजुल बानीं । सुनि कलरव कलकांठिलजानीं ॥  
 भूप भवन किमि जाइ वाना । वि विमोहन रचेउ विताना ॥  
 मंगल द्रव्य मनोहर नाना । राजत बाजत विपुल निसाना ॥  
 कतहुँ विरिद बंदी उच्चरहीं । हुँ वेद धुनि भूसुर करहीं ॥  
 गावहिं सुंदरि मंगल गी । लँ लँ नामु रामु अरु सीता ॥  
 बहुत उछाहु भवनु अतिथोरा । नहुँ उमगि चला चहु ओरा ॥

दो०—सोभा दसरथ भवन कइ को कवि बरनै पार ।

जहाँ सकल सुर सीस मनि राम लीन्ह अवतार ॥२९७॥

भूप भरत पुनि लिए बोलाई । हयंगय स्यंदन साजहु जाई ॥  
 चलहु वेगि रघुवीर वराता । सुनत पुलक पूरे दोड आता ॥  
 भरत सकल साहनी बोलाए । आयसुदीन्ह मुदित उठि धाए ॥  
 रचिरुचि जीन तुरग तिन्ह साजे । वरन वरन बर बाजि विराजे ॥  
 सुभग सकल सुठि चंचल करनी । अय इव जरत धरत धरनी ॥  
 नाना जाति न जाहिं बखाने । निदरि पवनु जनु चहत उड़ाने ॥  
 तिन्ह सब छयल भए असवारा । भरत सरिस वय राजकुमारा ॥  
 सब सुंदर सब भूपनधारी । कर सर चाप तून कटि धारी ॥

दो०—छरे छवीले छयल सब सूर सुजान नवीन ।

जुग पदचर असवार प्रति जे असिकला प्रवीन ॥२९८॥

वाँधें विरद वीर रन गाढ़े । निकसि भए पुर बाहेर ठाढ़े ॥  
 फेरहिं चतुर तुरग गति नाना । हरपहिं सुनि सुनि पनव निसाना ॥

रथ सारथिन्ह विचित्र बनाए । ध्वज पताक मनि भूपन लाए ॥  
 चवैर चारु किंकिनि धुनि करहीं । भानु जान सोभा अपहरहीं ॥  
 सावँकरन अगनित हय होते । ते तिन्ह रथन्ह सारथिन्ह जोते ॥  
 सुंदर सकल अलंकृत सोहे । जिन्हहि विलोकत मुनि मन मोहे  
 जे जल चलहि थलहि की नाई । टाप न बूढ़ वेग अधिकाई ॥  
 अछ सत्त सयु साजु बनाई । रथी सारथिन्ह लिए बोलाई ॥

दो०—चढ़ि चढ़ि रथ बाहेर नगर लागी जुरन वरात ।

होत सगुन सुंदर सवहि जो जेहि कारज जात ॥२९९॥

कलित करिवरन्हि परीं अँवारीं । कहिन जाहिं जेहि भाँति सँवारीं  
 चले मत्त गज घंट विराजी । मनहुँ सुभग सावन घन राजी ॥  
 बाहन अपर अनेक विधाना । सिविका सुभग सुखासन जाना ॥  
 तिन्ह चढ़ि चले विप्रवर वृंदा । जनु तनु धरें सकल श्रुति छंदा ॥  
 मागध सूत बंदि गुनगायक । चले जान चढ़ि जो जेहि लायक ॥  
 बेसर ऊँट वृषभ बहु जाती । चले वस्तु भरि अगनित भाँती ॥  
 कोटिन्ह काँवरि चले कहारा । विविध वस्तु को वरनै पारा ॥  
 चले सकल सेवक समुदाई । निज निज साजु समाजु बनाई ॥

दो०—सब कें उर निर्भर हरषु पूरित पुलक सरीर ।

कवहिं देखिबे नयन भरि रामु लखनु दोउ वीर ॥३००॥

गरजहिं गज घंटा घुनि घोरा । रथ रव वाजि हिंस चहु ओरा ॥  
 निदरि घनहि घुर्मरहिं निसाना । निज पराइ कलु सुनिअ न काना ॥  
 महा भीर भूपति के द्वारें । रज होइ जाइ यपान पवारें ॥  
 चढ़ी अटारिन्ह देखिं नारीं । लिएँ आरती मंगल थारीं ॥

गावहिं गीत मनोहर नाला । अति आनंदु न जाइ बखाना ॥  
 तब सुमंत्र दुइ स्यंदन साजी । जोते रवि हय निंदक बाजी ॥  
 दोउ रथ रुचिर भूप पहिं आने । नहिं सारद पहिं जाहिं बखाने ॥  
 राज समाजु एक रथ साजा । दूसर तेज पुंज अति भ्राजा ॥  
 दो०—तेहिं रथ रुचिर बसिष्ठ कहूँ हराषि चढ़ाइ नरेसु ।

आपु चढ़ेउ स्यंदन सुमिरि हर गुर गौरिं गनेसु ॥३०१॥

सहित बसिष्ठ सोह नृप ॥ सुर गुर संग पुरंदर जैसे ॥  
 करि डुल रीति वेद विधि राज । देखि सबहि सब भाँति बनाऊ ॥  
 सुमिरि रामु गुर आयसु पाई । चले महीपति संख बजाई ॥  
 हरषे विबुध बिलोकि बराता । बरपहिं सुमन सुमंगल दाता ॥  
 भयउ कोलाहल हय गय गाजे । ब्योम बरात बाजने बाजे ॥  
 सुर नर नारि सुमंगल गाई । सरस राग बाजहिं सहनाई ॥  
 घंट घंटी धुनि बरनि न जाहीं । सरव करहिं पाइक फहराहीं ॥  
 करहिं विदूषक कौतुक नाना । हास कुसल कल गान सुजाना ॥  
 दो०—तुरग नचावहिं कुअँर बर अकनि मृदंग निसान ।

नागर नट चितवहिं चकित डगहिं न ताल बँधान ॥३०२॥

बनइ न बरनत बनी बराता । होहिं सगुन सुंदर सुभदाता ॥  
 चारा चापु वाम दिसि लेई । मनहुँ सकल मंगल कहि देई ॥  
 दाहिन काग सुखेत सुहावा । नकुल दरसु सब काहुँ पावा ॥  
 साजुकूल वह त्रिविध बयारी । सघट सवाल आव बर नारी ॥  
 लोवा फिरि फिरि दरसु देखावा । सुरभी सनमुख सिंसुहि पिआवा ॥  
 मृगमाला फिरि दाहिनि आई । मंगल गन जनु दीन्हि देखाई ॥

छेमकरी कह छेम विसेपी । स्वामा चाम सुतरु पर देखी ॥  
सनमुख आयउ दधि अरु मीना । कर पुस्तक दुइ विप्र प्रवीना ॥

दो०—मंगलमय कल्याणमय अभिमत फल दातार ।

जनु सब साचे होन हित भए सगुन एक बार ॥३०३॥

मंगल सगुन सुगम सब ताकें । सगुन ब्रह्म सुंदर सुत जाकें ॥  
राम सरिस बरु दुलहिनि सीता । समधी दसरथु जनकु पुनीता ॥  
सुनि अस ब्याहु सगुन सब नाचे । अब कीन्है विरंचि हम साँचे ॥  
एहि विधि कीन्है वरात पयाना । हय गय गाजहिं हने निसाना ॥  
आवत जानि भानुकुल केतू । सरितन्हि जनक बँधाए सेतू ॥  
घोच घोच वर वास बनाए । सुरपुर सरिस संपदा छाए ॥  
असन सयन वर बसन सुहाए । पावहिं सब निज निज मन भाए ॥  
नित नूतन सुख लखि अनुकूले । सकल वरातिन्ह मंदिर भूले ॥

दो०—आवत जानि वरात वर सुनि गहगह निसान ।

सजि गज रथ पदचर तुरग लेन चले अगवान ॥३०४॥

मासपारायण, दसवाँ विश्राम

कनक कलस भरि कोपर थारा । भाजन ललित अनेक प्रकारा ॥  
भरे सुधासम सब पकवाने । नाना भाँति न जाहिं वखाने ॥  
फल अनेक वर बस्तु सुहाई । हरषि भेंट हित भूप पठाई ॥  
भूषन बसन महामनि नाना । खगमृगहय गय बहुविधि जाना ॥  
मंगल सगुन सुगंध सुहाए । बहुत भाँति माँहिपाल पठाए ॥  
दधि चिउरा उपहार अपारा । भरि भरि काँवरि चले कहारा ॥

अगवानन्ह जव दीखि वराता । उर आनंदु पुलक भर गाता ॥  
देखि वनाव सहित अगवाना । मुदित वरातिन्ह हने निसाना ॥

दो०—हरपि परसपर मिलन हित कछुक चले बगमेल ।

जनु आनंद समुद्र दुइ मिलत विहाइ सुबेल ॥३०५॥

वरपि सुमन सुर सुंदरि गावहिं । मुदित देव दुंदुभीं बजावहिं ॥  
वस्तु सकल राखीं नृप आगें । विनय कीन्हि तिन्ह अति अनुरागें  
प्रेम समेत रायँ सबु लीन्हा । भै बकसीस जाचकन्हि दीन्हा ॥  
करि पूजा मान्यता बड़ाई । जनवासे कहूँ चले लवाई ॥  
बसन विचित्र पाँवड़े परहीं । देखि धनदु धन महु परिहरहीं ॥  
अति सुंदर दीन्हेउ जनवासा । जहँ सब कहूँ सब भाँति सुपासा ॥  
जानी सियँ वरात पुर आई । कछु निज महिमा प्रगटि जनार्ई ॥  
हृदयँ सुमिरि सब सिद्धि वोलाई । भूप पहुनई करन पठाई ॥

दो०—सिधि सब सिय आयसु अकनि गई जहाँ जनवास ।

लिँ संपदा सकल सुख सुरपुर भोग विलास ॥३०६॥

निज निज वास विलोकि वराती । सुर सुख सकल सुलभ सब भाँती  
विभव भेद कछु कोउ न जाना । सकल जनक कर करहिं बखाना ॥  
सिय महिमा रघुनायक जानी । हरषे हृदयँ हेतु पहिचानी ॥  
पितु आगमनु सुनत दोउ भाई । हृदयँ न अति आनंदु अमाई ॥  
सकुचन्ह कहि न सकत गुरु पाहीं । पितु दरसन लालचु मन माहीं ॥  
विस्वामित्र विनय बड़ि देखी । उपजा उर संतोषु विसेपी ॥  
हरपि बंधु दोउ हृदयँ लगाए । पुलक अंग अंवक जल छाए ॥  
चले जहाँ दसरथु जनवासे । मनहुँ सरोवर तकेउ पिआसे ॥

दो०—भूप विलोके जवहिं मुनि आवत सुतन्ह समेत ।

उठे हरपि सुखासिंधु महुँ चले थाह सी लेत ॥३०७॥

मुनिहि दंडवत कीन्ह महीसा । बार बार पद रज धरि सीसा ॥

कौंसिक राउ लिए उर लाई । कहि असीस पूछी कुसलाई ॥

पुनि दंडवत करत दोउ भाई । देखि नृपति उर सुखु न समाई ॥

सुत हियँ लाइ दुसह दुख मेटे । मृतक सरीर प्राण जनु भेंटे ॥

पुनि वसिष्ठ पद सिर तिन्ह नाए । प्रेम मुदित मुनिवर उर लाए ॥

विप्र बृंद वंदे दुहुँ भाई । मनभावती असीसें पाई ॥

भरत सहानुज कीन्ह प्रनामा । लिए उठाइ लाइ उर रामा ॥

हरपे लखन देखि दोउ भ्राता । मिले प्रेम परिपूरित गाता ॥

दो०—पुरजन परिजन जातिजन जाचक मंत्री मीत ।

मिले जथाविधि सवहि प्रभु परम कृपाल विनीत ॥३०८॥

रामहि देखि वरात जुड़ानी । प्रीति किरीतिन जातिवखानी ॥

नृप समीप सोहहि सुत चारी । जनु धन धरमादिक तनुधारी ॥

सुतन्ह समेत दसरथहि देखी । मुदित नगर नर नारि बिसेपी ॥

सुमन चरिसि सुरहनहि निसाना । नाकनटीं नाचहिं करि गाना ॥

सतानंद अरु विप्र सचिव गन । भागध छत बिदुप बंदीजन ॥

सहित वरात राउ सनमाना । आयसु मागि फिरे अगवाना ॥

प्रथम वरात लगन तें आई । तातें पुर प्रमोदु अधिकाई ॥

ब्रह्मानंदु लोग सब लहहीं । बड़हुँ दिवस निसि विधिसन कहहीं ॥

दो०—रामु सीय सोभा अवधि सुकृत अवधि दोउ राज ।

जहँ तहँ पुरजन कहहिं अस मिलि नर नारि समाज ॥३०९॥

जनक सुकृत सूरति वैदेही । दसरथ सुकृत रामु धरें देही ॥  
 इन्ह सम काहुँ न सिव अवराधे । काहुँ न इन्ह समान फल लाधे ॥  
 इन्ह समकोउ न भयउ जग माहीं । है नहिं कतहुँ होनेउ नाहीं ॥  
 हम सब सकल सुकृत कै रासी । भए जग जनमि जनकपुर वासी ॥  
 जिन्ह जानकी राम छवि देखी । को सुकृती हम सरिस बिसेपी ॥  
 पुनि देखव रघुवीर विआहू । लेव भली विधि लोचन लाहू ॥  
 कहहिं परसपर कोकिलबयनीं । एहि विआहूँ बड़ लाभु सुनयनीं ॥  
 वडें भाग विधि वात बनाई । नयन अतिथि होइहहिं दोउ भाई ॥

दो०—बारहिं बार सनेह बस जनक बोलाउव सीय ।

लेन आइहहिं बंधु दोउ कोटि काम कमनीय ॥३१०॥

विविध भाँति होइहि पहुनाई । प्रिय न काहि अस सासुर माई ॥  
 तब तब राम लखनहि निहारी । होइहहिं सब पुर लोग सुखारी ॥  
 मखि जस राय लखन कर जोटा । तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा ॥  
 स्याम गौर सब अंग सुहाए । ते सब कहहिं देखि जे आए ॥  
 कहा एक यें आजु निहारे । जनु विरंचि निज हाथ सँवारे ॥  
 भरतु रामही की अनुहारी । सहसा लखि न सकहिं नर नारी ॥  
 लखनु सञ्जुसदनु एकरूपा । नख सिख ते सब अंग अनूपा ॥  
 मन भावहिं मुखवरनि न जाहीं । उपमा कहुँ त्रिभुवन कोउ नाहीं ॥

छं०—उपमा न कोउ कह दाम तुलसी कतहुँ कवि कोविद कहें ।

बल चिनय विद्या सील सोभा सिंधु इन्ह से एइ अहें ॥  
 पुर नारि सकल पसारि अंचल विधिहि वचन सुनावहीं ।  
 व्याहिअहुँ चारिउ भाइ एहिं पुर हम सुमंगल गावहीं ॥

सो०—कहहिं परस्पर नारि बारि विलोचन पुलक तन ।

सखि सखु करब पुरारि पुन्य पयोनिधि भूपदोउ ॥३११॥

एहि बिधि सकल मनोरथ करहीं । आनंद उमगि उमगि रर भरहीं  
जे नृप सीय स्वयंवर आए । देखि बंधु सब तिन्ह सुख पाए ॥  
कहत राम जसु विसद विसाला । निज निज भवन गए महिपाला ॥  
गए वीति कछु दिन एहि भाँती । प्रमुदित पुरजन सकल बराती ॥  
मंगल मूल लगन दिनु आवा । हिमरितु अगहनु मासु सुहावा ॥  
ग्रह तिधि नखतु जोगु वर बारु । लगन सोधि विधि कीन्ह विचारु ॥  
पठै दीन्हि नारद सन सोई । गनी जनक के गनकन्ह जोई ॥  
सुनी सकल लोगन्ह यह वाता । कहहिं जोतिपी आहिं विधाता ॥

दो०—घेनुधूरि बेला विमल सकल सुमंगल मूल ।

विप्रन्ह कहेउ विदेह सन जानि सगुन अतुकूल ॥३१२॥

उपरोहितहि कहेउ नरनाहा । अब विलंब कर कारनु काहा ॥  
सतानंद तब सचिव बोलाए । मंगल सकल साजि सब ल्याए ॥  
संख निसान पनव बहु घाजे । मंगल कलस सगुन सुभ साजे ॥  
सुभग सुआसिनि गावहिं गीता । करहिं वेद घुनि विप्र पुनीता ॥  
लेन चले सादर एहि भाँती । गए जहाँ जनवास बराती ॥  
फौसलपति कर देखि समाजू । अति लघु लाग तिन्हहि सुरराजू ॥  
भयठ समउ अब धारिअ पाऊ । यह सुनि परा निसानहिं घाऊ ॥  
गुरहि पूछि करि कुल विधिराजा । चले संग मुनि साधु समाजा ॥

दो०—भाग्य विभव अवधेस कर देखि देव ब्रह्मादि ।

लगे सराहन सहस मुख जानि जनम निज बादि ॥३१३॥



सुरन्ह सुमंगल अवसरु जाना । बरषहिं सुमन बजाइ निसाना ॥  
 सिव ब्रह्मादिक विबुध बरुथा । चढे विमानन्हि नाना जूथा ॥  
 प्रेम पुलक तन हृदयँ उछाहू । चले बि कन राम बिआहू ॥  
 देखि जनकपुरु सुर अनुरागे । निज निज लोक सबहिं लघु लागे ॥  
 चितवहिं चकित विचित्र बिताना । रचना सकल अलौकिक नाना ॥  
 नगर नारि नर रूप निधाना । सुघर सुधरम सुसील सुजाना ॥  
 तिन्हहि देखि सब सुर सुरनारीं । भए नखत जनु बिधु उजिआरीं ॥  
 विधिहि भयउ आचरजु बिसेषी । निज करनी क हुँन देखी ॥  
 दो०—सिवँ समुझाए देव सब जनि आचरज भुलाहु ।

हृदयँ विचारहु धीर धरि सिय रघुवीर बिआहु ॥३१४॥

जिन्ह कर नामु लेत जग माहीं । सकल अमंगल मूल नसाहीं ॥  
 करतल होहिं पदारथ चारी । तैइ सिय रामु कहेउ कामारी ॥  
 एहि विधि संभु सुरन्ह समुझावा । पुनि आगे वर बसह चलावा ॥  
 देवन्ह देखे दसरथु जाता । महामोद मन पुलकित गाता ॥  
 साधु समाज संग महिदेवा । जनु तनु धरें करहिं सुख सेवा ॥  
 सोहत साथ सुभग सुत चारी । जनु अपवरग सकल तनुधारी ॥  
 मरकत कनक वरन वर जोरी । देखि सुरन्ह भै प्रीति न थोरी ॥  
 पुनि रामहि बिलोकि हियँ हरषे । नृपहि संराहि सुमन तिन्ह वरषे ॥  
 दो०—राम रूपु नख सिख सुभग वारहिं वार निहारि ।

पुलक गात लोचन सजल उमा समेत पुरारि ॥३१५॥

केकि कंठ दुति स्यामल अंगा । तड़ित विनिंदक बसन सुरंगा ॥  
 व्याह विभूपन विविध बनाए । मंगल सब सब भाँति सुहाए ॥

सरद विमल विधु वदनु सुहावन । नयन नयल राजीव लजापन ॥  
 सकल अलौकिक सुंदरताई । कहि न जाइ मनहीं मन भाई ॥  
 बंधु मनोहर सोहहि मंगा । जात नचाप्रत चपल तुरंगा ॥  
 राजकुअर वर वाजि देखाप्रहिं । बंस प्रसंसक निरिद सुनाप्रहिं ॥  
 जेहि तुरंग पर रामु विराजे । गतिनिलोकि खगनायकु लाजे ॥  
 कहि न जाइ सब भौंति सुहावा । वाजि वेपु जनु काम बनावा ॥

छं०—जनु वाजि वेपु बनाइ मनमिजु राम हित अति सोहई ।  
 आपनें वय बल रूप गुन गति सकल भुवन विमोहई ॥  
 जगमगत जीनु जराव जोति सुमोति मनि मानिक लगे ।  
 किंकिनि ललाम लगायु ललित निलोकि सुर नर मुनि ठगे ॥

दो०—प्रभु मनसहिं लयलीन मनु चलत वाजि छवि पाव ।

भूपित उडगन तडित धनु जनु वर वरहि नचाव ॥३१६॥

जेहि वर वाजि रामु असवारा । तेहि सारदउ न बरनै पारा ॥  
 संकरु राम रूप अनुरागे । नयनपंचदस अति प्रिय लागे ॥  
 हरि हित सहित रामु जत्र जोहे । रमा समेत रमापति मोहे ॥  
 निरखि राम छवि निधि हरपाने । आठइ नयन जानि पछिताने ॥  
 सुर सेनप उर बहुत उडाहू । निधि ते डेवद लोचन लाहू ॥  
 रामहि चितव सुरेस सुजाना । गौतम श्रापु परम हित माना ॥  
 देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं । आजु पुरंदर सम कोउ नाहीं ॥  
 मुदित देवगन रामहि देखी । नृपसमाज दुहुँ हरपु विसेपी ॥

छं०—अति हरपु राजसमाज दुहुँ दिसि दुंदुभीं वाजहिं धनी ।

वरपहिं सुमन सुर हरपि कहि जय जयति जय रघुकुलमनी ॥

एहि भाँति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं ।  
रानी सुआसिनि बोलि परिछनि हेतु मंगल साजहीं ॥

दो०—सजि आरती अनेक विधि मंगल सकल सँवारि ।

चलीं मुदित परिछनि करन गजगामिनि बर नारि ॥३१७॥

विधुवदनीं सब सब मृगलोचनि । सब निज तन छत्रिरति महु सोचनि  
पहिरें बरन बरन बर चीरा । सकल विभूषन सजें सरीरा ॥  
सकल सुमंगल अंग बनाएँ । करहिं गान कलकंठि लजाएँ ॥  
कंकन किंकिनि नूपुर बाजहिं । चालि बिलोकि काम राज लाजहिं  
बाजहिं बाजने विविध प्रकारा । नभ अरु नगर सुमंगलचारा ॥  
सची सारदा रमा भवानी । जे सुरतिय सुचि सहज सयानी ॥  
कपट नारि बर वेष बनाई । मिलीं सकल रनिवासहिं जाई ॥  
करहिं गान कल मंगल बानीं । हरष त्रिवस सब काहुँ न जानीं ॥

छं०—को जान केहि आनंद बरु सब ब्रह्म वर परिछन चली ।  
कल गान मधुर निसान बरपहिं सुमन सुर सोभा भली ॥  
आनंदकंदु बिलोकि दूलहु सकल हियँ हरषित भई ।  
अंभोज अंबक अंबु उमगि सुअंग पुलकावलि छई ॥

दो०—जो सुखु भा सिय मातु मन देखि राम वर वेषु ।

सो न सकहिं कहि कलय सत सहस सारदा खेष्टु ॥३१८॥

नयन नीरु हटि मंगल जानी । परिछनि करहिं मुदित मन रानी ॥  
वेद विहित अरु कुल आचारु । कीन्ह भली विधि सब व्यवहारु ॥  
पंच सनद धुनि मंगल गाना । पट पाँवड़े परहिं विधि नाना ॥  
करि आरती अरघु तिन्ह दीन्हा । राम गमनु संडप तव कीन्हा ॥

दसरथु सहित समाज विराजे । विभव त्रिलोकि लोकपति लाजे ॥  
समयँ समयँ सुर वरपहिं फूला । सांति पदहिं महिसुर अचुकूला ॥  
नभ अरु नगर कोलाहल होई । आपनि पर कछु सुनइ न कोई ॥  
एहि विधि रामु मंडपहिं आए । अरघु देइ आसन बैठाए ॥

छं०—बैठारि आसन आरती करि निरखि वरु सुखु पावहीं ।  
मनि वसन भूपन भूरि वारहिं नारि मंगल गावहीं ॥  
ब्रह्मादि सुरवर निप्र वेप बनाइ कौतुक देखहीं ।  
अवलोकि रघुकुल कमल रचि छवि सुफल जीवन लेखहीं ॥

दो०—नाऊ वारी भाट नट राम निछावरि पाइ ।  
मुदित असीसहिं नाइ सिर हरषु न हृदयँ समाइ ॥३१९॥

मिले जनकु दसरथु अति प्रीतीं । करि वैदिक लौकिक सब रीतीं ॥  
मिलत महा दोउ राज विराजे । उपमा खोजि खोजि कवि लाजे ॥  
लही न कतहुँ हारि हियँ मानी । इन्ह सम एइ उपमा उर आनी ॥  
सामध देखि देव अनुरागे । सुमन वरपि जसु गावन लागे ॥  
जगु विरंचि उपजावा जब तें । देखे सुने ब्याह बहु तव तें ॥  
सकल भाँति सम साजु समाजू । सम समथी देखे हम आजू ॥  
देव गिरा मुनि सुंदर साँची । प्रीति अलौकिक दुछु दिसि माची ॥  
इत पाँवड़े अरघु सुहाए । सादर जनकु मंडपहिं ल्याए ॥

छं०—मंडपु बिलोकि विचित्र रचनाँ रुचिरताँ मुनि मन हरे ।  
निज पानि जनक सुजान सब कहूँ आनि सिंघासन धरे ॥  
कुल इष्ट सरिस बसिष्ट पूजे विनय करि आसिप लही ।  
कौसिकहि पूजत परम प्रीति कि रीति तौ न परै कही ॥

दो०—वामदेव आदिक रिपय पूजे मुदित महीस ।

दिए दिव्य आसन सबहि सब सन लही असीस ॥३२०॥  
 बहुरि कीन्हि कोसलपति पूजा । जानि ईस सम भाउ न दूजा ॥  
 कीन्हि जोरि कर विनय बड़ाई । कहि निज भाग्य विभव बहुताई ॥  
 पूजे श्रूपति सकल वराती । समथी सख सादर सब भाँती ॥  
 आसन उचित दिए सब हू । कहाँ काह मुख एक उछाहू ॥  
 सकल वरात जनक सनमानी । दान मान विनती वर बानी ॥  
 विधि हरि हरु दिसि पति दिनराऊ । जे जानहिं रघुवीर प्रभाऊ ॥  
 कपट विप्र वर वेष बनाएँ । कौतुक देखहिं अति सच्चु पाएँ ॥  
 पूजे जनक देव सम जानें । दिए सुआसन विनु पहिचानें ॥

छं०—पहिचान को ; केहि जान सबहि अप सुधि भोरी भई ।

आनंद कहु बिलोकि दूलहु उभय दिसि आनंदमई ॥  
 सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दए ।  
 अवलोकि सीलु सुभाउ प्रभु को विबुध मन प्रमुदित भए ॥

दो०—रामचंद्र मुख चंद्र छवि लोचन चारु चकोर ।

करत पान सादर सकल प्रेमु प्रमोदु न थोर ॥३२१॥

समउ बिलोकि वसिष्ठ बोलाए । सादर सतानंदु सुनि आए ॥  
 वेगि कुअँरि अब आनहु जाई । चले मुदित मुनि आयसु पाई ॥  
 रानी सुनि उपरोहित बानी । प्रमुदित सखिन्ह समेत सयानी ॥  
 विप्र बधू कुलवृद्ध बोलाई । करि कुल रीति सुमंगल गाई ॥  
 नारि वेष जे सुर वर वामा । सकल सुभायँ सुंदरी स्यामा ॥  
 तिन्हहि देखि सुखु पावहिं नारीं । विनु पहिचानि प्रानहु ते प्यारीं ॥

वार वार सनमानहिं रानी । उमा रमा सारद सम जानी ॥  
सीय सँवारि समानु वनाई । मुदित मंडपहिं चलीं लवाई ॥

छ०—चलि ल्याइ सीतहिं सखीं सादर सजि सुमंगल भामिनीं ।  
नवसप्त साजें सुंदरीं सब मत्त कुंजर गामिनीं ॥  
कलगान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं ।  
मंजीर नूपुर कलित कंकन ताल गति घर वाजहीं ॥

दो०—सोहति बनिता बृंद महुँ सहज सुहावनि सीय ।  
छविललना गन मध्य जनु सुपमा तिय कमनीय ॥३२२॥  
सिय सुंदरता वरनि न जाई । लघु मति बहुत मनोहरताई ॥  
आवत दीखि चरातिन्ह सीता । रूप रासि सब भाँति पुनीता ॥  
सबहिं मनहिं मन किए प्रनामा । देखि राम भए पूरनकामा ॥  
हरपे दसरथ सुतन्ह समेता । कहि न जाइ उर आनँदु जेता ॥  
सुर प्रनामु करि वरिसहिं फूला । मुनि असीस धुनि मंगल मूला ॥  
गान निसान कोलाहलु भारी । प्रेम प्रमोद मगत नर नारी ॥  
एहि विधि सीय मंडपहिं आई । प्रमुदित सांति पढ़हिं मुनिराई ॥  
तेहि अवसर कर विधि व्यवहारू । दुहुँ कुलगुर सब कीन्ह अचारू ॥

छ०—आचारु करि गुर गौरि गनपति मुदित विप्र पुजावहीं ।  
सुर प्रगटि पूजा लेहिं देहिं असीस अति सुखु पावहीं ॥  
मधुपर्क मंगल द्रव्य जो जेहि समय मुनि मन महुँ चहैं ।  
भरे कनक कोपर कलस सो तब लिएहिं परिचारकरहैं ॥ १ ॥  
कुल रीति प्रीति समेत रवि कहि देत ससु सादर कियो ।  
एहि भाँति देव पुजाइ सीतहिं सुभग सिंघासनु दियो ॥

सिध राम अवलोकनि परसवर प्रेसु काहु न लखि परै ।

मन बुद्धि बर बानी अयोधर प्रगट कवि कैसे करै ॥ २ ॥

दो०—होम समय तनु धरि अन अति सुख आहुति लेहिं ।

बिप्र वेष धरि वेद सब कहि विवाह विधि देहिं ॥ ३२३ ॥

जनक पाटमहिषी जग जानी । सीय मातु किमि जाइ बखानी ॥

सुजसु सुकृत सुख सुंदरताई । सब समेटि विधि रची बनाई ॥

समउ जानि मुनिबरन्ह बोलाई । सुनत सुआसिनि सादर ल्याई ॥

जनक बाम दिसि सोह सुनयना । हिमगिरि संग बनी जनु मयना ॥

कनक कलस मनि कोपर रूरे । सुचि सुगंध मंगल जल पूरे ॥

निज कर मुदित रायँ अरु रानी । धरे राम के आगें आनी ॥

पढ़हिं वेद मुनि मंगल बानी । गगन सुमन झरि अवसरु जानी ॥

बरु बिलोकि दंपति अनुरागे । पाय पुनीत परवारन लागे ॥

कं०—लागे परवारन पाय पंकज प्रेम तन पुलकावली ।

नभनगर गान निसान जय धुनि उमधि जनु चहुँ दिसि चली

जे पद सरोज मनोज अरि उर सर सदैव बिराजहीं ।

जे सकृत सुमिरत बिसलता मन सकल कलि मल भाजहीं ॥ १ ॥

जे परसि मुनिबनिता लही गति रही जो पातकमई ॥

मकरंदु जिन्ह को संभु सिर सुचिता अवधि सुर बरनई ॥

करि मधुप मन मुनि जोगिजन जे सेइ अभिमत गति लहैं ।

ते पद परवारत भाग्यभाजनु जनकु जय जय सब कहैं ॥ २ ॥

वर कुअँरि करतल जोरि साखोचारु दोउ कुलगुर करैं ।

भयो पानिगहनु बिलोकि विधि सुर मनुज मुनि आनँद भरैं ॥

सुखमूल दूलहु देखि दंपति पुलक तन हुलस्यो हियो ।  
 करि लोक वेद विधानु कन्यादानु नृपमूपन कियो ॥३॥  
 हिमवंत जिमि गिरिजा महेसहि हरिहि श्री सागर दर्ई ।  
 तिमिजनक रामहि सिय समरपी विख कल कीरति नई ॥  
 क्यों करै विनय विदेहु कियो विदेहु मूरति सावँरी ।  
 करि होमु विधिवत गाँठि जोरी होन लागीं भावँरी ॥४॥

दो०—जय धुनि बंदी वेद धुनि मंगल गान निसान ।

सुनि हरपहिं वरपहिं त्रियुध सुरतरु सुमन सुजान ॥३२४॥

कुअँरु कुअँरि कल भावँरि देहीं । नयन लाभु सब सादर लेहीं ॥  
 जाह न बरनि मनोहर जोरी । जो उपमा कछु कहौं सो थोरी ॥  
 राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं । जगमगात मनि खंभन माहीं ॥  
 मनहुँ मदन रति धरि बहु रूपा । देखत राम विआहु अनूपा ॥  
 दरस लालसा सकुच न थोरी । प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी ॥  
 भए मगन सब देखनिहारे । जनक समान अपान विसारे ॥  
 प्रमुदित मुनिन्ह भावँरीं फेरीं । नेगसहित सब रीति निबेरीं ॥  
 राम सीय सिर सेंदुर देहीं । सोभा कहि न जाति विधिकेहीं ॥  
 अरुन पराग जलजु भरि नीकें । ससिहि भूप अहिलोभ अमीकें ॥  
 बहुरि बसिष्ठ दीन्हि अनुसासन । बरु दुलहिनि बैठे एक आसन ॥

छं०—बैठे बरासन रामु जानकि मुदित मन दसरथु भए ।

तनु पुलक पुनि पुनि देखि अपनै सुकृत सुरतरु फल नए ॥

भरि भुवन रहा उछाहु राम विवाहु भा सबहीं कहा ।

केहि भाँति बरनि सिरात रसना एक यहु मंगलु महा ॥१॥



तव जनक पाइ वसिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारि ।  
 मांडवी श्रुतकीरति उरमिला कुअँरि लई हँकारि कै ॥  
 कुसकेतु कन्या प्रथम जो गुन सील सुख सोभामई ।  
 सब रीति प्रीति समेत करि सो ब्याहि नृप भरतहि दई ॥२॥  
 जानकी लघु भगिनी सकल सुंदरि सिरोमनि जानि कै ।  
 सो तनय दीन्ही ब्याहि लखनहि सकल विधि सनमानि कै ॥  
 जेहि नामु श्रुतकीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुन आगरी ॥  
 सो दई रिपुसूदनहि भूपति रूप सील उजागरी ॥ ३ ॥  
 अनुरूप वर दुलहिनि परस्पर लखि सकुच हियँ हरपहीं ।  
 सब मुदित सुंदरता सराहहिँ सुमन सुर गन वरपहीं ॥  
 सुंदरीं सुंदर वरन्ह सह सब एक मंडप राजहीं ।  
 जनु जीव उर चारिउ अवस्था बिभुन सहित विराजहीं ॥४॥

दो०—मुदित अवधपति सकल सुत बधुन्ह समेत निहारि ।

जनु पाए महिपाल मनि क्रियन्ह सहित फल चारि ॥३२५॥

जसि रघुबीर ब्याह विधि वरनी । सकल कुअँर ब्याहे तेहिँ करनी ॥  
 कहि न जाइ कछु दाइज भूरी । रहा कनक मनि मंडपु पूरी ॥  
 कंबल वसन विचित्र पटोरे । भाँति भाँति बहु मोल न थोरे ॥  
 गजरथ तुरग दास अरु दासी । धेनु अलंकृत कामदुहा सी ॥  
 वस्तु अनेक करिअ किमि लेखा । कहि न जाइ जानहिँ जिन्ह देखा ॥  
 लोकपाल अवलोकि सिहाने । लीन्ह अवधपति सवु सुखु माने ॥  
 दीन्ह जाचकन्हि जो जेहि भावा । उवरा सो जनवासेहिँ आवा ॥  
 तव कर जोरि जनकु मृदु वानी । बोले सब वरात सनमानी ॥

छं०—सनमानि सकल वरात आदर दान विनय बड़ाइ कै ।  
 प्रसुदित महा मुनि वृंद वंदे पूजि प्रेम लड़ाइ कै ॥  
 सिरु नाइ देव मनाइ सब सन कहत कर संपुट किएँ ।  
 सुर साधु चाहत भाउ सिंधु कि तोप जल अंजलि दिएँ ॥ १ ॥  
 कर जोरि जनकु बहोरि बंधु समेत कोसलराय सों ।  
 बोले मनोहर वचन सानि सनेह सील सुभाय सों ॥  
 संबंध राजन रावरें हम बड़े अब सब विधि भए ।  
 एहि राज साज समेत सेवक जानिबे विनु गथ लए ॥ २ ॥  
 ए दारिका परिचारिका करि पालिवाँ करुना नई ।  
 अपराधु छमिबो बोलि पठए बहुत हों ढीटयो कई ॥  
 पुनि भानुकुलभूपन सकल सनमान निधि समधी किए ।  
 काहे जाति नहिं विनती परस्पर प्रेम परिपूरन हिए ॥ ३ ॥  
 वृंदारका गन सुमन वरिसहिं राउ जनवासेहि चले ।  
 दुंदुभी जय धुनि वेद धुनि नभ नगर कौतूहल भले ॥  
 तब सखीं मंगल गान करत मुनीस आयसु पाइ कै ।  
 दूलह दुलहिनिन्ह सहित सुंदरि चलीं कोहवर ल्याइ कै ॥ ४ ॥

दो०—पुनि पुनिरामहि चितव सिय सकुचति मनु सकुचै न ।  
 हरत मनोहर मीन छवि प्रेम्पु पिआसे नैन ॥३२६॥

मासपारायण ग्यारहवाँ विश्राम

स्वाम सरीरु सुभायँ सुहावन । सोभा कोटि मनोज लजावन ॥  
 जावक जुत पद कमल सुहाए । मुनि मन मधुप रहत जिन्ह छाए ॥  
 पीत पुनीत मनोहर धोती । हरति बाल रवि दामिनि जोती ॥

कल किंकिनि कटि सूत्र मनोहर । बाहु विसाल विभूषन सुंदर ॥  
 पीत जनेउ महाछवि देई । कर मुद्रिका चोरि चितु लेई ॥  
 सोहत ब्याह साज सब साजे । उर आयत उरभूषन राजे ॥  
 गिअर उपरना काखासोती । दुहुँ आँचरन्हि लगे मनि मोती ॥  
 नयन कमल कल कुंडल काना । बदनु सकल सौंदर्ज निधाना ॥  
 सुंदर भृकुटि मनोहर नासा । भाल तिलकु रुचिरता निवासा ॥  
 सोहत मौरु मनोहर माथे । मंगलमय मुकुता मनि गाथे ॥  
 छं०—माथे महामनि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं ।  
 पुर नारि सुर सुंदरीं बरहि विलोकि सब तिन तोरहीं ॥  
 मनि बसन भूषन वारि आरति करहि मंगल गावहीं ।  
 सुर सुमन बरिसहिं सूत मागध बंदि सुजसु सुनावहीं ॥१॥  
 कोहवरहिं आने कुअँरि कुअँरि सुआसिनिन्ह सुख पाइ कै ॥  
 अति प्रीति लौकिक रीति लागीं करन मंगल गाइ कै ॥  
 लहकौरि गौरि सिखाव रामहि सीय सन सारद कहैं ।  
 रनिवासु हासविलास रस बस जन्म को फलु सब लहैं ॥२॥  
 निज पानि मनि महुँ देखिअति मूरति सुरूपनिधान की ।  
 चालति न भुजवल्ली विलोकनि विरह भय बस जानकी ॥  
 कौतुक विनोद प्रमोदु प्रेषु न जाइ कहि जानहिं अलीं ।  
 नर कुअँरि सुंदर सकल सखीं लवाइ जनवासेहि चलीं ॥३॥  
 तेहि समय सुनिअ असीस जहँ तहँ नगर नभ आनँदु महा ।  
 चिरु जिअहुँ जोरीं चारु चारयो मुदित मन सबहीं कहा ॥  
 जोगींद्र सिद्ध खुनीस देव विलोकि प्रभु दुंदुभि हनी ।  
 चले हरषि वरषि प्रसन्न निज निज लोक जय जय जय भनी ॥४॥

दो०—सहित वधूटिन्ह कुअँर सब तव आए पितु पास ।

सोभा मंगल मांद भरि उमगेउ जनु जनवास ॥३२७॥

पुनि जेवनार भई बहु भाँती । पठए जनक बोलाइ वराती ॥  
 परत पाँवड़े बसन अनूपा । सुतन्ह समेत गवन कियो भूपा ॥  
 सादर सब के पाय पखारे । जथाजोगु पीढ़न्ह बैठारे ॥  
 धोए जनक अवधपति चरना । सीलु सनेहु जाइ नहिं वरना ॥  
 बहुरि राम पद पंकज धोए । जे हर हृदय कमल महुँ गोए ॥  
 तीनिउ भाइ राम सम जानी । धोए चरन जनक निज पानी ॥  
 आसन उचित सबहि नृप दीन्है । घोलि सूपकारी सब लीन्है ॥  
 सादर लगं परन पनवारे । जनक कील मनि पान सँवारे ॥

दो०—स्योदन सुरभी सरपि सुंदर स्वादु पुनीत ।

छन महुँ सब कें परसि गे चतुर सुआर विनीत ॥३२८॥

पंच कवल करि जेवन लागे । गारि गान सुनि अति अनुरागे ॥  
 भाँति अनेक परे पकवाने । सुधा सरिस नहिं जाहिं बखाने ॥  
 परसन लगे सुआर सुजाना । विंजन विविध नाम को जाना ॥  
 चारि भाँति भोजन विधि गाई । एक एक विधि बरनि न जाई ॥  
 छरस रुचिर विंजन बहु जाती । एक एक रस अगनित भाँती ॥  
 जेवँत देहिं मयुर धुनि गारी । लँ लँ नाम पुरुष अरु नारी ॥  
 समय सुहावनि गारि विराजा । हंसतराउ सुनि सहित समाजा ॥  
 एहि विधि सयहीं भोजनु कीन्हा । आदर सहित आचमनु दीन्हा ॥

दो०—देइ पान पूजे जनक दसरथु सहित समाज ।

जनवासेहि गवने मुदित सकळ भूप निरताज ॥३२९॥

नित नूतन मंगल पुर माहीं । निमिष सरिस दिन जामिनि जाहीं  
 बड़े भोर भूपतिमनि जागे । जाचक गुन गन गावन लागे ॥  
 देखि कुअँर वर वधुन्ह समेता । किमि कहि जात मोदु मन जेता ॥  
 प्रातक्रिया करि गे गुरु पाहीं । महाप्रमोदु प्रेसु मन माहीं ॥  
 करि प्रनामु पूजा कर जोरी । बोले गिरा अमिअँ जनु बोरी ॥  
 तुम्हरी कृपाँ सुनहु मुनिराजा । भयउँ आजु मैं पूरनकाजा ॥  
 अब सब विप्र बोलाइ गोसाईं । देहु धेनु सब भाँति बनाईं ॥  
 सुनि गुर करि महिपाल बड़ाई । पुनि पठए मुनि वृंद बोलाई ॥  
 दो०—वामदेउ अरु देवरिषि व मीकि जाबालि ।

आए मुनिवर निकर तव कौसिकादि तपसालि ॥३३०॥

दंड प्रनाम सबहि नृप कीन्हे । पूजि सँ वरासद दीन्हे ॥  
 चारि लच्छ वर धेनु मगाईं । कामसुराभि सम सील सुहाईं ॥  
 सब विधि सकल अलंकृत कीन्हीं । मुदित महिप महिदेवन्ह दीन्हीं ॥  
 करत विनय बहु विधि नरनाहू । लहेउँ आजु जग जीवन लाहू ॥  
 पाइ असीस महीसु अनंदा । लिए बोलि पुनि जाचक वृंदा ॥  
 कनक वसन मनि हय गय स्पंदन । दिए बूझि रुचि रविकुलनंदन ॥  
 चले पढ़त गावत गुन गाथा । जय जय जय दिनकर कुल नाथा ॥  
 इहि विधि राम विआह उछाहू । सकइन वरनि सहस मु जाहू ॥

दो०—वार वार कौसिक चरन सीसु नाइ कह राउ ।

यह सबु सुखु मुनिराज तव कृपा कटाच्छ पसाउ ॥३३१॥  
 जनक सनेहु सीलु करतूती । नृपु सब भाँति सराह विभूती ॥  
 दिन उठि निदा अवधपति मागा । राखहिं जनकु सहित अनुरागा ॥

नित नूतन आदरु अधिकाई। दिन प्रति महस भौंति पहुनाई ॥  
 नित नव नगर अनंद उछाहू। दसरथ गवनु मोहाइ न काहू ॥  
 बहुत दिवस बीते एहि भौंती। जनु सनेह रजु बंधे बराती ॥  
 कौंसिक मतानंद तब जाई। कहा विदेह नृपहि ममुझाई ॥  
 अब दसरथ कहें आयसु देहू। जद्यपि छाहि न मकहु सनेहू ॥  
 भलेहि नाथ कहि मचिव बोलाए। कहि जय जीव मीम तिन्ह नाए ॥

दो०—अनधनायु चाहत चलन भीतर करहु जनाउ ।

भए प्रेमयस मचिव सुनि विप्र मभासद राउ ॥३३२॥

पुरवासी सुनि चलिहि बराता। बृहत् निकल परस्पर वाता ॥  
 मत्य गवनु सुनि सब त्रिलखाने। मनहुँ साँझ मरमिज मकुचाने ॥  
 जहँ जहँ आयत बसे बराती। तहँ तहँ मिद्व चला बहु भौंती ॥  
 विविध भौंति सेवा पकवाना। भोजन माजु न जाइ बखाना ॥  
 भरि भरि बसहँ अपार कहारा। पठइँ जनक अनेक सुमारा ॥  
 तुरग लाख रथ सहस पचीसा। मकल मँवारे नख अरु सीसा ॥  
 मत्त सहस दस मिधुर साजे। जिन्हहि देखि टिमिहुंजर लाजे ॥  
 कनक वमन मनि भरि भरि जाना। महिपीं धेनु वस्तु विधि नाना ॥

दो०—टाडज अमित न सकिअ कहि दीन्ह विदेहँ बहोरि ।

जो अवलोकत लोकरुपति लोक मंपदा धांति ॥३३३॥

मयु ममाजु एहि भौंति बनाई। जनक अवधपुट दीन्ह पटाई ॥  
 चलिहि बगत सुनत सब गर्नी। निकल मानगन जनु लघु पानी ॥  
 पुनि पुनि सोय गोद करि लेहोँ। देह असीस सिग्वावनु देही ॥  
 दोषहु संतन पिपहि पिआगे। चिरु अहिवात असीस हमानी ॥

सासु सासुर गुर सेवा करेहू । पति रुखलखि आयसु अनुसरेहू ॥  
 अति सनेह बस सखी सयानी । नारि धरम सिखवहिं मृदु बानी ॥  
 सादर सकल कुअँरि ससुझाई । रानिन्ह वार वार उर लाई ॥  
 बहुरि बहुरि भेटहिं महतारी । कहहिं विरंचि रचीं कत नारी ॥

दो०—तेहि अवसर भाइन्ह सहित रायु भानु कुल केतु ।

चले जानक मंदिर मुदित विदा करावन हेतु ॥३३४॥

चारिउ भाइ सुभायँ सुहाए । नगर नारि नर देखन धाए ॥  
 कोउ कह चलन चहत हहिं आजू । कीन्ह बिदेह विदा कर साजू ॥  
 केहु नयन भरि रूप निहारी । प्रिय पाहुने भूप सुत चारी ॥  
 को जानै केहिं सुकृत सयानी । नयन अतिथि कीन्हे विधि आनी ॥  
 भरनसीलु जिमि पाव पिऊषा । सुरतरु लहै जनम कर भूखा ॥  
 पाव नारकी हरिपदु जैसेँ । इन्ह कर दरसनु हम कहँ तैसेँ ॥  
 निरखि राम सोभा उर धरहू । निज मन फनि मूरति मनि करहू  
 एहि विधि सबहि नयन फलु देता । गए कुअँर सब राज निकेता ॥

दो०—रूप सिंधु सब बंधु लखि हरषि उठा रनिवासु ।

करहिं निछावरि आरती महा मुदित मन सासु ॥३३५॥

देखि राम छवि अति अनुरागीं । प्रेम विवस पुनि पुनि पद लागीं ॥  
 रही न लाज प्रीति उर छाई । सहज सनेहु बरनि किगि जाई ॥  
 भाइन्ह सहित उवटि अन्हवाए । छरस असन अति हेतु जेवाँए ॥  
 बोले रायु सुअवसरु जानी । सील सनेह सकुचमय बानी ॥  
 राउ अवधपुर चहत सिधाए । विदा होन हम इहाँ पठाए ॥  
 पातु मुदित मन आयसु देहू । बालक जानि करव नित नेहू ॥

भुनत वचन बिलखेउ रनिवासु। बोलि न सकहिं प्रेमवस सासु ॥  
हृदयँ लगाइ कुअँरि सब लोन्ही। पतिन्ह सौँपि बिनती अति कीन्ही

छ०--करि बिनय सिय रामहि समरपी जोरि कर पुनि पुनि कहै।  
बलि जाउँ तात सुजान तुम्ह कहूँ विदित गति सब की अहै ॥  
परिवार पुरजन मोहि राजहि प्रानप्रिय सिय जानिबी।  
तुलसीस सीलु सनेहु लखि निज किंकरी करि मानिबी ॥

सो०--तुम्ह परिपूरन काम जान सिरोमनि भावप्रिय।

जन गुन गाहक राम दीप दलन करुनायतन ॥३३६॥

अस कहि रही चरन गहिरानी। प्रेम पंक जनु गिरा समानी ॥  
सुनि सनेहसानी बर वानी। बहुबिधि राम सासु सनमानी ॥  
राम बिदा मागत कर जोरी। कोन्ह प्रनामु बहोरि बहोरी ॥  
पाइ असीस बहुरि सिरु नाई। भाइन्ह सहित चले रघुराई ॥  
मंजु मधुर मूरति उर आनी। भई सनेह सिथिल सब रानी ॥  
पुनि धीरजु धरि कुअँरि हँकारों। वार वार भेटहिं महतारों ॥  
पहुँचावहिं फिरि मिलहिं बहोरी। बढी परस्पर प्रीति न थोरी ॥  
पुनि पुनि मिलत सखिन्ह बिलगाई। बाल बच्छ जिमि घेनु लवाई ॥

दो०--प्रेमबिबस नर नारि सब सखिन्ह सहित रनिवासु।

मानहुँ कीन्ह विदेहपुर करुनाँ बिरहँ निवासु ॥३३७॥

सुक सारिका जानकी ज्याए। कनक पिंजरन्हि राखि पढ़ाए ॥  
न्याकुल कहहिं कहां वैदेही। सुनि धीरजु परिहरइ न केही ॥  
भए विकल खग मृग एहि भाँती। मनुज दसा कैसें कहि जाती ॥  
बंधु समेत जनकु तव आए। प्रेम उमगि लोचन जल छाए ॥



सीय विलोकि धीरता भागी । रहे कहावत परम विरागी ॥  
 लीन्हि रायँ उर लाइ जानकी । मिटी महामरजाद ग्यान की ॥  
 समुझावत सब सचिव सयाने । कीन्ह विचारुं न अवसर जाने ॥  
 बारहिं बार सुता उर लाई । सजि सुंदर पालकीं मगाई ॥

दो०—प्रेमविवस परिवारु सबु जानि सुलगन नरेस ।

कुअँरि चढ़ाई पालकिन्ह सुमिरे सिद्धि गनेस ॥३३८॥  
 बहुविधि भूप सुता समुझाई । नारि धरमु कुलरीति सिखाई ॥  
 दासीं दास दिए बहुतेरे । सुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे ॥  
 सीय चलत व्याकुल पुरवासी । होहिं सगुन सुभ मंगल रासी ॥  
 भूसुर सचिव समेत समाजा । संग चले पहुँचावन राजा ॥  
 समय विलोकि वाजने वाजे । रथ गज बाजि बरातिन्ह साजे ॥  
 दसरथ विप्र बोलि सब लीन्हे । दान न परिपूरन कीन्हे ॥  
 चरन सरोज धूरि धरि सीसा । मुदित महीपति पाइ असीसा ॥  
 सुमिरि गजाननु कीन्ह पयाना । मंगलमूल सगुन भए नाना ॥

दो०—सुर प्रसन्न वरपहिं हरषि करहिं अपछरा गान ।

चले अवधपति अवधपुर मुदित बजाइ निसान ॥३३९॥

नृप करि विनय महाजन फेरे । सादर सकल मागने टेरे ॥  
 भूपन वसन वाजि गज दीन्हे । प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हे ॥  
 वार वार विरिदावलि भापी । फिरे सकल रामहि उर राखी ॥  
 बहुरि बहुरि कोसलपति कहहीं । जनकु प्रेम वस फिरै न चहहीं ॥  
 पुनि कह भूपति बचन सुहाए । फिरिअ महीस दूरि बड़ि आए ॥  
 राउ बहोरि उतारि भए ठाढ़े । प्रेम प्रवाह विलोचन वाढ़े ॥

तब विदेह बोले कर जोरी। वचन सनेह सुधाँ जनु बोरी ॥  
करौं कवन विधि विनय बनाई। महाराज मोहि दीन्हि बड़ाई ॥

दो०—कोसलपति समधी सजन सनमाने सब भाँति ।

मिलनि परसपर विनय अति प्रीति न हृदयँ समाति ॥३४०॥

मुनि मंडलिहि जनक सिरु नाथा। आसिरबादु सबहि सन पावा ॥  
सादर पुनि भेंटे जामाता। रूप सील गुन निधिसब आता ॥  
जोरि पंकरुह पानि सुढाए। बोले वचन प्रेम जनु जाए ॥  
राम करौं केहि भाँति प्रसंसा। मुनि महेस मन मानस हंसा ॥  
करहिं जोग जोगी जेहि लागी। कोहु मोहु ममता महु त्यागी ॥  
व्यापक ब्रह्म अलखु अविनासी। चिदानंदु निरगुन गुनरासी ॥  
मन समेत जेहि जान न बानी। तरकि न सकहिं सकल अनुमानी ॥  
महिमा निगमु नेति कहि कहई। जो तिहुँ काल एकरस रहई ॥

दो०—नयन विषय मो कहूँ भयउ सो समस्त सुख मूल ।

सबइ लायु जग जीव कहँ भएँ ईसु अनुकूल ॥३४१॥

सबहि भाँति मोहि दीन्हि बड़ाई। निज जन जानि लीन्ह अपनाई ॥  
होहिं सहस दस सारद सेपा। करहिं कल्प कोटिक भरि लेखा ॥  
मोर भाग्य राउर गुन गाथा। कहि न सिराहिं सुनहु रघुनाथा ॥  
मैं कछु कहउँ एक बल मोरें। तुम्ह रीझहु सनेह सुठि थोरें ॥  
बार बार मागउँ कर जोरें। मनु परिहरै चरन जनि भोरें ॥  
सुनि वर वचन प्रेम जनु पोपे। पूरनकाम रामु परितोपे ॥  
करि वर विनय ससुर सनमाने। पितु कौसिक बसिष्ठ सम जाने ॥  
विनती बहुरि भरत सन कीन्ही। मिलि सप्रेमु पुनि आसिप दीन्ही ॥

दो०—मिले लखन रिपुसूदनहि दीन्हि असीस महीस ।

भए परसपर प्रेमवत् फिरि फिरि नावहिं सीस ॥३४२॥  
 वार वार करि विनय बड़ाई । रघुपति चले संग सब भाई ॥  
 जनक गहे कौसिक पद जाई । चरन रेनु सिर नयनन्ह लाई ॥  
 सुनु मुनीस वर दरसन तोरें । अगस्तु न कछु प्रतीति मन मोरें ॥  
 जो सुख सुजसु लोकपति चहहीं । करत मनोरथ सकुचत अहहीं ॥  
 सो सुख सुजसु सुलभ मोहि स्वामी । सब सिधि तव दरसन अनुगामी  
 कीन्हि विनय पुनि पुनि सिरु नाई । फिरे महीसु आसिषा पाई ॥  
 चली वरात निसान बजाई । मुदित छोट बड़ सब समुदाई ॥  
 रामहि निरखि ग्राम नर नारी । पाइ नयन फलु होहिं सुखारी ॥

दो०—बीच बीच वर वास करि मग लोगन्ह सुख देत ।

अवध समीप पुनीत दिन पहुँची आइ जनेत ॥३४३॥  
 हने निसान पनव वर वाजे । भेरि संख धुनि हय गय गाजे ॥  
 झाँझि विरच डिंडिमीं सुहाई । सरस राग बाजहिं सहनाई ॥  
 पुर जन आवत अकनि वराता । मुदित सकल पुलकावलि गाता ॥  
 निज निज सुंदर सदन मँवारे । हाट वाट चौहट पुर द्वारे ॥  
 गलीं सकल अरगजाँ सिंचाई । जहँ तहँ चौकें चारु पुराई ॥  
 बना बजारु न जाइ बखाना । तोरन केतु पताक झिताना ॥  
 मफल पूगफल कदलि रसाला । रोषे बकुल कदंब तमाला ॥  
 लगे सुभग तरु परसत धरनी । मनिमय आलत्राल कल करनी ॥

दो०—वित्रिध भाँति मंगल कलस गृह गृह रचे सँवारि ।

सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब रघुवर पुरी निहारि ॥३४४॥

भूप भवतु तेहि अवसर सोहा । रचना देखि मदन मनु मोहा ॥  
 मंगल सगुन मनोहरताई । रिधि सिधि सुख संपदा सुहाई ॥  
 जनु उछाह मव महज सुहाए । तनु धरि धरि दसरथ गृहँ छाए ॥  
 देखन हेतु राम वैदेही । कहहु लालसा होहि न केही ॥  
 जूथ जूथ मिलि चलीं सुआमिनि । निज छवि निदरहि मदन विलासिनि ॥  
 मकल सुमंगल मजें आरती । गावहिं जनु बहु वेप भारती ॥  
 भूपति भवन कोलाहलु होई । जाइ न बरनि ममउ सुखु सोई ॥  
 कौसल्यादि राम महतारीं । प्रेमत्रिबस तन दसा विसारीं ॥  
 दो०—दिए दान विप्रन्ह विपुल पूजि गनेस पुरारि ।

प्रमुदित परम दरिद्र जनु पाइ पदारथ चारि ॥३४५॥

मोद प्रमोद त्रिबस सब माता । चलहिं न चरन सिधिल भए गाता  
 गम दरस हित अति अनुरागी । परिछनि साजु सजन सब लागीं ॥  
 विविध विधान वाजने वाजे । मंगल मुदित सुमित्राँ साजे ॥  
 हरद दूब दधि पल्लव फूला । पान पूगफल मंगल मूला ॥  
 अच्छत अंकुर लोचन लाजा । मंजुल मंजरि तुलमि विराजा ॥  
 छुहे पुरट घट सहज सुहाए । मदन मकुन जनु नीड बनाए ॥  
 मगुन सुगंध न जाहिं बखानी । मंगल सकल सजहिं मव रानी ॥  
 रची आरतीं बहुत विधाना । मुदित करहिं कल मंगल गाना ॥

दो०—कनक थार भरि मंगलन्हि कमल करन्हि लिएँ मात ।

चलीं मुदित परिछनि करन पुलक पल्लवित गात ॥३४६॥

भूप धूम नभु मेचक भयऊ । सावन घन घमंडु जनु ठयऊ ॥  
 मुरतरु सुमन माल सुर बरपहिं । मनहुँ चलाक अवलि मनु करपहिं ॥

मंजुल मनिमय बंदनिवारे। मनहुँ पाकरिपु चाप सँवारे ॥  
 प्रगटहिँ दुरहिँ अटन्ह पर भामिनि। चारुचपल जनु दमकहिँ दामिनि  
 दुंदुभि धुनि घन गरजनि घोरा। जाचक चातक दादुर मोरा ॥  
 सुर सुगंधं सुचि वरपहिँ वारी। सुखी सकल ससि पुर नर नारी ॥  
 समउ जानि गुर आयसु दीन्हा। पुर प्रवेशु रघुकुलमनि कीन्हा ॥  
 सुमिरि संभु गिरिजा गनराजा। मुदित महीपति सहित समाजा ॥

दो०—होहिँ सगुन वरपहिँ सुमन सुर दुंदुभीं वजाइ।

विनुध बधू नाचहिँ मुदित मंजुल मंगल गाइ ॥३४७॥

मागध सूत बंदि नट नागर। गावहिँ जसु तिहु लोक उजागर ॥  
 जय धुनि विमल वेद वर वानी। दस दिसि सुनिअ सुमंगल सानी ॥  
 विपुल वाजने वाजन लागे। नभ सुर नगर लोग अनुरागे ॥  
 वने वराती वरनि न जाहीं। महा मुदित मन सुख न समाहीं ॥  
 वासिन्ह तब राय जोहारे। देखत रामहि भए सुखारे ॥  
 करहिँ निछावरि मनिगन चीरा। वारि विलोचन पुलक सरीरा ॥  
 आरति करहिँ मुदित पुर नारी। हरपहिँ निरखि कुअँर वर चारी ॥  
 सिचिका सुभग ओहार उधारी। देखि दुलहिनिन्ह होहिँ सुखारी ॥

दो०—एहि विधि सबही देत सुखु आए राजदुआर।

मुदित मातु परिछनि करहिँ बधुन्ह समेत कुमार ॥३४८॥

करहिँ आरती वारहिँ वारा। प्रेसु प्रमोदु कहै को पारा ॥  
 भूपन मनि पट नाना जाती। करहिँ निछावरि अगनित भाँती ॥  
 बधुन्ह समेत देखि सुत चारी। परमानंद मगन महतारी ॥  
 पनि पनि सीय राम छवि देखी। मुदित सफल जग जीवन लेखी ॥

सखीं सीय मुख पुनि पुनि चाही । गान करहिं निज सुकृत सराही ॥  
 वरपहिं सुमन छनहिं छन देवा । नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा ॥  
 देखि मनोहर चारिउ जोरीं । सारद उपमा सकल ढँढोरीं ॥  
 देत न वनहिं निपट लघु लागीं । एकटक रहीं रूप अनुरागीं ॥  
 दो०—निगम नीति कुल रीति करि अरघ पाँवड़े देत ।

वधुन्ह सहित सुत परिछि सब चलीं लवाइ निकेत ॥३४९॥  
 चारि सिंघासन सहज सुहाए । जनु मनोज निज हाथ बनाए ॥  
 तिन्ह पर कुअँरि कुअँर बैठारे । सादर पाय पुनीत पखारे ॥  
 धूप दीप नैवेद वेद विधि । पूजे वर दुलहिनि मंगलनिधि ॥  
 चारहिं चार आरती करहीं । व्यजन चारु चामर सिर ढरहीं ॥  
 वस्तु अनेक निछावरि होहीं । भरीं प्रमोद मातु सब सोहीं ॥  
 पावा परम तत्व जनु जोगीं । अमृतु लहेउ जनु संतत रोगीं ॥  
 जनम रंक जनु पारस पावा । अंधहि लोचन लाधु सुहावा ॥  
 मूक वदन जनु सारद छाई । मानहुँ समर छर जय पाई ॥  
 दो०—एहि सुख ते सत कोटि गुन पावहिं मातु अनंदु ।

भाइन्ह सहित बिआहि घर आए रघुकुलचंदु ॥३५०(क)॥

लोकरीति जननीं करहिं वर दुलहिनि सकुचाहिं ।

मोदु बिनोदु विलोकि बड़ रामु मनहिं मुसुकाहिं ॥३५०(ख)॥

देव पितर पूजे विधि नीकी । पूजीं सकल वासना जी की ॥  
 सबहि वंदि मागहिं वरदाना । भाइन्ह महित राम कल्याणा ॥  
 अंतरहित सुर आसिप देहीं । मुदित मातु अंचल भरि लेहीं ॥  
 भूपति बोलि चराती लीन्हे । जान वसन मनि भूपन दीन्हे ॥

आयमुपाहृ गच्छि उर गमहि । मुद्रित गण मव निज निज धामहि ॥  
 पुर नर नारि सकल पहिराण । धर धर वाजन लो वधाण ॥  
 जाचक जन जाचहि जोह जोह । प्रमुद्रित गउ देहि मोह सोह ॥  
 सेवक सकल वजनिआ नाना । पूरन किय दान मनमाना ॥  
 दो०—देहि अर्षाम जाहारि सब गावहि गुन गन राथ ।

तव गुर भूमुर सहित गृहं गवसु कान्ठ नरनाथ ॥ ३५१ ॥  
 जो वसिष्ठ अनुग्रामन दीन्दी । लोक वेद विधि पादर कीन्दी ॥  
 भूमुर धीर देखि सब रानी । पादर उठी भाग्य बड़ जानी ॥  
 पाय पत्रारि सकल अन्हवाण । पूजि भली विधि भूप जेवाण ॥  
 आदर दान प्रेम परिपाये । देन अर्षाम चले मन नोये ॥  
 बहु विधि कीन्दि गाथिमुन पूजा । नाथ मोहि मम धन्य न दूजा ॥  
 कीन्दि प्रसंसा भूपति सूर्ग । गनिन्ह सहित कीन्दि पराधूर्ग ॥  
 भानर भवन दीन्ह चर वास । मन जोगवत रह नृपु गनिवास ॥  
 पूजे गुर पद कमल बहोर्ग । कीन्दि विनय उर प्रीतिन थोर्ग ॥  
 दो०—बहुन्ह समेत इमार सब गनिन्ह सहित मदीसु ।

पुनि पुनि वंदत गुर चरन देन अर्षाम मुनीसु ॥ ३५२ ॥  
 विनय कीन्दि उर अनि अनुगारों । मुन संसदा गच्छि सब आरों ॥  
 नेगु मारि मुनिनायक कीन्दा । आपिगवाहु बहूत विधि दीन्दा ॥  
 उर धरि गमहि मीच समेता । इगपि कीन्ह गुर गवसु निकेता ॥  
 विप्रवधु सब सूष बोलाहे । तैल चारु भूपन पहिराहे ॥  
 बहुरि बोलाह मुआपिनि कीन्दी । नचि विचारि पहिरावनि दीन्दी ॥  
 नेगा नेग जोग सब नेदी । नचि अनुत्प भूपसनि देदी ॥

प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने । भूपति भली भौंति सनमाने ॥  
देव देखि रघुवीर विवाह । वरपि प्रसन्न प्रसंसि उछाह ॥

दो०—चले निसान वजाइ सुर निज निज पुर सुख पाइ ।

कहत परसपर राम जसु प्रेम न हृदयें समाइ ॥३५३॥

सब विधि सबहि समदि नरनाह । रहा हृदयें भरि पूरि उछाह ॥  
जहँ रनिवासु तहाँ पगु धारे । सहित बहूटिन्ह कुअँर निहारे ॥  
लिए गोद करि मोद समेता । को कहि सकइ भयउ सुखु जेता ॥  
बधू सप्रेम गोद वैठारीं । वार वार हियँ हरपि दुलारीं ॥  
देखि समाजु मुदित रनिवास । मव कें उर अनंद कियो वास ॥  
कहेउ भूप जिमि भयउ विवाह । सुनि सुनि हरषु होत सब काह ॥  
जनक राज गुन सीलु बडाई । प्रीति रीति संपदा सुहाई ॥  
बहुविधि भूप भाट जिमि वरनी । रानी सब प्रमुदित सुनि करनी ॥

दो०—सुतन्ह समेत नहाइ नृप वोलि विप्र गुर ग्याति ।

भोजन कीन्ह अनेक विधि घरी पंच गइ राति ॥३५४॥

मंगलगान करहि वर भामिनि । भैं सुखमूल मनोहर जामिनि ॥  
अँचइ पान सब काहँ पाए । सग सुगंध भूपित छवि छाए ॥  
रामहि देखि रजायसु पाई । निज निज भजन चले सिर नाई ॥  
प्रेमु प्रमोदु विनोदु बडाई । समउ ममाजु मनोहरताई ॥  
कहि न सकहिं मत सारद सेस । वेद त्रिरंचि महेस गनेस ॥  
मो मैं कहौं करन विधि वरनी । भूमिनागु मिर धरइ कि धरनी ॥  
नृप सब भौंति मवहि सनमानो । कहि मृदु वचन बोलाइ रानी ॥  
बधू लरिकनीं पर घर आइं । गाखेहु नयन पलक की नाइं ॥



दो०—लरिका श्रमित उनीद वस सयन करावहु जाइ ।

अम कहि गे विश्रामगृहँ राम चरन चितु लाइ ॥३५५॥

भूप वचन सुनि सहज सुहाए । जरित कनकमनि पलंग डसाए ॥

सुभग सुगंधि पय फेन समाना । कामल कलित सुपेतीं नाना ॥

उपवरहन वर वरनि न जाहीं । स्रग सुगंध मनिमंदिर माहीं ॥

रतनदीप मुठि चारु चँदोवा । कहत न वनइ जान जेहिं जोवा ॥

सेज रुचिर रचि राम उठाए । प्रेम समेत पलंग पौढ़ाए ॥

अग्या पुनि पुनि भाइन्ह दीन्ही । निज निज सेज सयन तिन्ह कीन्ही

देखि स्याम मृदु मंजुल गाता । कहहिं सप्रेम वचन सब माता ॥

मारग जात भयावनि भारी । केहि विधि तात ताड़का मारी ॥

दो०—घोर निसाचर विकट भट समर गनहिं नहिं काहु ।

मारे सहित सहाय किमि खल मारीच सुवाहु ॥३५६॥

मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारी । ईस अनेक करवरें टारी ॥

रखवारी करि दुहुँ भाई । गुरु प्रसाद सब विद्या पाई ॥

मुनितिय तरी लगत पग धूरी । कीरति रही भुवन भरि पूरी ॥

कमठ पीठि पवि कूट कठोरा । नृप समाज महँ सिव धनु तोरा ॥

विस्व विजय जसु जानकि पाई । आए भवन व्याहि सब भाई ॥

अमानुष तुम्हारे । केवल कौसिक कृपाँ सुधारे ॥

जनमु । रा । देखि त विधुवदन तुम्हारा ॥

दिन तुम्हहि बिनु देखें । ते विरंचि जनि पारहिं लेखें ॥

कहि बिनीत वर वैन ।

नीदबस नैन ॥३५७॥

नीदुँ बदन सोह सुठि लोना । मनहुँ साँझ सरसीरुह सोना ॥  
 घर घर करहिं जागरन नारीं । देहिं परसपर मंगल गारीं ॥  
 पुरी चिराजति राजति रजनी । रानीं कहहिं विलेखहु सजनी ॥  
 सुंदर बघुन्ह सासु लै सोई । फनिकन्ह जनु सिरमनि उर गोई ॥  
 प्रात पुनीत काल प्रभु जागे । अरुनचूड़ वर बोलन लागे ॥  
 बंदि मागधन्दि गुनगन गाए । पुरजन द्वार जोहारन आए ॥  
 बंदि विप्र सुर गुर पितु माता । पाइ असीस मुदित सब आता ॥  
 जननिन्ह सादर बदन निहारे । भूपति संग द्वार पगु धारे ॥  
 दो०—कोन्हि सौच सब सहज सुचि सरित पुनीत नहाइ ।

प्रातक्रिया करि तात पहिं आए चारिउ भाइ ॥३५८॥

### नवाह्नपारायण, तीसरा विश्राम

भूप विलोकि लिए उर लाई । बैठे हरपि रजायसु पाई ॥  
 देखि रामु सब सभा जुड़ानी । लोचन लाभ अवधि अनुमानी ॥  
 पुनि बसिष्ठु मुनि कौसिकु आए । सुभग आसनन्हि मुनि बैठाए ॥  
 सुतन्ह समेत पूजि पद लागे । निरखि रामु दोउ गुर अनुरागे ॥  
 कहहिं बसिष्ठु धरम इतिहासा । सुनहिं महीसु सहित रनिवासा ॥  
 मुनि मन अगम गाधिसुत करनी । मुदित बसिष्ठ विपुल विधि बरनी  
 बोले वामदेउ सब साँची । कीरति कलित लोक तिहुँ माची ॥  
 सुनि आनंदु भयउ सब काहू । राम लखन उर अधिक उछाहू ॥

दो०—मंगल मोद उछाह नित जाहिं दिवस एहि भाँति ।

उमगी अवध अनंद भरि अधिक अधिक अधिकाति ॥३५९॥

सुदिन सोधि कल कंकन छोरे । मंगल मोद विनोद न थोरे ॥  
 नित नव सुखु सुर देखि सिहाहीं । अवध जन्म जाचहिं विधि पाहीं ॥  
 विस्वामित्रु चलन नित चहहीं । राम सप्रेम विनय बस रहहीं ॥  
 दिन दिन सयगुन भूपति भाऊ । देखि सराह महामुनिराऊ ॥  
 मागत विदा राउ अनुरागे । सुतन्ह समेत ठाढ़ भे आगे ॥  
 नाथ सकल संपदा तुम्हारी । मैं सेवकु समेत सुत नारी ॥  
 करव सदा लरिकन्ह पर छोहू । दरसनु देत रहव मुनि मोहू ॥  
 अस कहि राउ सहित सुत रानी । परेउ चरन मुख आव न ी ॥  
 दीन्हि असीस विप्र बहु भाँती । चले न प्रीति रीति कहि जाती ॥  
 रामु सप्रेम संग सब भाई । आयसु पाइ फिरे पहुँचाई ॥

दो०—राम रूपु भूपति भगति व्याहु उछाहु अनंदु ।

जात सराहत मनहिं मन मुदित गाधिकुलचंदु ॥३६०॥

चामदेव रघुकुल गुर ग्यानी । बहुरि गाधिसुत । बखानी ॥  
 सुनि मुनि सुजसु मनहिं मन राऊ । बरनत आपन पुन्य प्रभाऊ ॥  
 बहुरे लोग रजायसु भयऊ । सुतन्ह समेत नृपति गृहँ गयऊ ॥  
 जहँ तहँ राम व्याहु सबु गावा । सुजसु पुनीत तिहँ छावा ॥  
 आए व्याहि रामु घर जब तें । बसइ अनंद अवध सब तव तें ॥  
 प्रभु विवाहँ जस भयउ उछाहू । सकहिं न बरनि गिरा अहि नाहू ॥  
 कविकुल जीवनु पावन जानी । राम सीय जसु मंगल खानी ॥  
 तेहि ते मैं कछु कहा बखानी । करन पुनीत हेतु निज बानी ॥

छं०—निज गिरा पावनि करन कारन राम जसु तुलसीं कख्यो ।

रघुवीर चरित अपार वारिधि पारु कवि कौनें लख्यो ॥

उपवीत श्याह उल्लाह मंगल मुनि जे मादर गावहीं ।  
 वैदेहि गम प्रमाद ते जन मर्वदा सुखु पावहीं ॥  
 सो०-मिय रघुवीर विवाह जे सप्रेम गावहिं मुनिहिं ।  
 तिन्ह कहुँ मटा उल्लाह मंगलायतन राम जसु ॥३६१॥

मासपारायण, वारहवाँ विश्राम



इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुपविध्वंमने  
 प्रथमः सोपानः समाप्तः ।  
 ( बालकाण्ड समाप्त )



## राम-भरत-मिलन



बरबस लिए उठाइ उर लाए कृपानिधान ।  
भरत राम की मिलनि लखि विसरे सबहि अपान ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

# श्रीरामचरितमानस

द्वितीय सोपान

अयोध्याकाण्ड

श्लोक

यस्याङ्गे च विभाति मूधरसुता देवापगा मस्तके  
भाले बालविधुर्गले च गर्भलं यस्योरसि व्यालराट् ।  
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा  
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशङ्करः पातु माम् ॥ १ ॥  
प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा न मम्ले वनवासदुःखतः ।  
मुखाम्बुजश्री रघुनन्दनस्य मे सदास्तु सामञ्जुलमङ्गलप्रदा ॥ २ ॥  
नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम् ।  
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥ ३ ॥  
दो०—श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।  
वरनउँ रघुवर विमल जसु जो दायकु फल चारि ॥  
जब तें रामु ब्याहि घर आए । नित नव मंगल मोद बधाए ॥  
भुवन चारिदस मूधर भारी । सुकृत मेघ बरपहिं सुख बारी ॥

रिधि सिधि संपति नदीं सुहाई । उमगि अवध अंबुधि कहँ आई ॥  
 मनिगन पुर नर नारि सुजाती । चि अमोल सुंदर सब भाँती ॥  
 कहि न जाइ कछु नगर विभूती । जनु एतनिअ विरंचि करतूती ॥  
 सबविधि सबपुर लोग सुखारी । रामचंद्र मुख चंदु निहारी ॥  
 मुदित मातु सब सखीं सहेली । फलित बिलोकि मनोरथ वेली ॥  
 राम रूपु गुन सीलु सुभाऊ । प्रमुदित होइ देखि सुनि राऊ ॥

दो०—सब कें उर अभिलाषु अस कहहिं मनाइ महेसु ।

आप अछत जुवराज पद रामहि देउ नरेसु ॥ १ ॥  
 एक समय सब सहित समाजा । राजसभाँ रघुराजु विराजा ॥  
 सकल सुकृत मूरति नरनाहू । र सुजसु सुनि अतिहि उछाहू ॥  
 नृप सब रहहिं कृपा अभिलार्पे । लोकप करहिं प्रीति रुख राखे ॥  
 तिभुवन तीनि काल जग माहीं । भूरिभाग दसरथ सम नाहीं ॥  
 मंगलमूल रामु सुत जासू । जो कछु कहिअ थोर सनु तासू ॥  
 रायँ सुभायँ मुकुरु कर लीन्हा । बदनु बिलोकि मुकुटु सम कीन्हा ॥  
 श्रवन समीप भए सित केसा । मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा ॥  
 नृप जुवराजु राम कहँ देहू । जीवन जनम लाहु किन लेहू ॥

दो०—यह विचारु उर आनि नृप सुदिनु सुअवसरु पाइ ।

प्रेम पुलकि तन मुदित मन गुरहि सुनायउ जाइ ॥ २ ॥  
 कहइ भुआलु सुनिअ मुनिनायक । भए राम सब विधि सब लायक ॥  
 सेवक सचिव सकल पुरवासी । जे हमारे अरि मित्र उदासी ॥  
 सबहिरामु प्रिय जेहि विधि मोही । प्रभु असीस जनु तनु धरि सोही ॥  
 विप्र सहित परिवार गोसाईं । करहिं छोहु सब रौरिहि ॥

जे गुर चरन रेनु सिर धरहीं। ते जनु सकल विभव बस करहीं ॥  
मोहि सम यहु अनुभयउ नदूजें। सबु पायउँ रज पावनि पूजें ॥  
अथ अभिलापु एकु मन मोरें। पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरें ॥  
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेह। कहेउ नरेस रजायसु देह ॥

दो०—राजन राउर नामु जसु सब अभिमत दातार ।

फल अनुगामी महिप मनि मन अभिलापु तुम्हार ॥ ३ ॥

सब विधि गुरु प्रसन्न जियँ जानी। बोलेउ राउ रहँसि मृदु बानी ॥  
नाथ रामु करिअहिं जुवराजू। कहिअ कृपा करि करिअ समाज ॥  
मोहि अछत यहु होइ उछाहू। लहहिं लोग सब लोचन लाहू ॥  
प्रभु प्रसाद सिव सबइ निवाहीं। यह लालसा एक मन माहीं ॥  
पुनि न सोच तनु रहउ कि जाऊ। जेहिं न होइ पाछें पछिताऊ ॥  
मुनि मुनि दसरथ बचन सुहाए। मंगल मोद मूल मन भाए ॥  
मुनु नृप जासु विमुख पछिताहीं। जासु भजन विनु जरनि न जाहीं ॥  
भयउ तुम्हार तनय सोइ स्वामी। रामु पुनीत प्रेम अनुगामी ॥

दो०—वेगि विलंबु न करिअ नृप साजिअ सबुइ समाजु ।

सुदिन सुमंगलु तबहिं जब रामु होहिं जुवराजु ॥ ४ ॥

मुदित महीपति मंदिर आए। सेवक सचिव सुमंशु बोलाए ॥  
कहि जय जीव सीस तिन्ह नाए। भूप सुमंगल बचन सुनाए ॥  
जौं पाँचहि मत लागै नीका। करहु हरपि हियँ रामहि टीका ॥  
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी। अभिमत बिरवँ परेउ जनु पानी ॥  
बिनती सचिव करहिं कर जोरी। जिअहु जगतपति बरिस करोरी ॥  
जग मंगल भल काजु बिचारा। वेगिअ नाथ न लाइअ बारा ॥



नृपहि मोदु सुनि सचिव सुभाषा । बढ़त बाँड़ जनु लही सुस ॥ ११

दो०—कहेउ भूप मुनिराज कर जोइ जोइ आयसु होइ ।

राम राज अभिषेक हित बेगि हु सोइ सोइ ॥ ५ ॥

हरषि मुनीस कहेउ मृदु बानी । आनहु सकल तीरथ पानी ॥  
 औषध मूल फूल फल पाना । कहे नाम गनि मंगल नाना ॥  
 चामर चरम बसन बहु भाँती । रोम पाट पट अगनित जाती ॥  
 मनिगन मंगल बस्तु अने । जो जग जोगु भूप अभिषेका ॥  
 वेद विदित कहि सकल विधाना । कहेउ रचहु पुर विविध विताना ॥  
 सफल रस पूगफल केरा । रोपहु बीधिन्ह पुर चहुँ फेरा ॥  
 रचहु मंजु मनि चौकें चारू । कहहु बनावन बेगि बजारू ॥  
 पूजहु गनपति गुर कुलदेवा । विधि करहु भूमिसुर सेवा ॥

दो०—ध्वज पताक तोरन कलस सजहु तुरग रथ नाग ।

सिरधरि मुनिवर बचन सबु निज निज काजहिं लाग ॥ ६ ॥

जो मुनीस जेहि आयसु दीन्हा । सो तेहिं काजु प्रथम जनु कीन्हा ॥  
 विप्र साधु सुर पूजत राजा । करत राम हित मंगल ॥  
 सुनत राम अभिषेक सुहावा । बाज गहागह अवध ॥  
 राम सीय तन सगुन जनाए । फरकहिं मंगल ॥  
 पुलकि सप्रेम परसपर कहहीं । भरत आगमहु ॥  
 भए बहुत दिन अति अवसेरी । सगुन प्रतीति ॥  
 भरत सरिस प्रिय को जग माहीं । इहइ सगुन ॥  
 रामहि बंधु सोच दिन राती । अंडन्हि कमठ ॥

दो०—एहि अवसर मंगल परम सुनि रहैसेउ रनिवासु ।

सोभत लखि विधु बढत जनु वारिधि वीचि विलासु ॥ ७ ॥

प्रथम जाइ जिन्ह बचन सुनाए । भूपन बसन भूरि तिन्ह पाए ॥

प्रेम पुलकि तन मन अनुरागीं । मंगल कलस सजन सब लागीं ॥

चौकें चारु सुमित्रां पूरी । मनिमय विविध भाँति अति रूरी ॥

आनंद मगन राम महतारी । दिए दान बहु विप्र हँकारी ॥

पूजीं ग्रामदेवि सुर नागा । कहेउ बहोरि देन बलिभागा ॥

जेहि विधि होइ राम कल्यानू । देहु दया करि सो बरदानू ॥

गावहिं मंगल कोकिलवयनीं । विधुवदनीं मृगसावकनयनीं ॥

दो०—राम राज अभिपेकु सुनि हियँ हरपे नर नारि ।

लगे सुमंगल सजन सब विधि अनुकूल विचारि ॥ ८ ॥

तब नरनाहँ बसिष्टु बोलाए । रामधाम सिख देन पठाए ॥

गुर आगमनु सुनत रघुनाथ । द्वार आइ पद नायउ माथा ॥

सादर अरघ दंड घर आने । सोरह भाँति पूजि सनमाने ॥

गहे चरन सिय सहित बहोरी । बोले रामु कमल कर जोरी ॥

सेवक सदन स्वामि आगमनू । मंगल मूल अमंगल दमनू ॥

तदपि उचित जनु बोलि सप्रीती । पठइअ काज नाथ असि नीती ॥

प्रभृता तजि प्रभु कीन्ह सनेह । भयउ पुनीत आजु यहु गेह ॥

आयसु होइ सो करीं गोसाईं । सेवकु लहइ स्वामि सेवकाईं ॥

दो०—सुनि सनेह साने बचन मुनि रघुवरहि प्रसंस ।

राम कस न तुम्ह कहहु अस हंस बंस अवतंस ॥ ९ ॥

वरनि राम गुन सीलु सुभाऊ । बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ ॥

भूप सजेउ अभिषेक समाजू । चाहत देन तुम्हहि जुवराजू ॥  
 राम करहु सब संजम आजू । जौं विधि कुसल निवाहै काजू ॥  
 गुरु सिख देइ राय पहिं गचऊ । राम हृदयँ अस विसमउ भयऊ ॥  
 जनमे एक संग सब भाई । भोजन सयन केलि लरिकाई ॥  
 करनवेध उपवीत विआहा । संग संग सब भए उछाहा ॥  
 विमल वंस यहु अनुचित एकू । बंधु विहाइ बड़ेहि अभिषेकू ॥  
 प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई । हरउ भगत मन कै कुटिलाई ॥

दो०—तेहि अवसर आए लखन मगन प्रेम आनंद ।

सनमाने प्रिय बचन कहि रघुकुल कैरव चंद ॥ १० ॥

बाजहिं बाजने विविध विधाना । पुर प्रमोदु नहिं जाइ बखाना ॥  
 भरत आगमनु सकल मनावहिं । आवहुँ ब्रेगि नयन फलु पावहिं ॥  
 हाट वाट घर गलौं अथाई । कहहिं परसपर लोग लोगाई ॥  
 कालि लगन भलि केतिक वारा । पूजिहि विधि अभिलाषु हमार ॥  
 कनक सिंघासन सीय समेता । बैठहिं रामु होइ चित चे ॥  
 सकल कहहिं कव होइहि काली । विघन मनावहिं देव कुचाली ॥  
 तिन्हहि सोहाइ न अवध बधावा । चोरहि चंदिनि राति न भावा ॥  
 सारद बोलि विनय सुर करहीं । वारहिं वार पाय लै परहीं ॥

दो०—विपति हमारि बिलोकि बड़ि मातु करिअ सोइ आजु ।

रामु जाहिं बन राजु तजि होइ सकल सुरकाजु ॥ ११ ॥

सुनि सुर विनय ठाढ़ि पछिताती । भइउँ सरोज विपिन हिमराती ॥  
 देखि देव पुनि कहहिं निहोरी । मातु तोहि नहिं थोरिउ खोरी ॥  
 विसमय हरप रहित रघुराऊ । तुम्ह जानहु सब राम प्रभाऊ ॥

जीव कर्म व्रम सुख दुख भारी । जाइअ अवध देव हित लागी ॥  
 बार बार गहि चरन मँकोची । चली विचारि विचुध मति पोची ॥  
 ऊँच निवासु नीचि करतूती । देखि न मकहिं पगइ विभूती ॥  
 आगिल काजु विचारि बहोरी । करिहहिं चाह कुसल कवि मोरी ॥  
 हरपि हृदयँ दमरथ पुर आई । जनु ग्रह दसा दृसइ दुखदाई ॥

दो०—नागु मंधरा मंदमति चेरी कँकड़ केरि ।

अजस पेटारी ताहि करि गई रिरा मति फेरि ॥ १२ ॥

दीख मंधरा नगरु वनावा । मंजुल मंगल वाज वधावा ॥  
 पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू । गम तिलकु सुनि भा उर दाहू ॥  
 करइ विचारु कुचुद्धि कुजाती । होइ अकाजु कवनि विधि राती ॥  
 देखि लागि मधु कुटिल किराती । जिमि गर्वँ तकइ लेउँ केहि भाँती  
 भरत मातु पहिं गइ विलखानी । का अनमनि हसि कह हँसि रानी ॥  
 ऊतरु देह न लेइ उमासू । नारि चरित करि ढारइ आँसू ॥  
 हँसि कह रानि गालु बड़ तोरें । दीन्ह लखन सिख अम मन मोरें ॥  
 तयहुँ न बोल चेरि बड़ि पापिनि । छाड़इ स्वाम कारि जनु साँपिनि ॥

दो०—सभय रानि कह कहमि किन कुसल रामु महिपालु ।

लखनु भरतु रिपुदमनु सुनि भा कुवरी उर सालु ॥ १३ ॥

कत सिख देइ हमहि कोउ माई । गालु मरग केहि कर बलु पाई ॥  
 रामहि छाड़ि कुसल केहि आजू । जेहि जनेसु देइ जुवराजू ॥  
 भयउ कौसिलहि विधि अति दाहिन । देखत गरव रहत उर नाहिन ॥  
 देखहु कस न जाइ सव सोभा । जो अवलोकि मोर मनु छोभा ॥  
 पूतु विदेस न सोचु तुम्हारें । जानति हहु बस नाहु हमारें ॥

नीद बहुत प्रिय सेज तुराई । लखहु न भूप कपट घतुराई ॥  
 सुनि प्रिय बचन मलिन मनु जानी । झुकी रानि अब रहु अरगानी ॥  
 पुनि अस कबहुँ कहसि घरफोरी । तब धरि जीभ कढ़ तोरी ॥

दो०—काने खोरे कूबरे कुटिल चाली जानि ।

तिय बिसेषि पुनि चेरि कहि भरतमातु मुसुकानि ॥ १४ ॥  
 प्रियवादिनि सिख दीन्हिउँ तोही । सपनेहुँ पर पु न मोही ॥  
 सुदिनु सुमंगल दायकु सोई । तोर कहा फुर जेहि दिन होई ॥  
 जेठ खामि सेवक लघु भाई । यह दिनकर कुल रीति सुहाई ॥  
 राम तिलकु जौँ साँचेहुँ काली । देउँ मागु मन भावत ली ॥  
 कौसल्या सम सब महतारी । रामहि सहज सुभायँ पिआरी ॥  
 सो पर करहिँ सनेहु बिसेषा । मैं करि प्रीति परी देखी ॥  
 जौँ विधि जनमु देइ करि छोहू । होहुँ राम सिय पूत तोहू ॥  
 प्राण तें अधिक रामु प्रिय मोरें । तिन्ह कें तिलक कस तोरें ॥

दो०—भरत सपथ तोहि सत्य कहु परिहरि कपट दुराउ ।

हरष समथ विसमउ करसि कारन मोहि सुनाउ ॥ १५ ॥  
 एकहिँ बार आस सब पूजी । अब कछु कहव जीभ करि दूजी ॥  
 फोरै जोगु कपारु अभागा । भलेउ कहत दुख रउरेहि लागा ॥  
 कहहिँ झूठि फुरि बात बनाई । ते प्रिय तुम्हहि करुइ मैं माई ॥  
 हमहुँ कहबि अब ठकुरसोहाती । नाहिँ त मौन रहब दिनु राती ॥  
 करि कुरूप विधि परबस कीन्हा । बवा सो लुनिअलहिअ जो दीन्हा ॥  
 कोउ नृप होउ हमहि का हानी । चेरि डि अब होब कि रानी ॥  
 रै जोगु सुभाउ हमारा । अनभल देखि न जाइ तुम्हारा ॥

ताते कलुक बात अनुमारी । छमिअ देवि बड़ि चूक हमारी ॥

दो०—गूढ कपट प्रिय वचन सुनि तीय अधरचुधि रानि ।

सुरमाया बस बैरिनिहि सुहृद जानि पतिआनि ॥ १६ ॥

मादर पुनि पुनि पूँछति ओही । सबरी गान मृगी जनु मोही ॥

तसि मति फिरी अहइ जसि भाबी । रहसी चेरि घात जनु फाबी ॥

तुम्ह पूँछहु में कहत डेराऊँ । धरेहु मोर घरफोरी नाऊँ ॥

मजि प्रतीति बहुविधि गड़ि छोली । अवध साइसाती तब बोली ॥

प्रिय सिय रामु कहा तुम्ह रानी । रामहि तुम्ह प्रिय सो फुरि बानी ॥

रहा प्रथम अब ने दिन बीते । समउ फिरें रिपु होहिं पिरीते ॥

भानु कमल कुल पोपनिहारा । त्रिनु जल जारि करइ सोइ छारा ॥

जरि तुम्हारि चह सवति उखारी । रूँधहु करि उपाउ वर बारी ॥

दो०—तुम्हहि न सोचु सोहाग बल निज बस जानहु राउ ।

मन मलीन मुह मीठ नृपु राउर सरल सुभाउ ॥ १७ ॥

चतुर गँभीर राम महतारी । बीचु पाइ निज बात सँवारी ॥

पठए भरतु भूप ननिअउरें । राम मातु मत जानव रउरें ॥

सेवहिं सकल सवति मोहि नीकें । गरबित भरत मातु बल पीकें ॥

मालु तुम्हार कौसिलहि माई । कपट चतुर नहिं होइ जनाई ॥

राजहि तुम्ह पर प्रेमु विसेपी । सवति सुभाउ सकइ नहिं देखी ॥

रचि प्रपंचु भूपहि अपनाई । राम तिलक हित लगन धराई ॥

यह कुल उचित राम कहँ टोका । सबहि सोहाइ मोहि सुठि नीका ॥

आगिलि बात समुझि डरु मोही । देउ दैउ फिरि सो फलु ओही ॥

दो०—रचि पचि कोटिक कुटिलपन कीन्हेसि कपट प्रबोधु।

कहिसि कथा सत सवति कै जेहि बिधि बाढ़ विरोधु ॥ १८ ॥  
भावी बस प्रतीति उर आई। पूँछ रानि पुनि सपथ देवाई ॥  
का पूँछहु तुम्ह अबहुँ न जाना। निज हित अनहित पसु पहिचाना ॥  
भयउ पाखु दिन सजत समाजू। तुम्ह पाई सुधि मोहि सन आजू ॥  
खाइअ पहिरिअ राज तुम्हारे। सत्य कहें नहिं दोषु हमारे ॥  
जौ असत्य कछु कहब बनाई। तौ बिधि देखि हमहि सजाई ॥  
रामहि तिलक कालि जौ भयऊ। तुम्ह कहुँ बिपति बीजु बिधि बयऊ  
रेख चाइ कहउँ बलु भाषी। भाँनि भइहु दूध कइ माखी ॥  
जौ सुत सहित करहु सेवकाई। तौ घर रहहु न आन उपाई ॥

दो०—कद्रुँ बिनतहि दीन्ह दुखु तुम्हहि कौसिलाँ देव।

भरतु बंदिगृह सेइहहिं लखनु राम के नेव ॥ १९ ॥  
कैकय सुता सुनत कटु बानी। कहि न सकइ कछु सहमि सुखानी  
तन पसेउ कदली जिमि काँपी। कुबरीं दसन जीभ तब बाँपी ॥  
कहि कहि कोटिक कपट कहानी। धीरजु धरहु प्रबोधिसि रानी ॥  
फिरा करसु प्रिय लागि कुचाली। बकिहि सराहइ मानि मराली ॥  
सुनु मंथरा बात फुरि तोरी। दहिनि आँ नित फरकइ मोरी ॥  
दिन प्रति देखउँ राति कुसपने। कहउँ न तोहि मोह बस अपने ॥  
काह करौं सखि स्रध सुभाऊ। दाहिन बाम न जानउँ ॥

दो०—अपनें चलत न आजु लागि अनभल ।हुक कीन्ह।

केहिं अघ एकहि बार ेहि दैअँ दुसह दुखु दीन्ह ॥ २० ॥  
नैहर जनमु भरव बरु ई। जिअत न करवि सवति सेवकाई ॥

अरि बस दैउ जिआवत जाही । भरनु नीक तेहि जीवन चाही ॥  
 दीन बचन कह बहुविधि रानी । सुनि कुवरीं तियमाया ठानी ॥  
 अस कस कहहु मानि मन ऊना । मुखु सोहागु तुम्ह कहँ दिन दूना  
 जेहि राउर अति अनभल ताका । सोइ पाइहि यहु फलु परिपाका ॥  
 जब तें कुमत सुना मैं स्वामिनि । भूख न वासर नीद न जामिनि ॥  
 पूँछेउँ गुनिन्ह रेख तिन्ह खाँची । भरत भुआल होहि यह साँची ॥  
 भामिनि करहु त कहीं उपाऊ । है तुम्हरां सेवा बस राऊ ॥  
 दो०—परउँ कूप तुअ बचन पर सकउँ पूत पति त्यागि ।

कहसि मोर दुखु देखि बड़ कस न करव हित लागि ॥ २१ ॥

कुवरीं करि कबुली कैकई । कपट छुरी उर पाहन टेई ॥  
 लखइ न रानि निकट दुखु कैसैं । चरइ हरित तिन बलि पसु जैसैं ॥  
 सुनत बात मृदु अंत कठोरी । देति मनहुँ मधु माहुर घोरी ॥  
 कहइ चेरि सुधि अहइ कि नार्हीं । स्वामिनि कहिहु कथा मोहि पार्हीं ॥  
 दुइ धरदान भूप सन थातो । मागहु आजु जुड़ावहु छातो ॥  
 सुतहि राजु रामहि बनवास । देहु लेहु सब सबति हुलास ॥  
 भूपति राम सपथ जब करई । तव मागेहु जेहि बचनु न टरई ॥  
 होइ अकाजु आजु निसि वीतें । बचनु मोर प्रिय मानेहु जी तें ॥

दो०—बड़ कुधातु करि पातकिनि कहेसि कोपगृहँ जाहु ।

काजु सँवारेहु सजग सबु सहसा जनि पतिआहु ॥ २२ ॥

कुवरिहि रानि प्रानप्रिय जानी । बार बार बड़ि बुद्धि बखानी ॥  
 तोहि सम हित न मोर संसारा । बहे जात कह भइसि अधारा ॥  
 जौं विधि पुरव मनोरथु काली । करौं तोहि चख पूतरि आली ॥



दलकि उठेउ सुनि हृदउ कठोरु । जनु छुइ गयउ पाक वरतोरु ॥  
 ऐसिउ पीर विहसि तेहिं जोई । चोर नारि जिमि प्रगटि न रोई ॥  
 लखहिं न भूप कपट चतुराई । कोटि कुटिल मनि गुरू पढ़ाई ॥  
 जद्यपि नीति निपुन नरनाह । नारिचरित जलनिधि अवगाह ॥  
 कपट सनेहु बड़ाइ बहोरी । बोली विहसि नयन मुहु मोरी ॥

तो०—मागु मागु पै कहहु पिय कबहुँ न देहु न लेहु ।

देन कहेहु वरदान दुइ तेउ पावत संदेहु ॥ २७ ॥

जानेउँ मरमु राउ हँसि कहई । तुम्हहि कोहाव परम प्रिय अहई ॥  
 थाती राखि न मागिहु काऊ । विसरि गयउ मोहि भोर सुभाऊ ॥  
 अठेहुँ हमहि दोषु जनि देहु । दुइ कै चारि मागि महु लेहु ॥  
 रघुकुल रीति सदा चलि आई । प्रान जाहुँ वरु वचनु न जाई ॥  
 नहिं असत्य सम पातक पुंजा । गिरिसम होहिं कि कोटिक गुंजा ॥  
 सत्यमूल सब सुकृत सुहाए । वेद पुरान विदित मनु गाए ॥  
 तेहि पर राम सपथ करि आई । सुकृत सनेह अवधि रघुराई ॥  
 बात दड़ाइ कुमति हँसि बोली । कुमत कुविहग कुलह जनु खोली ॥

तो०—भूप मनोरथ सुभग वनु सुख सुविहंग समाजु ।

भिल्लिनि जिमि छाड़न चहति वचनु भयंकरु वाजु ॥ २८ ॥

मासपारायण, तेरहवाँ विश्राम

सुनहु प्रानप्रिय भावत जी का । देहु एक वर भरतहि टीका ॥  
 मागउँ दूसर वर कर जोरी । पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी ॥  
 नापन त्रेप विसेपि उदासी । चाँदह वजिस रामु वनवासी ॥

मुनि मृदु वचन भूप हिये सोकू । मसि कर छुअत विकल जिमि कोकू  
 गपउ सहमि नहिं कलु कहि आवा । जनु सचान वन झपटेउ लावा ॥  
 विवरन भयउ निपट नरपालू । दामिनि हनेउ मनहुँ तरु तापू ॥  
 माथें हाथ मूदि दोउ लोचन । तनु धरिसोनु लाग जनु सोचन ॥  
 मोर मनोरथु सुरतरु फूला । फरव करिनि जिमि हतेउ ममूला ॥  
 अवध उजारि कीन्हि कैकेई । दीन्हिसि अचल विपति कैनेई ॥  
 दो०—कवनें अवसर का भयउ गयउं नारि विम्वस ।

जोगसिद्धि फल समय जिमि जतिहि अविद्या नास ॥ २९ ॥

एहि विधि राउ मनहिं मन झाँखा । देखि कुभाँति कुमति मन माखा ॥  
 भरतु कि राउर पूत न होही । आनेहु मोल बेमाहि कि मोही ॥  
 जो सुनि सरु अस लाग तुम्हारे । काहे न बोलहु वचनु संभारे ॥  
 देहु उतरु अनु करहु कि नाहीं । सत्यसंध तुम्ह रघुकुल माहीं ॥  
 देन कहेहु अब जनि वरु देह । तजहु सत्य जग अपजसु लेह ॥  
 मत्य सराहि कहेहु वरु देना । जानेहु लेइहि मागि चवेना ॥  
 मित्रि दधीचि बलि जो कलु भाषा । तनु धनु तजेउ वचन पनु राखा ॥  
 अति कहु वचन कहति कैकेई । मानहुँ लोन जरे पर देई ॥  
 दो०—धरम धुरंधर धीर धरि नयन उघारे रायँ ।

सिरु घुनि लीन्हि उसास असि मारेसि मोहि कुठायँ ॥ ३० ॥

आगें दीखि जरत रिस भारी । मनहुँ रोष तरवारि उघारी ॥  
 मूठि कुबुद्धि धार निठुराई । धरी कूवरी सान बनाई ॥  
 लखी महीप कराल कठोरा । सत्य कि जीवनु लेइहि मोरा ॥  
 बोले राउ कठिन करि छाती । बानी सचिनय तासु मोहाती ॥

प्रियावचन कस सि कुभाँती । भीर प्रतीति प्रीति रि हाँती ॥  
 मोरें भरतु रामु दुइ आँखी । सत्य कहउँ करि संकरु साखी ॥  
 अवसि दूतु मैं पठइव ता । ऐहहिं बेगि सुनत दोउ भ्राता ॥  
 सुदिन सोधि सवु जु सजाई । देउँ भरत कहूँ राजु बजाई ॥

दो०—लोभु न रामहि राजु कर बहुत भरत पर प्रीति ।

मैं बड़ छोट विचारि जियँ करत रहेउँ नृपनीति ॥ ३१ ॥

राम सपथ सत कहउँ सुभाऊ । राममातु कछु कहेउ न काऊ ॥  
 मैं सवु कीन्ह तोहि विनु पूँछें । तेहि तें परेउ मनोरथु छूँछें ॥  
 रिस परिहरु अब मंगल साजू । कछु दिन गएँ भरत जुवराजू ॥  
 एकहि वात मोहि दुखु लागा । वर दूसर असमंजस ॥  
 अजहूँ हृदउ जरत तेहि आँचा । रिस परिहास कि साँचेहुँ साँचा ॥  
 कहु तजि रोषु राम अपराधू । सवु कोउ कहइ रामु सुठि साधू ॥  
 तुहूँ सराहसि करसि सनेह । अब सुनि मोहि भयउ संदेह ॥  
 जासु सुभाउ अरिहि अनुकूला । सो किमि करिहि मातु प्रतिकूला ॥

दो०—प्रिया हास रिस परिहरहि मागु विचारि विवेकु ।

जेहिं देखौँ अब नयन भरि भरत राज अभिषेकु ॥ ३२ ॥

जिए मीन वरु वारि विहीना । मनि विनु फनि जिए दुख दीना  
 कहउँ सुभाउ न छलु मन माहीं । जीवनु मोर राम विनु नाहीं ॥  
 समुझि देखु जियँ प्रिया प्रवीना । जीवनु राम दरस आधीना ॥  
 सुनि मृदु वचन कुमति अति जरई । मनहुँ अनल आहुति घृत परई ॥  
 कहइ करहु किन कोटि उपाया । इहाँ न लागिहि राउरि माया ॥  
 देहु कि लेहु अजसु करि नाहीं । मोहि न बहुत प्रपंच सोहाहीं ॥

राघु साधु तुम्ह साधु सयाने । राममातु भलि सब पहिचाने ॥  
जस कौसिलाँ मोर भल ताका । तस फलु उन्हहि देउँ करि साका ॥

दो०—होत प्रातु मुनिवेष धरि जौं न राघु बन जाहिं ।

मोर भरनु राउर अजस नृप समुझिअ मन माहिं ॥ ३३ ॥

अस कहि कुटिल भई उठि, ठाढ़ी । गानहुँ रोप तरंगिनि वाढ़ी ॥  
पाप पहार प्रगट भइ सोई । भरी क्रोध जल जाइ न जाई ॥  
दोउ वर कूल कठिन हठ धारा । भवँर कूवरी वचन प्रचारा ॥  
ढाहत भूपरूप तरु मूला । चलो विपति वारिधि अनुकूला ॥  
लखी नरेस बात फुरि साँची । तिय मिस भीचु सीस पर नाची ॥  
गहि पद विनय कीन्ह बैठारी । जनि दिनकर कुल होसि कुठारी ॥  
मागु माथ अवहीं देउँ तोही । राम विरहँ जनि मारसि मोही ॥  
राखु राम कहुँ जेहि तेहि भाँती । नाहिं त जरिहि जनम भरि छाती ॥

दो०—देखी ब्याधि असाध नृपु परेउ धरनि धुनि माथ ।

कहत परम आरत वचन राम राम रघुनाथ ॥ ३४ ॥

ब्याकुल राउ सिथिल सब गाता । करिनि कलपतरु मनहुँ निपाता ॥  
कंठु सख मुख आव न बानी । जनु पाठीनु दीन विनु पानी ॥  
पुनि कह कटु कठोर कैकेई । मनहुँ घाय महुँ माहुर देई ॥  
जौं अंतहुँ अस करतबु रहेऊ । मागु मागु तुम्ह केहिँ बल कहेऊ ॥  
दुइ कि होइ एक समय भुआला । हैसब ठठाइ फुलाउव गाला ॥  
दानि कहाउव अरु कृपनाई । होइ कि खेम कुसल रौताई ॥  
छाड़हु वचनु कि धीरजु धरहु । जनि अबला जिमि करुना करहु ॥  
तनु तिय तनय धामु धनु धरनी । सत्यसंध फहुँ उन सम चरनी ॥

प्रियाम नन कर फट्टिय कुसौनी । सीर प्रनीनि प्रीनि करि होनी ॥  
 सोरं समु शम्पु दुष्ट शौखी । समु फट्टे करि संकरु सामी ॥  
 अवीर दुनु ये पट्टव्य प्राणा । पेट्टिं बेगि मून दोट प्राणा ॥  
 सुदिन सोधि समु शानु शजाई । देई समु फट्टे शानु शजाई ॥  
 दो० शोमु न शयादि शानु कर भट्टम भगव पर प्रीनि ।

ये मरु शोद विचारि जियं फलन संदेई नृपनीनि ॥ ३१ ॥

सम समथ मन फट्टे सुजाऊ । शसयावु फट्टे फट्टे न फाऊ ॥  
 ये समु फीरद मोदि विनु पूछे । मोदि ये परेद मनोरमु छुछे ॥  
 मिय परिदरु अब संसद सावु । फट्टे दिन शपुं शन नृपराज ॥  
 पट्टदि पाव सोदि दुनु व्यासा । पर दुसर अरामंजय माया ॥  
 शजाई इट्टे जमन मोदि शौना । मिय परिदरु कि सोथेछुं सोना ॥  
 फट्टे नीज शेषु सम अपमानु । समु फोट्टे फट्टे समु सुदि मावु ॥  
 सुछे सरादमि फरमि मनोद । अब गुनि मोदि भयद संदेद ॥  
 नाम सुवाड अरिदि अमृऊआ । सो विमि परिदि मात प्रीन ऊआ ॥

दो० प्रिया दाय मिय परिदरुदि शामु विचारि विवेक ।

मोदि देवो अब भयन परि भगव राज अभिषेक ॥ ३२ ॥

जिणे सीन अरु पारि पिहोना । सोनि विनु पतिनकु जिणे दुखहीना  
 फट्टे सुवाड न छुदु मन साही । जीवनु सोर सम विनु नाही ॥  
 समुनिदेवु जिणे प्रिया प्रीनीना । जीवनु सम दुख्य अपधीना ॥  
 सुनिमुद पवन फरपानि अनि जस्टे । मनछुं अनद आछुनि पून परष्टे ॥  
 फट्टे फरुदु विन फोट्टे उपाया । इहो न व्यापदि शउरि माया ॥  
 देदु कि लेदु न नमु पारि नाही । मोदि न पट्टेन शपंन मोहाही ॥

रामु साधु तुम्ह साधु सयाने । राममातु भलि सब पहिचाने ॥  
जस कौसिलाँ मोर भल ताका । तस फलु उन्दहि देउँ करि साका ॥

दो०—होत प्रातु मुनिवेष धरि जाँ न रामु वन जाहिं ।

मोर मरनु राउर अजस नृप समुझिअ मन माहिं ॥ ३३ ॥

अस कहि कुटिल भई उठि, ठाढ़ी । गानहुँ रोप तरंगिनि चाढ़ी ॥  
पाप पहार प्रगट भइ सोई । भरी क्रोध जल जाइ न जाँई ॥  
दोउ वर कूल कठिन हठ धारा । भवँर कृपरी वचन प्रचारा ॥  
ढाहत भूपरूप तरु मूला । चलो विपति वारिधि अनुकूला ॥  
लखी नरैस बात फुरि साँची । तिय मिस मोचुसीस पर नाची ॥  
गहि पद विनय कीन्ह वैठारी । जनि दिनकर कुल होसि कुठारी ॥  
मागु माथ अवहीं देउँ तोही । राम विरहँ जनि मारसि मोही ॥  
राखु राम कहँ जेहि तेहि भाँती । नाहिं त जरिहि जनम भरि छाती ॥

दो०—देखी ब्याधि असाध नृपु परेउ धरनि धुनि माथ ।

कहत परम आरत वचन राम राम रघुनाथ ॥ ३४ ॥

ब्याकुल राउ सिथिल सब गाता । करिनि कलपतरु मनहुँ निपाता  
कंठु सख मुख आव न वानी । जनु पाठीनु दीन विनु पानी ॥  
पुनि कह कहु कठोर कैकेई । मनहुँ घाय महुँ माहुर देई ॥  
जाँ अंतहुँ अस करतवु रहँऊ । मागु मागु तुम्ह केहि बल कहेऊ ॥  
दुइ कि होइ एक समय भुआला । हँसव ठठाइ फुलाउव गाला ॥  
दानि कहाउव अरु कृपनाई । होइ कि खेम कुसल रौताई ॥  
छाड़हु वचनु कि धीरजु धरहु । जनि अबला जिमि करुना करहु ॥  
तनु तिय तनय धामु धनु धरनी । सत्यसंध कहँ वृन सम बरनी ॥

प्रिया वचन सि कुभाँती । भीर प्रतीति प्रीति रि हाँती ॥  
 मोरें भरतु रामु दुइ ॥ १ ॥ सत्य कहउँ करि संकरु सारखी ॥  
 अवसि दूतु मैं पठइव ता । ऐहहिं बेगि सुनत दोउ भ्राता ॥  
 सुदिन सोधि सबु साजु सजाई । देउँ भरत कहूँ राजु वजाई ॥  
 दो०—लोभु न रामहि राजु कर बहुत भरत पर प्रीति ।

मैं बड़ छोट बिचारि जियँ करत रहेउँ नृपनीति ॥ ३१ ॥

राम सपथ सत कहउँ सुभाऊ । राममातु कळु कहेउ न काऊ ॥  
 मैं सबु कीन्ह तोहि विनु पूँछें । तेहि तें परेउ मनोरथु छूँछें ॥  
 रिस परिहरु अब मंगल साजू । कळु दिन गएँ भरत जुवराजू ॥  
 एकहि वात मोहि दुखु लागा । वर दूसर असमंजस मागा ॥  
 अजहूँ हृदउ जरत तेहि आँचा । रिस परिहास कि साँचेहुँ साँचा ॥  
 कहु तजि रोषु राम अपराधू । सबु कोउ कहइ रामु सुठि साधू ॥  
 तुहूँ सराहसि करसि सनेहू । अब सुनि मोहि भयउ संदेहू ॥  
 जासु सुभाउ अरिहि अनुकूला । सो किमि करिहि मातु प्रतिकूला ॥

दो०—प्रिया हास रिस परिहरहि मागु बिचारि विवेकु ।

जेहिं देखौँ अब नयन भरि भरत राज अभिषेकु ॥ ३२ ॥

जिए मीन वरु वारि विहीना । मनि विनु फनि जिए दुख दीना  
 कहउँ सुभाउ न छलु मन माहीं । जीवनु मोर राम विनु नाहीं ॥  
 समुझि देखु जियँ प्रिया प्रवीना । जीवनु राम दरस आधीना ॥  
 सुनि मृदु वचन कुमति अति जरई । मनहुँ अनल आहुति घृत परई ॥  
 कहइ करहु किन कोटि उपाया । इहाँ न लागिहि राउरि माया ॥  
 देइ कि लेहु अजसु करि नाहीं । मोहि न बहुत प्रपंच सोहाहीं ॥

पछिले पहर भूपु नित जागा । आजु हमहि बड़ अचरजु लागा ॥  
जाहु सुमंत्र जगावहु जाई । कीजिअ काजु रजायसु पाई ॥  
गए सुमंत्रु तव राउर माहीं । देखि भयावन जात डेराहीं ॥  
धाइ खाइ जनु जाइ न हेरा । मानहुँ विपति विपाद बसेरा ॥  
पूछें कोउ न ऊतरु देई । गए जेहिं भवन भूप कैंकेई ॥  
कहि जय जीव बैठ सिरु नाई । देखि भूप गति गयउ सुखाई ॥  
सोच विकल विवरन महि परेऊ । मानहुँ कमल मूलु परिहरेऊ ॥  
सचिउ सभित सकइ नहिं पूँछी । बोली असुभ भरी सुभ छुछी ॥  
दो०—परी न राजहि नीद निसि हेतु जान जगदीसु ।

रामु रामु रटि भोरु किय कहइ न मरमु महीसु ॥ ३८ ॥

आनहु रामहि बेगि बोलाई । समाचार तव पूँछेहु आई ॥  
चलेउ सुमंत्रु राय रुख जानी । लखी कुचालि कीन्हि कछु रानी ॥  
सोच विकल मग परइ न पाऊ । रामहि बोलि कहिहि काराऊ ॥  
उर धरि धीरजु गयउ दुआरें । पूँछहिं सकल देखि मनु मारें ॥  
समाधानु करि सो सबही का । गयउ जहाँ दिनकर कुल टीका ॥  
राम सुमंत्रहि आवत देखा । आदरु कीन्ह पिता सम लेखा ॥  
निरखि बदनु कहि भूप रजाई । रघुकुलदीपहि चलेउ लेवाई ॥  
रामु कुभाँति सचिव सँग जाहीं । देखि लोग जहँ तहँ विलखाहीं ॥  
दो०—जाइ दीख रघुवंसमनि नरपति निपट कुसाजु ।

सहमि परेउ लखि सिंघिनिहि मनहुँ बृद्ध गजराजु ॥ ३९ ॥

सुखहिं अधर जरइ सवु अंगू । मनहुँ दीन मनिहीन भुअंगू ॥  
सरुप समीप दीखि कैंकेई । मानहुँ मीचु घरीं गनि लेई ॥



दो०—मरम बचन सुनि राउ कह कहु कछु दोषु न तोर ।

लागेउ तोहि पिसाच जिमि कालु कहावत ेर ॥ ३५ ॥

चहत न भरत भूपतहि भोरें । विधि बस मति बसी जिय तोरें ॥  
 सो सबु मोर पाप परिनामू । भयउ कुठाहर जेहिं विधि बामू ॥  
 सुबस बसिहि फिरि अवध सुहाई । सब न ध राम प्र ताई ॥  
 करिहहिं भाइ सकल सेवकाई । होइहि तिहुँ पुर राम बड़ाई ॥  
 तोर कलंकु मोर पछिताऊ । मुएहुँ न मिटिहि न जाइहि ॥  
 अव तोहि नीक लाग करु सोई । लोचन ओट बैठु मुहु ेई ॥  
 जब लगि जिऔं कहउँ कर जोरी । तब लगि जनि ु कहसि बहोरी  
 फिरि पछितैहसि अंत अभागी । मारसि गाइ नहारू लागी ॥

दो०—परेउ राउ कहि कोटि विधि काहे करसि निदानु ।

कपट सयानि न कहति कछु जागति मनहुँ मसा ॥ ३६ ॥

राम राम रट बिकल भुआलू । जनु बिनु पं बिहंग बेहालू ॥  
 हृदयँ मनाव भोरु जनि होई । रामहि जाइ कहै जनि कोई ॥  
 उदउ करहु जनि रबि रघुकुल गुर । अवध विलोकि सूल होइहि उर ॥  
 भूप प्रीति कैकड़ कठिनाई । उभय अवधि विधि रची वनाई ॥  
 बिलपत नृपहि भयउ भिनुसारा । बीना वेनु संख धुनि द्वारा ॥  
 पढ़हिं भाट गुन गावहिं गायक । सुनत नृपहि जनु लागहिं सायक ॥  
 मंगल सकल सोहाहिं न कैसैं । सहगामिनिहि विभूषन जैसें ॥  
 तेहि निसि नीद परी नहिं काहू । राम दरस लालसा उछाहू ॥

दो०—द्वार भीर सेवक सचिव कहहिं उदित रबि देखि ।

जागेउ अजहुँ न अवधपति कारनु कवनु विसेषि ॥ ३७ ॥

अंय एक दुखु मोहि चिसेपी । निपट विकल नरनायकु देखी ॥  
 योरिहिं बत्त पितहि दुख भारी । होति प्रतीति न मोहि महतारी ॥  
 राउ धीर गुन उदधि अगाधु । भा मोहिं तें कछु बड़ अपराधु ॥  
 जातें मोहि न कहत कछु राऊ । मोरि सपथ तोहि कहहु सतिभाऊ ॥  
 दो०—सहज सरल रघुवर वचन कुमति कुटिल करि जान ।

चलइ जाँक जल बक्रगति जद्यपि सलिलु समान ॥ ४२ ॥  
 गहसी रानि राम स्व पाई । बोली कपट सनेहु जनाई ॥  
 मपथ तुम्हार भरत कै आना । हेतु न दूसर में कछु जाना ॥  
 तुम्ह अपराध जोगु नहिं ताता । जननी जनक बंधु सुखदाता ॥  
 राम सत्य सयु जो कछु कहहू । तुम्ह पितु मातु वचन रत अहहू ॥  
 पितहि बुझाइ कहहु बलि सोई । चौथेपन जेहिं अजमु न होई ॥  
 तुम्ह सम सुअन सुकृत जेहिं दीन्हे । उचित न तासु निरादरु कीन्हे ॥  
 लागहिं कुमुख वचन सुभ कैसे । मगहँ गयादिक तीरथ जैसे ॥  
 रामहि मातु वचन सब भाए । जिमि सुरसरि गत सलिल सुहाए ॥  
 दो०—गइ मुरुछा रामहि सुमिरि नृप फिरि कावट लीन्ह ।

सचिव राम आगमन कहि विनय समय सम कीन्ह ॥ ४३ ॥

अवनिप अकनि रामु पगु धारे । धरि धीग्जु तव नयन उधारे ॥  
 सचिवँ सँभारि राउ बैठारे । चरन परत नृप रामु निहारे ॥  
 लिए सनेह विकल उर लाई । गै मनि मनहुँ फनिक फिरि पाई ॥  
 रामहि चितइ रहेउ नरनाहू । चला बिलोचन चारि प्रवाहू ॥  
 सोक विवस कछु कहै न पारा । हृदयँ लगावत चारहिं चारा ॥  
 विधिदि मनाव राउ मन माहीं । जेहिं रघुनाथ न कानन जाहीं ॥ ३

सुमिरि महेसहि कहइ निहोरी । बिनती सुनहु सदासिव मोरी ॥  
 आसुतोष तुम्ह अवढर दानी । आरति हरहु दीन जनु जानी ॥  
 दो०—तुम्ह प्रेरक सब के हृदयँ सो मति रामहि देहु ।

बचनु मोर तजि रहहिं घर परिहरि सीलु सनेहु ॥ ४४ ॥

अजसु होउ जग सुजसु नसाऊ । नरक परौं वरु सुरपुरु जाऊ ॥  
 सब दुख दुसह सहावहु मोही । लोचन ओट रामु जनि होंही ॥  
 अस मन गुनइ राउ नहिं बोला । पीपर पात सरिस मनु डोला ॥  
 रघुपति पितहि प्रेमवस जानी । पुनि कछु कहिहि मातु अनुमानी  
 देस काल अवसर अनुसारी । बोले बचन विनीत विचारी ॥  
 तात कहउँ कछु करउँ डिठाई । अनुचितु छमव जानि लरिकाई ॥  
 अति लघु बात लागि दुखु पावा । काहुँ न मोहि कहि प्रथम जनावा ॥  
 देखि गोसाईं हि पूँछिउँ माता । सुनि प्रसंगु भए सीतल गाता ॥  
 दो०—मंगल समय सनेह वस सोच परिहरिअ तात ।

आयसु देइअ हरषि हियँ कहि पुलकै प्रभु गात ॥ ४५ ॥

धन्य जनसु जगतीतल तासु । पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासु ॥  
 चारि पदारथ करतल ताके । प्रिय पितु मातु प्रान सम जाके ॥  
 आयसु पालि जनम फलु पाई । ऐहउँ बेगिहिं होउ रजाई ॥  
 विदा मातु सन आवउँ मार्गी । चलिहउँ वनहि बहुरि पग लागी ॥  
 अस कहि राम गवनु तव कीन्हा । भूप शोक वस उतरु न दीन्हा ॥  
 नगर व्यापि गइ वात सुतीछी । छुअत चढ़ी जनु सब तन वीछी ॥  
 सुनि भए विकल सकल नर नारी । बेलि विटप जिमि देखि दवारी ॥  
 जो जहँ सुनइ धुनइ सिरु सोई । बड़ विषादु नहिं धीरजु होई ॥

दो०—मुख सुखाहिं लोचन स्रवहिं सोकु न हृदयँ समाइ ।

मनहुँ करुन रस कटकई उतरी अवध वजाइ ॥ ४६ ॥

मिलेहि माझ विधि वात बेगारी । जहँ तहँ देहिं कैकइहि गारी ॥

एहि पापिनिहि वृद्धि का परेऊ । छाइ भवन पर पावकु धरेऊ ॥

निज कर नयन काढ़ि चह दीखा । डारि सुधा विपु चाहत चीखा ॥

कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी । भइ रघुवंस वेनु बन आगी ॥

पालव बैठि पेड़ एहिं काटा । सुख महुँ सोक ठाडु धरि ठाटा ॥

सदा रामु एहि प्रान समाना । कारन कवन कुटिलपनु ठाना ॥

सत्य कहहिं कवि नारि सुभाऊ । सब विधिअगहु अगाध दुराऊ ॥

निज प्रतिविंबु बरुकु गहि जाई । जानि न जाइ नारि गति भाई ॥

दो०—काह न पावकु जारि सक का न समुद्र समाइ ।

का न करै अचला प्रबल केहि जग कालु न खाइ ॥ ४७ ॥

का सुनाइ विधि काह सुनावा । का देखाइ चह काह देखावा ॥

एक कहहिं भल भूपन कीन्हा । बरु विचारि नहिं कुमतिहि दीन्हा ॥

जो हठि भयउ सकल दुख भाजनु । अचला विवस ग्यानु गुनु गा जनु ॥

एक धरम परमिति पहिचाने । नृपहि दोसु नहिं देहिं सयाने ॥

सिवि दधीचि हरिचंद कहानी । एक एक सन कहहिं बखानो ॥

एक भरत कर संमत कहहीं । एक उदास भायँ सुनि रहहीं ॥

फान सूदि कर रद गहि जीहा । एक कहहिं यह बात अलीहा ॥

सुकृत जाहिं अस कहत तुम्हारे । रामु भरत कहुँ प्रानपिआरे ॥

दो०—चंदु चवै बरु अनल कन सुधा होइ त्रिपतूल ।

सपनेहुँ कबहुँ न करहिं किछु भरतु राम प्रतिकूल ॥ ४८ ॥

सुमिरि महेसहि कहइ निहोरी । विनती सुनहु सदासिव मोरी ॥  
 आसुतोष तुम्ह अवढर दानी । आरति हरहु दीन जनु जानी ॥  
 दो०—तुम्ह प्रेरक सब के हृदयँ सो मति र हि देहु ।

बचनु सोर तजि रहहिं धर परिहरि सीलु सनेहु ॥ ४४ ॥

अजसु होउ जग सुजसु नसाऊ । नरक परीं वरु सुरपुरु जाऊ ॥  
 सब दुख दुसह सहावहु मोही । लोचन ओट रामु जनि होंही ॥  
 अस मन गुनइ राउ नहिं बोला । पीपर पात सरिस मनु डोला ॥  
 रघुपति पितहि प्रेमवस जानी । पुनि कलु कहिहि मातु अनुमानी  
 देस काल अवसर अनुसारी । बोले बचन विनीत विचारी ॥  
 तात कहउँ कलु करउँ दिठार्ई । अनुचितु छमव जानि लरिकाई ॥  
 अतिलघु बात लागि दुखु पावा । काहुँ न मोहि कहि प्रथम जनावा ॥  
 देखि गोसाईं हि पूँछिउँ माता । सुनि प्रसंगु भए सीतल गाता ॥  
 दो०—मंगल समय सनेह वस सोच परिहरिअ तात ।

आयसु देइअ हरपि हियँ कहि पुलके प्रभु गात ॥ ४५ ॥

धन्य जनमु जगतीतल तासु । पितहि प्रसादु चरित सुनि जासु ॥  
 चारि पदारथ करतल ताके । प्रिय पितु मातु प्रान सम जाके ॥  
 आयसु पालि जनम फलु पाई । ऐहउँ वेगिहिं होउ रजाई ॥  
 विदा मातु मन आवउँ मार्गी । चलिहउँ वनहि बहुरि पग लागी ॥  
 अस कहि राम गवनु तव कीन्हा । भूप सोक वस उतरु न दीन्हा ॥  
 नगर व्यापि गइ वान सुनीछी । छुअत चढ़ी जनु सब तन वीछी ॥  
 सुनि भए विकल सकल नर नारी । बेलि विटप जिमि देखि दवारी ॥  
 जो जहँ सुनइ धुनइ सिरु सोई । बड़ विषादु नहिं थीरजु होई ॥

दो०—सुख सुखाहिं लोचन स्रवहिं सोकु न हृदयँ समाइ ।

मनहुँ करुन रस कटकई उतरी अवध बजाइ ॥ ४६ ॥

मिलेहि माझ विधि बात वेगारी । जहँ तहँ देहिं कैकइहि गारी ॥

एहि पापिनिहि बूझि का परेऊ । छाइ भवन पर पावकु धरेऊ ॥

निज कर नयन काढ़ि चह दीखा । डारि सुधा विषु चाहत चीखा ॥

कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी । भइ रघुवंस वेनु बन आगी ॥

पालव वैठि पेहुँ एहिं काटा । सुख महुँ सोक ठाटु धरि ठाटा ॥

सदा रामु एहिं प्रान समाना । कारन कवन कुटिलपनु ठाना ॥

सत्य कहहिं कवि नारि सुभाऊ । सब विधि अगहुँ अगाध दुराऊ ॥

निज प्रतिबिंबु बरुकु गहि जाई । जानि न जाइ नारि गति भाई ॥

दो०—काह न पावकु जारि सक का न समुद्र समाइ ।

का न करै अबला प्रबल केहि जग कालु न खाइ ॥ ४७ ॥

का सुनाइ विधि काह सुनावा । का देखाइ चह काह देखावा ॥

एक कहहिं भल भूपन कीन्हा । बरु वि वारि नहिं कुमतिहि दीन्हा ॥

बो हठि भयउ सकल दुख भाजनु । अबला विवस ग्यानु गुनु गा जनु ॥

एक धरम परमिति पहिचाने । नृपहि दांसु नहिं देहिं सयाने ॥

सिबि दधीचि हरिचंद कहानी । एक एक सन कहहिं बखानो ॥

एक भरत कर संमत कहहीं । एक उदास भायँ सुनि रहहीं ॥

फान मूदि कर रद गहि जीहा । एक कहहिं यह बात अलीहा ॥

सुकुत जाहिं अस कहत तुम्हारे । रामु भरत कहँ प्रानपिआरे ॥

दो०—चंदु चवै बरु अनल कन सुधा होइ विपतूल ।

सपनेहुँ कबहुँ न करहिं किलु भरतु राम प्रतिकूल ॥ ४८ ॥

एक विधातहि दूपनु देहीं। सुधा देखाइ दीन्ह विषु जेहीं ॥  
 खरभरु नगर सोचु सब काहू। दुसह दाहु उर मिटा उछाहू ॥  
 विप्रवधू कुलमान्य जठेरी। जे प्रिय परम कैकई केरी ॥  
 लगीं देन सिख सीलु सराही। वचन वानसम लागहिं ताही ॥  
 भरतु न सोहि प्रिय रामसमाना। सदा कहहु यहु सवु जगु जाना ॥  
 करहु राम पर सहज सनेहू। केहिं अपराध आजु वनु देहू ॥  
 कवहुँ न कियहु सवति आरेखू। प्रीति प्रतीति जान सवु देखू ॥  
 कौसल्याँ अब काह विगारा। तुम्ह जेहि लागि वज्र पुर पारा ॥  
 दो०—सीय कि पिय सँगु परिहरिहि लखनु कि रहिहहिं धाम ।

राजु कि भूँजव भरत पुर नृपु कि जिइहि विनु राम ॥४९॥  
 अस विचारि उर छाड़हु कोहू। सोक कलंक कोठि जनि होहू ॥  
 भरतहि अवसि देहु जुवराजू। कानन काह राम कर काजू ॥  
 नाहिन रामु राज के भूखे। धरम धुरीन विषय रस रूखे ॥  
 गुर गृह बसहुँ रामु तजि गेहू। नृप सन अस वरु दूसर लेहू ॥  
 जाँ नहिं लगिहहु कहें हमारे। नहिं लागिहि कछु दाथ तुम्हारे ॥  
 जाँ परिहास कोन्हि कछु होई। तौ कहि प्रगट जनावहु सोई ॥  
 राम सरिस सुत कानन जोगू। काह कहिहि सुनि तुम्ह कहँ लोगू ॥  
 उठहु बेसि सोइ करहु उपाई। जेहि विधि सोकु कलंकु नसाई ॥  
 छं०—जेहि भाँति सोकु कलंकु जाइ उपाय करि कुल पालही ।

हठि फेरु रामहि जान वन जनि वात दूसरि चालही ॥  
 जिमि भानु विनु दिनु प्रान विनु तनु चंद्र विनु जिमि जामिनी  
 तिमि अवध तुलसीदास प्रभु विनु समुझि धाँं जियँ भामिनी ॥

सो०—सखिन्ह सिखावनु दीन्ह सुनत मधुर परिनाम हित ।

तेईं कछु कान न कीन्ह कुटिल प्रबोधी कूचरी ॥ ५० ॥

उतरु न देइ दुसह रिस रूखी । मृगिन्ह चितव जनु बाधिनि भूखी  
व्याधि अमाधि जानि तिन्ह त्यागी ! चलीं कहत मतिमंद अभागी ॥  
राजु करत यह देअँ विगोई । कीन्हेसि असजस करइ न कोई ॥  
एहि विधि बिलपहिं पुर नर नारीं । देईं कुचालिहि कोटिक गारीं ॥  
जरहिं विषम जर लेहिं उसासा । कवनि राम विनु जीवन आसा ॥  
त्रिपुल त्रियोग प्रजा अकुलानी । जनु जलचर गन मुखत पानी ॥  
अति विपाद बस लोग लोगाईं । गए मातु पहिं रामु गोसाईं ॥  
मुख प्रसन्न चित चौगुन चाऊ । मिटा सोनु जनि राखै राऊ ॥

दो०—नव गयंदु रघुवीर मनु राजु अलान समान ।

छूट जानि बन गवनु सुनि उर अनंदु अधिकान ॥ ५१ ॥

रघुकुलतिलक जोरि दोउ हाथा । मुदित मातु पद नायउ माथा ॥  
दीन्हि असोस लाइ उर लोन्हे । भूपन बसन निछावरि कीन्हे ॥  
बार बार मुख चुंबति माता । नयन नेह जल पुलकित गाता ॥  
गोद राखि पुनि हृदयँ लगाए । स्रवत प्रेमरस पयद सुहाए ॥  
प्रेम प्रमोदु न कछु कहि जाई । रंक धनद पदवी जनु पाई ॥  
सादर सुंदर बदनु निहारी । बोला मधुर बचन महतारी ॥  
कहहु तात जननी बलिहारी । कवहिं लगन मुद मंगलकारी ॥  
सुकृत सोल सुख सोवँ सुहाई । जनम लाभ कइ अवधि अघाई ॥

दो०—जेहि चाहत नर नारि सब अति आरत एहि भांति ।

जिमि चातक चातकि वृषित वृष्टि सरद रितु खाति ॥ ५२ ॥



तात जाउँ बलि बेगि नहाहू। जा मन भाव मधुर कठु स्वाहू ॥  
 पितु समीप तव जाएहु भैया। भइ बड़ि वार जाइ बलि मैआ ॥  
 मातु वचन सुनि अति अनुकूल। जनु सनेह सुरतरु के ॥  
 सुख मकरंद भरे श्रियसूला। निरखि राम मनु भवँरुन भूला ॥  
 धरम धुरीन धरम गति जानी। कहेउ मातुसन अति मृदु बानी ॥  
 पिताँ दीन्ह मोहि कानन राजू। जहँ सब भाँति मोर बड़ काजू ॥  
 आयसु देहि मुदित मन माता। जेहिँ मुद मंगल कानन ॥  
 जनि सनेह वस डरपसि भोरें। आनँदु अंब अनुग्रह तोरें ॥

दो०—वरप चारिदस विपिन वसि करि पितु वचन प्रम ।

आइ पाय पुनि देखिहउँ मनु जनि करसि मलान ॥ ५३ ॥

वचन विनीत मधुर रघुवर के। सर सम लगे मातु उर करके ॥  
 सहमि सुखि सुनि सोतलि वानो। जिमि जवास परें पावस पानी ॥  
 कहि न जाइ कलु हृदय विपादू। मनहुँ मृगो सुनि केहरि नादू ॥  
 नयन सजल तन थरथर काँपी। माजहि खाइ मोन जनु मापी ॥  
 धरि धीरजु सुत वदनु निहारी। गदगद वचन कहति महतारी ॥  
 तात पितहि तुम्ह प्रानपिआरे। देखि मुदित नित चरित तुम्हारे ॥  
 राजु देन कहँ सुभ दिन साधा। कहेउ जान वन केहिँ अपराधा ॥  
 तात सुनावहु मोहि निदानू। को दिनकर ल भयउ कसानू ॥  
 दो०—निरखि राम रुख सचिवसुत कारनु कहेउ बुझाइ ।

सुनि प्रसंगु रहि मूक जिमि दसा वरनि नहिँ जाइ ॥ ५४ ॥

राखि न सकइ न कहि सक जाहू। दुहँ भाँति उर दारुन दाहू ॥  
 लिखत सुधाकर गा लिखि राहू। विधि गति वाम सदा काहू ॥

धरम सनेह उभयँ मति घेरी । भइ गति साँप छुछुंदरि केरी ॥  
 राखउँ सुतहि करउँ अनुरोधू । धरमु जाइ अरु बंधु विरोधू ॥  
 कहउँ जान वन तौ बड़ि हानी । संकट सोच विवस भइ रानी ॥  
 बहुरि समुझि तिय धरमु सयानी । रामु भरतु दोउ सुत सम जानी ॥  
 सरल सुभाउ राम मइतारी । बोलो बचन धोर धरि भारी ॥  
 तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका । पितु आयसु सब धरमक टीका ॥  
 दो०—राजु देन कहि दीन्ह वनु मोहि न सो दुख लेसु ।

तुम्ह बिनु भरतहि भूपतिहि प्रजहि प्रचंड कलेसु ॥५५॥

जौं केवल पितु आयसु ताता । तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता ॥  
 जौं पितु मातु कहेउ वन जाना । तौ कानन सत अवध समाना ॥  
 पितु वनदेव मातु वनदेवो । खग मृग चान सरोरुह सेवो ॥  
 अंतहुँ उचित नृपहि वनवासू । वय बिलोकि हियँ होइ हरौसू ॥  
 बड़भागो वनु अरध अभागो । जोरघुवंस तिलक तुम्ह त्यागो ॥  
 जौं सुत कहौं संग मोहि लेहू । तुम्हरे हृदयँ होइ संदेहू ॥  
 पूत परम प्रिय तुम्ह सबही के । प्रान प्रान के जीवन जी के ॥  
 ते तुम्ह कहहु मातु वन जाऊँ । मै सुनि बचन वैठि पछिताऊँ ॥

दो०—यह विचारि नहिं करउँ हठ झूठ मनेहु बड़ाइ ।

मानि मातु कर नात बलि सुरति बिसरि जनि जाइ ॥५६॥

देव पितर सब तुम्हहि गोसाईं । राखहुँ पलक नयन की नाईं ॥  
 अवधि अंबु प्रिय परिजन मीना । तुम्ह करुनाकर धरम धुरोना ॥  
 अस विचारि सोइ करहु उपाईं । सबहि जिअत जेहिं भेटहु आईं ॥  
 जाहु सुखेन वनहि बलि जाऊँ । करि अनाथ जन परिजन गाऊँ ॥



सोइ मिय चलन चहनि वनमाथा । आयसु काइ होइ गधुनाथा ॥  
चंद किन्नर ग्य गमिक चकोगे ॥ रवि लख नरन मरुइ किमि जोरी ॥  
दो०—करि केहरि निमिचर चरहिं दुष्ट जंतु वन भूरि ।

मिय बाटिकाँ कि मोह सुन सुभग नजोयनि मूरि ॥ ५९ ॥

वन इत कोल किंगन किमाग । ग्या पिगंचि पिरर मुख भोरी ॥  
पाहन कृमि जिमि कठिन सुभाऊ । निन्हहि करेसुन कानन काऊ ॥  
कै तापम निय कानन जोगू । जिन्ह तप हेतु तजा मय भोगू ॥  
सिय वन वनिहि तान केहि भातो । चित्रलित्वेन कपि देखि डेगती  
सुरसर सुभग वनज वन चारी । टारर जोगु कि इमकुमारो ॥  
अस विचारि जम आयसु होई । मैं मिख देउ जानकिहि मोई ॥  
जौं मिय भवन गह कइ अंरा । मोहि कइ हांड वहुत अलंन ॥  
सुनि रघुनोर मातु प्रिय बानी । माल ननेइ नुधा जनु नानो ॥  
दो०—कहि प्रिय वचन त्रिवेकमय कीन्हि मातु परितोष ।

लगे प्रयोधन जानकिहि प्रगटि विपिन गुन टोष ॥ ६० ॥

मामपारायण, चौदहवाँ विश्राम

मातु ममाप कहत सकुचारी । बोलै ममउ मगुधि मन माही ॥  
राजकुमारि मिखावनु सुनह । आन भाति जिय जनि कहु गुनह ॥  
आपन मोर नोक जौं चहह । वचनु हमार मानि गृह रहह ॥  
आयसु मोर मामु सेरकाई । मय विप्रि भाविनि भवन भलाई ॥  
एहि ते अधिक धरमु नहिं दूजा । सादर मामु मसुर पद पूजा ॥  
जय जय मातु करिहि सुधि सोगे । होइहि प्रेम त्रिकरु मति भोरी ॥

तव तव तुम्ह कहि कथा पुगनी । सुंदरि समुझाएहु मृदु बानी ॥  
कहउ सुभायँ सपथ सत मोही । सुमुखि मातु हित राखउ नाही ॥

श्लोक-गुर श्रुति संमत धरम फलु पाइअ विनहि कलेस ।

हठ बस सब संकट सहै गालव नहुप नरेस ॥६१॥

भैं पुनि करि प्रवान पितु बानी । बेगि फिरव सुनु सुमुखि सयानी  
दिवस जात नहि लागिहि वाग । सुंदरि सिखवतु मुनहु हमारा ॥  
जौ हठ करहु प्रेम बस बामा । तौ तुम्ह दुगु पाउव परिनामा ॥  
कानतु काठिन भयंकरु भारी । घोर घामु हिस वारि बयारी ॥  
चुन कंटक मग कौकर नाना । चलव पयादेहि विनु पदवाना ॥  
नरन कमल मृदु मंजु तुम्हार । मारग अगम भूमिधर भारे ॥  
कंदर खोह नदी नद नारे । अगम अगाध न जाहि निहार ॥  
भालु बाध चुक कैहरि नागा । करहि नाद मुनि थीरजु भारा ॥

श्लोक-भूमि रासन चलकल बसन अननु कंद फल मूल ।

ते कि नदा सब दिन मिलहि नचुट समय अनुकूल ॥६२॥

रस अहार रजनीचर चरही । दपट बेप विश्व कोटिक करही ॥  
नरन अति पहार कर पानी । विपिन विपनि नहि जाटु बखानी ॥  
नकाट कसल विहग बन घोर । निनिचर निकर नारि नर चोर ॥  
नरपति धीर सजन सुख आण । मृगलोचनि तुम्ह भीरु सुभाण ॥  
भैंसपति तुम्ह नहि बन जोग । मुनि अयजगु सोहि देखि लोण ॥  
नारनग मालिक सुभे प्रतिपाली । जिअर गिलवन पयोधि मराली ॥  
नर समत बत सिअनसाली । मोह कि कोटिक विपिन कराली ॥  
रदु भजन अग इदने दिवानी । चंदबदान दुगु कानन भारी ॥

दो०—सहज सुहृद गुर स्वामि सिख जो न करइ सिर मानि ।

मां पछिनाइ अघाइ उर अवसि होइ हित हानि ॥६३॥

सुनि मृदु वचन मनोहर पिय के । लोचन ललित भरे जल सिय के ॥

सीतल सिख दाहक भइ कैसे । चकइहि सरद चंद्र निसि जैसे ॥

उतरु न आव विकल वैदेही । तजन चहत सुचि स्वामि सनेशे ॥

बरवस रोकि विलोचन वारी । धरि धीरजु उर अवनिकुमारी ॥

लागि सामु पग कह कर जोरी । छमवि देवि वड़ि अविनय मारो ॥

दीन्हि ग्रानपति मोहि मिख सोई । जेहि विधि मोर परम हित होई ॥

मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं । पिय वियोगसम दुखु जग नाहीं

दो०—ग्राननाथ करुनायतन सुंदर सुखद सुजान ।

तुम्ह विनु रघुकुल कुषुद विनु मुरपुर नरक समान ॥ ६४ ॥

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई । प्रिय परिवारु सुहृद समुदाई ॥

सामु समुर गुर सजन सहाई । सुत सुंदर सुमील सुखदाई ॥

जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते । पिय विनु तियहि तरनिहु ते ताते

तनु धनु धामु धराने पुर राजू । पति विशान सनु माक समानू ॥

भोग रोगसम भूपन भारू । जम जातना सरिस संसारू ॥

ग्राननाथ तुम्ह विनु जग माहीं । मो कहँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं ॥

जिय विनु देह नद विनु वारा । तंसिअ नाथ पुष्य विनु नारी ॥

नाथ सकल सुख साथ तुम्हारें । सरद विमल विनु वदनु निहारें ॥

दो०—खग मृग परिजन नगरु वनु बलकल विमल दुकूल ।

नाथ साथ मुरसदन सम परनसाल सुख मूल ॥ ६५ ॥

चनदेवीं वनदेव उदारा । करिहहिँ सामु समुर सम सारा ॥

कुस किसलय साथरी मुहाई । प्रभु संग मंजु मनोज तुगई ॥  
 बंद मूल फल अमिअ अहारु । अवध सौध सत सगिस पहारु ॥  
 हिनु छिनु प्रभु पद कमल विलोकी । रहिहउ मुदित दिवस जिमि कोकी ॥  
 वन दुख नाथ कहे बहुतेरे । भय विपाद परिताप घनेरे ॥  
 प्रभु विद्योष लवलेन समाना । सब मिलि होहि न कृपानिधाना ॥  
 अम जिई जानि सुजान सिरोमनि । लेइअ संग मोहि छाड़िअ जनि  
 बिनती बहुत करी वा म्यामी । करुनामय उर अंतरजामी ॥

टी०—राखिअ अवध जो अवधि लागि रहत न जनिअहिं प्रान ।

दीनबंधु हंटर मुखद नील सनेह निधान ॥६६॥

मोहि कर चलत न होइहि हारी । छिनु छिनु चरन संगोज निहारी ॥  
 सबहि भौनि पिय सेवा करिहौं । नगरा जनिन सकल श्रम हरिहौं ॥  
 पाय परवारि दैटि तरु छाहीं । करिहउ वाउ मुदित मन मारी ॥  
 श्रम बन मारिह म्यासतनु देखें । कहैं दुख ममउ प्रानपांत पेर्यें ॥  
 मम मारि तन तरुपट्टव डारी । पाय पलोटिहि सब निमि दारी ॥  
 चार चार मृदु मृगि जौहीं । लारिहि नान बयारि न मोहीं ॥  
 जो प्रभु संग मोहि चितवनिहार । सिद्धवधुहि जिमि मसक निशार  
 भैं सुनु मारि नाथ वन जोगू । तुम्हहि उचित नपमो कहूं भोगू ॥

टी०—येहउ वचन कटोर सुनि जौं न हृदउ चिलगान ।

नौ प्रभु विषम विरोग दुख सखिहहि पावैं प्रान ॥६७॥

अम कहि नीच विबल भटभारी । वचन विद्योगु न सकी रैभारी ॥  
 देसि दसा रूपनि जिई जाना । हटि गर्यें नहि गर्यिहि प्राना ॥  
 चरउ कृपाल भासुपुननाथा । परिहरि सोनु चलहु वन साथी ॥

नहिं विपाद कर अवसरु आजू। बेगि करहु वन गवन समाजू ॥  
 कहि प्रिय वचन प्रिया समुझाई। लगे मातु पद आसिप पाई ॥  
 बेगि प्रजा दुख भेटव आई। जननी निटुर विसरि जनि जाई ॥  
 फिरिहि दसा विधि बहुरि कि मोरी। देखिहउं नयन मनोहर जोरी ॥  
 सुदिन सुवरी तात कव होइहि। जननी जिअत वदन विधु जोइहि ॥  
 दो०—बहुरि बच्छ कहि लालु कहि रघुपति रघुवर तात ।

कवहिं बोलाइ लगाइ हियें हरपि निगखिहउं गात ॥ ६८ ॥

लखि सनेह कातरि महतारी। वचनु न आव विकल भइ भारी ॥  
 राम प्रबोधु कीन्ह विधि नाना। समउ सनेहु न जाइ बखाना ॥  
 तव जानकी सासु पग लागी। सुनिअ माय में परम अभागी ॥  
 सेवा समय दें वनु दीन्ह। मोर मनोरथु सफल न कीन्ह ॥  
 तजव छोभु जनि छाड़िअ छोहू। करमु कठिन कछु दोसु न मोहू ॥  
 सुनि सिय वचन सासु अकुलानी। दसा कवनि विधि कहीं बखानी ॥  
 बारहिं वार लाइ उर लीन्ही। धरि धीरजु सिख आसिप दीन्ही  
 अचल होउ अहिवातु पुम्हारा। जब लगि गंग जमुन जल धारा ॥

दो०—सीतहि सासु असीस सिख दीन्हि अनेक प्रकार ।

चली नाइ पद पदुम सिरु अति हित वारहिं वार ॥ ६९ ॥

समाचार जब लछिमन पाए। व्याकुल विलख वदन उठि धाए ॥  
 कंप पुलक तन नयन सनीग। गहे चरन अति प्रेम अधीरा ॥  
 कहि नमरुन कछु विनवन ठाठे। मानु दीन जनु जल तें काढ़े ॥  
 सोचु हृदयं विधि ना होनिहाग। मनु सुखु मुकतु सिरान हमारा ॥  
 मो कहूँ काह कहव रघुनाथा। रखिहहिं भवन कि लेहहिं साथ ॥



गम विलोकि बंधु कर जोरें । देह गेह सब सन तनु तोरें ॥  
 बोलें बचनु राम नय नागर । सील सनेह सबल सुख सागर ॥  
 तात प्रेम बस जानि कदराहू । समुझि हृदयँ परिनाम उछाहू ॥

दो०—मातु पिता गुरु स्वामि सिख सिर धरि करहिं सुभायँ ।

लहेउ लाभु तिन्ह जनम कर नतरु जनसु जग जायँ ॥ ७० ॥

अन जियँ जानि सुनहु सिख भाई । करहु मातु पितु पद सेवकाई ॥  
 भवन भरतु रिपुसदनु नाहीं । राउ बृद्ध मम दुग्नु मन माहीं ॥  
 में वन जाउँ तुम्हहि लेइ साथी । होइ सवहि विधि अवध अनाथा ॥  
 गुरु पितु मातु प्रजा परिवारु । सब कहँ परइ दुसह दुख भारु ॥  
 रहहु करहु सब कर परितोष । नतरु तात होइहि बड़ दोष ॥  
 जानु राज प्रिय प्रजा दुखारी । सो नृपु अवसि नरक अधिकारी ॥  
 रहहु तात असि नीति विचारी । सुनत लखनु भए व्याकुल भारी ॥  
 सिअरें बचन सखि गए कैरें । परसत तुहिन तामरसु जैरें ॥

दो०—उतरु न आवत प्रेम बस गहे चरन अकुलाइ ।

नाथ दासु में स्वामि तुम्ह तजहु तं काह बसाइ ॥ ७१ ॥

कि सोहि सिख नीकि गोसाई । लागि अगम अपनी कदगाई ॥

धीर धरम धुर धारी । निगम नीति कहँ ते अधिकारी ॥

नेहँ प्रतिपाला । मंदरु मेरु कि लेहि मगला ॥

जानउँ काहू । कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू ॥

सगाई । प्रीति प्रनीति निगम निजु गाई ॥

स्वामी । दीनबंधु उर अंतरजामी ॥

॥ कीरति श्रुति मुगति प्रिय जाही ॥

मन क्रम बचन चरन रत होई । कृपासिंधु परिहरिअ कि सोई ॥

दो०—करुनासिंधु सुबंधु के सुनि मृदु बचन विनीत ।

समृझाय उर लाइ प्रभु जानि सनेहँ समीत ॥ ७२ ॥

मागहु विदा मातु सन जाई । आवहु बेगि चलहु वन भाई ॥

मुदित भए सुनि रघुवर बानी । भयउ लाभ बड़ गइ बड़ि हानी ॥

हरपित हृदयँ मातु पहिँ आए । मनहुँ अंध फिरि लोचन पाए ॥

बाह जननि पग नायउ माथा । मनु रघुनंदन जानकि साथी ॥

पूँछे मातु मलिन मन देखी । लखन कही सब कथा विसेपी ॥

गई सहमि सुनि बचन कठोरा । मृगी देखि दवजनु चहु ओरा ॥

लखन लखेउ भा अनरथ आजू । एहि सनेह बस करब अकाजू ॥

मागत विदा सभय सकुचार्हीं । जाइ संग बिधिकहिहि कि नार्हीं ॥

दो०—समृझि सुमित्राँ राम सिय रूपु सुसीलु सुभाउ ।

नृप सनेहु लखि घुनेउ सिरु पापिनि दीन्ह कुदाउ ॥ ७३ ॥

भीरजु धरेउ कृअवसर जानी । सहज सुहृद बोली मृदु बानी ॥

तात तुम्हारि मातु वैदेही । पिता रामु सब भौंति सनेही ॥

अवध तहाँ जहँ राम निवास । तहँई दिवसु जहँ भानु प्रकास ॥

जीँ पै सीय रामु बन जाहीं । अवध तुम्हार काजु कछु नार्हीं ॥

गुर पितु मातु बंधु सुर साई । सेइअहिँ सकल प्रान की नाई ॥

रामु प्रानप्रिय जीवन जी के । स्वारथ रहित सखा सबही के ॥

पूजनीय प्रिय परम जहाँ तैं । सब मानिअहि राम के नाते ॥

अस जियँ जानि संग बन जाहू । लेहु तात जग जीवन लाहू ॥

दो०—शूरि भाग भाजनु भयहु मोहि समेत बलि जाउँ ।

जौं तुम्हरेँ मन छाड़ि छलु कीन्ह राम पद ठाउँ ॥ ७४ ॥

पुत्रवती जुवती जग सोई । रघुपति भगतु जासु सुतु होई ॥

नतरु वाँझ भलि वादि विआनी । राम विमुख सुत तें हित जानी ॥

तुम्हरेहिं भाग रामु वन जाहीं । दूसर हेतु तात कलु नाहीं ॥

सकल सुकृत कर वड़ फलु एहू । राम सीय पद सहज सनेहू ॥

रागु रोषु इरिपा महु मोहू । जनि सपनेहुँ इन्ह के वस होहू ॥

सकल प्रकार विकार विहाई । मन क्रम वचन करेहु सेवकाई ॥

तुम्ह कहूँ वन सब भाँति सुपासू । सँग पितु मातु रामु सिय जासू ॥

जेहिं न रामु वन लहहिं कलेसू । सुत सोइ करेहु इहइ उपदेसू ॥

छं०—उपदेसु यहु जेहिं तात तुम्हरे राम सिय सुख पावहीं ।

पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति वन विसरावहीं ॥

तुलसी प्रभुहि सिख देइ आयसु दीन्ह पुनि आसिप दर्ई ।

रति होउ अविरल अमल सिय रघुवीर पद नित नित नई ॥

सो०—मातु चरन सिरु नाइ चले तुरत संकित हृदयँ ।

वागुर विपम तोराइ मनहुँ भाग मृगु भाग वस ॥ ७५ ॥

गए लखनु जहँ जानकिनाथू । मे मन मुदित पाइ प्रिय साथू ॥

वाँदि राम सिय चरन सुहाए । चले संग नृपमंदिर आए ॥

कहहिं परसपर पुन नर नारी । भलि वनाइ विधि वान विगारी ॥

तन अन्न मन दुसु वदन्न पलीने । विकल मनहुँ आरवा मधु छीने ॥

कर मीजहिं सिरु घुनि पछिताहीं । जनु विनु पंख विहग अकुलाहीं ॥

भइ वड़ि भीर भूप दरवारा । वरनि न जाइ विपाहु अपारा ॥

सचिवँ उठाइ राउ बैठारे । कहि प्रिय बचन रामु पगु धारे ॥  
 सिय समेत दोउ तनय निहारी । व्याकुल भयउ भूमिपति भारी ॥  
 दो०—सीय सहित सुत सुभग दोउ देखि देखि अकुलाइ ।

वारहिं वार सनेह बस राउ लेइ उर लाइ ॥ ७६ ॥

सकइ न बोलि विकल नरनाहू । सोक जनित उर दारुन दाहू ॥  
 नाइ सीसु पद थति अनुरागा । उठि रघुवीर विदा तब मागा ॥  
 पितु असीस आयसु मोहि दीजै । हरप समय तिसमउ कत कीजै ॥  
 तात किएँ प्रिय प्रेम प्रमादू । जसु जग जाइ होइ अपवादू ॥  
 सुनि सनेह बस उठि नरनाहाँ । बैठारे रघुपति गहि बाहाँ ॥  
 सुनहु तात तुम्ह कहँ सुनि कहहीं । गसु चराचर नायक अहहीं ॥  
 सुभ अरु असुभ करम अनुहारी । ईसु देइ फल हृदयँ विचारी ॥  
 करइ जो करम पाव फल सोई । निगम नीति असि कह सयु कोई ॥

दो०—औरु करै अपराधु कोउ और पाव फल भोगु ।

अति विचित्र भगवंत गति को जग जानै जांगु ॥ ७७ ॥

रायँ राम राखन हित लागी । बहुत उपाय किए छलु त्यागी ॥  
 लखी राम रुख रहत न जाने । धरम धुरंधर धीर सयाने ॥  
 तब नृप सीय लाइ उर लान्ही । अति हित बहुत भाँति सिख दीन्ही ॥  
 कहि बन के दुख दुसह सुनाए । सासु समुर पितु सुख समुझाए ॥  
 सिय मनु राम चरन अनुरागा । धरु न सुगसु बनु विपसु न लागी ॥  
 औरउ सबहिं सीय समुझाई । कहि कहि विपिन विपति अधिकारै ॥  
 सचिव नारि गुर नारि सयानी । सहित सनेह कहहिं मृदु बानी ॥  
 तुम्ह कहँ तौ न दीन्ह बनवास । करहु जो कहहिं ससुर गुर सास ।

दो०—सिख सांतलि हित मथुर मृदु सुनि सांतहि न सांहानि ।

सरद चंद चंदिनि लगत जनु चकई अकुलानि ॥७८॥

सीय सकुच वस उतरु न देई । सो सुनि तमकि उठी कैकेई ॥  
 सुनि पट भूपन भाजन आनी । आगें धरि बोली मृदु बानी ॥  
 नृपहि प्रानप्रिय तुम्ह रघुवीरा । सील सनेह न छाड़िहि भीरा ॥  
 सुकृतु सुजसु परलोकु नसाऊ । तुम्हहि जान वन कहिहि न काऊ  
 अस विचारि सोइ करहु जो भावा । राम जननि सिख सुनि सुखु पावा  
 भूपहि वचन वानसम लागे । करहि न प्रान पयान अभागे ॥  
 लोग विकल मुरुछित नरनाहू । काह करिअ कछु सझन काहू ॥  
 राम तुरत सुनि वेषु बनाई । चले जनक जननिहि सिरु नाई ॥

दो०—सजि वन साजु समाजु सबु वनिता बंधु समेत ।

बंदि विप्र गुर चरन प्रभु चले करि सवहि अचेत ॥ ७९ ॥

निकसि बसिष्ठ द्वार भए ठाढ़े । देखे लोग विरह दव दाढ़े ॥  
 कहि प्रिय वचन सकल सद्गुणाए । विप्र वृंद रघुवीर बोलाए ॥  
 गुर सन कहि वरपासन दीन्हे । आदर दान विनय वस कीन्हे ॥  
 जाचक दान मान संतोषे । मीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥  
 दासीं दास बोलाइ बहोरी । गुरहि सांपि बोले कर जोरी ॥  
 सब कै सार सँभार गोसाइं । करवि जनक जननी की नाई ॥  
 वारहिं वार जोरि जुग पानो । कहत रामु सब सन मृदु बानी ॥  
 सोइ सब भाति मोर हितकारो । जेहि तें रहैं भुआल सुखारी ॥

दो०—मातु सकल मोरे विरहैं जेहिं न होहिं दुख दान ।

सोइ उपाउ तुम्ह करेहु सब पुर जन परस प्रवान ॥ ८० ॥



दो०—सिख सातलि हित मधुर मृदु सुनि सातहि न सांहानि ।  
सरद चंद चंदिनि लगत जनु चकई अकुलानि ॥

सीय सकुच वस उतरु न देई । सो सुनि तमकि उठी कैव  
मुनि पट भूपन भाजन आनी । आगे धरि बोली मृदु वान  
नृपहि प्रानप्रिय तुम्ह रघुवीरा । सील सनेह न छाड़िहि भी  
सुकुतु सुजसु परलांकु नसाऊ । तुम्हहि जान वन कहिहि न व  
अस विचारि सोइ करहु जो भावा । राम जननि सिख सुनि सुखु प  
भूपहि वचन वानसम लागे । करहिं न प्रान पयान अभागे  
लोग विकल मुरुछित नरनाहू । काह करिअ कछु खल्ल न  
रामु तुरत मुनि वेपु वनाई । चले जनक जननिहि सिरु नाई

दो०—सजि वन साजु समाजु सबु वनिता बंधु समेत ।  
बंदि विप्र गुर चरन प्रभु चले करि सवहि अचेत ॥ ७९ ॥

निकसि वसिष्ठ द्वार भए ठाढ़े । देखे लोग विरह दव दाढ़े ॥  
कहि प्रिय वचन सकल सङ्गुझाए । विप्र वृंद रघुवीर बोलाए ॥  
गुर सन कहि वरपासन दीन्हे । आदर दान विनय वस कीन्हे ॥  
जाचक दान मान संतोषे । सीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥  
दासीं दास बोलाइ बहोरी । गुरहि साँपि बोल कर जोरी ॥  
सब कै सार सँभार गोसाईं । करवि जनक जननी की नाई ॥  
चारहिं चार जांरि जुग पानो । कहत रामु सब सन मृदु वानी ॥  
सोइ सब भाति मोर हितकारी । जेहि तें रहै भुआल सुखारी ॥

दो०—मातु सकल मोरे विरहैं जेहिं न होहिं दुख दान ।  
सोइ उपाउ तुम्ह करेहु सब पुर जन परम प्रवान ॥ ८० ॥

एहि विधि गम सवहि समुझावा । गुरपद पदुम हरपि सिरु नावा ॥  
 गनपति गौरि गिरीसु मनाई । चले असीस पाइ रघुराई ॥  
 राम चलत अति भयउ विपादू । सुनि न जाइ पुर आरत नादू ॥  
 कुसगुन लंक अवध अति सांकू । हरप त्रिनाद विवस मुरलांकू ॥  
 गइ मुरुछा तव भूपति जागे । बालि सुमंत्रु कहन अस लागे ॥  
 रामु चल वन प्रान न जाहीं । केहि मुखलागि रहत तन माहीं ॥  
 एहि तें कवन व्यथा बलवाना । जा दुखु पाइ तजहि तनु प्राना ॥  
 पुनि धरि धार कहइ नरनाहू । लं रघु संग सखा तुम्ह जाहू ॥

दो०—मुठि मुकुमार कुमार दोउ जनकमुता सुकुमारि ।

रथ चढ़ाइ दरवाइ वनु फिरहु गएँ दिन चारि ॥ ८१ ॥

जौं नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई । सत्यसंध दृढ़व्रत रघुराई ॥  
 तौ तुम्ह विनय करहु कर जारा । फेरिअ प्रभु मिथिलेसकिसारी ॥  
 जव सिय कानन देखि डेराई । कहहु मारि सिख अवसरु पाई ॥  
 सामु समुर अस कहउ संदेधू । पुत्रि फिरिअ वन बहुत कलेधू ॥  
 पितुगृह कवहुँ कवहुँ सतुरारा । रहहु जहा रुचि हाइ तुम्हारी ॥  
 एहि विधि करहु उपाय कदंबा । फिरइ त होइ प्रान अवलंबा ॥  
 नाहिं त मार मरनु परिनामा । कछु न बसाइ भए विधि वामा ॥  
 अम कहि मुठि परा महि राऊ । रामु लखनु सिध श्रानि देखाऊ ॥

दो०—पाइ रजायसु नाइ सिरु रथु अति वेग बनाइ ।

गयउ जहा बाहर नगर सोय सहित दाउ भाइ ॥ ८२ ॥

तव मुमत्र नृप वचन सुनाए । करि विनतो रथ रामु चढ़ाए ॥  
 चढ़ि रथ सोय सहित दोउ भाई । चले हृदयँ अत्रवहि सिरु नाई ॥



चलत रामु लखि अवध अनाथा । विकल लोग सब लागे राथा ॥  
 कृपाविधु बहुविधि समुझावहिं । फिरहिं प्रेम बस पुनि फिरि आवहिं  
 लागति अवध भयावनि भारी । मानहुँ कालराति अँधिआरी ॥  
 घोर जंतु यम पुर नग नारी । डरपाहिं एकाहि एक निहारी ॥  
 धर ममान परिजन जनु भूता । सुत हित मीत मनहुँ जमदूता ॥  
 बाणन्ह बिटप बेलि कुम्हिलार्ही । गरित सरोवर देखि न जाहीं ॥  
 दो०—हय गय कांठिन्ह कैलिमृग पुरपगु चानक मार ।

पिक रथांग सुक मारिका सारग हंस चकार ॥ ८३ ॥

गम वियोग विकल सब ठाढ़े । जहँतहँ मनहुँ चित्र लिखि काढ़े ॥  
 नगरु मरुतल वनु गहवर भारी । खग मृग विपुल सकल नर नारी ॥  
 विधि कैफई किगतिनि कीन्ही । जेहिं दब दुसह दसहुँ दिसि दीन्ही  
 सहि न मके रघुवर विरहागी । चले लोग सब व्याकुल भागी ॥  
 सबहिं विचारु कीन्ह मन माहीं । राग लखन गिय विनु मुखु नाहीं ॥  
 जहाँ रामु तहँ सबुइ समाजू । विनु रघुवीर अवध नहिं काजू ॥  
 चले साथ अग मंत्रु दढ़ाई । सुर दुर्लभ सुख सदन विहाई ॥  
 राम चरन पंकज प्रिय जिन्हही । विषय भांग बस करहिं कि तिन्हही  
 दो०—बालक वृद्ध विहाइ गृहँ लगै लोग सब साथ ।

तमसा तीर निवासु किय प्रथम दिवस रघुनाथ ॥ ८४ ॥

रघुपति प्रजा प्रेमावरा देखी । सद्य हृदयँ दुखु भयउ विसेपी ॥  
 करुनाभय रघुनाथ गोसाँई । वेगि पाइअहिं पीर पराई ॥  
 कहि सप्रेम मृदु वचन मुहाए । बहुविधि राम लोग समुझाए ॥  
 किए धरम उपदेस घनेरे । लोग प्रेम बस फिरहिं न फेरे ॥

मीलु मनेहु छाडि नहि जाइ। अममंजम बस भे ग्युराई ॥  
 लोग मांग श्रम बस गए मोई। कलुक देवमायाँ मति माई ॥  
 जबहि जाम जुग जामिनि वीतो। राम मचिव सन कहेउ सप्रीतो ॥  
 खोज नारि रथु हाकहु ताता। आन उपायँ बनिहि नहि वाता ॥

दो०—राम लखन मिय जान चढ़ि मंभु चरन सिरु नाइ ।

मचिवँ चलायउ तुरत रथु इत उत खोज दुराई ॥ ८५ ॥

जागे मकल लोग भए भोरू। गे रघुनाथ भयउ अति सोरू ॥  
 रथ कर खोज कतहुं नहि पावहिं। राम राम कहि चहुँ दिसि धावहिं ॥  
 मनहुँ वारिनिधि बूढ़ जहाजू। भयउ विकल बड़ बनिक समाजू ॥  
 एकहि एक देहि उपदेसू। तजे राम हम जानि कलेसू ॥  
 निदहि आपु मराहहिं मीना। धिग जीवनु रघुवीर विहीना ॥  
 जौं पै प्रिय वियोगु विधि कीन्हा। ताँ कम मरनु न मार्गे दीन्हा ॥  
 एहि विधि करत प्रलाप कलापा। आए अवध भंगे परितापा ॥  
 विपम वियोगु न जाइ बखाना। अवधि आस मव राखहिं प्राना ॥

दो०—राम दरम हित नेम व्रत लगे करन नर नारि ।

मनहुँ कोक कोकी कमल दीन विहीन तमारि ॥ ८६ ॥

सीता मचिव महित दाउ भाई। सृंगवेरपुर पहुँचे जाई ॥  
 उतरे राम देवमरि देखी। कान्ह टडवत हरपु बिसेपी ॥  
 लखन मचिवँ मिय किए प्रनामा। नवहि महिन मुखु पायउ रामा ॥  
 गंग मकल मुठ मंगल गुला। मव मुख करनि इरनि मव सुला ॥  
 हहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा। गमु विला कहि गंग तरगा ॥  
 मचिवहि अनुजहि प्रियहि सुनाई। विबुध नदी महेमा अधिकाई ॥

मञ्जु कीन्ह पंथ श्रम गयऊ । सुचि जलु पिअत मुदित मन भयऊ  
सुमिरत जाहि मिटइ श्रम भारू । तेहि श्रम यह लौकिक व्यवहारू ॥

दो०—सुद्ध सच्चिदानंदमय कंद भानुकुल केतु ।

चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर सेतु ॥ ८७ ॥

यह धि गुहँ निपाद जय पाई । मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई ॥  
लिए फल मूल भेंट भरि भारा । मिलन चलेउ हियँ हरपु अपारा ॥  
करि दंडवत भेंट धरि आगें । प्रभुहि विलोकत अति अनुरागें ॥  
सहज सनेह विवस रघुराई । पूँछी कुसल निकट वैठाई ॥  
नाथ कुसल पद पंकज देखें । भयउँ भागभाजन जन लेखें ॥  
देव धरनि धनु धामु तुम्हारा । मैं जनु नीचु सहित परिवारा ॥  
कृपा करिअ पुर धारिअ पाऊ । थापिय जनु सत्रु लोगु सिहाऊ ॥  
कहेहु सत्य सत्रु सखा सुजाना । मोहि दीन्ह पितु आयसु आना ॥

दो०—वरप चारिदस वासु वन सुनि व्रत वेपु अहारू ।

ग्राम वासु नहि उचित सुनि गुहाहि भयउ दुखु भारू ॥ ८८ ॥

राम लखन सिंघ रूप निहारी । कहहिं सप्रेम ग्राम नर नारी ॥  
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे । जिन्ह पठए वन बालक ऐसे ॥  
एक कहहिं भल भृपाति कीन्हा । लोयन लाहु हमहि विधि दीन्हा ॥  
तव निपादपति उर अनुमाना । तरु सिंसुपा मनोहर जाना ॥  
लै रघुनाथहि ठाउँ देखावा । कहेउ राम सत्रु भौति सुहावा ॥  
पुरजन करि जोहारु घर आए । रघुवर संध्या करन सिधाए ॥  
गुहँ सँवारि साँथरी डसाई । कुस किसलयमय मृदुल सुहाई ॥  
सुचि फल मूल मधुर मृदु जानी । दोना भरि भरि राखेसि पानी ॥

दो०—सिय सुमंत्र भ्राता सहित कंद मूल फल खाइ ।

सयन कीन्ह रघुवंसमनि पाय पलोत्त भाइ ॥ ८९ ॥

उठे लखनु प्रभु सोवत जानी । कहि सचिवहि सोवन मृदु बानी ॥  
कलुक दूरि सजि वान सरासन । जागन लगे वैठि वीरासन ॥  
गुहँ घोलाइ पाहरू प्रतीती । ठावँ ठावँ राखे अति प्रीती ॥  
आपु लखन पहिँ वैठेउ जाई । कटि भाथी सर चाप चढ़ाई ॥  
सोवत प्रभुहि निहारि निपादू । भयउ प्रेम बस हृदयँ विपादू ॥  
तनु पुलकित जलु लोचन बहई । बचन सप्रेम लखन सन कहई ॥  
भूपति भवन सुभायँ सुहावा । सुरपति सदनु न पटतर पावा ॥  
मनिमय रचित चारु चौबारे । जनु रतिपति निज हाथ सँवारे ॥

दो०—सुचि सुविचित्र सुभोगमय सुमन सुगंध सुवास ।

पलंग मंजु मनिदीप जहँ सब विधि सकल सुपास ॥ ९० ॥

विबिध बसन उपधान तुराई । छीर फेन मृदु विसद सुहाई ॥  
तहँ सिय रामु सयन निसि करहीं । निज छवि रति मनोज मदु हरहीं ॥  
ते सिय रामु साथरीं सोए । श्रमित बसन विनु जाहिं न जोए ॥  
मातु पिता परिजन पुरवासी । सखा सुसील दास अरु दासी ॥  
जोगवहिं जिन्हहि प्राण की नाई । महि सोवत तेइ राम गोसाई ॥  
पिता जनक जग विदित प्रभाऊ । ससुर सुरेस सखा रघुगाऊ ॥  
रामचंद्रु पति सो वैदेही । सोवत महि विधि वाम न केही ॥  
सिय रघुवीर कि कानन जोगू । करम प्रधान सत्य कह लोगू ॥

दो०—कैकयनंदिनि मंदमति कठिन कुटिलपनु कीन्ह ।

जेहिं रघुनंदन जानकिहि सुख अवसर दुखु दीन्ह ॥ ९१ ॥

भइ दिनकर कुल विटप कुठारी । कुमति कीन्ह सब विख दुखारी ॥  
 भयउ विषादु निषादहि भारी । राम सीय महि सयन निहारी ॥  
 बोलै लखन मधुर मृदु बानी । ग्यान विराग भगति रस सानी ॥  
 काहु न कोउ सुख दुख कर दाता । निज कृत करम भोग सबु आता ॥  
 जोग वियोग भोग भल मंदा । हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा ॥  
 जनमु मरनु जहँ लगि जग जालू । संपति विपति करमु अरु कालू ॥  
 धरनि धामु धनु पुर परिवारू । सरगु नरकु जहँ लगि व्यवहारू ॥  
 देखिअ सुनिअ गुनिअ मन माहीं । मोह मूल परमारथु नाहीं ॥

दो०—सपनें होइ भिखारि नृपु रंकु नाकपति होइ ।

जागें लाभु न हानि कछु तिमि प्रपंच जियँ जोइ ॥ ९२ ॥

अम विचारि नहिं कीजिअ रोखू । काहुहि वादि न देइअ दोखू ॥  
 मोह निसाँ मनु सोवनिहारा । देखिअ सपन अनेक प्रकारा ॥  
 एहिं जग जामिनि जागहिं जोगी । परमारथी प्रपंच वियोगी ॥  
 जानिअ तत्रहिं जीव जग जागा । जव सब विषय विलास विरागा ॥  
 होइ विवेकु मोह भ्रम भागा । तव रघुनाथ चरन अनुरागा ॥  
 सखा परम परमारथु एहू । मन क्रम वचन राम पद नेहू ॥  
 राम ब्रह्म परमाथ रूपा । अविगत अलख अनादि अनूपा ॥  
 सकल विकार रहित गतभेदा । कहि नित नेति निरूपहिं वेदा ॥

दो०—भगत भूमि भृगुर सुरभि नुर हित लागि कृपाल ।

करत चरित धरि मनुज तनु मुनन मिदहिं जग जाल ॥ ९३ ॥

मासपारायण, पंद्रहवाँ विश्राम

सखा समुझि अस परिहरि मोह । सिय रघुवीर चरन रत होह ॥  
 कहत राम गुन भा भिनुसारा । जागे जग मगल सुखदारा ॥  
 सकल सौच करि राम नहाना । सुचि सुजान बः छीर मगाना ॥  
 अनुज सहित सिर जटा बनाए । देखि सुमंत्र नयन जल छाए ॥  
 हृदय दाहु अति बदन मलीना । कह कर जा रि बचन अति दीना ॥  
 नाथ कहेउ अस कोसलनाथा । लै रघु जाहु राम के साथी ॥  
 वनु देखाइ सुरमरि अन्हारै । आनेहु फेरि वेगि दोउ भाई ॥  
 लखनु रामु मिय आनेहु फेरी । संसय सकल संकोच निवेरी ॥

दो०—नृप अस कहेउ गोसाईं जस कहइ करा बलि सोइ ।

करि विनती पायन्ह परेउ दीन्ह बाल जिमि रोइ ॥ ९४ ॥

तात कृपा करि कीजिअ सोई । जातें अवध अनाथ न होई ॥  
 मंत्रिहि राम उठाइ प्रबोधा । तात धरम मतु तुम्ह सबु सोधा ॥  
 सिबि दधीच हरिचंद नरेसा । सहे धरम हित कोटि कलेमा ॥  
 रंतिदेव बलि भूप सुजाना । धरमु धरेउ सहि संकट नाना ॥  
 धरमु न दूसर सत्य समाना । आगम निगम पुरान बखाना ॥  
 मै सोइ धरमु सुलभ करि पावा । तजें तिहें पुर अपजसु छावा ॥  
 संभाषित कहें अपजस लाह । मरन काटि सम दारुन दाह ॥  
 तुम्ह सन तात बहुत का कहऊँ । दिऐँ उतरु फिरि पातबु लहऊँ ॥

दो०—पितु पद गहि कहि कोटि नति विनय करव कर जोरि ।

चिंता कवनिहु वात कै तात करिअ जनि मोरि ॥ ९५ ॥

तुम्ह पुनि पितु सम अति हित मोरें । विनती करउ तात कर जोरें ॥  
 सब विधि सोइ करतब्य तुम्हारे । दुख न पाव पितु सोच हमारे ॥

सुनि रघुनाथ सचिव संवादू । भयउ सपरिजन विकल निपादू ॥  
 पुनि कलु लखन कही कटु बानी । प्रभु वरजे वड़ अनुचित जानी ॥  
 सकुचि राम निज सपथ देवाई । लखन सँदेसु कहिअ जनि जाई ॥  
 कह सुमंत्रु पुनि भृष सँदेसु । सहिन सकिहि सिय विपिन कलेसु  
 जेहि विधि अवध आव फिरि सीया । सोइ रघुवरहि तुम्हहि करनीया  
 नतरु निपट अवलंब विहीना । भैंन जिअव जिमि जल विनु मीना

दो०—मइकें ससुरें सकल सुख जवहिं जहाँ मनु मान ।

तहँ तव रहिहि सुखेन सिय जव लागि विपति विहान ॥९६॥

बिनती भूप कीन्ह जेहि भाँती । आरति प्रीति न सो कहि जाती ॥  
 पितु सँदेसु सुनि कृपानिधाना । सियहि दीन्ह सिख कोटि विधाना  
 सासु ससुर गुर प्रिय परिवारू । फिरहु त सब कर मिटै खभारू ॥  
 सुनि पति वचन कहति वैदेही । सुनहु प्रानपति परम सनेही ॥  
 प्रभु करुनामय परम विवेकी । तनु तजि रहति छँह किमि छँकी  
 प्रभा जाइ कहँ भानु विहाई । कहँ चंद्रिका चंदु तजि जाई ॥  
 पतिहि प्रेममय बिनय सुनाई । कहति सचिव सन गिरा सुहाई ॥  
 तुम्ह पितु ससुर सरिस हितकारी । उतरु देउँ फिरि अनुचित भारी ॥

दो०—आरति बस सनमुख भइउँ विलगु न मानव तात ।

आरजसुत पद कमल विनु वादि जहाँ लागि नात ॥९७॥

पितु वैभव विलाम में डीटा । नृप मनि मृकुट मिलित पद पीटा ॥  
 सुख निधान अस पितु गृह मारें । पिय विहीन मन भाव न भारें ॥  
 ससुर चक्रवइ कोसलगाऊ । भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ ॥  
 आगें होइ जेहि सुरपति लेई । अरध सिंघासन आसनु देई ॥

ससुर एतादृश अवध निवाम् । प्रिय परिवारु मातु सम साम् ॥  
 विनु रघुपति पद पदुमपरागा । मोहि कैउ सपनेहुँ सुखद नलागा  
 अगम पंथ वनभूमि पहारा । करि केहरि सर सरित अपारा ॥  
 कोल किरात कुंग विहंगा । मोहिसत्र सुखद प्रानपति संग्गा ॥

दो०—सामु ससुर सन मोरि हूँति विनय कगवि परि पायँ ।

मोर सोचु जनि करिअ कछु मैं वन सुखी सुभायँ ॥९८॥

प्राननाथ प्रिय देवर साथी । वीर घुरीन धरें धनु भाथा ॥  
 नहिं मग श्रमु भ्रमु दुख मन मोरें । मोहिलगि सोचु करिअ जनि भोरें  
 सुनि सुमंत्रु सिय सीतलिवानी । भयउ विकल जनु फनि मनि हानी  
 नयन छन्न नहिं सुनइ न काना । कहि न मकइ कछु अति अकुलाना  
 राम प्रबोधु कीन्ह बहु भाती । तदपि होति नहिं सीतलि छाती ॥  
 जतन अनेक साथ हित कीन्हे । उचित उतर रघुनंदन दीन्हे ॥  
 भेटि जाइ नहिं राम रजाई । कठिन कर्मगति कछु न बसाई ॥  
 राम लखन सिय पद सिरु नाई । फिरंउ वनिक जिमि भूर गवाई ॥

दो०—रघु होंकैउ हय गम तन हेगि हेरि हिहिनाहिं ।

देखि निपाद विपादवम धुनहिं सीस पछिताहिं ॥९९॥

जामु वियोग विकल पसु ऐमें । प्रजा मातु पितु जिइहहिं कैषें ॥  
 चरवस गम सुमंत्रु पठाए । सुगसि तीर आपु तव आए ॥  
 मागी नाव न केवहु आना । कहइ तुम्हार मग्गु मैं जाना ॥  
 चरन कमल रज कहुँ सबु कहई । मानुष करनि मूरि कछु अहई ॥  
 छुअत सिला भइ नारि सुहाई । पाहन तें न काठ कठिनाई ॥  
 तरनिउ मुनि धरिनी होइ जाई । वाट परइ मोरि नाव उड़ाई ॥



सुनि रघुनाथ सचिव संवाद् । भयउ सपरिजन विकल निपाद् ॥  
 पुनि कलु लखन कही कटु वानी । प्रभु वरजे वड् अनुचित जानी ॥  
 सकुचि राम निज सपथ देवाई । लखन सँदेसु कहिअ जनि जाई ॥  
 कह सुमंत्रु पुनि भूप सँदेसु । सहिन सकिहिसिय विपिन कलेसु  
 जेहि विधि अवध आव फिरि सीया । सोइ रघुवरहि तुम्हहि करनीया  
 नतरु निपट अवलंब विहीना । भैंन जिअव जिमि जल विनु मीना  
 दो०—मइकें ससुरें सकल सुख जवहिं जहाँ मनु मान ।

तहँ तव रहिहि सुखेन सिय जव लगि विपति विहान ॥९६॥

विनती भूप कीन्ह जेहि भाँती । आरति प्रीति न सो कहि जाती ॥  
 पितु सँदेसु सुनि कृपानिधाना । सियहि दीन्ह सिख कोटि विधाना  
 सासु ससुर गुर प्रिय परिवारु । फिरहु त सब कर मिटै खभारु ॥  
 सुनि पति वचन कहति वैदेही । सुनहु प्रानपति परम सनेही ॥  
 प्रभु करुनामय परम विवेकी । तनु तजि रहति छँह किमि छँकी  
 प्रभा जाइ कहँ भानु विहाई । कहँ चंद्रिका चंदु तजि जाई ॥  
 पतिहि प्रेममय विनय सुनाई । कहति सचिव सन गिरा सुहाई ॥  
 तुम्ह पितु ससुर सरिस हितकारी । उतरु देउँ फिरि अनुचित भारी ॥

दो०—आरति बस सनमुख भइउँ विलगु न मानव तात ।

आरजमुत पद कमल विनु वादि जहाँ लगि नात ॥९७॥

पितु वैभव विलाम मैं डीठा । नृप मनि मुकुट मिलित पद पीठा ॥  
 सुख निधान अस पितु गृह सोरें । पिय विहीन मन भाव न भोरें ॥  
 ससुर चक्रवड् कोसलराऊ । भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ ॥  
 आगें होइ जेहि सुरपति लेई । अरध सिंघासन आसनु देई ॥

ससुरु एतादृश अधध निवासू । प्रिय परिवारु मातु सम सासू ॥  
 विनु रघुपति पद पदुमपरागा । मोहि केउ सपनेहुँ सुखद नलागा  
 अगम पंथ बनभूमि पहारा । करि केहरि सर सरित अपारा ॥  
 कोल किरात कुरंग विहंगा । मोहिसत्र सुखद प्रानपति संग्गा ॥

दो०—सासु ससुर सन मोरि हुँति विनय करवि परि पायँ ।

मोर सोचु जनि करिअ कछु मैं बन सुखी सुभायँ ॥९८॥

प्राननाथ प्रिय देवर साथा । वीर धुरीन धरें धनु भाथा ॥  
 नहिं मग श्रमु भ्रमु दुख मन मोरें । मोहि लागि सोचु करिअ जनि भोरें  
 सुनि सुमंत्रु सिय सीतलिवानी । भयउ विकल जनु फनि मनि हानी  
 नयन स्रल नहिं सुनइ न काना । कहि न सकइ कछु अति अकुलाना  
 राम प्रबोधु कीन्ह बहु भांती । तदपि होति नहिं सीतलि छाती ॥  
 जतन अनेक साथ हित कीन्हे । उचित उतर रघुनंदन दीन्हे ॥  
 भेटि जाइ नहिं राम रजाई । कठिन करम गति कछु न बसाई ॥  
 राम लखन सिय पद सिरु नाई । फिरेउ बनिक जिमि मूर गवाँई ॥

दो०—रघु हाँकेउ हय राम तन हेरि हेरि हिहिनाहिं ।

देखि निपाद विपादवस धुनहिं सीस पछिताहिं ॥९९॥

जासु वियोग विकल पसु ऐसैं । प्रजा मातु पितु जिइहहिं कैमैं ॥  
 वरवस राम सुमंत्रु पठाए । सुरसरि तीर आपु तव आए ॥  
 मागी नाव न केवटु आना । कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना ॥  
 चरन कमल रज कहँ सवु कहई । मातुप करनि मूरि कछु अहई ॥  
 छुअत सिला भइ नारि सुहाई । पाहन तैं न काठ कठिनाई ॥  
 तरनिउ मुनि घरिनी होइ जाई । वाट परइ मोरि नाव उड़ाई ॥

एहिं प्रतिपालउँ सवु परिवारू । नहिं जानउँ कलुअउर कवारू ॥  
जौं प्रभु पार अवधि गा चहहू । मोहि पद पदुम पखारन कहहू ॥

छं०—पद कपळ थोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहाँ ।

मोहि राम राउरि आन दसरथ सपथ सब साची कहौं ॥

वरु तीर मारहुँ लखनु पै जव लगि न पाय पखारिहीं ।

तव लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहीं ॥

सो०—मुनि केवट के वैन प्रेम लपेटे अटपटे ।

विहसे करुनाएन चितइ जानकी लखन तन ॥१००॥

कृपासिंधु बाले मुमुकाई । साइ करु जेहिं तव नाव न जाई ॥

वेगि आनु जल पाय पखारू । होत विलंबु उतारहि पारू ॥

जागु नाम सुमिरत एक वारा । उताहिं नर भवसिंधु अपारा ॥

साइ कृपालु केवटहि निहारा । जेहिं जगु क्रिय तिहु पगहु ते थारा ॥

पद नख निरखि दंभमरि हरयो । मुनि प्रभु वचन साहँ मति करयो ॥

केवट राम रजायमु पावा । पानि कठवता भरि लेइ आवा ॥

अति आनंद उमगि अचुरागा । चरन सरोज पखारन लाग्गा ॥

वरपि सुमन सुर सकल सिहाहीं । एहि सम पुन्य पुंज कांड नाहीं ॥

दो०—पद पखारि जलु पान करि आपु नहित परिवार ।

पितर पारुकगि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ केइ पार ॥१०१॥

उतरि टाढ़ भाग मुखां गेता । सोय राम गुह लखन समेता ॥

केवट उतरि दंभवन कीन्हा । प्रभुहि सकुच एहि नहिं कलु दीन्हा ॥

येय हिय की मिय जाननिहारी । ननि मुदरी मन मुदित उतारी ॥

हेउ कृपाल लेहि उतराई । केवट चरन गने —

नाथ आजु में काह न पावा । मिटे दोष दुख दाग्दि दावा ॥  
 बहुत काल में कीन्हि मजूरी । आजु दीन्ह विधिवनि भलि भूरी ॥  
 अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें । दीनदयाल अनुग्रह तोरें ॥  
 फिरती बार मोहि जो देवा । सो प्रसादु में सिर धरि लेवा ॥

दो०—बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियें नहिं कछु केवडु लेइ ।

विदा कीन्ह करुनायतन भगति विमल वरु देइ ॥१०२॥

तव मज्जनु करि रघुकुलनाथा । पूजि पारथिव नायउ माथा ॥  
 सियें सुरसरिहि कहेउ कर जोरी । मातु मनोरथ पुरउवि मोरी ॥  
 पति देवर सँग कुसल बहोरी । आइ करीं जेहि पूजा तोरी ॥  
 सुनि सिय विनय प्रेम रस सानो । भइ तव विमल वारि वर बानी ॥  
 सुनु रघुवीर प्रिया वैदेही । तव प्रभाउ जग विदित न केही ॥  
 लोकष होहिं विलोकत तोरें । तोहि सेवहिं सब सिधि कर जोरें  
 तुम्ह जो हमहि बड़ि विनय सुनाई । कृपा कीन्हि मोहि दीन्हि बड़ाई  
 तदपि देवि में दंवि असीसा । सफल होन हित निज बागीसा ॥

दो०—प्राननाथ देवर सहित कुसल कोसला आइ ।

पूजिहि सत्र मनकामना सुजसु रहिहि जग छाइ ॥१०३॥

गंग वचन मुनि मंगल मूला । मुदित साय सुरसरि अनुकला ॥  
 तव प्रभु गुहहि कहेउ घर जाहू । सुनत सख मुखु भा उर दाहू ॥  
 दीनवचन गुह कह कर जोरी । विनय सुनहु रघुकुलमनि मोरी ॥  
 नाथ साथ रहि पशु देखवाई । करि दिन वारि चरन सेवकाई ॥  
 जेहि वन जाइ रहव रघुराई । परनकुटी में करवि सुहाई ॥  
 तब मोहि कहँ जसि देव रजाई । सोइ करिहउँ रघुवीर दोहाई ॥

सहज सनेह राम लखि तासू । संग लोन्ह गुह हृदयँ हुलासू ॥  
पुनि गुहँ ग्याति बोलि सब लोन्हे । करि परितोषु विदा तव कीन्हे ॥

दो०—तव गनपति सिव मुमिरि प्रभु नाइ सुरसरिहि माथ ।

सखा अनुज सिय सहित वन गवनु कीन्ह रघुनाथ ॥१०४॥

तेहि दिन भयउ विटप तर वासू । लखन सखाँ सब कीन्ह सुपासू ॥  
प्रात प्रातकृत करि रघुराई । तीरथराजु दीख प्रभु जाई ॥  
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी । माधव सरिस मीतु हितकारी ॥  
चारि पदारथ भरा भँडारू । पुन्य प्रदेश देस अति चारू ॥  
छेत्रु अगम गद्गु गाढ़ सुहावा । सपनेहुँ नहिँ प्रतिपच्छिन्ह पावा ॥  
सेन सकल तीरथ वर वीरा । कल्प अनीक दलन रनधीरा ॥  
संगमु सिंहासनु सुठि सोहा । छत्रु अखयवट्ट मुनि मनु मोहा ॥  
चवँर जमुन अरु गंग तरंगा । देखि होहिँ दुख दारिद भंगा ॥

दो०—सेवहिँ सुकृतो साधु सुचि पावहिँ सब मनकाम ।

वंदो वेद पुरान गन कहहिँ विमल गुन ग्राम ॥१०५॥

को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ । कल्प पुंज कुंजर मृगराऊ ॥  
अस तीरथपति देखि मुहावा । सुख सागर रघुवर मुखु पावा ॥  
कहि मिय लखनहि सखहि सुनाई । श्रीमुख तीरथराज बड़ाई ॥  
करि प्रनामु देखत वन वागा । कहत महातम अति अनुरागा ॥  
एहि विधि आइ विलांकी बेनी । सुमिरत सकल सुमंगल देनी ॥  
मुदित नहाइ कीन्हि सिव सेवा । पूजि जथाविधि तीरथ देवा ॥  
तव प्रभु भरद्वाज पहिँ आए । करत दंडवत मुनि उर लाए ॥  
मुनि मन मोद न कळु कहि जाई । ब्रह्मानंद रासि जनु पाई ॥

दो०—दीन्हि असीस मुनीस उर अति अनंदु अस जानि ।

लोचन गोचर सुकृत फल मनहुँ किए विधि आनि ॥१०६॥

कुसल प्रसन्न करि आसन दीन्हे । पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हे ॥  
 कंद मूल फल अंकुर नीके । दिए आनि मुनि मनहुँ अमी के ॥  
 सीय लखन जन सहित मुहाए । अति रुचि राम मूल फल खाए ॥  
 भए विगतश्रम राम सुखारे । भरद्वाज मृदु वचन उचारे ॥  
 आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू । आजु सुफल जप जोग विरागू ॥  
 सफल सकल सुभ साधन साजू । राम तुम्हहि अवलोकत आजू ॥  
 लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी । तुम्हरे दरस आस सब पूजी ॥  
 अब करि कृपा देहु वर एहू । निज पद सरसिज सहज सनेहू ॥

दो०—करमवचन मन छाड़ि छलु जब लगि जनु न तुम्हार ।

तव लगि सुखु सपनेहुँ नहीं किएँ कोटि उपचार ॥१०७॥

मुनि मुनि वचन रामु सकुचाने । भाव भगति आनंद अघाने ॥  
 तव रघुवर मुनि सुजसु सुहावा । काटि भाति कहि सबहि सुनावा ॥  
 सो बड़ सो सब गुन गन गेहू । जेहि मुनीस तुम्ह आदर देहू ॥  
 मुनि रघुवीर परसपर नवहीं । वचन अगोचर सुखु अनुभवहीं ॥  
 यह सुधि पाइ प्रयाग निवासी । बडु तापस मुनि सिद्ध उदासी ॥  
 भरद्वाज आश्रम सब आए । देखन दसरथ सुअन सुहाए ॥  
 राम प्रनाम कीन्ह सब काहू । मुदित भए लहि लोचन लाहू ॥  
 देहिँ असीस परम सुखु पाई । फिरे सराहत सुंदरताई ॥

दो०—राम कीन्ह विश्राम निसि प्रात प्रयाग नहाइ ।

चले सहित सिय लखन जन मुदित मुनिहि सिरुनाइ ॥१०८॥

राम सप्रेम कहउ मुनि पाहीं । नाथ कहिअ हम केहि मग जाहीं ॥  
 मुनि मन विहसिराम खन कहहीं । सुगम सकल मग तुम्ह कहूँ अहहों  
 साथ लागि मुनि सिष्य बोलाए । मुनि मन मुदित पचासक आए ॥  
 सबन्हि राम पर प्रेम अपारा । सकल कहहिं मगु दीख हमारा ॥  
 मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे । जिन्ह बहु जनम सुकृत सब कीन्हे  
 करि प्रनामु रिषि आयसु पाई । प्रमुदित हृदयँ चले रघुराई ॥  
 ग्राम निकट जब निकसहिं जाई । देखहिं दरसु नारि नर धाई ॥  
 होहिं सनाथ जनम फलु पाई । फिरहिं दुखित मनु संग पठाई ॥

दो०—विदा किए बटु विनय करि फिरे पाइ मन काम ।

उतरि नहाए जमुन जल जो सरीर सम स्याम ॥१०९॥

सुनत तीरवासी नर नारी । धाए निज निज काज विसारी ॥  
 लखन राम सिष्य सुंदरताई । देखि करहिं निज भाग्य बड़ाई ॥  
 अति लालसा बसहिं मन माहीं । नाउँ गाउँ बूझत सकुचाहीं ॥  
 जे तिन्ह महुँ वयविरिधि सयाने । तिन्ह करि जुगुति रामु पहिचाने ॥  
 सकल कथा तिन्ह संगहि सुनाई । वनहि चले पितु आयसु पाई ॥  
 मुनि सविपाद सकल पछिताहीं । रानी रायँ कीन्ह भल नाहीं ॥  
 तेहि अवसर एक तापसु आवा । तेजपुंज लघुवयस सुहावा ॥  
 कवि अलखित गति बेषु विरागी । मन क्रम बचन राम अनुरागी ॥

दो०—सजल नयन तन पुलकि निज इष्टदेउ पहिचानि ।

परैउ दंड जिमि धरनितल दसा न जाइ बखानि ॥११०॥

राम सप्रेम पुलकि उर लावा । परस रंक जनु पारसु पावा ॥  
 मनहुँ प्रेमु परमारथु दोऊ । मिलत धरें तन कह सबु कोऊ ॥

बहुरि लखन पायन्ह सोड लागा । लीन्ह उठाड उमगि अनुरागा ॥  
 पुनि सिय चरन धूरि धरि सीसा । जननि जानि सिसु दीन्हि असीसा  
 कीन्ह निपाद दंडवत तेही । मिलेउ मुदित लखि राम सनेही ॥  
 पिअत नयन पुट रूपु पियूपा । मुदित सुअसनु पाइ जिमि भूखा ॥  
 ते पितु मातु कहहु सखि कैसे । जिन्ह पठए वन बालक ऐसे ॥  
 राम लखन सिय रूपु निहारो । होहिं सनेह विकल नर नारी ॥  
 दो०—तव रघुबीर अनेक विधि सखहि सिखावनु दोन्ह ।

राम रजायसु सीस धरि भवन गवनु तेइ कीन्ह ॥१११॥

पुनि सियँ राम लखन कर जोरी । जमुनहि कीन्ह प्रनामु बहोरी ॥  
 चले सतीय मुदित दोउ भाई । रवितनुजा कड करत बड़ाई ॥  
 पथिक अनेक मिलहिं मग जाता । कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता ॥  
 राज लखन सव अंग तुम्हारे । देखि सोचु अति हृदय हमारे ॥  
 मारग चलहु पयादेहि पाए । ज्यातिपु झूठ हमारे भाएँ ॥  
 अगमु पंथु गिरि कानन भारी । तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी ॥  
 करि केहरि वन जाइ न जोई । हम संग चलहि जो आयसु होई ॥  
 जाव जहाँ लगि तहँ पहुँचाई । फिरव बहोरि तुम्हहि सिरु नाई ॥  
 दो०—एहि विधि पूँछहिं प्रेम बस पुलक गात जलु नैन ।

कृपासिंधु फेरहिं तिन्हहि कहि विनीत मृदु बैन ॥११२॥

जे पुर गाँव बसहिं मग माहीं । तिन्हहि नाग सुर नगर सिहाहीं ॥  
 केहि सुकृतीं केहि घरीं बसाए । धन्य पुन्यमय परम सुहाए ॥  
 जहँ जहँ राम चरन चलि जाहीं । तिन्ह समान अमरावति नाहीं ॥  
 पुन्यपुंज मग निकट निवासी । तिन्हहि सराहिं सुरपुरवासी ॥



जे भरि नयन विलोकहि रामहि । सीता लखन सहित घनस्यामहि ॥  
 जे सर सरित राम अवगाहहिं । तिन्हहि देव सर सरित सराहहिं ॥  
 छौहि तरु तर प्रभु बैठहिं जाई । करहिं कलपतरु तामु बड़ाई ॥  
 परसि राम पद पदुम परागा । मानति भूमि भूरि निज भागा ॥

दो०—छाँह करहिं घन विबुधगन वरपहिं सुमन सिहाहिं ।

देखत गिरि वन विहग मृग रामु चले मग जाहिं ॥११३॥

सीता लखन सहित रघुराई । गाँव निकट जव निकसहिं जाई ॥  
 सुनि सब बाल वृद्ध नर नारी । चलहिं तुरत गृहकाजु विसारी ॥  
 राम लखन सिय रूप निहारी । पाइ नयनफलु होहिं सुखारी ॥  
 सजल विलोचन पुलक सरीरा । सब भए मगन देखि दोउ वीरा ॥  
 परनि न जाइ दसा तिन्ह केरी । लहि जनु रंकन्ह सुरमनि ठेरी ॥  
 एकन्ह एक बोलि सिख देहीं । लांचन लाहु लेहु छन एहीं ॥  
 रामहि देखि एक अनुरागे । चितवत चले जाहिं संग लागे ॥  
 एक नयन मग छवि उर आनी । होहिं सिथिल तन मन वरवानी ॥

दो०—एक देखि बट छाँह भलि डसि मृदुल तन पात ।

कहहिं गवाँइअ छिनुकु श्रमु गवनव अवहिं कि प्रात ॥११४॥

एक कलस भरि आनहिं पानी । अँचइअ नाथ कहहिं मृदुवानी ॥  
 सुनि प्रिय वचन प्रीति अति देखी । राम कृपाल सुसील विसेपी ॥  
 छानी आसत सीय मन माहीं । घरिक विलंबु कीन्ह बट छाहीं ॥  
 मृदित नागि नर देखहि सोभा । रूप अनूप नयन मनु लोभा ॥  
 एकटक सब सोहहि चहुँ ओरा । रामचंद्र मुख चंद्र चकोरा ॥  
 तरुन तमाल बरन तनु सोहा । देखत कोटि मदन मनु मोहा ॥

दामिनि बरन लखन सुठि नीके । नख सिख सुभग भावते जी के ॥  
मुनिपट कटिन्ह कसें तूनीरा । सोहहिं कर कमलनि धनु तीरा ॥

दो०—जटा मुकुट सीसनि सुभग उर भुज नयन विसाल ।

सरद परब विधु बदन बर लसत स्वेद कन जाल ॥ ११५ ॥

बरनि न जाइ मनोहर जोरी । सोभा बहुत थोरि मति मोरी ॥  
राम लखन सिय सुंदरताई । सब चितवहिं चित मन मतिलाई ॥  
थके नारि नर प्रेम पिआसे । मनहुं मृगी मृग देखि दिआ से ॥  
सीय समीप ग्रामतिय जाहीं । पूँछत अति सनेहँ सकुचाहीं ॥  
बार बार सब लागहिं पाएँ । कहहिं बचन मृदु सरल सुभाएँ ॥  
राजकुमारि विनय हम करहीं । तिय सुभायँ कछु पूँछत डरहीं ॥  
स्वामिनि अविनय छमवि हमारी । बिलगु न मानव जानि गवाँरी ॥  
राजकुअँर दोउ सहज सलोने । इन्ह ते लही दुति मरकत सोने ॥

दो०—स्यामल गौर किसोर बर सुंदर सुपमा ऐन ।

सरद सर्वरीनाथ मुखु सरद सरोरुह नैन ॥ ११६ ॥

मासपारायण, सोलहवाँ विश्राम

नवाह्नपारायण, चौथा विश्राम

कोटि मनोज लजावनिहारे । सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे ॥  
सुनि सनेहमय मंजुल बानी । सकुची सिय मन महुं मुसुकानी ॥  
तिन्हहि बिलोकि बिलोकति धरनी । दुहुँ सकोच सकुचति बर बरनी ॥  
सकुचि सप्रेम बाल मृग नयनी । बोली मधुर बचन पिकवयनी ॥  
सहज सुभाय सुभग तन गोरे । नामु लखनु लघु देवर मोरे ॥

बहुरि बदनु विधु अंचल ढाँकी । पिय तन चितइ भाँह करि बाँकी ॥  
खंजन मंजु तिरीछे नयननि । निज पति कहेउ तिन्हहि सियँ सयननि  
भई मुदित सब ग्रामवधूटीं । रंकन्ह राय रासि जनु लूटीं ॥

दो०—अति सप्रेम सिय पायँ परि बहु विधि देहिं असीस ।

सदा सोहागिनि होहु तुम्ह जव लगि सहि अहि सीस ॥ ११७ ॥

पारवती सम पतिप्रिय होहू । देवि न हम पर छाड़व छोहू ॥  
पुनि पुनि विनय करिअ कर जोरी । जाँ एहि सारग फिरिअ बहोरी  
दरसनु देव जानि निज दासी । लखीं सीयँ सब प्रेम पिआसी ॥  
मधुर बचन कहि कहि परितोपीं । जनु कुमुदिनीं कौमुदीं पोपीं ॥  
तवहिं लखन रघुवर रुख जानी । पूँछेउ मगु लोगन्हि मृदु वानी ॥  
सुनत नारि नर भए दुखारी । पुलकित गात विलोचन वारी ॥  
मिटा मोदु मन भए मलीने । विधि निधि दीन्ह लेत जनु छीने ॥  
समुझि करमगति धीरजु कीन्हा । सोधि सुगम मगु तिन्ह कहि दीन्हा

दो०—लखन जानकी सहित तव गवनु कीन्ह रघुनाथ ।

फेरे सब प्रिय बचन कहि लिए लाइ मन साथ ॥ ११८ ॥

फिरत नारि नर अति पछिताहीं । दैअहि दोषु देहिं मन माहीं ॥  
सहित विषाद परसपर कहहीं । विधि करतव उलटे सब अहहीं ॥  
निपट निरंकुस निटुर निरांकू । जेहिं ससि कीन्ह सरुज सकलंकू ॥  
रख कलपतरु सागरु खारा । तेहिं पठए वन राजकुमार ॥  
जाँ पै इन्हहि दीन्ह वनयाहू । कीन्ह वादि विधि भोग विलाहू ॥  
ए विचरहिं मग विनु पदवाना । रचे वादि विधि वाहन नाना ॥  
ए सहि परहिं डारि डूस पाता । सुभग सेज कत सृजत विधाता ॥

तरुवर वास इन्हहि विधि दीन्हा । धवल धाम रचि रचि श्रमु कीन्हा

दो०—जाँ ए मुनि पट धर जटिल सुंदर सुठि सुकुमार ।

विविध भाँति भूपन बसन वादि किए करतार ॥ ११९ ॥

जाँ ए कंद मूल फल खाहीं । वादि सुधादि असन जग माहीं ॥  
 एक कहहिँ ए सहज सुहाए । आपु प्रगट भए विधि न बनाए  
 जहँ लगि बेद कही विधि करनी । श्रवन नयन मन गोचर बरनी ॥  
 देखहु खोजि भुअन दस चारी । कहँ अस पुरुष कहँ असि नारी ॥  
 इन्हहि देखि विधि मनु अनुरागा । पटतर जोग बनावै लागा ॥  
 कीन्ह बहुत श्रम ऐक न आए । तेहिँ शरिपा बन आनि दुराए ॥  
 एक कहहिँ हम बहुत न जानहिँ । आपुहि परम धन्य करि मानहिँ ॥  
 ते पुनि पुन्यपुंज हम लेखे । जे देखहिँ देखिहहिँ जिन्ह देखे ॥

दो०—एहि विधि कहि कहि बचन प्रिय लेहिँ नयन भरि नीर ।

किमि चलिहहिँ मारग अगम सुठि सुकुमार सरीर ॥ १२० ॥

नारि सनेह विकल बस होहीं । चकई साँझ समय जनु सोहीं ॥  
 मृदु पद कमल कठिन मगु जानी । गहवरि हृदयँ कहहिँ बर बानी ॥  
 परसत मृदुल चरन अरुनारे । सकुचति महि जिमि हृदय हमारे ॥  
 जाँ जगदीस इन्हहि बनु दीन्हा । कस न सुमनमय मारगु कीन्हा ॥  
 जाँ मागा पाइअ विधि पाहीं । एरखिअहिँ सखि ओखिन्ह माहीं  
 जे नर नारि न अवसर आए । तिन्ह सिय रामु न देखन पाए ॥  
 सुनि सुरुपु बृझहिँ अबुलाई । अब लगि गए कहँ लगि भाई ॥  
 समरथ धाइ बिलोकहि जाई । प्रमुदित फिरहिँ जनमफलु पाई ॥

दो०—अवला बालक वृद्ध जन कर मीजहिं पछिताहिं ।

होहिं प्रेमवस लोग इमि रामु जहाँ जहँ जाहिं ॥ १२१ ॥

गावँ गावँ अस होइ अनंदू । देखि भानुकुल कैरव चंद्रू ॥  
 जे कलु समाचार सुनि पावहिं । ते नृप रानिहि दोसु लगावहिं ॥  
 कहहिं एक अति भल नरनाहू । दीन्ह हमहि जांड लोचन लाहू ॥  
 कहहिं परसपर लोग लोगाई । बातें सरल सनेह सुहाई ॥  
 ते पितु मातु धन्य जिन्ह जाए । धन्य सो नगरु जहाँ तें आए ॥  
 धन्य सो देसु सैलु वन गाऊँ । जहँ जहँ जाहिं धन्य सोइ टाऊँ ॥  
 सुखु पायउ चिरंचि रचि तेही । ए जेहि के सत्र भाँति सनेही ॥  
 गम लखन पथि कथा सुहाई । रही सकल मग कानन छाई ॥

दो०—एहि विधि रघुकुल कमल रवि मग लोगन्ह सुख देत ।

जाहिं चले देखत विपिन सिय सौमित्रि समेत ॥ १२२ ॥

आगें रामु लखनु वने पाछें । तापस वेप विराजत काछें ॥  
 उभय बीच सिय सोहति कैसैं । ब्रह्म जीव विच माया जैसैं ॥  
 बहुरि कहउँ छवि जसि मन वसई । जनु मधु मदन मध्य रति लसई ॥  
 उपमा बहुरि कहउँ जियँ जोही । जनु बुध विधु विच रोहिनि सोही ॥  
 प्रभु पद रेख वाच विच सोता । धरति चरन मग चलति सभोता ॥  
 गीय गम पद अंक वराएँ । लखन चलहिं मगु दाहिन लाएँ ॥  
 राम लखन सिय प्रीति मुहाई । वचन अगांचर किमि कहि जाई ॥  
 खग मृग मगन देखि छवि होहीं । लिए चोरि चित गम बटोहीं ॥

दो०—जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय सिय समेत दोउ भाइ ।

भव मगु अगमु अनंदु तेह बिनु श्रम रहे सिराइ ॥ १२३ ॥

अजहुँ जासु उर सपनेहुँ काऊ । बसहुँ लखनु सिय रामु बटाऊ ॥  
 राम धाम पथ पाइहि सोई । जो पथ पाव कवहुँ मुनि कोई ॥  
 तव रघुवीर श्रमित सिय जानी । देखि निकट बटु सीतल पानी ॥  
 तहँ बसि कंद मूल फल खाई । प्रात नहाइ चले रघुराई ॥  
 देखत बन सर सैल सुहाए । बालमीकि आश्रम प्रभु आए ॥  
 राम दीख मुनि वासु सुहावन । सुंदर गिरि काननु जलु पावन ॥  
 सरनि सरोज चिटप बन फूले । गुंजत मंजु मधुप रस भूले ॥  
 खग मृग विपुल कोलाहल करहीं । विरहित वैर मुदित मन चरहीं ॥

दो०—सुचि सुंदर आश्रमु निरखि हरपे राजिवनेन ।

मुनि रघुवर आगमनु मुनि आगें आयउ लेन ॥१२४॥

मुनि कहुँ राम दंडवत कीन्हा । आसिरवाहु विप्रवर दीन्हा ॥  
 देखि राम छवि नयन जुड़ाने । करि सनमानु आश्रमहिं आने ॥  
 मुनिवर अतिथि प्रानप्रिय पाए । कंद मूल फल मधुर मगाए ॥  
 सिय सौमित्रि राम फल खाए । तव मुनि आश्रम दिए सुहाए ॥  
 बालमीकि मन आनँदु भारी । मंगल मूरति नयन निहारी ॥  
 तव कर कमल जोरि रघुराई । बोले वचन श्रवन सुखदाई ॥  
 तुम्ह त्रिकाल दरसी मुनिनाथा । विश्व बदर जिमि तुम्हरे हाथा ॥

अस कहि प्रभु सव कथा बखानो । जेहि जेहि भाँति दान्ह वनु राना ॥

दो०—तात वचन पुनि मातु हित भाइ भरत अस राउ ।

मो कहुँ दरस तुम्हार प्रभु सवु मम पुन्य प्रभाउ ॥१२५॥

देखि पाय मुनिराय तुम्हारे । भए सुकृत सब सुफल हमारे ॥  
 अब जहँ राउर आयसु होई । मुनि उदवेगु न पावै कोई ॥

नि तापस जिन्ह तें दुखु लहहीं। ते नरेस विनु पावक दहहीं॥  
 मंगल मूल विप्र परितोषू। दहइ कोटि कुल भूसुर रोषू॥  
 अस जियँ जानि कहिअ सोइ ठाऊँ। सिय सौमित्रि सहित जहँ जाऊँ॥  
 तहँ रचि रुचिर परन तृन साला। वासु करौं कछु काल कृपाला॥  
 सहज सरल सुनि रघुवर वानी। साधु साधु बोले मुनि ग्यानी॥  
 कस न कहहु अस रघुकुलकेतू। तुम्ह पालक संतत श्रुति सेतू॥

छं०—श्रुति सेतु पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी।  
 जो सृजति जगु पालति हरति रुख पाइ कृपानिधान की॥  
 जो सहससीसु अहीसु महिधरु लखनु सचराचर धनी।  
 सुर काज धरि नरराज तनु चले दलन खल निसिचर अनी॥

सो०—राम सरूप तुम्हार वचन अगोचर बुद्धिपर।  
 अविगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह ॥१२६॥

जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे। विधि हरि संभु नचावनिहारे॥  
 तेउ न जानहि मरमु तुम्हारा। औरु तुम्हहि को जाननिहारा॥  
 सोइ जानइ जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई॥  
 तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहिरघुनंदन। जानहिं भगत भगत उर चंदन॥  
 चिदानंदमय देह तुम्हारी। विगत विकार जान अधिकारी॥  
 नर तनु धरेहु संत सुर काजा। कहहु करहु जस प्राकृत राजा॥  
 राम देखि मुनि चरित तुम्हारे। जड़ मोहहिं बुध होहिं मुखारे॥  
 तुम्ह जो बहहु करहु रघु साँचा। जस काछिअ तन चाहिअ नाचा॥

दो०—पूँछेहु मोहि कि रहाँ कहँ मैं पूँछत सकुचाउँ।

जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखाचौं ठाउँ ॥१२७॥

सुनि मुनि वचन प्रेम रस साने । सकुचि राम मन महुँ छुसुकाने ॥  
 बालमीकि हँसि कहहि बहोरी । बानी मधुर अमिअ रस घोरी ॥  
 सुनहु राम अब कहउँ निकेता । जहाँ बसहु सिय लखन समेता ॥  
 जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना । कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना ॥  
 भरहि निरंतर होहि न पूरे । तिन्ह के हिय तुम्ह कहँ गृह रूरे ॥  
 लोचन चातक जिन्ह करि राखे । रहहि दरस जलधर अभिलाषे ॥  
 निदरहि सरित सिंधु सर भारी । रूप विंदु जल होहि सुखारी ॥  
 तिन्ह कँ हृदय सदन सुखदायक । बसहु बंधु सिय सह रघुनायक ॥

दो०—जसु तुम्हार मानस विमल हंसिनि जीहा जासु ।

मुकताहल गुन गन चुनइ राम बसहु हियँ तासु ॥१२८॥

प्रभु प्रसाद सुचि सुभग सुवासा । सादर जासु लहइ नित नासा ॥  
 तुम्हहि निबेदित भोजन करहीं । प्रभु प्रसाद पट भूपन धरहीं ॥  
 सीसनवहिँ सुर गुरु द्विज देखी । प्राति सहित करि विनय विसेपी ॥  
 कर नित करहिँ राम पद पूजा । राम भरोस हृदयँ नहिँ दूजा ॥  
 चरन राम तीरथ चलि जाहीं । राम बसहु तिन्ह के मन माहीं ॥  
 मंत्रराजु नित जपहिँ तुम्हारा । पूजहिँ तुम्हहिँ सहित परिवारा ॥  
 तरपन होम करहिँ विधि नाना । विप्र जेवाँइ देहिँ बहु दाना ॥  
 तुम्ह तँ अधिक गुरहिँ जियँ जानी । सकल भायँ सेवहिँ सनमानी ॥

दो०—सयु करि मागहिँ एक फलु राम चरन रति होउ ।

तिन्ह कँ मन मंदिर बसहु सिय रघुनंदन दोउ ॥१२९॥

काम कोह मद मान न मोहा । लोभ न छोभ न राग न द्रोहा ॥  
 जिन्ह कँ कपट दंभ नहिँ माया । तिन्ह कँ हृदय बसहु रघुराया ॥



सब के प्रिय सब के हितकारी । दुख दुख सरिस प्रसंसा गारी ॥  
 कहहिं सत्य प्रिय वचन विचारी । जागत सोवत सरन तुम्हारी ॥  
 तुम्हहि छाड़ि गति दूसरि नाहीं । राम वसहु तिन्ह के मन माहीं ॥  
 जननी सम जानहिं परनारी । धनु पराव विष तें विष भारी ॥  
 जे हरषहिं पर संपति देखी । दुखित होहिं पर विपति विसेपी ॥  
 जिन्हहि राम तुम्ह प्रानपिआरे । तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे ॥  
 दो०—स्वामि सरवा पितु मातु गुरं जिन्ह के सब तुम्ह तात ।

मन मंदिर तिन्ह कें वसहु सीय सहित दोउ भ्रात ॥१३०॥

अवगुन तजि सब के गुन गहहीं । विप्र धेनु हित संकट सहहीं ॥  
 नीति निपुन जिन्ह कइ जगलीका । घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका ॥  
 गुन तुम्हार समुझइ निज दोसा । जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसा ॥  
 राम भगत प्रिय लागहिं जेही । तेहि उर वसहु सहित वैदेही ॥  
 जाति पाँति धनु धरमु बड़ाई । प्रिय परिवार सदन सुखदाई ॥  
 सब तजि तुम्हहि रहइ उर लाई । तेहि के हृदयँ रहहु रघुराई ॥  
 सरगु नरकु अपवरगु समाना । जहँ तहँ देख धरें धनु वाना ॥  
 करम वचन मन राउर चेरा । राम करहु तेहि कें उर डेरा ॥

दो०—जाहि न चाहिअ कवहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु ।

वसहु निरंतर तासु मन सो राउर निज गेहु ॥१३१॥

एहि विधि मुनिवर भवन देखाए । वचन सप्रेम राम मन भाए ॥  
 कह मुनि मुनहु भानुकुलनायक । आश्रम कहउँ समय सुखदायक ॥  
 चित्रकूट गिरि करहु निवास । तहँ तुम्हार सब भाँति सुपास ॥  
 सँलु सुहावन कानन चारु । करि केहरि मृग विहग विहारु ॥

नदी पुनीत पुरान बखानी।अत्रिप्रिया निज तपवल आनी ॥  
सुरसरि धार नाउँ मंदाकिनि। जो सत्र पातक पोतक डाकिनि ॥  
अत्रि आदि मुनिवर बहु बसहीं। करहिं जोग जप तप तन कसहीं ॥  
चलहु सकल श्रम सत्र कर करहू। राम देहु गौरव गिरिवरहू ॥  
दो०—चित्रकूट महिमा अमित कही महामुनि गाइ।

आइ नहाए सरित बर सिय समेत दोउ भाइ ॥१३२॥

रघुवर कहेउ लखन भल घाटू। करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू ॥  
लखन दीख पय उतर करारा। चहुँ दिसि फिरेउ धनुष जिमि नारा  
नदी पनच सर सम दम दाना। सकल कलुष कलि साउज नाना ॥  
चित्रकूट जनु अचल अहेरी। चुकइ न घात मार मुठभेरी ॥  
अस कहि लखन ठाउँ देखरावा। थलु विलोकि रघुवर सुखु पावा ॥  
रमेउ राम मनु देवन्ह जाना। चले सहित सुरथपति प्रधाना ॥  
कोल किरात वेप सत्र आए। रचे परन तन सदन सुहाए ॥  
बरनि न जाहिं मंजु दुइ साला। एक ललित लघु एक विसाला ॥

दो०—लखन जानकी सहित प्रभु राजत रुचिर निकेत ।

सोह मदन मुनि वेप जनु रति रितुराज समेत ॥१३३॥

मासपारायण, सत्रहवाँ विश्राम

अमर नाग किंनर दिसिपाला। चित्रकूट आए तेहि काला ॥  
राम प्रनाम क्रीन्ह सत्र काहू। मुदित देव लहि लोचन लाहू ॥  
बरपि सुमन कह देव समाजू। नाथ सनाथ भए हम आजू ॥  
करि बिनती दुख दुसह सुनाए। हरपित निज निज सदन सिधाए

चित्रकूट रघुनंदनु छाप । समाचार सुनि सुनि मुनि आए ॥  
 आवत देखि मुदित मुनिवृंदा । कीन्ह दंडवत रघुकुल चंदा ॥  
 मुनि रघुवरहि लाइ उर लेहीं । सुफल होन हित आसिप देहीं ॥  
 सिय सौमित्रि रामछवि देखहिं । साधन सकल सफल करि लेखहिं ॥

दो०—जथाजोग सनमानि प्रभु विदा किए मुनिवृंद ।

करहिं जोग जप जाग तप निज आश्रमन्हि सुछंद ॥१३४॥

यह सुधि कोल किरातन्ह पाई । हरषे जनु नव निधि घर आई ॥  
 कंद मूल फल भरि भरि दोना । चले रंक जनु लूटन सोना ॥  
 तिन्ह महँ जिन्ह देखे दोउ भ्राता । अपर तिन्हहि पूँछहिं मशु जाता ॥  
 कहत सुनत रघुवीर निकार्ई । आइ सवन्हि देखे रघुगार्ई ॥  
 करहिं जोहारु भेंट धरि आगे । प्रभुहि विलोकहिं अति अनुरागे ॥  
 चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े । पुलक सरीर नयन जल वाढ़े ॥  
 राम सनेह मगन सब जाने । कहि प्रिय वचन सकल सनमाने ॥  
 प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी । वचन विनीत कहहिं कर जोरी ॥

दो०—अब हम नाथ सनाथ सब भए देखि प्रभु पाय ।

भाग हमारें आगमनु राउर कोसलराय ॥१३५॥

धन्य भूमि वन पंथ पहारा । जहँ जहँ नाथ पाउ तुम्ह धारा ॥  
 धन्य विहग मृग काननचारी । सकल जनम भए तुम्हहि निहारी ॥  
 हम सब धन्य सहित परिवारा । दीख दरसु भगि नयन तुम्हारा ॥  
 कीन्ह वासु भल ठाउँ विचारी । इहाँ सकल गितु रहव सुखारी ॥  
 हम सब भाँति करव सेवकार्ई । करि केहरि अहि वाच वरार्ई ॥  
 वन ब्रेहड़ गिरि कंदर खोहा । सब हमार प्रभु पग पग जोहा ॥

तहँ तहँ तुम्हहि अहेर खेलाउत्र । सर निरझर जलठाउँ देखाउत्र ॥  
हम सेवक परिवार समेता । नाथ न सकुचव आयसु देता ॥  
दो०—वेद बचन मुनि मन अगम ते प्रभु करुना ऐन ।

बचन किरातन्ह के सुनत जिमि पितु बालक वैन ॥१३६॥

रामहि केवल प्रेष्ठ पिआरा । जानि लेउ जो जाननिहारा ॥  
राम सकल वनचर तब तोषे । कहि मृदु बचन प्रेम परिपोषे ॥  
विदा किए सिर नाइ सिधाए । प्रभु गुन कहत सुनत घर आए ॥  
एहि विधि सिय समेत दोउ भाई । वसहिं विपिन सुर मुनि सुखदाई ॥  
जब तें आइ रहे रघुनायकु । तब तें भयउ वनु मंगलदायकु ॥  
फूलहिं फलहिं विटप विधिनाना । मंजु बलित वर बेलि विताना ॥  
सुरतरु सरिस सुभायँ सुहाए । मनहुँ विबुध वन परिहरि आए ॥  
गुंज मंजुतर मधुकर श्रेनी । त्रिविध बयारि वहइ सुख देनी ॥

दो०—नीलकंठ कलकंठ सुक चातक चक्र चकोर ।

भाँति भाँति बोलहिं बिहग श्रवन सुखद चित चोर ॥१३७॥

करि केहरि कपि कोल कुरंगा । विगतबैर विचरहिं सब संग्गा ॥  
फिरत अहेर राम छवि देखी । होहिं मुदित मृगबृंद विसेपी ॥  
विबुध विपिन जहँ लगि जग माहीं । देखि राम वनु सकल सिहाहीं ॥  
सुरसरि सरसइ दिनकर कन्या । मेकलसुता गोदावरि धन्या ॥  
सब सर सिंधु नदी नद नाना । मंदाकिनि कर करहिं बखाना ॥  
उदय अस्त गिरि अरु कैलास । मंदर मेरु सकल सुरवास ॥  
सैल हिमाचल आदिक जेते । चित्रकूट जसु गावहिं तेते ॥  
विधि मुदित मन सुखु न समाई । श्रम विनु विपुल बड़ाई पाई ॥

दो०—चित्रकूट के विहग मृग बेलि विटप तृन जाति ।

पुन्य पुंज सब धन्य अस कहहिं देव दिन राति ॥१३८॥

नयनवंत रघुवरहि विलोकी । पाइ जनम फल होहिं विसोकी ॥  
 परसि चरन रज अचर सुखारी । भए परम पद के अधिकारी ॥  
 सो वनु सैलु सुभायँ सुहावन । मंगलमय अति पावन पावन ॥  
 महिमा कहिअ कवनि विधि तासू । सुखसागर जहँ कीन्ह निवासू ॥  
 पय पयोधि तजि अवध विहाई । जहँ सिय लखनु रामु रहे आई ॥  
 कहि न सकहिं सुपमा जसि कानन । जाँ सत सहस होहिं सहसानन ॥  
 सो मैं वरनि कहाँ विधि केहीं । डावर कमठ कि मंदर लेहीं ॥  
 सेवहिं लखनु कर्म मन वानी । जाइ न सीलु सनेहु वखानी ॥

दो०—छिनु छिनु लखि सिय राम पद जानि आपु पर नेहु ।

करत न सपनेहुँ लखनु चितु बंधु मातु पितु गेहु ॥१३९॥

गम मंग सिय रहति सुखारी । पुग परिजन गृह सुरति विसारी ॥  
 छिनु छिनु पिय विधु वदनु निहारी । प्रमुदित मनहुँ चकोरकुमारी ॥  
 नाहनेहु नित वदत विलोकी । हरपित रहति दिवस जिमि कोकी ॥  
 सिय मनु गम चरन अनुरागा । अवध सहस सम वनु प्रिय लागा ॥  
 परनकुटी प्रिय प्रियतम संगी । प्रिय परिवारु कुरंग विहंगा ॥  
 सागु सगुर सम मुनितिय मुनिवर । असनु अमिअ सम कंद मूल फर ॥  
 नाथ साथ साँथरी मुहाई । मयन सयन सय सम मुखदाई ॥  
 लोकप होहिं विलोकत जासू । तेहि कि मोहि सक विषय विलासू ॥

दो०—सुमिरत गमहि तजहिं जन तृन सम विषय विलासु ।

राम प्रिया जग जननि सिय कछु न आचरजु तामु ॥१४०॥

सीय लखन जेहि विधि सुखु लहहीं । सोइ रघुनाथ करहि सोइ कहहीं  
 कहहि पुरातन कथा कहानी । सुनहि लखनु सिय अति सुखु मानी  
 जब जब रामु अवध सुधि करहीं । तब तब वारि विलोचन भरहीं ॥  
 सुमिरि मातु पितु परिजन भाई । भरत सनेहु सीलु सेवकाई ॥  
 कृपासिंधु प्रभु होहिं दुखारी । धीरजु धरहिं कुसमउ विचारी ॥  
 लखि सिय लखनु वियल होइ जाहीं । जिमि पुरुषहि अनुसर परिछाहीं  
 प्रिया बंधु गति लखि रघुनंदनु । धीर कृपाल भगत उर चंदनु ॥  
 लगे कहन कहु कथा पुनीता । सुनि सुखु लहहिं लखनु अरु सीता ॥

दो०—रामु लखनु सीता सहित सोहत परन निकेत ।

जिमि वासव बस अमरपुर सची जयंत समेत ॥१४१॥

जोगवहिं प्रभु सिय लखनहि कैने । पलक विलोचन गोलक जैसे ॥  
 सेवहिं लखनु सीय रघुवीरहि । जिमि अविवेकी पुरुष मरीरहि ॥  
 एहि विधि प्रभु बन बसहिं सुखारी । खग मृग सुग तापस हितकारी ॥  
 कहेउं राम बन गवनु सुहावा । सुनहु सुमंत्र अवध जिमि आवा ॥  
 फिरेउ निपादु प्रभुहि पहुँचाई । सचिव सहित रथ देखेसि आई ॥  
 मंत्री त्रिकल विलोकि निपादु । कहि न जाइ जस भयउ विपादु ॥  
 राम राम सिय लखन पुकारी । परेउ धरनितल व्याकुल भारी ॥  
 देखि देखिन दिसि हय हिहिनाहीं । जनु विनु पंख विहग अकुलाहीं  
 दो०—नहिं तन चरहिं न पिअहिं जलु मोचहिं लोचन वारि ।

व्याकुल भए निपादु सब रघुवर वाजि निहारि ॥१४२॥

धरि धीरजु तब कहइ निपादु । अब सुमंत्र परिहरहु विपादु ॥  
 तुम्ह पंडित परमारथ ग्याता । धरहु धीर लखि विमुख विधाता ॥

विविधि कथा कहि कहि मृदु बानी । रथ वैठारेउ वरवस आनी ॥  
 एक सिथिल रथु सकइ न हाँकी । रघुवर विरह पीर उर बाँकी ॥  
 चरफराहि मग चलहि न घोरे । वन मृग मनहुँ आनि रथ जोरे ॥  
 अहुकि परहि फिरि हेरहि पीछे । राम वियोगि विकल दुख तीछे ॥  
 जो कह रामु लखनु वैदेही । हिंकरि हिंकरि हित हेरहि तेही ॥  
 बाजि विरह गति कहि किमि जाती । विनु मनि फनिक विकल जेहि भाँती ॥

दो०—भयउ निषादु विपादवस देखत सचिव तुरंग ।

बोलि सुसेवक चारि तव दिए सारथी संग ॥१४३॥

गुह सारथिहि फिरेउ पहुँचाई । विरहु विपादु वरनि नहिं जाई ॥  
 चले अवध लेइ रथहि निषादा । होहि छनहिं छन भगन विपादा ॥  
 सोच सुमंत्र विकल दुख दीना । धिग जीवन रघुवीर विहीना ॥  
 रहिहि न अंतहुँ अधम सरीरु । जसु न लहेउ विलुरत रघुवीरु ॥  
 भए अजस अघ भाजन प्राणा । कवन हेतु नहिं करत पयाना ॥  
 अहह मंद मनु अवसर चूका । अजहुँ न हृदय होत दुइ टूका ॥  
 मीजि हाथ सिरु धुनि पछिताई । मनहुँ कृपन धन रासि गवाँई ॥  
 निरिद बाँधि वर वीरु कहाई । चलेउ समर जनु सुभट पराई ॥

दो०—विप्र विवेकी वेदधिद संमत साधु मुजाति ।

जिमि धोखें मदपान कर सचिव सांच तेहि भाँति ॥१४४॥

जिमि कुलीन तिय साधु सयानी । पतिदेवता करम मन बानी ॥  
 रहै करम बस परिहरि नाहू । सचिव हृदयँ तिमि दारुन दाहू ॥  
 लोचन सजल डीठि भइ थोरी । सुनइ न श्रवन विकल मति भोरी ॥  
 सखहिं अक्षर लागि मुहँ लाटी । जिउ न जाइ उर अवधि कपाटी ॥

विचरन भयउ न जाइ निहारी । मारेसि मनहुँ पिता महतारी ॥  
हानि गलानि त्रिपुल मन व्यापी । जमपुर पंथ सोच जिमि पापी ॥  
बचनु न आव हृदयँ पछिताई । अवध काह मैं देखव जाई ॥  
राम रहित रथ देखिहि जोई । सकुचिहि मोहि बिलोकत सोई ॥

दो०—धाइ पूँछिहहिं मोहि जव विकल नगर नर नारि ।

उतरु देव मैं सवहि तव हृदयँ वज्रु बैठारि ॥१४५॥

पुछिहहिं दीन दुखित सव माता । कहव काह मैं तिन्हहि विधाता ॥  
पूछिहि जवहिं लखन महतारी । कहिहउँ कवन सँदेस सुखारी ॥  
राम जननि जव आइहि धाई । सुभिरि बच्छु जिमि धेनु लवाई ॥  
पूँछत उतरु देव मैं तेही । मे वनु राम लखनु वैदेही ॥  
जोइ पूँछिहि तेहि उतरु देवा । जाइ अवध अव चहु सुखु लेवा ॥  
पूँछिहि जवहिं राउ दुख दीना । जिवनु जासु रघुनाथ अधीना ॥  
देहउँ उतरु कौनु मुहु लाई । आयउँ कुसल कुअँ पहुँचाई ॥  
सुनत लखन सिय राम सँदेस । तन जिमितनु परिहरिहि नरेस ॥

दो०—हृदउ न बिदरेउ पंक जिमि विछुरत प्रीतमु नीरु ।

जानत हौं मोहि दीन्ह विधि यहु जातना सरीरु ॥१४६॥

एहि विधि करत पंथ पछितावा । तमसा तीर तुरत रथु आवा ॥  
बिदा किए करि विनय निपादा । फिरे पायँ परि विकल विपादा ॥  
पैठत नगर सचिव सकुचाई । जनु मारेसि गुर बाँभन गाई ॥  
बैठि विटप तर दिवसु गवाँवा । साँझ समय तव अवसरु पावा ॥  
अवध प्रवेशु कीन्ह अँधिआरें । पैठ भवन रथु राखि दुआरें ॥  
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाए । भूष द्वार रथु देखन आए ॥



रथु पहिचानि विकल लखि घोरे । गरहिं गात जिमि आतप ओरे ॥  
नगर नारि नर व्याकुल कैसैं । निघटत नीर मीनगन जैसें ॥

दो०—सचिव आगमनु सुनत सबु विकल भयउ रनिवासु ।

भवनु भयंकरु लाग तेहि मानहुँ प्रेत निवासु ॥१४७॥

अति आरति सब पूँछहिं रानी । उतरुन आव विकल भइवानी ॥  
सुनइ न श्रवन नयन नहिं सझा । कहहु कहाँ नृपु तेहि तेहि बूझा ॥  
दासिन्ह दीख सचिव विकलाई । कौसल्या गृहँ गई लवाई ॥  
जाइ सुमंत्र दीख कस राजा । अमिअ रहित जनु चंदु विराजा ॥  
आसन सयन विभूषन हीना । परेउ भूमितल निपट मलीना ॥  
लेइ उसासु सोच एहि भाँती । सुरपुर तें जनु खँसेउ जजाती ॥  
लेत सोच भरि छिनु छिनु छाती । जनु जरि पंख परेउ संपाती ॥  
राम राम कह राम सनेही । पुनि कह राम लखन वैदेही ॥

दो०—देखि सचिवँ जय जीव कहि कोन्हेउ दंड प्रनामु ।

सुनत उठेउ व्याकुल नृपति कहु सुमंत्र कहँ रामु ॥१४८॥

भूप सुमंत्रु लीन्ह उर लाई । बूड़त कछु अधार जनु पाई ॥  
सहित सनेह निकट वैठारी । पूँछत राउ नयन भरि वारी ॥  
राम कुसल कहु सखा सनेही । कहँ रघुनाथु लखनु वैदेही ॥  
आने फेरि कि वनहि सिधाए । सुनत सचिव लौचन जल छाए ॥  
सोक विकल पुनि पूँछ नरेसू । कहु सिय राम लखन संदेसू ॥  
राम रूप गुन सील सुभाऊ । सुमिरि सुमिरि उर सोचत राऊ ॥  
राउ सुनाइ दीन्ह वनवासू । सुनि मन भयउ न हरपु हरँसू ॥  
सो सुत विछुरत गए न प्राणा । को पापी बड़ मोहि समाना ॥

दो०—सखा रामु सिय लखनु जहँ तहाँ मोहि पहुँचाउ ।

नाहिँ त चाहत चलन अब प्रान कहँ सतिभाउ ॥१४९॥

पुनि पुनि पूँछत मंत्रिहि राऊ । प्रियतम सुअन सँदेस सुनाऊ ॥  
करहि सखा सोइ वेगि उपाऊ । रामु लखनु सिय नयन देखाऊ ॥  
सचिव धीर धरि कह मृदु बानी । महाराज तुम्ह पंडित ग्यानी ॥  
वीर सुधीर धुरंधर देवा । साधु समाजु सदा तुम्ह सेवा ॥  
जनम मरन सब दुख सुख भोगा । हानि लाभु प्रिय मिलन वियोगा ॥  
काल करम बस होहिँ गोसाई । बरचस राति दिवस की नाई ॥  
सुख हरपहिँ जड़ दुख बिलखाहीं । दोउ सम धीर धरहिँ मन माहीं ॥  
धीरज धरहु विवेकु विचारी । छाड़िअ सोच सकल हितकारी ॥

दो०—प्रथम बासु तमसा भयउ दूसर सुरसरि तीर ।

न्हाइ रहे जलपानु करि सिय समेत दोउ वीर ॥१५०॥

केवट कीन्हि बहुत सेवकाई । सो जामिनि सिंगरौर गवाई ॥  
होत प्रात बट छोरु मगावा । जटा मुकुट निज सीस बनावा ॥  
राम सखों तव नाव मगाई । प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई ॥  
लखन वान धनु धरे बनाई । आपु चढ़े प्रभु आयसु पाई ॥  
बिकल बिलोकि मोहि रघुवीरा । बोले मधुर बचन धरि धीरा ॥  
तात प्रनामु तात सन कहेहू । बार बार पद पंकज गहेहू ॥  
करवि पायें परि विनय बहोरी । तात करिअ जनि चिंता मोरी ॥  
वन मग मंगल कुसल हमारें । कृपा अनुग्रह पुन्य तुम्हारें ॥

छं०—तुम्हरेँ अनुग्रह तात कानन जात सब सुखु पाइहौं ।

प्रतिपालि आयसु कुसल देखन पाय पुनि फिरि आइहौं ॥

जननीं सकल परितोषि परि परि पायँ करि विनती घनी ।  
तुलसी करेहु सोइ जतनु जेहि कुसली रहहिं कोसलधनी ॥

सो०—गुर सन कहव सँदेसु वार वार पद पदुम गहि ।

करव सोइ उपदेसु जेहिं न सोच मोहि अवधपति ॥१५१॥

पुरजन परिजन सकल निहोरी । तात सुनाएहु विनती मोरी ॥  
सोइ सब भाँति मोर हितकारी । जातें रह नरनाहु सुखारी ॥  
कहव सँदेसु भरत के आएँ । नीति न तजिअ राजपदु पाएँ ॥  
पालेहु प्रजहि करस मन वाली । सेएहु मातु सकल सम जानी ॥  
ओर निवाहेहु भायप भाई । करि पितु मातु सुजन सेवकाई ॥  
तात भाँति तेहि नखव गऊ । सोच मोर जेहि करै न काऊ ॥  
लखन कहे कछु वचन कठोरा । वरजि राम पुनि मोहि निहोरा ॥  
वार वार निज सपथ देवाई । कहवि न तात लखन लरिकाई ॥

दो०—कहि प्रनासु कछु कहन लिय सिय भइ सिथिल सनेह ।

थकित वचन लोचन सजल पुलक पल्लवित देह ॥१५२॥

तेहि अवसर रघुवर रुख पाई । केवट पारहि नाव चलाई ॥  
रघुबुलतिलक चले एहि भाँती । देखउँ टाढ़ कुलिस धरि छाती ॥  
मैं आपन किमि कहाँ कलेसु । जिअत फिरेउँ लेइ राम सँदेसु ॥  
अस कहि सचिव वचन रहि गयऊ । हानि गलानि सोच वस भयऊ ॥  
सूत वचन मुनतहिं नरनाहु । परेउ धरनि उर दारुन दाहु ॥  
तलफत विषम मोह मन सापा । माजा मनहुँ मीन कहँ व्यापा ॥  
करि विलाप सब रोवहिं रानी । महा विपति किमि जाइ वखानी ॥  
सुनि विलाप दुखहु दुखु लागी । धीरजहु कर धीरजु भागी ॥

दो०—भयउ कौलाहलु अवध अति सुनि नृप राउर सोरु ।

निपुल त्रिहग बन परेउ निसि मानहुँ कुलिस कठोरु ॥१५३॥

प्राण कंठगत भयउ भुआलू । मनि विहीन जनु व्याकुल व्यालू ॥  
 इंद्रौ सकल विकल भई भारी । जनु सर सरसिज बनु विनु वारी ॥  
 कौसल्यो नृपु दीख मलाना । रविकुल रत्रि अँथयउ जियँ जाना ॥  
 उर धरि धीर राम महतारी । बोली वचन समय अनुसारी ॥  
 नाथ समुझि मन करिअ विचारू । राम वियोग पयोधि अपारू ॥  
 करनधार तुम्ह अवध जहाजू । चढ़ेउ सकल प्रिय पथिक समाजू ॥  
 धीरजु धरिअ त पाइअ पारू । नाहिँ त बूढ़िहि सनु परिवारू ॥  
 जौँ जियँ धरिअ विनय पिय मोरी । रामु लखनु सिय मिलहिँ बहोरी ॥

दो०—प्रिया वचन मृदु सुनत नृपु चितयउ आँखि उधारि ।

तलफत मीन मलीन जनु सोँचत सीतल वारि ॥१५४॥

धरि धीरजु उठि बैठ भुआलू । कहु सुमंत्र कहँ राम कृपालू ॥  
 कहाँ लखनु कहँ रामु सनेही । कहँ प्रिय पुत्रवधू बैदेही ॥  
 बिलपत राउ विकल बहु भाँती । भइ जुग सरिस सिराति न राती ॥  
 तापस अंध साप सुधि आई । कौसल्यहि सब कथा सुनाई ॥  
 भयउ विकल बरनत इतिहासा । राम रहित धिग जीवन आसा ॥  
 सो तनु राखि करब मैं काहा । जेहिँ न प्रेम पनु मोर निवाहा ॥  
 हा रघुनंदन प्राण पिरीते । तुम्ह बिनु जितव बहुत दिन बीते ॥  
 हा जानकी लखन हा रघुवर । हा पितृ हित चित चातक जलधर ॥

दो०—राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम ।

तनु परिहरि रघुवर बिरहँ राउ गयउ सुरधाम ॥१५५॥

जिअन मरन फलु दसरथ पावा । अंड अनेक अमल जसु छावा ॥  
 जिअत राम विधु बदनु निहारा । राम विरह करि मरनु सँवारा ॥  
 सोक विकल सब रोवहिं रानी । रूपु सीलु बलु तेजु बखानी ॥  
 करहिं विलाप अनेक प्रकारा । परहिं भूमितल वारहिं वारा ॥  
 विलपहिं विकल दास अरु दासी । घर घर रुदनु करहिं पुरवासी ॥  
 अँथयउ आजु भानुकुल भानू । धरम अवधि गुन रूप निधानू ॥  
 गारीं सकल कैकइहि देहीं । नयन विहीन कीन्ह जग जेहीं ॥  
 एहि विधि विलपत रैन विहानी । आए सकल महामुनि ग्यानी ॥

दो०—तत्र वसिष्ठ मुनि समय सम कहि अनेक इतिहास ।

सोक नेवारेउ सबहि कर निज विग्यान प्रकास ॥१५६॥

तेल नावँ भरि नृप तनु राखा । दूत बोलाइ बहुरि अस भाषा ॥  
 धावहु वेगि भरत पहिं जाहू । नृप सुधि कतहुँ कहहु जनि काहू ॥  
 एतनेइ कहेहु भरत सन जाई । गुर बोलाइ पठयउ दोउ भाई ॥  
 सुनि मुनि आयसु धावन धाए । चले वेग बर वाजि लजाए ॥  
 अनरथु अवध अरंभेउ जव तें । कुसगुन होहिं भरत कहूँ तव तें ॥  
 देखहिं राति भयानक सपना । जागि करहिं कहु कोटि कल्पना ॥  
 विप्र जेवाँइ देहिं दिन दाना । सिव अभिषेक करहिं विधि नाना ॥  
 मागहिं हृदयँ महेस मनाई । कुसल मातु पितु परिजन भाई ॥

दो०—एहि विधि सोचत भरत मन धावन पहुँचे आइ ।

गुर अनुसासन श्रवन मुनि चले गनेसु मनाइ ॥१५७॥

चले समीर वेग ह्य हाँके । नावत सरित सैल वन वाँके ॥  
 हृदयँ सोचु बड़ कलु न सोहाई । अस जानहिं जियँ जाउँ उड़ाई ॥

एक निमेष धरप सम जाई । एहि विधि भरत नगर निअराई ॥  
 असगुन होहि नगर पैठारा । रटहि कुभाति कुखेत करारा ॥  
 खर सिआर बोलहिं प्रतिक्रला । सुनि सुनि होइ भरत मन सल्ला ॥  
 श्रीहत सर सरिता वन वागा । नगरु निसेपि भयावनु लागा ॥  
 खगमृगहयगय जाहिं न जोए । राम वियोग कुरोग विगोए ॥  
 नगर नारि नर निपट दुखारी । मनहुँ सबन्हि मव संपति हारी ॥  
 दो०—पुरजन मिलहि न कहहिं कछु गवैहिं जोहारहिं जाहि ।

भरत कुमल पूँछि न सकहिं भय विपाद मन माहिं ॥१५८॥

हाट वाट नहिं जाट निहारी । जनु पुर दहें दिशि लागि दवारी ॥  
 आवत सुत सुनि कैकयनंदिनि । हरपी गत्रिकुल जलरुह चंदिनि ॥  
 सजि आरती मुदित उठि धाई । द्वारेहि भेंटि भयन लेइ आई ॥  
 भरत दुखित पग्गिारु निहारा । मानहुँ तुहिन वनज वनु मारा ॥  
 कैकेई हरपित एहि भांती । मनहुँ मुदित दव लाइ फिराती ॥  
 सुतहि ससोच देखि मनु मारें । पूँछति नैहर कुमल हमारें ॥  
 सकल कुसल कहि भरत सुनाई । पूँछी निज कुल कुसल भलाई ॥  
 कहु कहें तात कहाँ सब माता । कहें सिय राम लखन प्रिय भ्राता ॥  
 दो०—सुनि सुत वचन सनेहमय कपट नीर भरि नैन ।

भरत श्रवन मन सल मम पापिनि बोली वैन ॥१५९॥

तात वात मै सकल मँवागी । मै मंथरा सहाय विचारी ॥  
 कछुक काज विधि बीच विगारेउ । भूपति सुरपति पुर पगु धारेउ ॥  
 सुनत भरतु भए विचस विपादा । जनु सहमेउ करि केहरि नादा ॥  
 तात तात हा तात पुकारी । परे भूमितल व्याकुल भारी ॥

चलत न देखन पायउँ तोही । तात न रामहि सौंपेहु मोही ॥  
 बहुरि धीर धरि उठे सँभारी । कहु पितु मरन हेतु महतारी ॥  
 मुनि सुत वचन कहति कैकेई । मरयु पाँछि जनु साहुर देई ॥  
 आदिहु तें सब आपनि करनी । कुटिल कठोर मुदित मन वरनी ॥

दो०—भरतहि विसरेउ पितु मरन सुनत राम वन गौनु ।

हेतु अपनपउ जानि जियँ थकित रहे धरि मौनु ॥१६०॥

विकल विलोकि सुतहि समुझावति । मनहुँ जरे पर लोनु लगावति ॥  
 तात राउ नहिँ सोचै जोगू । विढ़इ सुकृत जसु कीन्हेउ भोगू ॥  
 जीवत सकल जनम फल पाए । अंत अमरपति सदन सिधाए ॥  
 अस अनुमानि सोच परिहरहू । सहित समाज राज पुर करहू ॥  
 मुनि मुठि सहमेउ राजकुमारू । पाकें छत जनु लाग अँगाहू ॥  
 धीरज धरि भरि लेहिँ उसासा । पापिनि सबहि भँति कुल नासा ॥  
 जौ पै कुरुचि रही अति तोही । जनमत काहे न मारे मोही ॥  
 पेड़ काटि तें पालउ सींचा । मीन जियन निति चारि उलीचा ॥

दो०—हंसवंसु दसरथु जनकु राम लखन से भाइ ।

जननी तूँ जननी भई विधि सन कछु न वसाइ ॥१६१॥

जब तैं कुमति कुमत जियँ ठयऊ । खंड खंड होइ हृदउ न भयऊ ॥  
 बर मागत मन भइ नहिँ पोरा । गरिन जोह मुहँ परेउ न कीरा ॥  
 भूपँ प्रतीति तोरि किमि कीन्ही । मरन काल विधि मति हरि लीन्ही  
 विधिहुँ न नारि हृदय गति जानी । सकल कपट अघ अवगुन खानी  
 सरल मुसोल धरम रत राऊ । सा किमि जानै तोय सुभाऊ ॥  
 अस को जीव जंत जग साइँ । जेहि रघुनाथ प्रानप्रिय नाहीं ॥

मे अति अहित रामु तेउ तोही । को तू अहसि सत्य कहु मोही ॥  
जो हसि सो हसि मुहँ मसि लार्ई । आँखि ओट उठि बैठि जाई ॥  
दो०—राम विरोधी हृदय तें प्रगट कीन्ह विधि मोहि ।

मो समान को पातकी चादि कहउँ कह्यु तोहि ॥१६२॥

सुनि सत्रुघुन मातु कुटिलाई । जरहिं गात रिस कह्यु न वसाई ॥  
तेहि अवसर कुवरी तहँ आई । वसन विभूषन विविध बनाई ॥  
लखि रिस भरेउ लखन लघु भाई । वरत अनल घृत आहुति पाई ॥  
हुमगि लात तकि कुवर मारा । परि मुह भग महि करत पुकारा ॥  
कुवर टूटेउ फूट कपारू । दलित दमन मुख रुधिर प्रचारू ॥  
आह दइअ में काह नसावा । करत नीक फलु अनइम पावा ॥  
सुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी । लगे घसोटन धरि धरि झोंटी ॥  
भरत दयानिधि दीन्हि छड़ाई । कौसल्या पहिं गे दोउ भाई ॥

दो०—मलिन वसन विवरन विकल कृस सरीर दुख भार ।

कनक कल्प वर बेलि वन मानहुँ हनी तुसार ॥१६३॥  
भरतहि देखि मातु उठि धाई । मुरुछित अवनि परी झई आई ॥  
देखत भरतु विकल भए भारी । परे चरन तन दसा विसारी ॥  
मातु तात कहँ देहि देखवाई । कहँ सिय रामु लखनु दोउ भाई ॥  
कैकइ कत जनमी जग माझा । जौं जनमि त भइ काहे न चाँझा ॥  
कुल कलंकु जेहिं जनगेउ मोही । अपजस भाजन प्रियजन टोही ॥  
को तिभुवन मोहि सरिस अभागी । गति असि तोरि मातु जेहि लागी ॥  
पितु सुरपुर वन रघुवर केतू । में केवल सब अनरथ हेतू ॥  
धिग मोहि भयउँ वेनुवन आगी । दुसह दाह दुख दूपन भागी ॥



दो०—मातु भरत के वचन मृदु सुनि पुनि उठी सँभारि ।

लिए उठाइ लगाइ उर लोचन मोचति वारि ॥१६४॥

सरल सुभाय मायँ हियँ लाए । अति हित मनहुँ राम फिरि आए ॥

भँटेउ वहुरि लखन लघु भाई । सोकु सनेहु न हृदयँ समाई ॥

देखि सुभाउ कहत सबु कोई । राम मातु अस काहे न होई ॥

माताँ भरतु गोद बैठारे । आँसु पौँछि मृदु वचन उचारे ॥

अजहुँ वच्छ बलि धीरज धरहू । कुसमउ समुझि सोक परिहरहू ॥

जनि मानहुँ हियँ हानि गलानी । काल करम गति अघटित जानी ॥

काहुहि दोसु देहु जनि ताता । भा मोहिसव विधि वाम विधाता ॥

जो एतेहुँ दुख मोहि जिआवा । अजहुँ को जानइ का तेहि भावा ॥

दो०—पितु आयस भूपन वसन तात तजे रघुवीर ।

त्रिसमउ हरपु न हृदयँ कछु पहिरे बलकल चीर ॥१६५॥

मुख प्रसन्न मन रंग न रोषू । सब करसव विधि करि परितोषू ॥

चले विपिन सुनि सियसँग लागी । रहइ न राम चरन अनुरागी ॥

सुनतहिँ लखनु चले उठि साथा । रहहिँ न जतन किए रघुनाथा ॥

तत्र रघुपति सबही सिरु नाई । चले संग सिय अरु लघु भाई ॥

रामु लखनु सिय बनहि सिधाए । गइउँ न संग न प्रान पठाए ॥

यहु सनु भा इन्ह आँखिन्ह आगें । तउ न तजा तनु जीव अभागें ॥

मोहि न लाज निज नेहु निहारी । राम सरिस सुत मैं महतारी ॥

जिए मरै भल भूपति जाना । मोर हृदय सत कुलिस समाना ॥

दो०—कौसल्या के वचन सुनि भरत सहित रनिवासु ।

व्याकुल विलपत राजगृह मानहुँ सोक नेवासु ॥१६६॥

विलपहि विकल भरत दोउ भाई। कौसल्याँ लिए हृदयँ लगाई ॥  
 भाँति अनेक भरत समुझाए। कहि विवेकमय वचन सुनाए ॥  
 भरतहुँ मातु सकल सगुझाई। कहि पुरान श्रुति कथा सुहाई ॥  
 छल विहीन गुचि सरल सुवानी। बोले भरत जोरि जुग पानी ॥  
 जे अघ मातु पिता सुत मागें। गाइ गोठ महिसुर पुर जारें ॥  
 जे अघ तिय बालक वध कोन्हें। मात महीपति माहुर दीन्हें ॥  
 जे पातक उपपातक अहहीं। करम वचन मन भव कवि कहहीं ॥  
 ते पातक मोहि होहुँ विधाता। जाँ यहु होइ मोर मत माता ॥  
 दो०—जे परिहरि हरि हर चरन भजहिं भूतगन घोर ।

तेहि कइ गति मोहि देउ विधि जाँ जननी मत मोर ॥ १६७ ॥

बेचहिं वेदु धरमु दुहि लेहीं। पिसुन पराय पाप कहि देहीं ॥  
 कपटी कुटिल कलहप्रिय क्रोधी। वेद विदूषक विस्व विरोधी ॥  
 लोभी लंपट लोलुपचारा। जे ताकहिं परधनु परदारा ॥  
 पाषाँ में तिन्ह कै गति घोरा। जाँ जननी यहु संमत मोरा ॥  
 जे नहिं साधुसंग अनुरागे। परमारथ पथ विमुख अभागे ॥  
 जेन भजहिं हरि नरतनु पाई। जिन्हहिं न हरि हर सुजसु सोहाई ॥  
 तजि श्रुति पंथु वामपथ चलहीं। वंचक विरचि बेप जगु छलहीं ॥  
 तिन्ह कै गति मोहि संकर देऊ। जननी जाँ यहु जानौं भेऊ ॥

दो०—मातु भरत के वचन सुनि साँचे सरल सुभायँ ।

कहति राम प्रिय तात तुम्ह सदा वचन मन कायँ ॥ १६८ ॥

राम प्रानहु तें प्रान तुम्हारे। तुम्ह रघुपतिहि प्रानहु तें प्यारे ॥  
 बिधु विपचयै स्रवै हिमु आगी। होइ वारिचर वारि विरागी ॥

भएँ ग्यानु वरु मिटै न मोहू । तुम्ह रामहि प्रतिकूल न होहू ॥  
 मततुम्हार यहु जो जग कहहीं । सो सपनेहुँ सुख सुगति न लहहीं ॥  
 अस कहि मातु भरतु हियँ लाए । थन पय स्रवहिँ नयन जल छाए ॥  
 करत विलाप बहुत यहि भाँती । बैठेहिँ वीति गई सव राती ॥  
 वामदेउ वसिष्ठ तव आए । सचिव महाजन सकल बोलाए ॥  
 मुनि बहु भाँति भरत उपदेसे । कहि परमारथ वचन सुदेसे ॥

दो०—तात हृदयँ धीरजु धरहु करहु जो अवसर आजु ।

उठे भरत गुर वचन सुनि करन कहेउ सवु साजु ॥१६९॥

नृपतनु वेद विदित अन्हवावा । परम विचित्र विमानु बनावा ॥  
 गहि पद भरत मातु सव राखी । रहीं रानि दरसन अभिलापी ॥  
 चंदन अगर भार बहु आए । अमित अनेक सुगंध सुहाए ॥  
 सरजु तीर रचि चिता बनाई । जनु सुरपुर सोपान सुहाई ॥  
 एहि विधि दाह क्रिया सन्न कीन्ही । विधिवत न्हाइ तिलांजुलि दीन्ही  
 सोधि सुमृति सव वेद पुराना । कीन्ह भरत दसगात विधाना ॥  
 जहँ जस मुनिवर आयसु दीन्हा । तहँ तस सहस भाँति सवु कीन्हा ॥  
 भए विसुद्ध दिए सव दाना । धेनु बाजि गज वाहन नाना ॥

दो०—सिंघासन भूषन वसन अन्न धरनि धन धाम ।

दिए भरत लहि भूमिसुर भे परिपूरन काम ॥१७०॥

पितु हित भरत कीन्हि जसि करनी । सो मुख लाख जाइ नहिँ वरनी  
 मुदिनु सोधि मुनिवर तव आए । सचिव महाजन सकल बोलाए ॥  
 बैठे राजसभाँ सव जाई । पठए शैलि भरत दाँउ भाई ॥  
 भरतु वसिष्ठ निकट बैठारे । नाँति धरममय वचन उचारे ॥



विधि हरि हरु सुरपति दिसिनाथा । वरनहिं सब दसरथ गुन गाथा ॥

श्लो०—करहु तात केहि भाँति कोउ करिहि बड़ाई तासु ।

गम लखन तुम्ह सत्रुहन सरिस सुअन सुचि जासु ॥१७३॥

सब प्रकार भूपति बड़भागी । वादि विषादु करिअ तेहि लागी ॥  
 यहु मुनि समुझि सोचु परिहरहु । सिर धरि राज रजायसु करहु ॥  
 गयँ गजपदु तुम्ह कहँ दीन्हा । पिता वचनु फुर चाहिअ कीन्हा ॥  
 तजे रामु जेहिं वचनहि लागी । तनु परिहरेउ राम विरहागी ॥  
 नृपहि वचन प्रिय नहिं प्रिय प्राना । करहु तात पितु वचन प्रवाना ॥  
 करहु सीस धरि भूप रजाई । हइ तुम्ह कहँ सब भाँति भलाई ॥  
 परमुगम पितु अग्या राखी । मारी मातु लोक सब साखी ॥  
 तनय जजातिहि जौवनु दयऊ । पितु अग्याँ अध अजमुन भयऊ ॥

श्लो०—अनुचित उचित विचारु तजि जे पालहिं पितु वैन ।

ते भाजन मुख मुजस के वसहिं अमरपति ऐन ॥१७४॥

अवसि नरैस वचन फुर करहु । पालहु प्रजा सोकु परिहरहु ॥  
 मुग्गुर नृपु पाइहि पगितापू । तुम्ह कहँ सुकृतु सुजसुनहिं दोषू  
 वेद विदित संमत सबही का । जेहि पितु देइ सो पावइ टीका ॥  
 करहु राजु परिहरहु गलानी । मानहु मार वचन हित जानी ॥  
 मुनि मुखु लहव गम वैदेहीं । अनुचित कहव न पंडित केहीं ॥  
 कौसल्यादि सकल महतारीं । तेउ प्रजा मुख होहिं सुखारीं ॥  
 परम तुम्हार गम कर जानिहि । सो सब विधि तुम्ह सन भल मानिहि  
 सौंपहु राजु राम के आएँ । सेवा करहु सनेह सुहाएँ ॥

दो०—कीजिअ गुर आयसु अवसि कहिँ सचिव कर जोरि ।

रघुपति आएँ उचित जस तस तब करब बहोरि ॥ १७५ ॥

कौसल्या धरि धोरजु कहई । पूत पथ्य गुरु आयसु अहई ॥  
सो आदरिअ करिअ हित मानो । तजिअ विपादु काल गति जानी ॥  
वन रघुपति सुरपति नरनाह । तुम्ह एहि भँति तात कदराह ॥  
परिजन प्रजा सचिव सब अंथा । तुम्हही सुत सब कहँ अवलंबा ॥  
लखि विधि बाम कालु कठिनाई । धीरजु धरहु मातु बलि जाई ॥  
सिर धरि गुर आयसु अनुसरहू । प्रजा पालि परिजन दुखु हरहू ॥  
गुर के बचन सचिव अभिनंदनु । सुने भरत हिय हित जनु चंदनु ॥  
सुनी बहोरि मातु मृदु वानी । सोल सनेह सरल रस सानी ॥

छं०—सानी सरल रस मातु वानी सुनि भरतु व्याकुल भए ।

लोचन सरोरुह स्रवत सौंचत विरह उर अंकुर नए ॥

सो दसा देखत समय तेहि विसरी सबहि सुधि देहकी ।

तुलसी सराहत सकल सादर सीवँ सहज सनेह की ॥

सो०—भरतु कमल कर जोरि धीर धुरंधर धीर धरि ।

बचन अमिअँ जनु बोरि देत उचित उत्तर सबहि ॥ १७६ ॥

मासपारायण, अठारहवाँ विश्राम

मोहि उपदेसु दीन्ह गुर नीका । प्रजा सचिव संमत सबही का ॥

मातु उचित धरि आयसु दीन्हा । अवसि सीस धरि चाहउँ कीन्हा ॥

गुर पितु मातु स्वामि हितवानो । सुनि मन मुदित करिअ भलि जानी

उचित कि अनुचित किँएँ विचारु । धरमु जाइ सिर पातक भारु ॥

तुम्ह तौ देहु सरल सिख सोई । जो आवरत मोर भल होई ॥

जद्यपि यह समुझत हउँ नीकें । तदपि होत परितोषु न जी कें ॥  
 अब तुम्ह विनय मोरि सुनि लेहू । मोहि अनुहरत सिखावनु देहू ॥  
 उतरु देउँ छमव अपराधू । दुखित दोष गुन गनहिं न साधू ॥  
 दो०—पितु सुरपुर सिय रामु वन करन कहहु मोहि राजु ।

एहि तें जानहु मोर हित कै आपन वड़ काजु ॥१७७॥

हित हमार सियपति सेवकाई । सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाई ॥  
 मैं अनुमानि दीख मन माहीं । आन उपायँ मोर हित नाहीं ॥  
 सोक समाजु राजु केहि लेखें । लखन राम सिय विनु पद देखें ॥  
 वादि वसन विनु भूपन भारू । वादि विरति विनु ब्रह्म विचारू ॥  
 सरुज सरीर वादि बहु भोगा । विनु हरि भगति जायँ जप जोगा ॥  
 जायँ जीव विनु देह सुहाई । वादि मोर सवु विनु रघुराई ॥  
 जाउँ राम पहिं आयसु देहू । एकहिं आँक मोर हित एहू ॥  
 मोहि नृप करि भल आपन चहहू । सोउ सनेह जड़ता वस कहहू ॥

दो०—कैकेई सुअ कुटिलमति राम विमुख गतलाज ।

तुम्ह चाहत सुखु मोहवस मोहि से अधम कें राज ॥ १७८ ॥

कहउँ साँचु सव सुनि पतिआहू । चाहिअ धरमसील नरनाहू ॥  
 मोहि गजु हठि देइहहु जवहीं । रसा रसातल जाइहि तवहीं ॥  
 मोहि समान को पापनिवासू । जेहि लागि सीय राम वनवासू ॥  
 रायँ राम कहँ काननु दीन्हा । बिलुगत गमनु अमरपुर कीन्हा ॥  
 मैं सद्रु मव अनरथ कर हेतू । बैठ वात सव सुनउँ सचेतू ॥  
 विनु रघुर्वाग बिलोकि अवासू । रहे प्रान सहि जग उपहासू ॥  
 राम पुनीत विषय रस रुखे । लोलुप भूमि भोग के भूखे ॥

कहँ लगि कहौं हृदय कठिनाई । निदरि कुलिसु जेहिं लही बड़ाई ॥

दा०—कारन तें कारजु कठिन होइ दोसु नहिं मोर ।

कुलिस अस्थि तें उपल तें लोह कराल कठोर ॥ १७९ ॥

कैकई भव तनु अनुरागे । पावरँ प्रान अघाइ अभागे ॥

जौं प्रिय विरहँ प्रान प्रिय लागे । देखव सुनव बहुत अव आगे ॥

लखन राम सिय कहँ वनु दीन्हा । पठइ अमरपुर पति हित कीन्हा ॥

लोन्ह विधयपन अपजसु आपू । दीन्हेउ प्रजहिं सोकु संतापू ॥

मोहि दीन्ह सुखु सुजसु सुराजू । कीन्ह कैकई सव कर काजू ॥

एहि तें मोर काइ अव नोका । तेहिपर देन कहहु तुम्ह टोका ॥

कैकई जठर जनमि जग माहीं । यह मोहि कहँ कछु अनुचित नाहीं ॥

मोरि बात सव विधिहिं बतार्ई । प्रजा पाँच कन काहु सशई ॥

दो०—ग्रह ग्रहीत पुनि बात बस तेहि पुनि वीछी मार ।

तेहि पिआइअ धारुनी कहहु काह उपचार ॥ १८० ॥

कैकई सुअन जोगु जग जोई । चतुर विरंवि दीन्ह मोहि सोई ॥

दसरथ तनय राम लघु भाई । दीन्ह मोहि विधि बादि बड़ाई ॥

तुम्ह सव कहहु कड़ावन टोका । राय रजायसु सव कहँ नीका ॥

उतरु देउ केहि विधि केहि केही । कहहु सुखेन जथा रुचि जेही ॥

मोहि कुमातु समेत विहाई । कहहु कहिहि के कीन्ह भलाई ॥

मो विनु को सवरावर माहीं । जेहि सिय रामु प्रान प्रिय नाहीं ॥

परम हानि सव कहँ बड़ लाहू । अदिनु मोर नहिं दूपन काहू ॥

संसय सील प्रेम बस अहहू । सबुइ उचित सव जो कछु कहहू ॥



दो०—राम मातु सुठि सरलचित मो पर प्रेमु विसेषि ।

कहइ सुभाय सनेह वस मोरि दीनता देखि ॥ १८१ ॥

गुर विवेक सागर जगु जाना । जिन्हहि विस्व कर बदर समाना ॥  
मो कहँ तिलक साज सज सोऊ । भएँ विधि विमुख विमुख सबु कोऊ  
परिहरि रामु सीय जग माहीं । कोउ न कहिहि मोर मत नाहीं ॥  
सो मैं सुनव सहव सुखु मानी । अंतहुँ कीच तहाँ जहँ पानी ॥  
डरु न मोहि जग कहिहि कि पोचू । परलोकहु कर नाहिन सोचू ॥  
एकइ उर वस दुसह दवारी । मोहि लगि भे सिय रामु दुखारी ॥  
जीवन लाहु लखन भल पावा । सबु तजि राम चरन मनु लावा ॥  
मोर जनम रघुवर बन लागी । झूठ काह पछिताउँ अभागी ॥

दो०—आपनि दारुन दीनता कहउँ सबहि सिरु नाइ ।

देखें विनु रघुनाथ पद जिय कै जरनि न जाइ ॥ १८२ ॥

आन उपाउ मोहि नहिं सूझा । को जिय कै रघुवर विनु वृझा ॥  
एकहिं आँक इहइ मन माहीं । प्रातकाल चलिहउँ प्रभु पाहीं ॥  
जद्यपि मैं अनभल अपराधी । भै मोहि कारन सकल उपाधी ॥  
तदपि सरन सनमुख मोहि देखी । छमि सब करिहहिं कृपा विसेपी ॥  
सील सकुच सुठि सरल सुभाऊ । कृपा सनेह सदन रघुराऊ ॥  
अरिहुक अनभल कीन्ह न रामा । मैं सिसु सेवक जद्यपि वामा ॥  
तुम्ह पै पाँच मोर भल मानी । आयनु आसिप देहु सुवानी ॥  
जेहिं सुनि विनय मोहि जनु जानी । आवहिं बहुरि रामु रजधानी ॥

दो०—जद्यपि जनमु कुमातु तें मैं सहु सदा सदास ।

आपन जानि न त्यागिहहिं मोहि रघुवीर भरांस ॥ १८३ ॥

भरत बचन सब कहँ प्रिय लागे । राम सनेह सुधाँ जनु पागे ॥  
 लोग वियोग विषम विष दागे । मंत्र सवीज सुनत जनु जागे ॥  
 मातु सचिव गुर पुर नर नारी । सकल सनेहँ विकल भए भारी ॥  
 भरतहि कहहि सराहि सराही । राम प्रेम मूरति तनु आही ॥  
 तात भरत अस काहे न कहहू । प्रान समान राम प्रिय अहहू ॥  
 धो पावँरु अपनी जइताई । तुन्हहि सुगाइ मातु कुटिलाई ॥  
 सो सठु कोटि न पुरुष समेता । बसिहि कल्प सत नरक निकेता ॥  
 यहि अघ अवगुन नहिं मनि गहई । हरइ गरल दुख दारिद दहई ॥

दो०—अवसि चलिअ वन रामु जहँ भरत मंत्रु भल कीन्ह ।

सोक सिंधु बृद्धत सबहि तुन्ह अवलंबनु दीन्ह ॥१८४॥

भा सब के मन मोदु न थोरा । जनु घन घुनि सुनि चातक मोरा ॥  
 चलत प्रात लखि निरनउ नीके । भरतु प्रानप्रिय मे सबही के ॥  
 घुनिहि बंदि भरतहि सिरु नाई । अले सकल घर विदा कराई ॥  
 धन्य भरत जीवनु जग माहीं । सीछु सनेहु सराहत जाहीं ॥  
 झइहि परसपर भा बड़ काजू । सकल चलै कर साजहिं साजू ॥  
 खेहि राखहिं रहु घर रखवारी । सो जानइ जनु गरदनि मारी ॥  
 कोउ कह रहन कहिअ नहिं फाहू । को न चहइ जग जीवन लाहू ॥

दो०—जरउ सो संपति सदन सुखु सुहृद मातु पितु भाइ ।

सनमुख होत जो राम पद करै न सहस सहाइ ॥१८५॥

पर घर साजहिं बाहन नाना । हरषु हृदयँ परभात पयाना ॥  
 भरत जाइ घर कीन्ह विचारू । नगरु घाजि गज भवन भँडारू ॥  
 संपति सब रघुपति कै आही । लौं चिनु जतन चलौं तजि ताही ॥

तौ परिनाम न मोरि भलाई । पाप सिरोमनि साइँ दोहाई ॥  
 करइ स्वामि हित सेवकु सोई । दूषन कोटि देइ किन कोई ॥  
 अस विचारि सुचि सेवक बोले । जे सपनेहुँ निज धरम न डोले ॥  
 कहि सबु मरमु धरमु भल भाषा । जो जेहि सो तेहि ॥  
 करि सबु जतनु राखि रखवारे । राम मातु पहिँ भरतु सिधारे ॥

दो०—आरत जननीं जानि भरत सनेह सुजान ।

कहेउ बनावन पालकीं सजन सुखासन ॥१८६॥

चक्र चकि जिमि पुर नर नारी । चहत प्रात उर आरत भारी ॥  
 जागत सब निसि भयउ विहाना । भरत बोलाए सचिव सुजाना ॥  
 कहेउ लेहु सबु तिलक समाजू । बनहिँ देव मुनि रामहि राजू ॥  
 बेगि चलहु सुनि सचिव जोहारे । तुरत तुरग रथ नाग सँवारे ॥  
 अरुंधती अरु अग्निनि समाऊ । रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराऊ ॥  
 विप्र वृंद चढ़ि वाहन नाना । चले सकल तप तेज निधाना ॥  
 नगर लोग सब सजि सजि जाना । चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना ॥  
 सित्रिका सुभग न जाहिँ बखानी । चढ़ि चढ़ि चलत भई सब रानी ॥

दो०—साँपि नगर सुचि सेवकनि सादर सकल चलाइ ।

सुमिरि राम सिय चरन तव चले भरत दोउ भाइ ॥१८७॥

राम दरस बस सब नर नारी । जनु करि करिनि चले तकि बारी ॥  
 बन सिय रामु समुझि मन माहीं । सानुज भरत पयादेहिं जाहीं ॥  
 देखि सनेहु लोग अनुरागे । उत्तरि चले हय गय रथ त्यागे ॥  
 जाइ समीप राखि निज डोली । राम मातु मृदु बानी बोली ॥  
 तात चढ़हु रथ बलि महतारी । होइहि प्रिय परिवारु दुखारी ॥

तुम्हरे चलत चलिहि सबु लोगू । सकल सोक कृस नहिं मग जोगू ॥  
 सिर धरि वचन चरन सिरु नाई । रथ चढ़ि चलत भए दोउ भाई ॥  
 तमसा प्रथम दिवस करि वास । दूसर गोमति तीर निवास ॥

दो०—पय अहार फल असन एक निसि भोजन एक लोग ।

करत राम हित नेम व्रत परिहरि भूपन भोग ॥१८८॥

सई तीर वसि चले विहाने । सुंगवेरपुर सब निअराने ॥  
 समाचार सब सुने निपादा । हृदयँ विचार करइ सविपादा ॥  
 कारण कवन भरतु वन जाहीं । है कलु कपट भाउ मन माहीं ॥  
 जौ पै जियँ न होति कुटिलाई । तौ कत लीन्ह संग कटकाई ॥  
 जानहिं सानुज रामहि मारी । करउँ अकंटक राजु सुखारी ॥  
 भरत न राजनीति उर आनी । तव कलंकु अब जीवन हानी ॥  
 सकल सुरासुर जु रहि जुझारा । रामहि समर न जीतनिहारा ॥  
 का आचरजु भरतु अस करहीं । नहिं विष बेलिअमिअ फल फरहीं ॥

दो०—अस विचारि गुहँ ग्याति सन कहेउ सजग सब होहु ।

दृथवाँसहु चोरहु तरनि कीजिअ घाटारोहु ॥१८९॥

होहु सँजोइल रोकहु घाटा । ठाटहु सकल मरै के ठाटा ॥  
 सनमुख लोह भरत सन लेऊँ । जिअत न सुरसरि उतरन देऊँ ॥  
 समर मरनु पुनि सुरसरि तीरा । राम काजु छनभंगु सरीरा ॥  
 भरत भाइ नृपु में जन नीचू । बड़ें भाग असि पाइअ मीचू ॥  
 स्वामि काज करिहउँ रन रारी । जस धवलिहउँ भुवन दस चारी ॥  
 तजउँ प्रान रघुनाथ निहोरें । दुहँ हाथ मुद मोदक मोरें ॥  
 साधु समाज न जाकर लेखा । राम भगत महुँ जासु न रेखा ॥

जायँ जितत जग सो महि भारू । जननी जीवन विटप कुठा ॥

दो०—विगत विपाद निपाद पति सबहि बढ़ाइ उछाइ ।

सुमिरि राम मागेउ तुरत तरकस धनुष सनाइ ॥१९०॥

वेगहु भाइहु सजहु सँजोऊ । सुनि रजाइ कदराइ न कोऊ ॥  
भलेहि नाथ सब कहहि सहरपा । एकहि एक बढ़ावइ करपा ॥  
चले निपाद जोहारि जोहारी । स्वर सकल रन रूचइ रारी ॥  
सुमिरि राम पद पंकज पनहीं । भार्थी बाँधि चढ़ाइन्हि धनहीं ॥  
अँगरी पहिरि कूँडि सिर धरहीं । फरसा बाँस सेल सम करहीं ॥  
एक कुसल अति ओड़न ढिं । कूदहि गगन मनहुँ छिति छँडि ॥  
निज निज साजु समाजु बनाई । गुह राउतहि जोहारे जाई ॥  
देखि सुभट सब लायक जाने । लै लै नाम सकल सनमाने ॥

दो०—भाइहु लावहु धोख जनि आजु काज वड़ मोहि ।

सुनि सरोप बोले सुभट वीर अधीर न होहि ॥१९१॥

राम प्रताप नाथ बल तोरे । करहि कटक विनु भट विनु घोरे ॥  
जीवत पाउ न पाछें धरहीं । रुंड डमय मेदिनि करहीं ॥  
दीख निपादनाथ भल टोलू । कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू ॥  
एतना कहत छींक भइ बाँए । कहेउ सगुनिअन्ह खेत सुहाए ॥  
बृहुएकु कह सगुन विचारी । भरतहि मिलिअ न होइहि रारी ॥  
रामहि भरतु मनावन जाहीं । सगुन कहइ अस विग्रहु नाही ॥  
सुनिगुहकहइ नीककइ बूदा । सहसा करि पछिताहि विमूढा ॥  
भरत सुभाउ सोलु विनु बूझें । बढि हित हानि जानि विनु चूझें ॥

दो०—गहहु घाट भट समिटि सब लेउँ मरम मिलि जाइ ।

बृद्धि मित्र अरि मध्य गति तस तव करिहउँ आइ ॥१९२॥

लखन सनेहु सुभायँ सुहाएँ । वैरु प्रीति नहिं दुखँ दुराएँ ॥  
 अस कहि भेंट सँजोवन लागे । कंद मूल फल खग मृग मागे ॥  
 मीन पीन पाठीन पुराने । भरि भरि भार कहारन्ह आने ॥  
 मिलन साजु सजि मिलन सिधाए । मंगल मूल सगुन सुभ पाए ॥  
 देखि दूरि तैं कहि निज नामू । कीन्ह मुनीसहि दंड प्रनामू ॥  
 जानि रामप्रिय दीन्हि असीसा । भरतहि कहेउ बुझाइ मुनीसा ॥  
 राम सखा सुनि संदनु त्यागा । चले उतरि उमगत अनुरागा ॥  
 गाउँ जाति गुहँ नाउँ सुनाई । कीन्ह जोहारु माथ महि लाई ॥

दो०—करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ ।

मनहुँ लखन सन भेंट भइ प्रेमु न हृदयँ समाइ ॥१९३॥

भेंटत भरतु ताहि अति प्रीती । लोग सिहाहिं प्रेम कै रीती ॥  
 धन्य धन्य धुनि मंगल मूला । सुर सराहिं तेहि वरिसहिं फूला ॥  
 लोक वेद सब भाँतिहिं नीचा । जासु छाँह छुड़ लेइअ सींचा ॥  
 तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता । मिलत पुलक परिपूरित गाता ॥  
 राम राम कहि जे जमुहारीं । तिन्हहिं न पाप पुंज समुहारीं ॥  
 यह तौ राम लाइ उर लीन्हा । कुल समेत जगु पावन कीन्हा ॥  
 करमनास जलु सुरसरि परई । तेहि को कहहु सीस नहिं धरई ॥  
 उलटा नामु जपत जगु जाना । बालमीकि भए ब्रह्म समाना ॥

दो०—स्वपच सवर स्वस जमन जइ पावँर कोल किरात ।

रामु कहत पावन परम होत भुवन विख्यात ॥१९४॥

नहिं अचिरिजु जुग जुग चलि आई । केहि न दीन्हि रघुवीर बड़ाई ॥  
 राम नाम महिमा सुर कहहीं । सुनि सुनि अवध लोग सुखु लहहीं  
 रामसरखहि मिलि भरत सप्रेमा । पूँछी कुसल सुमंगल खेमा ॥  
 देखि भरत कर सीलु सनेहू । भा निपाद तेहि समय विदेहू ॥  
 सकुच सनेहु मोदु मन वाढ़ा । भरतहि चितवत एकटक ठाढ़ा ॥  
 धरि धीरजु पद बंदि बहोरी । विनय सप्रेम करत कर जोरी ॥  
 कुसल सूल पद पंकज पेखी । मैं तिहुँ काल कुसल निज लेखी ॥  
 अब प्रभु परम अनुग्रह तोरें । सहित कोटि कुल मंगल मोरें ॥

दो०—समुझि मोरि करतूति कुल प्रभु महिमा जियँ जोड़ ।

जो न भजइ रघुवीर पद जग विधि वंचित सोइ ॥१९५॥

कपटी कायर कुमति कुजाती । लोक वेद वाहेर सब भाँती ॥  
 राम कीन्ह आपन जवही तें । भयउँ भुवन भूपन तवही तें ॥  
 देखि प्रीति सुनि विनय सुहाई । मिलेउ बहोरि भरत लघु भाई ॥  
 कहि निपाद निज नाम सुबानीं । सादर सकल जोहारीं रानीं ॥  
 जानि लखन सम देहिं असीसा । जिअहु सुखी सय लाख वरीसा ॥  
 निरखि निपादु नगर नर नारी । भए सुखी जनु लखनु निहारी ॥  
 कहहिं लहेउ एहिं जीवन लाहू । भेंटैउ रामभद्र भरि वाहू ॥  
 सुनि निपादु निज भाग बड़ाई । प्रमुदित मन लइ चलेउ लेवाई ॥

दो०—सनकारे सेवक सकल चले स्वामि रुख पाइ ।

घर तरु तर सर वाग वन वास वनाएन्हि जाइ ॥१९६॥

सुंगवेरपुर भरत दीख जव । मे सनेहँ सब अंग सिथिल तव ॥  
 सोहत दिएँ निपादहि लागू । जनु तनु धरें विनय अनुरागू ॥

एहि विधि भरत सेनु सजु संगी । दीखि जाइ जग पावनि गंगा ॥  
 रामघाट कहँ कीन्ह प्रनामू । भा मनु मगनु मिले जनु रामू ॥  
 करहिं प्रनाम नगर नर नारी । सुदित ब्रह्ममय वारि निहारी ॥  
 करि मजनु मागहिं कर जोरी । रामचंद्र पद प्रीति न थोरी ॥  
 भरत कहेउ सुरसरि तव रेनु । सकल सुखद सेवक सुरघेनु ॥  
 जोरि पानि बर मागउँ एहू । सीय राम पद सहज सनेहू ॥

दो०—एहि विधि मजनु भरतु करि गुर अनुसासन पाइ ।

मातु नहानी जानि सब डेरा चले लवाइ ॥१९७॥  
 जहँ तहँ लोगन्ह डेरा कोन्हा । भरत सोधु सत्रही कर लोन्हा ॥  
 सुर सेवा करि आयसु पाई । राम मातु पहिं गे दोउ भाई ॥  
 चरन चाँपि कहि कहि मृदु वानी । जननीं सकल भरत सनमानी ॥  
 भाइहि साँपि मातु सेवकाई । आपु निपादहि लोन्ह बोलाई ॥  
 चले सखा कर साँ कर जोरें । सिथिल सरीरु सनेह न थोरें ॥  
 पूँछत सखहि सो ठाउँ देखाऊ । नेकु नयन मन जरनि जुड़ाऊ ॥  
 जहँ सिय रामु लखनु निसि सोए । कहत भरे जल लोचन कोए ॥  
 भरत वचन सुनि भयउ विपाद् । तुरत तहाँ लइ गयउ निपाद् ॥

दो०—जहँ सिंसुपा पुनीत तर रघुवर किय विश्रामु ।

अति सनेहँ सादर भरत कीन्हेउ दंड प्रनामु ॥१९८॥  
 कुस साँथरी निहारि सुहाई । कीन्ह प्रनामु प्रदच्छिन जाई ॥  
 चरन रेख रज आँखिन्ह लाई । बनइ न कहत प्रीति अधिकाई ॥  
 कनक बिंदु दुइ चारिक देखे । राखे सीस सीय सम लेखे ॥  
 सजल विलोचन हृदयँ गलानी । कहत सखा सन वचन सुवानी ॥



श्रीहत सीय विरहँ दुतिहीना । जथा अवधनर नारि विलीना ॥  
 पिता जनक देउँ पटतर केही । करतल भोगु जोगु जग जेही ॥  
 ससुर भानुकुल भानु भुआलू । जेहि सिहात अमरावतिपालू ॥  
 प्राननाथु रघुनाथ गोसाईं । जो बड़ होत सो राम बड़ाईं ॥  
 दो०—पति देवता मुतीय मनि सीय साँथरी देखि ।

विहरत हृदउ न हहरि हर पवि तें कठिन विसेपि ॥१९९॥  
 लालन जोगु लखन लघु लोने । भे न भाइ अस अहहिं न होने ॥  
 पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे । सिय रघुवीरहि प्रानपिआरे ॥  
 मृदु मूरति सुकुमार सुभाऊ । तात वाउ तन लाग न काऊ ॥  
 वैवन सहहिं विपति सब भाँती । निदरे कोटि कुलिस एहि छाती ॥  
 राम जनमि जगु कीन्ह उजागर । रूप सील सुख सब गुन सागर ॥  
 पुरजन परिजन गुर पितु माता । राम सुभाऊ सवाहि सुखदाता ॥  
 पैरिउ राम बड़ाई करहीं । बोलनि मिलनि भिनय मन हरहीं ॥  
 चारद कोटि कोटि सत सेपा । करि न सकहिं प्रभु गुन गन लेखा ॥  
 दो०—सुखस्वरूप रघुवंसमनि मंगल मोद निधान ।

ते सोचत कुस डारि महि विधि गति अति बलवान ॥२००॥

राम सुना दुखु कान न काऊ । जीवन तरु जिमि जोगवहराऊ ॥  
 पलक नयन फनि मनि जेहि भाँती । जोगवहिं जननि सकल दिन राती ॥  
 ते अब फिरत विपिन पद चारी । कंद मूल फल फूल अहारी ॥  
 धिग कँकई असंगल मूला । भइसि प्रान प्रियतम प्रतिकूला ॥  
 मै, धिग धिग अघ उदधि अभागी । सवु उत्पातु भयउ जेहि लागी ॥  
 लकलंकु जरि सृजेउ विधाताँ । साहँ दोह मोहि कीन्ह कुमाताँ ॥

सुनि सप्रेम समुझाव निपाद । नाथ करिअ कत बादि विपाद ॥  
राम तुम्हहि प्रिय तुम्ह प्रिय रामहि । यह निरजोसु दोसु विधि वामहि

छ०—विधि वाम की करनी कठिन जेहिं मातु कीन्ही बावरी ।  
तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सरहना रावरी ॥  
तुलसी न तुम्ह सो राम प्रीतसु कहतु हौं सौंहेँ किएँ ।  
परिनाम मंगल जानि अपने आनिए धीरजु हिएँ ॥

सो०—अंतरजामी रामु सकुच सप्रेम कृपायतन ।  
चलिअ करिअ विश्रामु यह विचारि दृढ़ आनि मन ॥२०१॥

सखा बचन सुनि उर धरि धीरा । वास चले सुमिरत रघुवीरा ॥  
यह सुधि पाइ नगर नर नारी । चले विलोकन आरत भारी ॥  
परदखिना करि करहिं प्रनामा । देहिं कैकइहि खोरि निकामा ॥  
भरि भरि बारि विलोचन लेहीं । वाम विधातहि दूपन देहीं ॥  
एक सराहहिं भरत सनेह्र । कोउ कह नृपति निवाहेउ नेह्र ॥  
निंदहिं आपु सराहि निपादहि । को कहि सकइ विमोह विपादहि ॥  
एहि विधि राति लोगु सबु जागा । भा भिनुसार गुदारा लगा ॥  
गुरहि सुनावँ चढ़ाइ सुहाई । नई नाव सब मातु चढ़ाई ॥  
दंड चारि महँ भा सबु पारा । उतरि भरत तव सबहि सँभारा ॥

दो०—प्रातक्रिया करि मातु पद बंदि गुरहि सिरु नाइ ।

आगें किए निपाद गन दीन्हेउ कटकु चलाइ ॥२०२॥

क्रियउ निपादनाथु अगुआई । मातु पालकीं सकल चलाई ॥  
साथ बोलाइ भाइ लघु दीन्हा । विग्रन्ह सहित गवनु गुर कीन्हा ॥  
आपु सुरसरिहि कीन्ह प्रनामू । सुमिरे लखन सहित सिय रामू ॥

श्रीहत सीय विरहँ दुतिहीना । जथा अवध नर नारि विलीना ॥  
 शिता जनक देउँ पटतर केही । करतल भोगु जोगु जग जेही ॥  
 ससुर भाचुकुल भाचु भुआल । जेहि सिहात अमरावतिपाल ॥  
 प्राननाथु रघुनाथ गोसाईं । जो . होत सो राम बड़ाईं ॥  
 दो०—पति देवता सुतीय मनि सीय साँथरी देखि ।

विहरत हृदउ न हहरि हर पवि तें कठिन विसेषि ॥१९९॥  
 लालन जोगु लखन लघु लोने । भे न भाइ अस अहहिं न होने ॥  
 पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे । सिय रघुवीरहि प्रानपिआरे ॥  
 मृदु मूरति सुकुमार सुभाऊ । तात वाउ तन लाग न काऊ ॥  
 तेवन सहहिं विपति सब भाँती । निदरे कोटि कुलिस एहिं छाती ॥  
 राम जनमि जगु कीन्ह उजागर । रूप सील सुख सब गुन सागर ॥  
 पुरजन परिजन गुर पितु माता । राम सुभाउ सबहि सुखदाता ॥  
 वैरिउ राम बड़ाई करहीं । बोलनि मिलनि विनय मन हरहीं ॥  
 सारद कोटि कोटि सत सेपा । करि न सकहिं प्रभु गुन गन लेखा ॥  
 दो०—सुखस्वरूप रघुवंसमनि मंगल मोद निधान ।

ते साँवत झुस डारि महि विधि गति अति बलवान ॥२००॥

राम सुना दुखु कान न काऊ । जीवन तरु जिमि जांगवइ राऊ ॥  
 पलक नयन फनि मनि जेहि भाँती । जांगवहिं जननि सकल दिन राती ॥  
 ते अव फिरत विपिन पद चारी । कंद मूल फल फूल अहारी ॥  
 धिग कँकई अमंगल मूला । भइसि प्रान प्रियतम प्रतिकूला ॥  
 में, धिग धिग अघ उदधि अभागी । सबु उतपातु भयउ जेहि लागी ॥  
 कल कलंकु करि सृजेउ विधाताँ । साईं दोंह मोहि कीन्ह कुमाताँ ॥

सुनि सप्रेम समुझाव निपाद् । नाथ करिअ कत वादि विपाद् ॥  
 राम तुम्हहि प्रिय तुम्ह प्रिय रामहि । यह निरजोसु दोसु विधि वामहि

छं०—विधि वाम की करनी कठिन जेहिं मातु कीन्ही बावरी ।  
 तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सरहना रावरी ॥  
 तुलसी न तुम्ह सो राम प्रीतमु कहतु हों सौंहीं किएँ ।  
 परिनाम मंगल जानि अपने आनिए धीरजु हिएँ ॥

सो०—अंतरजामी रामु सकुच सप्रेम कृपायतन ।  
 चलिअ करिअ विश्रामु यह विचारि दृढ़ आनि मन ॥२०१॥

सखा बचन सुनि उर धरि धीरा । वास चले सुमिरत रघुवीरा ॥  
 यह सुधि पाइ नगर नर नारी । चले विलोकन आरत भारी ॥  
 परदखिना करि करहिं प्रनामा । देहिं कैकइहि खोरि निकामा ॥  
 भरि भरि बारि विलोचन लेहीं । वाम विधातहि दूपन देहीं ॥  
 एक सराहहिं भरत सनेहू । कोउ कह नृपति निवाहेउ नेहू ॥  
 निंदहिं आपु सराहि निपादहि । को कहि सकइ विमोह विपादहि ॥  
 एहि विधि राति लोगु सबु जागा । भा भितुसार गुदारा लाग्गा ॥  
 गुरहि सुनावँ चढ़ाइ सुहाइं । नईं नाव सब मातु चढ़ाइं ॥  
 दंड चारि महँ भा सबु पारा । उतरि भरत तब सबहि संभारा ॥

दो०—प्रातक्रिया करि मातु पद बंदि गुरहि सिरु नाइ ।

आगें किए निपाद गन दीन्हेउ कटकु चलाइ ॥२०२॥

क्रियउ निपादनाथु अगुआइं । मातु पालकों सकल चलाईं ॥  
 साथ बोलाइ भाइ लघु दीन्हा । विप्रन्ह सहित गवनु गुर कीन्हा ॥  
 आपु सुरसरिहि कीन्हा प्रनामू । सुमिरे लखन सहित सिय रामू ॥

बनने भरत पयादेहिं पाए। कोतल संग जाहि डोरिआए॥  
 कहहिं सुसेवक वारहिं वारा। होइअ नाथ अम्य असवारा॥  
 रामु पयादेहिं पायँ सिधाए। हम कहँ रथ गज वाजि बनाए॥  
 सिर भर जाउँ उचित अस मोरा। सब तँ सेवक धरमु कठोरा॥  
 देखि भरत गति मुनि मृदु बानी। सब सेवक गन गरहिं गलानी॥  
 दो०—भरत तीसरे पहर कहँ कीन्ह प्रवेशु प्रयाग।

कहत राम सिय राम सिय उमगि उमगि अनुराग॥२०३॥

झलका झलकत पायन्ह कैसैं। पंकज कोस ओस कन जैसें॥  
 भरत पयादेहिं आए आजू। भयउ दुखित मुनि सकल समाजू॥  
 खवरि लीन्ह सब लोग नहाए। कीन्ह प्रनामु त्रिवेनिहिं आए॥  
 सविधि सितासित नीर नहाने। दिए दान महिसुर सनमाने॥  
 देखत स्यामल धवल हलोरे। पुलकि सरीर भरत कर जोरे॥  
 सकल काम प्रद तीरथराऊ। वेद विदित जग प्रगट प्रभाऊ॥  
 मागउँ भीख त्यागि निज धरमू। आरत काह न करइ कुकरमू॥  
 अस जियँ जानि सुजान सुदानी। सफल करहिं जग जाचक बानी॥

दो०—अरथ न धरम न रुचि गति न चहउँ निरवान।

जनम जनम रति राम पद यह वरदानु न आन॥२०४॥

जानहुँ राम कुटिल करि मोही। लोग कहउ गुर साहिव द्रोही।  
 सीता राम चरन रति मोहैं। अनुदिन बढ़उ अनुग्रह तोरैं॥  
 जलदु जनम भरि सुरति विसारउ। जाचत जलु पवि पाहन डारउ॥  
 चातकु रटनि घटें घटि जाई। बढ़ें प्रेमु सब भाँति भलाई॥  
 हिं बान चढ़इ जिमि दाहैं। तिमि प्रियतम पद नेम निबाहैं॥

भरत वचन सुनि माझ त्रिवेनी । भइ मृदु वानि सुमंगल देनी ॥  
तात भरत तुम्ह सब विधि साधू । राम चरन अनुराग अगाधू ॥  
वादि गलानि करहु मन माहीं । तुम्ह सम रामहि कोउ प्रिय नाही

दो०—तनु पुलकैउ हियँ हरषु सुनि वेनि वचन अनुकूल ।

भरत धन्य कहि धन्य सुर हरपित वरपहिं फूल ॥२०५॥

प्रमुदित तीरथराज निवासी । बैखानस वडु गृही उदासी ॥  
कहहिं परसपर मिलि दस पाँचा । भरत सनेहु सीलु सुचि साँचा ॥  
सुनत राम गुन ग्राम सुहाए । भरद्वाज मुनिवर पहिं आए ॥  
दंड प्रनामु करत मुनि देखे । मूरतिमंत भाग्य निज लेखे ॥  
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे । दीन्हि असीस कृतारथ कीन्हे ॥  
आसनु दीन्ह नाइ सिरु बैठे । चहत सकुच गृहँजनु भजि पँठे ॥  
मुनि पूँछव कह्यु यह वढ़ सोचू । बोले रिपि लखि सीलु सँकोचू ॥  
सुनहु भरत हम सब सुधि पाई । विधि करतव पर किछु न बसाई ॥

दो०—तुम्ह गलानि जियँ जनि करहु समृद्धि मातु करतूति ।

तात कैकइहि दोसु नहिं गई गिरा मति धूति ॥२०६॥

यहउ कहत भल कहिहि न कोऊ । लोकु वेदु बुध संमत दोऊ ॥  
तात तुम्हार विमल जसु गई । पाइहि लोकउ वेदु बड़ाई ॥  
लोक वेद संमत सबु कहई । जेहि पितु देइ राजु सो लहई ॥  
राउ सत्यव्रत तुम्हहि बोलाई । देत राजु सुखु धरमु बड़ाई ॥  
राम गवनु वन अनरथ मूला । जो सुनि सकल विख भइ मूला ॥  
सो भावी बस रानि अयानी । करि कुचालि अंतहुँ पछितानी ॥  
तहँउँ तुम्हार अल्प अपराधू । कहै सो अधम अयान असाधू ॥

परतैहु राजु त तुम्हहि न दोषू। रामहि होत सुनत संतोषू ॥

दो०—अव अति कीन्हेहु भरत भल तुम्हहि उचित मत एहु।

सकल सुमंगल मूल जग रघुवर चरन सनेहु ॥२०७॥

सो तुम्हार धनु जीवनु प्राणा। भूरि भाग को तुम्हहि समाना ॥

यह तुम्हार आचरजु न ताता। दसरथ सुअन राम प्रिय आता ॥

सुनहु भरत रघुवर मन माहीं। पेम पात्रु तुम्ह सम कोउ नाही ॥

लखन राम सीतहि अति प्रीती। निसि सब तुम्हहिसराहत, वीती ॥

जाना मरसु नहात प्रयागा। मगन होहिं तुम्हरें अनुरागा ॥

तुम्ह पर अस सनेहु रघुवर कें। सुख जीवन जग जस जड़ नर कें ॥

यह न अधिक रघुवीर बड़ाई। प्रनत कुटुंब पाल रघुराई ॥

तुम्ह तौ भरत मोर मत एहु। धरें देह जनु राम सनेहु ॥

दो०—तुम्ह कहैं भरत कलंक यह हम सब कहैं उपदेसु।

राम भगति रस सिद्धि हित भा यह समउ गनेसु ॥२०८॥

नव त्रिधु त्रिमल तात जसु तोरा। रघुवर किंकर कुमुद चकोरा ॥

उदित सदा अँथइहि कवहूँ ना। घटिहि न जग नभ दिन दिन दूना ॥

कोक तिलोक प्रीति अति करिही। प्रभु प्रताप रवि छविहि न हरिही ॥

निसि दिन सुखद सदा सब काहू। ग्रसिहि न कैकड करतवु राहू ॥

पूरन राम सुपेम पियूषा। गुर अवमान दोष नहिं दूषा ॥

राम भगन अव अमिअँ अघाहूँ। कीन्हेहु सुलभ सुधा वसुधाहूँ ॥

भूप भगीरथ सुरसरि आनी। सुमिरत सकल सुमंगल खानी ॥

दसरथ गुन गन वरनि न जाहीं। अधिकु कहा जेहि सम जग नाही ॥

दो०—बासु सनेह सकोच यस राम प्रगट भए आइ ।

जे हर हिय नयननि कबहुँ निरखे नहीं अघाइ ॥२०९॥

कीरति विधु तुम्ह कीन्ह अनुपा । जहँ यस राम पेम मृगरूपा ॥

तात गलानि करहु जियँ जाएँ । डरहु दरिद्रहि पारसु पाएँ ॥

सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं । उदासीन तापस वन रहहीं ॥

सब साधन कर सुफल सुहावा । लखनराम सिय दरसनु पावा ॥

सैहि फल कर फलु दरस तुम्हारा । सहित पयाग सुभाग हमारा ॥

भरत धन्य तुम्ह जसु जगु जयऊ । कहि अस पेम मगन मुनिभयऊ ॥

मुनि गुनि वचन सभासद हरपे । साधु सराहि सुमन सुर वरपे ॥

धन्य धन्य धुनि गगन पयागा । मुनि मुनि भरतु मगन अनुरागा ॥

दो०—पुलक गात हियँ रामु सिय सजल सरोरुह नैन ।

करि प्रनामु मुनि मंडलिहि बोले गदगद वैन ॥२१०॥

मुनि समाजु अरु तीरथराजू । साँचिहुँ सपथ अघाइ अकाजू ॥

एहिँ थल जाँ किलु कहिअ वनाई । एहि सम अधिकन अध अधमाई ॥

तुम्ह सर्वग्य कहउँ सतिभाऊ । उर अंतरजामी रघुराऊ ॥

मोहि न मातु करतत्र कर सोचू । नहिँ दुखु जियँ जगु जानिहि पोचू ॥

नाहिन डरु विगरिहि परलोक् । पितहु मरन कर मोहि न सोक् ॥

सुकृत सुजस भरि भुअन सुहाए । लछिमन राम सरिस सुत पाए ॥

राम त्रिरहँ तजि तनु छनभंगू । भूप सोच कर कवन प्रसंगू ॥

राम लखन सिय विनु पग पनहीं । करि मुनि बेप फिरहिँ वन वनहीं ॥

दो०—अजिन वसन फल असन महि सयन डसि कुस पात ।

बसि तरु तर नित सहत हिम आतप वरपा वात ॥२११॥



एहि दुख दाहँ दहइ दिन छाती । भूख न वासर नीद न राती ॥  
 एहि कुरोग कर औषधु नाहीं । सोधेउँ सकल बिस्व मन हीं ॥  
 मातु कुमत बढ़ई अब मूला । तेहिं हमार हित कीन्ह वँसला ॥  
 कलि कुकाठ कर कीन्ह कुजंत्र । गाड़ि अवधि पढ़ि कठिन कुमंत्र ॥  
 मोहि लगि यहु कुठाटु तेहिं ठाटा । घालेसि सब जगु वारह वाटा ॥  
 मिटइ कुजोगु राम फिरि आएँ । बसइ अवध नहिं आन उपाएँ ॥  
 भरत वचन सुनि मुनि सुखु पाई । सबहिं कीन्हि बहु भाँति बड़ाई ॥  
 तात करहु जनि सोचु बिसेपी । सब दुखु मिटिहि राम पग देखी ॥

दो०—करि प्रबोधु मुनिवर कहेउ अतिथि पेमप्रिय होहु ।

कंद मूल फल फूल हम देहिं लेहु करि छोहु ॥२१२॥

सुनि मुनि वचन भरत हियँ सोचू । भयउ कुअवसर कठिन सँकोचू ॥  
 जानि गरुड़ गुर गिरा बहोरी । चरन बंदि बोले कर जोरी ॥  
 सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा । परम धरम यहु नाथ हमारा ॥  
 भरत वचन मुनिवर मन भाए । सुचि सेवक सिप निकट बोलाए  
 चाहिअ कीन्हि भरत पहुनाई । कंद मूल फल आनहु जाई ॥  
 भलेहिं नाथ कहि तिन्ह सिर नाए । प्रमुदित निज निज काज सिधाए  
 मुनिहि सोच पाहुन बड़ नेवता । तसि पूजा चाहिअ जस देवता ॥  
 सुनि रिधि सिधि अनिमादिक आई । आयसु होइ सो करहिं गोसाईं

दो०—राम विरह व्याकुल भरतु सानुज सहित समाज ।

पहुनाई करि हरहु श्रम कहा मुदित मुनिराज ॥२१३॥

रिधि सिधि सिर धरि मुनिवर वानी । बड़भागिनि आपुहि अनुमानी  
 कहिं परसपर सिधि समुदाई । अतुलित अतिथि राम लघु भाई ॥



पथ गति कुसल साथ सब लीन्हें । चले चित्रकूटहिं चितु दीन्हें ॥  
 रामसखा कर दीन्हें लागू । चलत देह धरि जनु अनुरागू ॥  
 नहिं पद त्रान सीस नहिं छाया । पेसुनेसु ब्रतु धरसु अमाया ॥  
 लखन राम सिय पंथ कहानी । पूँछत सखहि कहत मृदु बानी ॥  
 राम वास थल विटप विलोकें । उर अनुराग रहत नहिं रोकेँ ॥  
 देखि दसा सुर वरिसहिं फूला । भइ मृदु महिमगु मंगल मूला ॥

दो०—क्रिँ जाहिं छाया जलद सुखद वहइ वर वात ।

तस मगु भयउन राम कहँ जस भा भरतहि जात ॥२१६॥

जड़ चेतन मग जीव घनेरे । जे चितए प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे ॥  
 ते सब भए परम पद जोगू । भरत दरस मेटा भव रोगू ॥  
 यह वडि वात भरत कह नाहीं । सुमिरत जिनहि रामु मन माहीं ॥  
 वारक राम कहत जग जेऊ । होत तरन तारन नर तेऊ ॥  
 भरतु राम प्रिय पुनि लघु भ्राता । कस न होइ मगु मंगलदाता ॥  
 सिद्ध साधु मुनिवर अस कहहीं । भरतहि निरखि हरषु हिय लहहीं ॥  
 देखि प्रभाउ सुरेसहि सोचू । जगु भल भलेहि पोच कहूँ पोचू ॥  
 गुरसन कहेउ करिअ प्रभु सोई । रामहि भरतहि भेट न होई ॥

दो०—रामु सँकोची प्रेम बस भरत सपेम पयोधि ।

बनी वात वेगरन चहति करिअ जतनु छलु सोधि ॥२१७॥

बचन सुनत गुरगुरु मुमुकाने । सहसनयन त्रिनु लोचन जाने ॥  
 मायापति सेवक सन माया । करइ त उलटि परइ सुराया ॥  
 तब किछु कीन्ह राम रुख जानी । अब कुचालि करि हाँइहि हानी ॥  
 गुनु सुरेस रघुनाथ सुभाऊ । निज अपराध रिसाहिं न काऊ ॥

जो अपराधु भगत कर करई। राम रोष पावक सो जरई ॥  
 लोकहुँ वेद विदित इतिहासा। यह महिमा जानहिँ दुरवासा ॥  
 भरत सरिस को राम सनेही। जगु जप राम रामु जप बेडी ॥

दो०—मनहुँ न आनिअ अमरपति रघुवर भगत अकाञ्च ।

अजसु लोक परलोक दुख दिन दिन सोदः समाजु ॥२१८॥

सुनु सुरेस उपदेशु हमारा। रामहि सेवहु परम पिआरा ॥  
 मानत सुखु सेवक सेवकाई। सेवक बैर बैरु अधिकाई ॥  
 जद्यपि सम नहिँ राग न रोषु। गहहिँ न पाप पूनु गुन दोषु ॥  
 करम प्रधान विस्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फलु चाला ॥  
 तदपि करहिँ सम विपम विहारा। भगत अभगत हृदय अनुसारा ॥  
 अगुन अलेप अमान एकरस। रामु सगुन भए भगत पेम वसा ॥  
 राम सदा सेवक रुचि राखी। वेद पुरान साधु सुर साखी ॥  
 अस जियँ जानि तजहु कुटिलाई। करहु भरत पद प्रीति सुहाई ॥

दो०—राम भगत परहित निस्त पर दुख दुखी दयाल ।

भगत सिरोमनि भरत तें जनि डरपहु सुरपाल ॥२१९॥

सत्यसंध प्रभु सुर हितकारी। भरत राम आयस अनुसारी ॥  
 स्वारथ विवस विकल तुम्ह होहू। भरत दोसु नहिँ राउर मोहू ॥  
 सुनि सुरवर सुरधुर वर वानी। भा प्रमोदु मन मिटी गलानी ॥  
 वरपि प्रसन्न हरपि सुरराऊ। लगे सराहन भरत सुभाऊ ॥  
 एहि विधि भरत चले मग जाहीं। दसा देखि मुनि सिद्ध सिदाहीं ॥  
 जबहिँ रामु कहि लेहिँ उसासा। उमगत पेमु मनहुँ चहु पासा।  
 द्रवहिँ वचन सुनि कुलिस पपाना। पुरजन पेमु न जाइ

बीच वास करि जसुनहिं आए । निरखि नीरु लोचन जल छाए ॥

दो०—रघुवर वरन बिलोकि वर वारि समेत समाज ।

होत सगन वारिधि विरह चढ़े विवेक जहाज ॥२२०॥

जसुन तीर तेहि दिन करि वासू । भयउ समय सम सबहि सुपासू ॥

रातिहिं घाट घाट की तरनी । आई अगनित जाहिं न वरनी ॥

प्रात पार भए एकहि खेवाँ । तोषे रामसखा की सेवाँ ॥

चले नहाइ नदिहि सिर नाई । साथ निपादनाथ दोउ भाई ॥

आगे मुनिवर वाहन आछें । राजसमाज जाइ सब ॥

तेहि पाछें दोउ बंधु पयादें । भूपन बसन बेष सुठि सादें ॥

सेवक सुहृद सचिव सुत साथी । सुमिरत लखनु सीय रघुनाथी ॥

जहँ जहँ राम वास विश्रामा । तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रनामा ॥

दो०—मगबासी नर नारि सुनि धाम काम तजि धाइ ।

देखि सरूप सनेह सब मुदित जनम फलु पाइ ॥२२१॥

कहहिं सपेम एक एक पाहीं । रामु लखनु सखि होहिं कि नाई ॥

बय बपु वरन रूपु सोइ आली । सीलु सनेहु सरिस सम चाली ॥

बेषु न सो सखि सीय न संगी । आगे अनी चली चतुरंगी ॥

नहिं प्रयत्न मुख मानय खेदा । सखि संदेहु होइ एहिं भेदा ॥

तानु तरक तियगन मन सानी । कहहिं सकल तेहि सस न सयानी ॥

तेहि सराहि बानी फुरि पूजी । बोली मधुर वचन तिय दूजी ॥

कहि सपेम सब कथा प्रसंगू । जेहि विधि राम राज रस भंगू ॥

भरतहि बहुरि सराइन लागी । सील सनेह सुभागी ॥

दो०—चलत पर्यादें खात फल पिता दीन्ह तजि राजु ।

जात मनावन रघुवरहि भरत सरिस को आजु ॥२२२॥

भायप भगति भरत आचरनू । कहत सुनत दुख दूपन हरनू ॥  
जो किल्लु कहव थोर सखि सोई । राम बंधु अस काहे न होई ॥  
हम सब सानुज भरतहि देखें । भइन्ह धन्य जुवती जन लेखें ॥  
सुनिगुन देखि दसा पछिताहों । कैकइ जननि जोगु सुतु नाहीं ॥  
कोउ कह दूपनु रानिहि नाहिन । विधि सबु कीन्ह हमहि जो दाहिन  
कहँ हम लोक वेद विधि हीनी । लघुतिय कुल करतूति मलीनी ॥  
बसहिं कुदेस कुगाँव कुवामा । कहँ यह दरसु पुन्य परिनामा ॥  
अस अनंदु अचिरिजु प्रति ग्रामा । जनु मरुभूमि कलपतरु जामा ॥

दो०—भरत दरसु देखत खुलेउ मग लोगन्ह कर भागु ।

जनु सिंचलवासिन्ह भयउ विधि बस सुलभ प्रयागु ॥२२३॥

निजगुनसहित राम गुन गाथा । सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा ॥  
तीरथ मुनि आश्रम सुरधामा । निरखि निमज्जहिं करहिं प्रनामा ॥  
मनहीं मन मागहिं वरु एहू । सीय राम पद पदुम सनेहू ॥  
मिलहिं किरात कौल बनवासी । वैखानस बहु जती उदासी ॥  
करि प्रनाम पुँछहिं जेहि तेही । केहि वन लखनु रामु बैदेही ॥  
ते प्रभु समाचार सब कहहीं । भरतहि देखि जनम फलु लहहीं ॥  
जे जन कहहिं कुसल हम देखे । ते प्रिय राम लखन सम लेखे ॥  
एहि विधि धृष्टत सबहि सुवानी । सुनत राम बनवास कहानी ॥

दो०—तेहि वासर बसि प्रातहीं चले सुमिरि रघुनाथ ।

राम दरस की लालसा भरत सरिस सब साथ ॥२२४॥

भंगल सगुन होहिं सब काहू । फरकहिं सुखद विलोचन बाहू ॥  
 भरतहि सहित समाज उछाहू । मिलिहहिं रामु मिटिहि दुख दाहू ॥  
 करत मनोरथ जस जियँ जाके । जाहिं सनेह सुराँ सब छाके ॥  
 सिथिल अंग पग मग डगि डोलहिं । विहवल वचन पेम वस बोलहिं  
 रायसखाँ तेहि समय देखावा । सैल सिरोमनि सहज सुहावा ॥  
 वासु समीप क्षरित पय तीरा । सीय समेत वसहिं दोउ वीरा ॥  
 देखि करहिं सब दंड प्रनामा । कहि जय जानकि जीवन रामा ॥  
 प्रेम मगन अल राजसमाजू । जनु फिरि अवध चले रघुराजू ॥

दो०—भरत प्रेसु तेहि समय जस तस कहि सकइ न सेपु ।

कविहि अगम जिमि ब्रह्मसुखु अह मम मलिन जनेपु ॥२२५॥

सनेह सिथिल रघुवर कें । गए कोस दुइ दिनकर ढर कें ॥  
 बलुथलु देखि बसे निसि वीतें । कीन्ह गवन रघुनाथु पिरितें ॥  
 उहाँ रामु रजनी अवसेपा । जागे सीयँ सपन अस देखा ॥  
 सहित समाज भरत जनु आए । नाथ वियोग ताप तन ताए ॥  
 सकल मलिन मन दीन दुखारी । देखीं सामु आन अनुहारी ॥  
 नि सिय सपन भरे जल लोचन । भए सोच वस सोच विमोचन ॥  
 लखन सपन यह नीक न होई । कठिन कुचाह सुनाइहि कोई ॥  
 अस कहि बंधु समेत नहाने । पूजि पुगारि साधु सनमाने ॥

दं०—सनमानि सुर मुनि वंदि बैठे उत्तर दिशि देखत भए ।

नभ धूरि खग मृग भूरि भागे विकल प्रभु आश्रम गए ॥  
 तलसी उठे अवलोकि कारनु काह चित सचकित रहे ।  
 सब समाचार किरात कोलन्हि आइ तेहि अवसर कहे ॥

दो०—सुनत सुमंगल वैन मन प्रमोद तन पुलक भर ।

सरद सरोरुह नैन तुलसी भरे सनेह जल ॥२२६॥

बहुरि सोचवस भे सियरवनू । कारन कवन भरत आगवनू ॥  
एक आइ अस कहा बहोरी । सेन संग चतुरंग न थोरी ॥  
सो सुनि रामहि भा अति सोचू । इत पितु वच इत वंधु सकोचू ॥  
भरत सुभाउ समुझि मन माहीं । प्रभु चित हित थिति पावत नाहीं ॥  
समाधान तब भा यह जाने । भरतु कहे महुँ साधु सयाने ॥  
लखन लखेउ प्रभु हृदयँ खभारू । कहत समय सम नीति विचारू ॥  
बिनु पूछेँ कछु कहउँ गोसाईं । सेवकु समयँ न ढीठ ढिठाईं ॥  
तुम्ह सर्वग्य सिरोमनि स्वामी । आपनि समुझि कहउँ अनुगामी ॥

दो०—नाथ सुहृद सुठि सरल चित सील सनेह निधान ।

सब पर प्रीति प्रतीति जियँ जानिअ आपु समान ॥२२७॥

बिपई जीव पाइ प्रभुताई । मूढ़ मोह बस होहि जनार्इ ॥  
भरतु नीति रत साधु सुजाना । प्रभु पद प्रेमु सकल जगु जाना ॥  
तेऊ आजु राम पदु पाई । चले धरम मरजाद मेटाई ॥  
कुटिल कुबंधु कुअवसरु ताकी । जानि राम बनवास एकाकी ॥  
करि कुमंत्रु मन साजि समाजू । आए करै अकंटक राजू ॥  
कोटि प्रकार कलपि कुटिलाई । आए दल बटोरि दोउ भाई ॥  
गौं जियँ होति न कपट कुचाली । केहि सोहाति रथ वाजि गजाली ॥  
भरतहि दोसु देइ को जाएँ । जग वौराई राज पदु पाएँ ॥

दो०—ससि गुर तिय गामी नष्टुपु चढ़ेउ भूमिसुर जान ।

लोक वेद तें त्रिमुख भा अधम न वैन समान ॥२२८॥



सहसबाहु मुरनाथु त्रिसंकू । केहि न राजमद दीन्ह कलंकू ॥  
 भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ । रिपु रिन रंच न राखव काऊ ॥  
 एक कीन्हि नहिं भरत भलाई । निदरे रामु जानि असहाई ॥  
 समुल्लि परिहि सोउ आजु विसेपी । समर सरोप राम मुगु पेखी ॥  
 एतना कहत नीति रस भूला । रन रस विटपु पुलकमिस फूला ॥  
 प्रभु पद वंदि सीस रज राखी । बोले सत्य सहज बलु भापी ॥  
 अनुचित नाथ न मानव मोरा । भरत हमहि उपचार न थोरा ॥  
 कहँ लगि सहिअ रहिअ मनु मारें । नाथ साथ धनु हाथ हमारें ॥

दो०—छत्रि जाति रघुकुल जनमु राम अनुग जगु जान ।

लातहुँ मारें चढ़ति सिर नीच को धूरि समान ॥२२९॥

उठि कर जोरि रजायमु मागा । मनहुँ वीर रस सोवत जागा ॥  
 बाँधि जटा सिर कसि कटि भाथा । साजि सरासनु सायकु हाथा ॥  
 आजु राम सेवक जसु लेऊँ । भरतहि समर मिखावन देऊँ ॥  
 राम निरादर कर फलु पाई । सोवहुँ समर सेज दोउ भाई ॥  
 आइ बना भल सकल समाजू । प्रगट करउँ रिस पाछिल आजू ॥  
 जिमि करि निकर दलइ मृगराजू । लेइ लपेटि लवा जिमि वाजू ॥  
 तैसेहिं भरतहि सेन समेता । सानुज निदरि निपातउँ खेता ॥  
 जाँ सहाय कर संकरु आई । ताँ मारउँ रन राम दोहाई ॥

०—अति सरोप माखे लखनु लखि मुनि सपथ प्रवान ।

सभय लोक सब लोकपति चाहत भभरि भगान ॥२३०॥

जगु भय भगन गगन भइ बानी । लखन बाहुबलु त्रिपुल बखानी ॥  
 तान प्रताप प्रभाउ तुम्हारा । को कहि सकइ को जाननिहारा ॥

अनुचित उचित काजु निच्छु होऊ । समुझि करिअ भल कह सनु कोऊ ॥  
 सहसा करि पाउँ पछिताही । कहहिं वेद बुध ते बुध नाहीं ॥  
 सुनिसुरबचन लखन सकुचाने । राम सीयें सादर सनमाने ॥  
 कही तात तुम्ह नीति सुहाई । सत्र तें कठिन राजमदु भाई ॥  
 जो अचरत नृप मातहिं तेई । नाहिन साधुसभा जेहिं सेई ॥  
 सुनहु लखन भल भरत सरीसा । विधि प्रपंच महँ सुना न दीसा ॥  
 दो०—भरतहि होइ न राजमदु विधि हरि हर पद पाइ ।

कनहुँ कि कौजी सीकरनि छीरसिंधु विनसाइ ॥२३१॥

तिमिरु तरुन तरनिहि मकु गिलई । गगनु मगन मकु मेघहिं मिलई ॥  
 गोपद जल बूढहिं घटजोनी । सहज छमा वरु छाडै छोनी ॥  
 मसक फूँक मकु मेरु उडाई । होइ न नृपमदु भरतहि भाई ॥  
 लखन तुम्हार सपथ पितृ आना । सुचि सुबंधु नहिं भरत समाना ॥  
 सगुनु खीरु अवगुन जलु ताता । मिलइ रचइ परपंचु विधाता ॥  
 भरतु हंस रनिवंस तडागा । जनमि कीन्ह गुनदोष विभागा ॥  
 गहि गुन पय तजि अवगुन वारी । निज जस जगत कीन्हि उजिआरी  
 कहत भरत गुन सीलु सुभाऊ । पैम पयोधि मगन रघुराऊ ॥

दो०—सुनि रघुवर बानी विबुध देखि भरत पर हेतु ।

सकल सराहत राम सो प्रभु को कृपानिकेतु ॥२३२॥

जौं न होत जग जनम भरत को । सकल धरम धुर धरनि धरत को ॥  
 कनि कुल अगम भरत गुन गाथा । को जानइ तुम्ह भिनु रघुनाथा ॥  
 लखन राम सियें सुनि सुर बानी । अति सुखु लहेउ न जाइ बखानी ॥  
 इहाँ भरतु सब सहित सहाए । मंदाकिनी पुनीत नहाए ॥

सरित समीप राखि सब लोगा । मागि मातु गुर सचिव नियो ॥  
चले भरतु जहँ सिय रघुराई । साथ निषादनाथु लघु भाई ॥  
समुझि मातु करतब सकुचाहीं । करत कुतरक कोटि मन माहीं ॥  
रामु लखनु सिय सुनि मम नाऊँ । उठि जनि अनत जाहिं तजि

दो०—मातु मते महुँ मानि मोहि जो कछु करहिं सो थोर ।

अथ अवगुन छमि आदरहिं समुझि आपनी ओर ॥२३३॥

जौं परिहरहिं मलिन मनु जानी । जौं सनमानहिं सेवकु मानी ॥  
मोरें सरन रामहि की पनही । राम सुखामि दोसु सब जनही ॥  
जग जस भाजन चातक मीना । नेम पेम निज निपुन नवीना ॥  
अस मन गुनत चले मग जाता । सकुच सनेहँ सिथिल सब गाता ॥  
फेरति मनहुँ मातु कृत खोरी । चलत भगति बल धीरज धोरी ॥  
जब समुझत रघुनाथ सुभाऊ । तब पथ परत उताइल पाऊ ॥  
भरत दसा तेहि अवसर कैसी । जल प्रवाहँ जल अलि गति जैसी ॥  
देखि भरत कर सोचु सनेहू । आ निषाद तेहि समयँ विदेहू ॥

दो०—लगे होन मंगल सगुन सुनि गुनि कहत निषादु ।

मिटिहि सोचु होइहि हरषु पुनि परिनाम विषादु ॥२३४॥

सेवक वचन सत्य सब जाने । आश्रम निकट जाइ निअराने ॥  
भरत दीख वन सैल समाजू । सुदित छुधित जनु पाइ सुनाजू ॥  
ईति भीति जनु प्रजा दुखारी । त्रिविध ताप पीड़ित ग्रह मारी ॥  
जाइ सुराज सुदेस सुखारी । होहिं भरत गति तेहि अनुहारी ॥  
राम वास वन संपति आजा । सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा ॥  
सचिव विरागु त्रिवेकु नरेन्द्र । विपिन सुहावन पावन देन्द्र ॥

भट जम नियम सैल रजधानी । सांति सुमति सुचि सुंदर रानी ॥  
सकल अंग संपन्न सुराऊ । राम चरन आश्रित चित चाऊ ॥

दो०—जीति मोह महिपालु दल सहित विवेक भुआलु ।

करत अकंटक राजु पुरँ सुख संपदा सुकालु ॥२३५॥

बन प्रदेश भुनि वास घनेरे । जनु पुर नगर गाउँ गन खेरे ॥  
शिशुल विचित्र विहग मृग नाना । प्रजा समाजु न जाइ बखाना ॥  
सगहा करि हरि बाध वराहा । देखि महिप वृष साजु सराहा ॥  
प्यरु विहाइ चरहिँ एक संगी । जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा ॥  
हरना शरहिँ मत्त गज गाजहिँ । मनहुँ निसान विविधि विधि वाजहिँ  
चक चकोर चातक सुक पिक गन । कूजत मंजु मराल मुदित मन ॥  
अलिगन गावत नाचत मोरा । जनु सुराज मंगल चहु ओरा ॥  
बैलि विटप वृन सफल सफूला । सब समाजु मुद मंगल मूला ॥  
दो०—राम सैल सोभा निरखि भरत हृदयँ अति पेमु ।

वापस तप फलु पाइ जिमि सुखी सिरानें नेमु ॥२३६॥

मासपारायण, बीसवाँ विश्राम

नवाह्नपारायण, पाँचवाँ विश्राम

सय क्षेपट ऊँचें चढ़ि धाई । कहेउ भरत सन भुजा उठाई ॥  
नाथ देखिअहिँ विटप बिसाला । पाकरि जंजु रसाल तमाला ॥  
बिन्ह तरुवरन्ह मध्य बटु सोहा । मंजु बिसाल देखि मनु मोहा ॥  
नील सघन पल्लव फल लाला । अतिरल छाहँ सुखद सब काला ॥  
मानहुँ तिमिर अरुनमय रासी । बिरची विधि सँकेलि सुपमासी ॥

ए तरु सरित समीप गोसाँई। रघुवर परनकुटी जहँ छाई ॥  
तुलसी तरुवर विविध सुहाए। कहँ कहँ सियँ कहँ लखन लगाए ॥  
बट छायाँ वेदिका बनाई। सियँ निज पानि सरोज सुहाई ॥

दो०—जहाँ बैठि मुनिगन सहित नित सिय रामु सुजान ।

सुनिहिँ कथा इतिह सब आगम निगम रान ॥२३७॥

बचन नि विटप निहारी। उमगे भरत विलोचन बारी ॥  
करत चले दोउ भाई। कहत प्रीति सारद सकुचाई ॥  
हरपहिँ निरखि राम पद अंका। मानहुँ पारसु पायउ रं ॥  
रज सिर धरि हियँ नयनन्हि लावहिँ। रघुवर मिलन सरिस सुख पावहिँ  
देखि भरत गति अकथ अतीवा। प्रेम मगन मृग खग जड़ जीवा ॥  
सखहि सनेह विवस मग भूला। कहि सुपंथ सुर वरपहिँ फूला ॥  
निरखि सिद्ध साधक अनुरागे। सहज सनेहु सराहन लागे ॥  
होत न भूतल भाउ भरत को। अचर सचर चर अचर करत को ॥

दो०—पेम अमिअ मंदरु विरहु भरतु पयोधि गँभीर ।

मथि प्रगटेउ सुर साधु हित कृपासिंधु रघुवीर ॥२३८॥

सखा समेत मनोहर जोटा। लखेउ न लखन सघन बनओटा ॥  
भरत दीख प्रभु आश्रमु पावन। सकल सुमंगल सदनु सुहावन ॥  
करत प्रवेश मिटे दुख दावा। जनु जोगी परमारथु पावा ॥  
देखे भरत लखन प्रभु आगे। पूँछे बचन कहत अनुरागे ॥  
सीस जटा कटि मुनि पट बाँधे। तून कसें कर सरु धनु काँधे ॥  
बेदी पर मुनि साधु समाजू। सीय सहित राजत रघुराजू ॥  
चलकल वसन जटिल तनु स्यामा। जनु मुनि वेप कीन्ह रति ॥

कर कमलनि धनु सायकु फेरत । जिय की जरनि हरत हँसि हेरत ॥

दो०—लसत मंजु मुनि मंडली मध्य सीय रघुचंद्र ।

ग्यान सभाँ जनु तनु धरें भगति सच्चिदानंद ॥२३९॥

सानुज सखा समेत भगन मन । विसरे हरप सोक सुख दुख गन ॥

पाहि नाथ कहि पाहि गोसाईं । भूतल परे लकुट की नाईं ॥

बचन सपेम लखन पहिचाने । करत प्रनाम भरत जियँ जाने ॥

बंधु सनेह सरस एहि ओरा । उत साहिव सेवा बस जोरा ॥

मिलि न जाइ नहिँ गुदरत वनई । सुकवि लखन मन की गति भनई ॥

रहे राखि सेवा पर भारू । चढ़ी चंग जनु खँच खेलारू ॥

कहत सप्रेम नाइ महि माथा । भरत प्रनाम करत रघुनाथा ॥

उठे रामु सुनि पेम अधीरा । कहँ पट कहँ निपंग धनु तीरा ॥

दो०—बरवस लिए उठाइ उर लाए कृपानिधान ।

भरत राम की मिलनि लखि विसरे सबहि अपान ॥२४०॥

मिलनि प्रीति किमि जाइ बखानी । कविकुल अगम करम मन बानी ॥

परम पेम पूरन दोउ भाई । मन बुधि चित अहमिति विसराई ॥

कहहु सुपेम प्रगट को करई । केहि छाया कवि मति अनुसरई ॥

कविहि अरथ आखर बलु साँचा । अनुहरि ताल गतिहि नहु नाचा ॥

अगम सनेह भरत रघुवर को । जहँ न जाइ मनु विधि हरिहर को ॥

सो मैं कुमति कहौं केहि भाँती । वाज सुराग कि गाँडर ताँती ॥

मिलनि विलोकि भरत रघुवर की । सुरगन सभय धकधकी धरकी ॥

सुरगुरु जड़ जागे । वरपि प्रखन प्रसंसन लां —

दो०—मिलि सपेम रिपुसदनहि केवटु भेंटेउ राम ।

भूरि भायँ भेंटे भरत लछिमन करत प्रनाम ॥२४१॥

भेंटेउ लखन ललकि लघु भाई । बहुरि निपादु लीन्ह उर लाई ॥

पुनि मुनिगन दुहुँ भाइन्ह वंदे । अभिमत आसिप पाइ अनंदे ॥

सानुज भरत उमगि अनुरागा । धरि सिर सिय पद पदुम परागा ॥

पुनि पुनि करत प्रनाम उठाए । सिर कर कमल परसि बैठाए ॥

सीयँ असीस दीन्हि मन माहीं । मगन सनेहँ देह सुधि नाही ॥

सब विधि सानुकूल लखि सीता । भे निसोच उर अपडर वीता ॥

कोउ किछु कहइ न कोउ किछु पूँ । प्रेम भरा मन निज गति छँडा ॥

तेहि अवसर केवटु धीरजु धरि । जोरि पानि बिनवत प्रनामु करि ॥

दो०—नाथ साथ मुनिनाथ के मातु सकल पुर लोग ।

सेवक सेनप सचिव सब आए बिकल वियोग ॥२४२॥

सीलसिंधु मुनि गुर आगवन् । सिय समीप राखे रिपुदवन् ॥

चले सवेग रामु तेहि काला । धीर धरम धुर दीनदयाला ॥

गुरहि देखि सानुज अनुरागे । दंड प्रनाम करन प्रभु लागे ॥

मुनिवर धाइ लिए उर लाई । प्रेम उमगि भेंटे दोउ भाई ॥

प्रेम पुलकि केवट कहि नामू । कीन्ह दूरि तें दंड प्रनामू ॥

रामसखा रिपि वरवस भेंटा । जनु महि लुठत सनेह समेटा ॥

रघुपति भगति सुमंगल मूला । नभ तराहि सुर वरिसहिं फूला ॥

एहि समय निपट नीच कोउ नाही । बड़ वसिष्ठ सम को जग माहीं ॥

दो०—जेहि लखि लखनहु तें अधिक मिले मुदित मुनिराउ ।

सौ सीतापति भजन को प्रगट प्रताप प्रभाउ ॥२४३॥





बंदि बंदि पग सिय सबही के। आसिरबचन लहे ङि जीके॥  
 सासु सकल जय सीयँ निहारीं। मूदै नयन सहमि सुकुमारीं॥  
 परीं बधिक बस मनहुँ मरालीं। काह कीन्ह करतार कुचालीं॥  
 तिन्ह सिय निरखि निपट दुखु पावा। सो सबु सहिअ जो दैउ सहावा  
 जनकसुता तब उर धरि धीरा। नील नलिन लोयन भरि नीरा॥  
 मिली सकल सासुन्ह सिय जाई। तेहि अवसर करुना महि छाई॥

दो०—लागि लागि पग सबनि सिय भेंटति अति अनुराग ।

हृदयँ असीसहिँ पैम बस रहिअहु भरी सोहाग॥२४६॥

बिकल सनेहँ सीय सब रानीं। बैठन सबहि कहेउ गुर ग्यानी॥  
 कहि जग गति मायिक मुनिनाथा। कहे कलुक परमारथ गाथा॥  
 नृप कर सुरपुर गवनु सुनावा। सुनि रघुनाथ दुसह दुखु ॥  
 मरन हेतु निज नेहु विचारी। मे अति बिकल धीर धुर धारी॥  
 कुलिस कठोर सुनत कहु वानी। विलपत लखन सीय सब रानी॥  
 सोक बिकल अति सकल समाजू। मानहुँ राजु अकाजेउ आजू॥  
 मुनिवर बहुरि राम समुझाए। सहित समाज सुसरित नहाए॥  
 ब्रतु निरंजु तेहि दिन प्रभु कीन्हा। मुनिहु कहेँ जलु काहुँ न लीन्हा॥

दो०—भोरु भएँ रघुनंदनहि जो मुनि आयसु दीन्ह ।

श्रद्धा भगति समेत प्रभु सो सबु सादरु कीन्ह॥२४७॥

करि पितु क्रिया वेद जसि बरनी। मे पुनीत पातक तम तरनी॥  
 जासु नाम पावक अघ तूला। सुमिरत सकल सुमंगल मूला॥  
 सुद्ध सो भयउ साधु संमत अस। तीरथ आवाहन सुरसरि जस॥  
 सुद्ध भएँ दुइ वासर बीते। बोले गुर सन पिरीते॥

नाथ लोग सब निपट दुखारी। कंद मूल फल अंबु अहारी ॥  
सानुज भरतु सचिव सब माता। देखि मोहि पल जिमि जुग जाता ॥  
सब समेत पुर धारिअ पाऊ। आपु इहाँ अमरावति राऊ ॥  
बहुत कहेउँ सब कियउँ ढिठाई। उचित होइ तस करिअ गोसाँई ॥

दो०—धर्म सेतु करुनायतन कस न कहहु अस राम ।

लोग दुखित दिन दुइ दरस देखि लइहुँ बिथाम ॥२४८॥

राम बचन सुनि सभय समाजू। जनु जलनिधि महुँ विकल जहाजू ॥  
सुनि गुर गिरा सुमंगल मूला। भयउ मनहुँ मारुत अनुकूला ॥  
पावन पयँ तिहुँ काल नहाहीं। जो विलोकि अघ ओष नसाहीं ॥  
मंगलभूरति लोचन भरि भरि। निरखहि हरपि दंडवत करि करि ॥  
राम सैल बन देखन जाहीं। जहँ सुख सकल सकल दुख नाही ॥  
झरना झरहि सुधासम चारी। त्रिविध तापहर त्रिविध चयारी ॥  
चिटप बेलि वृन अगनित जाती। फल प्रघन पछव बहु भौंती ॥  
सुंदर सिला सुखद तरु छाहीं। जाइ वरनि बन छवि कोहि पाहीं ॥

दो०—सरनि सरोरुह जल बिहग कूजत गुंजत भृंग ।

वैर विगत विहरत विपिन मृग बिहंग बहुरंग ॥२४९॥

कोल किरात भिछ बनवासी। मधुसुचि सुंदर स्वादु सुधा सी ॥  
भरि भरि परन पुटीं रचि रूरी। कंद मूल फल अंकुर जूरी ॥  
सबहि देहि करि विनय प्रनामा। कहि कहि स्वाद भेद गुन नामा ॥  
देहि लोग बहु मोल न लेहीं। फेरत राम दोहाई देहीं ॥  
कहहि सनेह मगन मृदु बानी। मानत साधु पेम पहिचानी ॥  
सुम्ह सुकृती हम नीच निपादा। पावा दरसन राम प्रसादा ॥

हमहि कवच अति दरसु तुम्हारा। जस मरु धरनि देवधुनि धारा ॥  
 राम कृपाल निषाद बैवाजा। परिजन प्रजउ चहिअ जस राजा ॥  
 दो०—यह जियँ जानि सँकोचु तजि करिअ छोहु लखि नेहु ।

हमहि छुतारथ करन लणि फल वन अंकुर लेहु ॥२५०॥

सुम्ह प्रिय पाहुने बन पशु धारे। सेवा जोगु न भाग हमारे ॥  
 देव झाह हम तुम्हहि गोसाँई। ईधनु पात किरात मिताई ॥  
 यह हमारि अति बडि सेवकाई। लेहिं न वासन वसन चोराई ॥  
 हम जड़ जीव जीव जन घाती। कुटिल कुचाली कुमति कुजाती ॥  
 पाप करत निसि वासर जाहीं। नहिं पटकटि नहिं पेट अघाहीं ॥  
 खपनेहुँ धरस बुद्धि कस काऊ। यह रघुनंदन दरस प्रभाऊ ॥  
 जब तें प्रभु पद पदुम निहारे। मिटे दुसह दुख दोष हमारे ॥  
 वचन सुनत पुरजन अनुरागे। तिन्ह के भाग सराहन लागे ॥

छं०—लागे सराहन भाग सब अनुराग वचन सुनावहीं।  
 बोलनि मिलनि सिय राम चरन सनेहु लखि सुखु पावहीं ॥  
 नर नारि निदरहिं नेहु निज सुनि कोल भिछनि की गिरा।  
 सुलसी कृपा रघुवंसमनि की लोह लै लौका तिरा ॥

सो०—बिहरहिं बन अहु और प्रति दिन प्रमुदित लोग सब।

जल ज्योँ दादुर मोर भए पीन पावस प्रथम ॥२५१॥

पुर जन नारि मगन अति प्रीती। वासर जाहिं पलक सम वीती ॥  
 शीय सासु प्रति देष बनाई। सादर करइ सरिस सेवकाई ॥  
 कखा न भरसु राम बिनु काहूँ। माया सब सिय माया माहूँ ॥  
 शीयँ सासु सेवा बस दीन्हीं। तिन्ह लहि सुख सिख आसिष दीन्हीं ॥

लखि सिय सहित सरल दोउ भाई । कुटिल रानि पछितानि अघाई ॥  
 अबनि जमहि जाचति कैकैई । महि न वीचु विधि मीचु न देई ॥  
 लोकहुँ वेद विदित कवि कहहीं । राम विमुख थलु नरक न लहहीं ॥  
 यहु संसउ सब के मन माहीं । राम गवनु विधि अवध किनाहीं ॥

दो०—निसि न नीद नहिं भूख दिन भरतु विकल सुचि सोच ।

नीच कीच बिच मगन जस मीनहि सलिल सँकोच ॥ २५२ ॥

कीन्हि मातु मिस काल कुचाली । ईति भीति जस पाकत साली ॥  
 केहि विधि हाइ राम अभिपेकू । मोहि अवकलत उपाउ न एकू ॥  
 अवसि फिरहिं गुर आयसु मानी । मुनि पुनि कहव राम रुचिजानी  
 मातु कहेहुँ बहुरहिं रघुराऊ । रामजननि हठ करवि कि काऊ ॥  
 मोहि अनुचर कर केतिक वाता । तेहि महँ कुसमउ वाम विधाता ॥  
 जौं हठ करउँ त निपट कुकरमू । हरगिरि तें गुरु सेवक धरमू ॥  
 एकउ जुगुति न मन ठहरानी । सोचत भरतहि रैन विहानी ॥  
 प्रात नहाइ प्रभुहि सिर नाई । बैठत पठए रिपयँ बोलाई ॥

दो०—गुर पद कमल प्रनामु करि बैठे आयसु पाइ ।

विग्र महाजन सचिव सब जुरे सभासद आइ ॥ २५३ ॥

बोले मुनिवरु समय समाना । सुनहु सभासद भरत सुजाना ॥  
 धरम धुरीन भानुकुल भानू । राजा रामु खवस भगवानू ॥  
 सत्यसंध पालक श्रुति सेतू । राम जनमु जग मंगल हेतू ॥  
 गुरु पितु मातु वचन अनुसारी । खल दलु दलन देव हितकारी ॥  
 नीति प्रीति परमारथ स्वारथु । कोउ न राम सम जान जथारथु ॥  
 विधि हरि हरु ससि रवि दिसिपाला । माया जीव करम कुलि काल ॥

अहिप महिप जहँ लगी प्रभुताई । जोग सिद्धि निगमायम गाई ॥  
करि विचार जियँ देखहु नीकें । राम रजाइ सोस सबही ॥

दो०—राखें राम रजाइ रुख हम कर हित होइ ।

समुझि सयाने करहु अब मिलि संमत सोइ ॥ २५४ ॥

सब कहँ सुखद राम अभिषेकू । मंगल मोद मूल एकू ॥  
केहि विधि अवध चलहिं रघुराऊ । कहहु समुझि सोइ करिअ ॥  
सब सादर सुनि मुनिवर वानी । नय परमारथ स्वारथ सानी ॥  
उतरु न आव लोग भए भोरे । तव सिरु नाइ भरत कर जोरे ॥  
भानुवंस भए भूष घनेरे । अधिक एक तें एक बड़ेरे ॥  
जनम हेतु सब कहँ पितु माता । करम सुभासुभ देइ विधाता ॥  
दलि दुख सजइ सकल कल्याना । अस असीस राउरि जगु ॥  
सो गोसाइँ विधि गति जेहिं छेंकी । सकइ टारि टेक टेकी ॥

दो०—बूझिअ मोहि उपाउ अब मोर अभागु ।

सुनि सनेहमय वचन गुर उर अनुरागु ॥ २५५ ॥

तात वात फुरि राम कृपाहीं । राम विमुख सिधि सपनेहुँ नाहीं ॥  
सकुचउँ तात कहत एक वाता । अरध तजहिं बुध सरवस ॥  
तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई । फेरिअहिं लखन सीय रघुराई ॥  
सुनि सुवचन हरषे दोउ आता । मे प्रमोद परिपूरन ॥  
मन प्रसन्न तन तेजु विराजा । जनु जिय राउ रामु भए राजा ॥  
बहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी । सम दुख सुख रोवहिं रानी ॥  
कहहिं भरतु मुनि कहा सो कीन्हे । फलु जग जीवन्ह अभिमत दीन्हे ॥  
कानन करउँ जनम भरि वासु । एहि तें अधिक न मोर सुपासु ॥

दो०—अंतरजामी रामु सिय तुम्ह सरबग्य सुजान ।

जौं फुर कहहु त नाथ निज कीजिअ बचनु प्रवान ॥ २५६ ॥

भरत बचन सुनि देखि सनेहू । सभा सहित मुनि भए विदेहू ॥

भरत महा महिमा जलरासी । मुनिमति ठाढ़ि तीर अत्रलासी ॥

गा चह पार जतनु हिये हेरा । पावति नात्र न बोहितु बेरा ॥

औरु करिहि को भरत बड़ाई । सरसी सीपि कि सिंधु समाई ॥

भरतु मुनिहि मन भीतर भाए । सहित समाज राम पहिं आए ॥

प्रभु प्रनामु करि दीन्ह सुआसनु । बैठे सब मुनि मुनि अनुसासनु ॥

बोले मुनिबरु बचन विचारी । देस काल अवसर अनुहारी ॥

सुनहु राम सरबग्य सुजाना । धरम नीति गुन ग्यान निधाना ॥

दो०—सब के उर अंतर बसहु जानहु भाउ कुभाउ ।

पुरजन जननी भरत हित होइ सो कहिअ उपाउ ॥ २५७ ॥

आरत कहहिं विचार न काऊ । सझ जुआरिहि आपन दाऊ ॥

सुनि मुनि बचन कहत रघुराऊ । नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ ॥

सब कर हित रुख राउरि राखें । आयसु किएँ मुदित फुर भापें ॥

प्रथम जो आयसु मो कहँ होई । माथें मानि करौ सिख सोई ॥

पुनि जेहि कहँ जस कहय गोसाईं । सो सब भौंति घटिहि सेवकाईं ॥

कइ मुनि राम सत्य तुम्ह भापा । भरत सनेहँ विचारु न राखा ॥

तेहि तें कहउँ बहोरि बहोरी । भरत भगति बस भइ मति मोरी ॥

मोरें जान भरत रुचि राखी । जो कीजिअ सो सुभ सिय साखी ॥

दो०—भरत बिनय सादर सुनिअ करिअ विचारु बहोरि ।

करव साधुमत लोकमत नृपनय निगम निचोरि ॥ २५८ ॥

गुर अनुरागु भरत पर देखी। राम हृदयँ आनंदु विसेपी ॥  
 भरतहि धरम धुरंधर जानी। निज सेवक तन मानस वानी ॥  
 बोले गुर आयस अनुकूला। वचन मंजु मृदु मंगलमूला ॥  
 नाथ सपथ पितु चरन दोहाई। भयउ न भुअन भरत सम भाई ॥  
 जे गुर पद अंबुज अनुरागी। ते लोकहुँ वेदहुँ वड़भागी ॥  
 राउर जा पर अस अनुरागू। को कहि सकइ भरत कर भागू ॥  
 लखि लघु बंधु बुद्धि सकुचाई। करत वदन पर भरत वड़ाई ॥  
 भरतु कहहिँ सोइ किएँ भलाई। अस कहि राम रहे अरगाई ॥  
 दो०—तव मुनि बोले भरत सन सब सँकोचु तजि तात ।

कृपासिंधु प्रिय बंधु सन कहहु हृदय कै वात ॥ २५९ ॥

मुनि मुनि वचन राम रुख पाई। गुरु साहिव अनुकूल अवाई ॥  
 लखि अपनेँ सिर सबु छरु भारू। कहि न सकहिँ कछु करहिँ विचारू ॥  
 पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े। नीरज नयन नेह जल वाढ़े ॥  
 कहव मोर मुनिनाथ निवाहा। एहि तें अधिक कहाँ मैं काहा ॥  
 मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ। अपराधिहु पर कोह न काऊ ॥  
 मो पर कृपा सनेहु विसेपी। खेलत खुनिसन कवहुँ देखी ॥  
 सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू। कवहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू ॥  
 मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही। हारेहुँ खेल जितावहिँ मोही ॥  
 दो०—महँ सनेह सकोच वस सनमुख कही न वैन ।

दरसन वृषित न आजु लागि पेस पिआसे नैन ॥ २६० ॥

विधि न सकेउ सहि मोर दुलारा। नीच वीचु जननी मिस पारा ॥  
 यहउ कहत मोहि आजु न सोभा। अपनीं समुझि साधु सुचि को ॥

मातु मंदि मैं साधु सुचाली । उर अम आनत कोटि कुचाली ॥  
 फरड कि कोदव बालि मुसाली । युक्ता प्रसव कि संवुक काली ॥  
 सपनेहुँ दोसक लेसु न काह । मोर अभाग उदधि अवगाहू ॥  
 विनु समुझे निज अध परिपाकू । जारिउ जायँ जननि कहि काकू ॥  
 हृदयँ हेरि हारेउँ सब ओरा । एकहि भौंति भलेहिँ भल मोरा ॥  
 गुर गोसाईँ साहिब सिय रामू । लागत मोहि नीक परिनामू ॥

दो०—साधुसभौ गुर प्रभु निकट कहउँ सुथल सति भाउ ।

प्रेम प्रपंचु कि झूठ फुर जानहिँ मुनि रघुराउ ॥२६१॥

भूपति मरन पेम पनु राखी । जननी कुमति जगतु सबु साखी ॥  
 देखि न जाहिँ विकल महतारी । जरहिँ दुसह जर पुर नर नारी ॥  
 महीं सकल अनरथ कर मूला । सो मुनि समुझि सहिउँ सब सुला ॥  
 सुनि बन गवनु कोन्ह रघुनाथा । करि मुनि वेप लखन सिय साथा ॥  
 विनु पानहिन्ह पयादेहि पाएँ । संकरु साखि रहेउँ एहि घाएँ ॥  
 बहुरि निहारि निपाद सनेहू । कुलिस कठिन उर भयउ न वेहू ॥  
 अब सबु आखिन्ह देखेउँ आई । जित्त जीव जड सबइ सहाई ॥  
 जिन्हहि निरखि मग साँपिनि वीछो । तजहिँ विषम विषु तामस तीछी ॥

दो०—तेइ रघुनंदनु लखनु सिय अनहित लागे जाहि ।

तामु तनय तजि दुसह दुख दैउ सहाइ काहि ॥२६२॥

सुनि अति विकल भरत वर वानी । आरति प्रीति विनय नय सानी ॥  
 सोक मगन सब सभौ खभारू । मनहुँ कमल बन परेउ तुसारू ॥  
 कहि अनेक विधि कथा पुरानो । भरत प्रबोधु कोन्ह मुनि ग्यानी ॥  
 बोले उचित वचन रघुनंद । दिनकर कुल कैरव बन चंद ॥



जायँ जियँ करहु गलानी । ईस अधीन जीव गति जानी ॥  
 तीनि काल तिभुअन मत मोरें । पुन्यसिलोक तात तर तोरें ॥  
 उर आनत तुम्ह पर कुटिलाई । जाइ लोकु परलोकु नसाई ॥  
 दोसु देहिं जननिहि जड़ तेई । जिन्ह गुर साधु सभा नहिं सेई ॥

दो०—मिटिहहिं पाप प्रपंच सब अखिल अमंगल भार ।

लोक सुजसु परलोक सुखु सुमिरत नायु तुम्हार ॥२६३॥

कहउँ सुभाळ सत्य सिव साखी । भरत भूसि रह राउरि राखी ॥  
 सात कुतरक करहु जनि जाएँ । वैर पैम नहिं दुरइ दुराएँ ॥  
 धुनि गन निकट विहग मृग जाहीं । बाधक वधिक विलोकि पराहीं ॥  
 हित अनहित पसु पच्छिउ जाना । मानुष तनु गुन ग्यान निधाना ॥

तुम्हहि मैं जानउँ नीकें । करौं काह असमंजस जी कें ॥  
 राखेउ रायँ सत्य मोहि त्यागी । तनु परिहरेउ पैम पन लागी ॥  
 तासु वचन सेटत मन सोचू । तेहि तें अधिक तुम्हार सँकोचू ॥  
 ता पर गुर मोहि आयसु दीन्हा । अवसिजो कहहु चहउँ सोइ कीन्हा ॥

दो०—मनु प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करौं सोइ आजु ।

सत्यसंध रघुवर वचन सुनि भा सुखी समाजु ॥२६४॥  
 सुर गन सहित सभय सुरराजू । सोचहिं चाहत होन अकाजू ॥  
 वनत उपाड करत कह्यु नाहीं । राम सरन सब गे मन माहीं ॥  
 बहुरि विचारि परस्पर कहहीं । रघुपति भगन भगति वस अहहीं ॥  
 बुधि करि अंवरीष दुरन्नासा । गे सुर सुरपति निपट निगसा ॥  
 सहे सुरन्ह बहु काल विपादा । नरहरि किए प्रगट प्रह्लादा ॥  
 लगि लगि कान कहहि धुनि माथा । अब सुर काज भरत के हाथा ॥

आन उपाउ न देखिअ देवा। मानत राम सुसेवक सेवा ॥  
हियँ सपेम सुमिरहु सब भरतहि। निज गुन सोल राम बस कातहि

दो०—सुनि सुर मत सुरगुर कहेउ भल तुम्हार वढ़ भागु ।

सकल सुमंगल मूल जग भरत चरन अनुरागु ॥२६५॥

सीतापति सेवक सेवकाई। कामधेनु सप सरिस सुहाई ॥  
भरत भगति तुम्हरो मन आई। तजहु सोचु विधि वात बनाई ॥  
देखु देवपति भरत प्रभाऊ। सहज सुभायँ विवस रघुराऊ ॥  
मन थिर करहु देव डरु नाही। भरतहि जानि राम परिछाहीं ॥  
सुनि सुरगुर सुर संमत सोचू। अंतरजामी प्रभुहि सकोचू ॥  
निज सिरभारु भरत जियँ जाना। करत कोटि विधि उर अनुमाना ॥  
करि विचारु मन दोन्ही ठीका। राम रजायस आपन नीका ॥  
निज पन तजि राखेउ पनु मोरा। छोहु सनेहु कीन्ह नहिं थोरा ॥

दो०—कोन्ह अनुग्रह अमित अति सब विधि सोतानाथ ।

करि प्रनामु बोले भरतु जोरि जलज जुग हाथ ॥२६६॥

कहाँ कहाँ का अब स्वामो। कृपा अंबुनिधि अंतरजामी ॥  
गुर प्रसन्न साहिब अनुकूला। मिटो मलिन मन कलपित सबला ॥  
अपडर डरेउँ न सांच समूलें। रविहि न दोसु देव दिसि भूलें ॥  
मार अभागु मातु कुटिलाई। विधि गति विषम काल कठिनाई ॥  
पाउ रोपि सब मिलि मोहि घाला। प्रनतपाल पन आपन पाला ॥  
यह नह रोति न राउरि होई। लोकहुँ वेद विदित नहिं गोई ॥  
जगु अनभल भल एकु गोसाई। कहिअ होइ भल कासु भलाई ॥  
देउ देवतरु सरिस सुभाऊ। सनमुख विमुख न काहुहि काऊ ॥

दो०—जाइ निकट पहिचानि तरु छाहँ समनि सब सोच ।

मागत अभिमत पाव जग राउ रंकु भल पोच ॥२६५

लखि सब विधि गुर स्वामि सनेहू । मिटेउ छोभु नहिं मन संदेहू

करुनाकर कीजिअ सोई । जन हित प्रभु चित छोभु न होई

जो सेवकु साहिबहि सँकोची । निज हित चहइ तासु मति पोची

सेवक हित साहिब सेवकाई । करै सकल सुख लोभ बिहाई

थु नाथ फिरें सबही का । किएँ रजाइ ोति विधि नीका

स्वारथ परमारथ सारू । सकल सुकृत फल सुगति सिंगारू

देव एक चिनती सुनि मोरी । उचित होइ तस करव बहोरी

तिलक समाजु साजि सबु आना । करिअ सुफल प्रभु जौं मनु माना

दो०—सानुज पठइअ मोहि बन कीजिअ सबहि सनाथ ।

नतरु फेरिअहिं बंधु दोउ नाथ चलौं मैं साथ ॥२६८

नतरु जाहिं बन तीनिउ भाई । बहुरिअ सोय सहित रघुराई

जेहि विधि प्रभु प्रसन्न मन होई । करुना सागर की अ सोई

देवँ दीन्ह सबु मोहि अमारू । मोरें नीति न धरम विचारू

कहउँ वचन सब स्वारथ हेतू । रहत न आरत कें चित चेतू

उतरु देइ सुनि स्वामि रजाई । सो सेवकु लखि लाज लजाई

अस मैं अवगुन उदधि अगाधू । स्वामि सनेहँ सराहत साधू

अब कृपाल मोहि सो मत भावा । सकुच स्वामि मन जाई न पावा

प्रभु पद सपथ कहउँ सति भाऊ । जग मंगल हित एक उपाऊ

दो०—प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि जो जेहि आयसु देव ।

सो सिर भरि भरि करिहि सबु मिटिहि अनट अवरंब ॥२६९॥

भरत वचन सुचि सुनि सुर हरपे । साधु सराहि सुमन सुर वरपे ॥  
 असमंजस वस अवध नेवासी । प्रमुदित मन तापस बनवासी ॥  
 चुपहिं रहे रघुनाथ सँकोची । प्रभु गति देखि सभा सब सोची ॥  
 जनक दूत तेहि अवसर आए । मुनि वसिष्ठं सुनि वेगि बोलाए ॥  
 करि प्रनाम तिन्ह रामु निहारे । वेपु देखि भए निपट दुखारे ॥  
 दूतन्ह मुनिवर बूझी वाता । कहहु विदेह भूप कुसलाता ॥  
 सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा । बोले चर वर जोरें हाथा ॥  
 बूझब राउर सादर साई । कुसल हेतु सो भयउ गोसाई ॥

दो०—नाहिं त कोसलनाथ कें साथ कुसल गइ नाथ ।

मिथिला अवध बिसेप तें जगु सब भयउ अनाथ ॥२७०॥

कोसलपति गति सुनि जनकौरा । मे सब लोक सोक बस बौरा ॥  
 जेहिं देखे तेहि समय विदेह । नामु सत्य अस लाग न केहू ॥  
 रानि कुचालि मुनत नरपालहि । स्रज्ञ न कछु जस मनि विनु ब्यालहि ॥  
 भरत राज रघुवर बनवास । भा मिथिलेसहि हृदयँ हराँस ॥  
 नृप बूझे बुध सचिव समाजू । कहहु विचारि उचित का आजू ॥  
 समुझि अवध असमंजस दोऊ । चलिअ किरहिअ न कह कछु कोऊ ॥  
 नृपहिं धीर धरि हृदयँ विचारी । पठए अवध चतुर चर चारी ॥  
 बूझि भरत सति भाउ कुभाऊ । आएहु वेगि न होइ लखाऊ ॥

दो०—गए अवध चर भरत गति बूझि देखि करतूति ।

चले चित्रकूटहि भरतु चार चले तेरहति ॥२७१॥

दूतन्ह आइ भरत कइ करनी । जनक समाज जधामति बरनी ॥  
 मुनि गुर परिजन सचिव महीपति । मे सब सोच सनेहँ विकल अ० ॥

धरि धीरजु करि भरत बड़ाई। लिये सुभट साहनी बोलाई॥  
 वर पुर देस राखि रखवारे। हय गय रथ बहु जान सँवारे॥  
 दुधरी साथि चले ततकाला। किए विश्रामु नमग महिपाला॥  
 भोरहिं आजु नहाइ प्रयागा। चले जमुन उतरन सबु लागा॥  
 खवरि लेन हम पठए नाथा। तिन्ह कहि अस महिनायउ माथा॥  
 साथ किरात छ सातक दीन्हे। मुनिवर तुरत विदा चर कीन्हे॥

दो०—सुनत जनक आगवनु सबु हरषेउ अवध समाजु।

रघुनंदनहि सकोचु बड़ सोच विवस सुरराजु॥२७२॥

गरइ गलानि कुटिल कैकई। काहि कहै कैहि दूपनु देई॥  
 अस मन आनि मुदित नर नारी। भयउ बहोरि रहव दिन चारी॥  
 एहि प्रकार गत वासर सोऊ। प्रात नहान लाग सबु कोऊ॥  
 करि मज्जनु पूजहिं नर नारी। गनप गौरि तिपुरारि तमारी॥  
 रमा रमन पद वंदि बहोरी। चिनचहिं अंजुलि अंचल जोरी॥  
 राजा रामु जानकी रानी। आनँद अवधि अवध रजधानी॥  
 सुवसवसउ फिरि सहित समाजा। भरतहि रामु करहुँ जुवराजा॥  
 एहि सुख सुधाँ सींचि सब काहू। देव देहु जग जीवन लाहू॥

दो०—गुर समाज भाइन्ह सहित राम राजु पुर होउ।

अछत राम राजा अवध मरिअ माग सबु कोउ॥२७३॥

सुनि सनेहमय पुरजन वानी। निंदहिं जोग विरति मुनि ग्यानी॥  
 एहि निधि नित्य करम करि पुरजन। रामहि करहिं प्रनाम पुलकितन  
 ऊँच नीच मध्यम नर नारी। लहहिं दरसु निज निज अचुहारी।  
 सावधान सबही सनमानहिं। सकल सराहत कृपानिधानहिं॥

लरिकाइहि तैं रघुवर बानो। पालत नोति प्रीति पहिचानी ॥  
सील सकोच सिंधु रघुराऊ। सुमुख सुलोचन सरल सुभाऊ ॥  
कहत राम गुन गन अनुरागे। सब निज भाग सराहन लागे ॥  
हम सम पुन्य पुंज जग थोरे। जिन्हहि रामु जानत करि मोरे ॥

दो०—प्रेम मगन तेहि समय सब सुनि आवत मिथिलेसु।

सहित सभा संभ्रम उठेउ रविकुल कमल दिनेसु ॥२७४॥

भाइ सचिव गुर पुरजन साथी। आगें गवनु कीन्ह रघुनाथा ॥  
गिरिवरुदीख जनकपति जवहीं। करि प्रनामु रथ त्यागेउ तवहीं ॥  
राम दरस लालसा उछाहू। पथ भ्रम लेसु कलेसु न काहू ॥  
मन तहँ जहँ रघुवर वैदेही। विनु मन तन दुख सुख सुधिकेही ॥  
आवत जनकु चले एहि भाँती। सहित समाज प्रेम मति माती ॥  
आए निकट देखि अनुरागे। सादर मिलन परसपर लागे ॥  
लगे जनक मुनिजन पद वंदन। रिपिन्ह प्रनामु कीन्ह रघुनंदन ॥  
भाइन्ह सहित रामु मिलिराजहि। चले लयाइ समेत समाजहि ॥

दो०—आश्रम सागर सांत रस पूरन पावन पाथु।

सेन मनहुँ करुना सरित लिएँ जाहि रघुनाथु ॥२७५॥

बोरति ग्यान विराग करारे। वचन ससोक मिलत नद नारे ॥  
सोच उसास समीर तरंगा। धीरज तट तरुवर कर भंगा ॥  
विषम विपाद तोरावति धारा। भय भ्रम भवँर अवर्त अपारा ॥  
केवट बुध विद्या बड़ि नावा। सकहिँ न खेइ ऐक नहिँ आवा ॥  
चनचर कोल किरात विचारे। थके त्रिलोकि पथिक हियँ हारे ॥  
आश्रम उदधि मिली जव जाई। मनहुँ उठेउ अंबुधि ॥

कबिकल दोउ राज समाजा । रहा न ग्यानु न धीरजु लाजा ॥  
भूप रूप गुन सील सराही । रोवहिं सोक सिंधु अवगाही ॥

छं०—अवगाहि सोक समुद्र सोचहिं नारि नर व्याकुल महा ।  
दौ दोष सकल सरोष बोलहिं वाम विधि कीन्हो कहा ॥  
सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनि देखि दसा विदेह की ।  
तुलसी न समरथु कोउ जो तरि सकै सरित सनेह की ॥

सो०—किए अमित उपदेस जहँ तहँ लोगन्ह मुनिवरन्ह ।

धीरजु धरिअ नरेस कहेउ बसिष्ठ विदेह सन ॥२७६॥  
जासु ग्यानु रवि भव निसि नासा । वचन किरन मुनि कमल विकासा  
तेहि कि मोह ममता निअराई । यह सिय राम सनेह बढ़ाई ॥  
बिषई साधक सिद्ध सयाने । त्रिविध जीव जग वेद बखाने ॥  
राम सनेह सरस मन जासु । साधु सभाँ बड़ आदर तासु ॥  
सोह न राम पेम विनु ग्यानु । करनधार विनु जिमि जलजानू ॥  
मुनि बहुविधि विदेहु समुझाए । राम घाट सब लोग नहाए ॥  
सकल सोक संकुल नर नारी । सो वासरु बीतेउ विनु वारी ॥  
पसु खग मृगन्ह न कीन्ह अहारू । प्रिय परिजन कर कौन विचारू ॥

दो०—दोउ समाज निमिराजु रघुराजु नहाने प्रात ।

बैठे सब बट धिटप तर मन मलीन कृस गात ॥२७७॥  
जे महिसुर दसरथ पुर वासी । जे मिथिलापति नगर निवासी ॥  
हंस वंस गुर जनक पुरोध । जिन्ह जग मगु परमारथु सोधा ॥  
लगे कहन उपदेस अनेका । सहित धरम नय विरति विवेका ॥  
कौसिक कहि कहि कथा पुरानी । समुझाई सब सभा सुबानी ॥

तव रघुनाथ कौसिकहि कहेऊ। नाथ कालिजल विनु सवु रहेऊ।  
 मुनि कह उचित कहत रघुराई। गयउ वीति दिन पहर अदाई ॥  
 रिपि रुख लखि कह तेरहुतिराजू। इहाँ उचित नहिँ असन अनाजू ॥  
 कहा भूप भल सवहि सोहाना। पाइ रजायसु चले नहाना ॥  
 दो०—तेहि अवसर फल फूल दल मूल अनेक प्रकार ।

लइ आए वनचर विपुल भरि भरि काँवरि भार ॥२७८॥

कामद भे गिरि राम प्रसादा। अवलोकत अपहरत विपादा ॥  
 सर सरिता वन भूमि विभागा। जनु उमगत आनँद अनुरागा ॥  
 बेलि विटप सब सफल सफूला। बोलत खग मृग अलि अनुकूला ॥  
 तेहि अवसर वन अधिक उछाहू। त्रिविध समीर सुखद सब काहू ॥  
 जाइ न चरनि मनोहरताई। जनु महि करति जनक पहुनाई ॥  
 तव सब लोग नहाइ नहाई। राम जनक मुनि आयसु पाई ॥  
 देखि देखि तरुवर अनुरागे। जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे ॥  
 दल फल मूल कंद विधि नाना। पावन सुंदर सुधा समाना ॥

दो०—सादर सब कहँ रामगुर पठए भरि भरि भार ।

पूजि पितर सुर अतिथि गुर लगे करन फरहार ॥२७९॥

एहि विधि बासर वीते चारी। रामु निरखि नर नारि सुखारी ॥  
 दुहु समाज असि रुचि मन माहीं। विनु सिय राम फिरव भल नाहीं ॥  
 सीता राम संग वनवाछ। कोटि अमरपुर सरिस सुपाछ ॥  
 परिहरि लखन रामु बैदेही। जेहि घरु भाव वाम विधि तेही ॥  
 दाहिन दइउ होइ जव सवही। राम समीप बसिअ वन तवही ॥  
 मंदाकिनि मजनु तिहु काला। राम दरसु सुद मंगल माला ॥



अटनु राम गिरिवन तापस थल । असनु अमिअ कंद ॥

सुख समेत संवत दुइ साता । पल सम होहिं न जनिअहिं ॥

दो०—एहि सुख जोग न लोग सब कहहिं कहाँ अस भा ।

सहज सुभायँ समाज दुहु राम चरन अनुरागु ॥२८०॥

एहि विधि सकल मनोरथ करहीं । बचन सप्रेम सुनत मन हरहीं ॥

सीय मातु तेहि समय पठाई । दासीं देखि सुअवसरु आई ॥

सावकास सुनि सब सिय सासू । आयउ जनकराज रनिवासू ॥

कौसल्याँ सादर सनमानी । आसन दिए आनी ॥

सीलु सनेहु सकल दुहु ओरा । द्रवहिं देखि सुनि ति ठोरा ॥

पुलकसिथिल तन वारि विलोचन । महि ति लगीं

सब सिय राम प्रीति कि सि मूरति । जनु करुना बहु बेव विमूरति ॥

सीय मातु कह विधि बुधि बाँकी । जो पय फेनु फोर पबि टाँकी ॥

दो०—सुनिअ सुधा देखिअहिं गरल सब करतूति कराल ।

जहँ तहँ काक उलूक बक मानस सकृत मराल ॥२८१॥

सुनि ससोच कह देवि सुमित्रा । विधि गति वडि विपरीत विचित्रा

जो छृजि पालइ हरइ बहोरी । बाल केलिसम विधि मति भोरी ॥

कौसल्या कह दोसु न काहू । करम विवस दुख सु छतिलाहू ॥

कठिन करम गति जान विधाता । जो सुभ अयुभ सकल फल दाता ॥

ईस रजाइ सोस सबही कें । उत्पति थितिलय विपहु अमी कें ॥

देवि मोह बस सोचिअ वादी । विधि प्रपंचु अस अचल अनादी ॥

भूपति जिअव मरव उर आनी । सोचिअ सखिलरि निज हित हानी

सीय मातु कह सत्य सुबानी । सुकृती अवधि अवधपति रानी ॥

दो०—लखनु रामु सिय जाहुँ वन भल परिनाम न पोचु ।

गहवरि हियँ कह कौसिला मोहि भरत कर सोचु ॥२८२॥

ईस प्रसाद असीस तुम्हारी। सुत सुतबधू देवसरि वारी ॥

राम सपथ में कीन्हि न काऊ। सो करि कहउँ सखी सति भाऊ ॥

भरत सील गुन विनय बड़ाई। भायप भगति भरोस भलाई ॥

कहत सारदहु कर मति हीचे। सागर सीप कि जाहिँ उलीचे ॥

जानउँ सदा भरत कुलदीपा। बार बार मोहि कहेउ महीपा ॥

कसैं कनक मनि पारिखि पाएँ। पुरुष परिखिअहिँ समयँ सुभाएँ ॥

अनुचित आजु कहव अस मोरा। सोक सनेहँ सयानप थोरा ॥

सुनि सुरसरि सम पावनिवानी। भई सनेह विकल सब रानी ॥

दो०—कौसल्या कह धीर धरि सुनहु देवि मिथिलेसि ।

को विबेकनिधि बल्लभहि तुम्हहि सकइ उपदेसि ॥२८३॥

रानि राय सन अवसरु पाई। अपनी भाँति कहव समुझाई ॥

रखिअहि लखनु भरतु गवनहि वन। जौ यह मत मानै महीप मन ॥

तौ भल जतनु करव सुविचारी। मोरें सोचु भरत कर भारी ॥

गूढ़ सनेह भरत मन माहीं। रहें नीक मोहि लागत नाहीं ॥

लखि सुभाउ सुनि सरल सुवानी। सब भई भगन करुन रस रानी ॥

नभ प्रसन्न शरि धन्य धन्य घुनि। सिथिल सनेहँ सिद्ध जोगी मुनि ॥

सबु रनिवासु विथकि लखि रहेऊ। तव धरि धीर सुमित्राँ कहेऊ ॥

देवि दंड जुग जामिनि बीती। राम मातु सुनि उठी सप्रीती ॥

दो०—बेगि पाउ धारिअ थलहि कह सनेहँ सतिभाय ।

हमरें तौ अब ईस गति कै मिथिलेस सहाय ॥२८४॥

लखि सनेह सुनि बचन विनीता । जनक प्रिया गह पाय पुनीता ॥  
 देवि उचित असि विनय तुम्हारी । दसरथ घरिनि राम महतारी ॥  
 प्रभु अपने नीचहु आदरहीं । अगिनि धूम गिरि सिर तिनु धरहीं ॥  
 सेवकु राउ करम मन बानी । सदा सहाय महेसु भवानी ॥  
 रउरे अंग जोगु जग को है । दीप सहाय कि दिनकर सोहै ॥  
 रामु जाइ वनु करि सुर काजू । अचल अवधपुर करिहहिं राजू ॥  
 अमर नाग नर राम बाहुबल । सुखबसिहहिं अपने अपने थल ॥  
 यह सब जागवलिक कहि राखा । देवि न होइ मुधा मुनि भाषा ॥

दो०—अस कहि पग परि पेम अति सिय, हित विनय सुनाइ ।

सिय समेत सियमातु तव चली सुआयसु पाइ ॥ २८५ ॥

प्रिय परिजनहि मिली बैदेही । जो जेहि जोगु भाँति तेहि तेही ॥  
 तापस वेप जानकी देखी । भा सबु विकल विपाद विसेपी ॥  
 जनक राम गुर आयसु पाई । चले थलहि सिय देखी आई ॥  
 लीन्हि लाइ उर जनक जानकी । पाहुनि पावन पेम प्रान की ॥  
 उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू । भयउ भूप मनु मनहुँ पयागू ॥  
 सिय सनेह बटु वाढ़त जोहा । ता पर राम पेम सिसु सोहा ॥  
 चिरजीवी मुनि ग्यान विकल जनु । बूड़त लहेउ वाल अवलंबनु ॥  
 मोह मगन मति नहिं विदेह की । महिमा सिय रघुवर सनेह की ॥

दो०—सिय पितु मातु सनेह वस विकल न सकी संभारि ।

धरनि सुताँ धीरजु धरेउ समउ सुधरमु विचारि ॥ २८६ ॥

तापस वेप जनक स्त्रिय देखी । भयउ पेम परितोषु विसेपी ॥  
 पुत्रि पवित्र किए कुल दोऊ । सुजसधवल जगु कह सबु कोऊ ॥

जिति मुरसरि कीरति सरि तोरी । गवनु कीन्ह विधि अंड करोरी ॥  
 गंग अवनि थल तीनि घडेरे । एहिं किए साधु समाज घनेरे ॥  
 पितु कह सत्य सनेहें सुवानी । सीय सकुच महें मनहें समानी ॥  
 पुनि पितु मातु लीन्हि उर लाई । सिख आसिप हित दीन्हि सुहाई ॥  
 कहति न सीय सकुचि मन माहीं । डहों वसव रजनीं भल नाहीं ॥  
 लखि रुख रानि जनायउ राऊ । हृदयें सराहत सीलु सुभाऊ ॥

दो०—वार वार मिलि भेंटि सिय विदा कीन्हि सनमानि ।

कही समय सिर भरत गति रानि सुवानि सयानि ॥२८७॥

सुनि भूपाल भरत व्यवहारू । सोन सुगंध सुधा ससि सारू ॥  
 सूदे सजल नयन पुलके तन । सुजसु सराहन लगे मुदित मन ॥  
 सावधान मुनु सुमुखि सुलोचनि । भरत कथा भव बंध विमोचनि ॥  
 धरम राजनय ब्रह्मविचारू । डहों जथामति मोर प्रचारू ॥  
 सो मति मोरि भरत महिमाही । कहै काह छलि छुअति न छोही ॥  
 विधि गनपति अहिपति सिव सारद । कनि कानिद बुध बुद्धि विसारद  
 भगत चरित कीरति करतूती । धरम सोल गुन विमल विभूती ॥  
 समुझत मुनत सुगद सप्र काहू । सुनि मुरसरि रुचि निदर सुधाहू ॥

दो०—निग्वधि गुन निरुपम पुरुषु भरतु भरत मम जानि ।

कहिअ मुमेरु कि सेग मम कविकुल मति मकुवानि ॥२८८॥

अगम मप्रहि वरनत वरवग्नी । जिमि जलहीन मीन गमु धरनी ॥  
 भगत अमित महिमा मुनु रानी । जानहिं गगु न मरुहिं बग्वानी ॥  
 वरनि मप्रेम भरत अनुभाऊ । तिय जिय की रुचिलखि कह गऊ  
 बहुरहिं लखनु भरतु बन जाहीं । सप्र का भल मप्र के मन माहीं ॥

कैवि परंतु भरत रघुवर की। प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी ॥  
 भरतु अवधि सनेह समता की। जद्यपि राम सीम समता की ॥  
 परमारथ स्वारथ सुख सारे। भरत न सपनेहुँ मनहुँ निहारे ॥  
 स्नाधन सिद्धि राम षग नेहू। मोहि लखि परत भरत मत एहू ॥  
 दो०—भोरेहुँ भरत न पेलिहहिं मनसहुँ राम रजाइ ।

करिअ न सोचु सनेह वस कहेउ भूप विलखाइ ॥२८९॥

र भरत गुन बनत सप्रीती। निसिदंपतिहि पलक समवीती ॥  
 राज समाज प्रात जुग जागे। न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे ॥  
 गे नहाइ गुर बहिं रघुराई। वंदि चरन बोले स्ख पाई ॥  
 नाथ भरतु पुरजन महतारी। सोक विकल बनवास दुखारी ॥  
 सहित समाज राउ मिथिलेसु। बहुत दिवस भए सहत कलेसु ॥  
 उचित होइ सोइ कीजिअ नाथा। हित सबही कर रोरे हाथा ॥  
 कस कहि अति सखुचे रघुराउ। मुनिपुलके लखि सीलु सुभाउ ॥  
 तुम्ह विनु राम सकल सुख साजा। नरक सरिस दुहु राज समाजा ॥

दो०—प्राण प्राण के जीव के जिव सुख के सुख राम ।

तुम्ह तजि तात सोहात गृह जिन्हहि तिन्हहि विधि वाम ॥२९०॥  
 सो सुखु करमु धरमु जरि जाऊ। जहँ न राम पद पंकज भाऊ ॥  
 जोगु कुजोगु ग्यानु अग्यानु। जहँ नहिं राम पैम परधानू ॥  
 तुम्ह विनु दुखी सुखी तुम्ह तेहीं। तुम्ह जानहु जिय जो जेहि केहीं ॥  
 राउर आयसु सिर सबही केँ। विदित कृपालहि गति सब नीकेँ ॥  
 आपु आथसहि धारिअ पाऊ। भयउ सनेह सिथिल मुनिराऊ ॥  
 करि प्रनामुहुँ तव रामु सिधाए। रिपिधरि धीर जनक पहिं आए ॥

राम वचन गुरु नृपहि सुनाए । सोल सनेह सुभायँ सुहाए ॥  
महाराज अब कीजिअ सोई । सब कर धरम सहित हित होई ॥  
दो०—ग्यान निधान सुजान सुचि धरम धीर नरपाल ! ।

तुम्ह विनु असमंजस समन को समरथ एहि काल ॥२९१॥

सुनि मुनि वचन जनक अनुरागे । लखि गति ग्यानु विरागु विरागे ॥  
सिथिल सनेहँ गुनत मन माहीं । आए इहाँ कीन्ह भल नाहीं ॥  
रामहि रायँ कहेउ बन जाना । कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रवाना ॥  
हम अब बन तें बतहि पठाई । प्रमुदित फिरव विवेक बढ़ाई ॥  
तापस मुनि महिसुर सुनि देखी । भए प्रेम बस विकल विसेपी ॥  
समउ समुझि धरि धीरजु राजा । चले भरत पहिँ सहित समाजा ॥  
भरत आइ आगें भइ लीन्हे । अवसर सरिस सुआसन दीन्हे ॥  
तात भरत कह तेरहुति राऊ । तुम्हहि विदित रघुवीर सुभाऊ ॥

दो०—राम सत्यव्रत धरम रत सब कर सीलु सनेहु ।

संकट सहत सकोच बस कहिअ जो आयसु देहु ॥२९२॥

सुनि तन पुलकि नयन भरि वारी । बोले भरतु धीर धरि भारी ॥  
प्रभु प्रिय पूज्य पिता सम आपू । कुलगुरु सम हित माय न चापू ॥  
कौसिकादि मुनि सचिउ समाजू । ग्यान अंनुनिधि आपुनु आजू ॥  
सिसु सेवकु आयसु अनुगामी । जानि मोहि सिख देइअ स्वामी ॥  
एहिँ समाज थल वृक्षव राउर । मौन मलिन मैं बोलव वाउर ॥  
छोटे वदन कहउँ बड़ि वाता । छमव तात लखि वाम विधाता ॥  
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । सेवा धरमु कठिन जगु जाना ॥  
स्वामि धरम स्वारथहि विरोधू । बैरु अंध प्रेमहि न प्रबोधू ॥

दो०—राखि राम रुख धरमु व्रतु पराधीन मोहि जानि ।

सब केँ संमत सर्व हित करिअ पेसु पहिचानि ॥२९३॥

भरत बचन सुनि देखि सुभाऊ । सहित समाज सराहत राऊ ॥

अगम मृदु मंजु कठोरे । अरथु अमित अति आखर थोरे ॥

ज्यों मुखु मुकुर मुकुरु निज पानी । गहि न जाइ अस अदभुत वानी ॥

भूप भरतु सुनि सहित समाजू । गेजहँ विबुध कुमुद द्विजराजू ॥

नि सुधि सोच विकल सब लोगा । मनहुँ मीन गन नव जल जोगा ॥

देवँ प्रथम कुलगुर गति देखी । निरखि विदेह सनेह विसेषी ॥

राम भगतिमय भरतु निहारे । सुर स्वारथी हहरि हियँ हारे ॥

कोउ राम पेममय पेखा । भए अलेख सोच बस लेखा ॥

दो०—रामु सनेह सकोच बस कह ससोच सुरराजु ।

रचहु प्रपंचहि पंच मिलि नाहिं त भयउ अकाजु ॥२९४॥

सुरन्ह सुमिरि सारदा सराही । देवि देव सरनागत पाही ॥

फेरि भरत मति करि निज माया । पालु विबुध कुल करि छल छाया ॥

विबुध विनय सुनि देवि सयानी । बोली सुर स्वारथ जड़ जानी ॥

मो सन कहहु भरत मति फेरु । लोचन सहस न खूझ सुमेरु ॥

विधि हरि हर माया बड़ि भारी । सोउ न भरत मति सकइ निहारी ॥

सो मति मोहि कहत करु भोरी । चंदिनि कर कि चंडकर चोरी ॥

भरत हृदयँ सिय राम निवासु । तहँ कि तिमिर जहँ तरनि प्रकासु ॥

अस कहि सारद गइ विधि लोका । विबुध विकल निसि मानहुँ कोका ॥

दो०—सुर स्वारथी मलीन मन कीन्ह कुमंत्र कुठाडु ।

रचि प्रपंच माया प्रबल भय भ्रम अरति उचाडु ॥२९५॥

करि कुचालि सोचत सुरराजू । भरत हाथ सबु काजु अकाजू ॥  
 गए जनकु रघुनाथ समीपा । सनमाने सब रविकुल दीपा ॥  
 समय समाज धरम अविरोधा । बोले तव रघुवंस पुरोधा ॥  
 जनक भरत संबादु सुनाई । भरत कहाउति कही सुहाई ॥  
 तात राम जस आयसु देहू । सो सबु करै मोर मत एहू ॥  
 सुनि रघुनाथ जोरि जुग पानी । बोले सत्य सरल मृदु बानी ॥  
 बिद्यमान आपुनि मिथिलेसु । मोर कहब सब भाँति भदेसु ॥  
 राउर राय रजायसु होई । राउरि सपथ सही सिर सोई ॥

दो०—राम सपथ सुनि मुनि जनकु सकुचे सभा समेत ।

सकल विलोकत भरत मुखु बनइ न ऊतरु देत ॥ २९६ ॥

सभा सकुच वस भरत निहारी । रामबंधु धरि धीरजु भारी ॥  
 कुसमउ देखि सनेहु सँभारा । बढत विधि जिमि बटज निवारा ॥  
 सोक कनकलोचन मति छोनी । हरी विमल गुन गन जग जोनी ॥  
 भरत विवेक बराहँ विसाला । अनायास उधरी तेहि काला ॥  
 करि प्रनामु सब कहँ कर जोरे । रामु राउ गुर साधु निहोरे ॥  
 छमत्र आजु अति अनुचित मोरा । कहउँ बदन मृदु बचन कठोरा ॥  
 हिथँ सुमिरी सारदा सुहाई । मानसु तें मुख पंकज आई ॥  
 विमल विवेक धरम नय साली । भरत भारती मंजु मराली ॥

दो०—निरखि विवेक विलोचनन्हि सिथिल सनेहँ समाजु ।

करि प्रनामु बोले भरतु सुमिरि सीय रघुराजु ॥ २९७ ॥

प्रभु पितु मातु सुहृद गुर स्वामी । पूज्य परम हित अंतरजामी ॥  
 सरल सुसाहिबु सील निधानु । प्रनतपाल सर्वग्य सुजानु ॥



समर्थ सरनागत हितकारी । गुनगाहक अवगुन अध हारी ॥  
 स्वामि गोसाँइहिसरिस गोसाँइ । मोहि समान में साँइ दोहाँइ ॥  
 प्रभु पितु वचन मोह बस पेली । आयउँ इहाँ समाजु सकेली ॥  
 जग भल पोच ऊँच अरु नीचू । अमिअ असरपद साहुरु मीचू ॥  
 राम रजाइ भेट मन माहीं । देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं ॥  
 सो मैं सब विधि कीन्हि टिटाई । प्रभु मानी सनेह सेवकाई ॥  
 दो०—कृपाँ भलाँ आपनी नाथ कीन्ह भल मोर ।

दूपन भे भूपन सरिस सुजसु चारु चहु ओर ॥ २९८ ॥

राउरि रीति सुवानि बड़ाई । जगत विदित निगमागम गाई ॥  
 कूर कुटिल खल कुमति कलंकी । नीच निसील निरीस निसंकी ॥  
 तैउ सुनि सरन सामुहें आए । सकृत प्रनामु किहें अपनाए ॥  
 देखि दोष कबहुँ न उर आने । सुनि गुन साधु समाज बखाने ॥  
 को साहिव सेवकहि नेवाजी । आपु समाज साज सब साजी ॥  
 निज करतूति न समुझिअ सपनें । सेवक सकुच सोचु उर अपनें ॥  
 सो गोसाँइ नहिं दूसर कोपी । भुजा उठाइ कहउँ पन रोपी ॥  
 पसु नाचत सुक पाठ प्रवीना । गुन गति नट पाठक आधीन ॥

दो०—याँ सुधारि सनमानि जन किए साधु सिरमोर ।

को कृपाल विनु पालिहै विरिदावलि वरजोर ॥ २९९ ॥

सोक सनेहँ कि बाल मुभाएँ । आयउँ लाइ रजायसु गाएँ ॥  
 तबहुँ कृपाल हेरि निज ओरा । सबहि भाँति भल मानेउ मोरा ॥  
 देखेउँ पाय सुमंगल मूला । जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला ॥  
 व. समाज विलोकेउँ भागू । नदीं चूक साहिव अनुरागू ॥

कृपा अनुग्रह अंगु अघाई। कीन्हि कृपानिधि सव अधिकारै॥  
 राखा मोर दुलार गोसाई। अपने सील सुभायँ भलाई॥  
 नाथ निपट मैं कीन्हि टिठारै। स्वामि समाज सकोच बिहारै॥  
 अबिनय बिनय जथारुचि बानी। छमिहि देउ अति आरति जानी॥

दो०—सुहृद सुजान सुसाहिबहि बहुत कहव गड़ि खोरि।

आयसु देइअ देव अच सबइ सुधारी मोरि ॥ ३०० ॥

प्रभु पद पदुम पराग दोहारै। सत्य सुकृत सुख सीवँ सुंहारै॥  
 सो करि कहउँ हिए अपने की। रुचि जागत सोवत सपने की॥  
 सहज सनेहँ स्वामि सेवकारै। स्वारथ छल फल चारि बिहारै॥  
 अग्या सम न सुसाहिब सेवा। सो प्रसादु जन पावै देवा॥  
 अस कहि प्रेम विवस भए भारी। पुलक सरीर विलोचन धारी॥  
 प्रभु पद कमल गहे अकुलारै। समउ सनेहु न सो कहि जाई॥  
 कृपासिंधु सनमानि सुबानी। बैठाए समीप गहि पानी॥  
 भरत बिनय मुनि देखि सुभाऊ। सिथिल सनेहँ सभा रघुराऊ॥

छं०—रघुराउ सिथिल सनेहँ साधु समाज मुनि मिथिला धनी।

मन महुँ सराहत भरत भायप भगति की महिमा धनी ॥

भरतहि प्रसंसत विबुध बरपत सुमन मानस मलिन से।

तुलसी बिकल सब लोग मुनि सकुचे निसागम नलिन से ॥

सो०—देखि दुखारी दीन दुहु समाज नर नारि सब ।

मधवा महा मलीन गुए मारि मंगल चाहत ॥ ३०१ ॥

कपट कुचालि सीवँ सुरराजू। पर अकाज प्रिय आपन काजू ॥

काक समान पाकरिपु रीती। छली मलीन कतहुँ न प्रतीती ॥

प्रथम कुमत करि कपटु सँकेला । सो उचाटु सब कैं सिर मेला ॥  
 सुरमायाँ सब लोग विमोहे । राम प्रेम अतिसय न विछोहे ॥  
 भय उचाट वस मन थिर नाहीं । छन बन रुचि छन सदन सोहाहीं ॥  
 दुविध मनोगति प्रजा दुखारी । सरित सिंधु संगम जनु वारी ॥  
 दुचित कतहुँ परितोषु न लहहीं । एक एक सन मरमु न कहहीं ॥  
 लखि हियँ हँसि कह कृपानिधानू । सरिस खान मघवान जुवानू ॥

दो०—भरतु जनकु मुनिजन सचिव साधु सचेत विहाइ ।

लागि देवमाया सबहि जथाजोगु जनु पाइ ॥ ३०२ ॥

कृपासिंधु लखि लोग दुखारे । निज सनेहँ सुरपति छल भारे ॥

राउ गुर महिसुर मंत्री । भरत भगति सब कै मति जंत्री ॥

रामहि चितवत चित्र लिखे से । सकुचत बोलत वचन सिखे से ॥

भरत प्रीति नति विनय बड़ाई । सुनत सुखद वरनत कठिनाई ॥

जासु विलोकि भगति लवलेख । प्रेम मगन मुनिगन मिथिलेख ॥

महिमा तासु कहै किमि तुलसी । भगति सुभायँ सुमति हियँ हुलसी ॥

आपु छोटि महिमा बड़ि जानी । कविकुल कानि मानि सकुचानी ॥

कहि न सकति गुन रुचि अधिकारै । मति गति वाल वचन की नाई ॥

दो०—भरत विमल जसु विमल विंधु सुमति चकोरकुमारि ।

उदित विमल जन हृदय नभ एकटक रही निहारि ॥ ३०३ ॥

भरत सुभाउ न सुगम निगमहूँ । लघु मति चापलता कवि छमहूँ ॥

कहत मुनत सति भाउ भरत को । सोय राम पद होइ न रत को ॥

सुमिरत भरतहि प्रेषु राम को । जेहि न सुलभु तेहि सरिस वाम को ॥

देखि दयाल दसा सबही की । राम सुजान जानि जन जी की ॥

धरम धुरीन धीर नय नागर।सत्य सनेह सील सुख सागर ॥  
 देसु कालु लखि समउ समाजू।नीति प्रीति पालक रघुराजू ॥  
 बोले बचन वानि सरबसु से।हितपरिनाम सुनत ससिरसु से ॥  
 तात भरत तुम्ह धरम धुरीना।लोक वेद विद प्रेम प्रवीना ॥

दो०—करम बचन मानस चिमल तुम्ह समान तुम्ह तात ।

गुर समाज लघु बंधु गुन कुसमयँ किमि कहि जात ॥३०४॥

बानहु तात तरनि कुल रीती।सत्यसंध पितु कीरति प्रीती ॥  
 समउ समाजु लाज गुरजन की।उदासीन हित अनहित मन की ॥  
 तुम्हहि चिदित सबही कर करमू।आपन मोर परम हित धरमू ॥  
 मोहि सब भाँति भरोस तुम्हारा।तदपि कहउँ अवसर अनुसार ॥  
 तात तात विनु बात हमारो।केवल गुरकुल कृपाँ सँभारी ॥  
 नतरु प्रजा परिजन परिवारू।हमहि सहित सबु होत खुआरू ॥  
 जाँ विनु अवसर अथवँ दिनेसू।जग कैहि कहहु न होइ कलेसू ॥  
 तस उतपातु तात बिधि कीन्हा।गुनि मिथिले सराखि सबु लीन्हा ॥

दो०—राज काज सब लाज पति धरम धरनि धन धाम ।

गुर प्रभाउ पालिहि सबहि भल होइहि परिनाम ॥३०५॥

सहित समाज तुम्हार हमारो।घर वन गुर प्रसाद रखवारा ॥  
 मातु पिता गुर स्वामि निदेसू।सकल धरम धरनीधर सेसू ॥  
 सो तुम्ह करहु करावहु मोहू।तात तरनि कुल पालक होहू ॥  
 साधक एक सकल सिधि देनी।कीरति सुगति भूतिमय वेनी ॥  
 सो विचारि सहि संकटु भारी।करहु प्रजा परिवारु सुखारी ॥  
 बाँटी चिपति सबहि मोहि भाई।तुम्हहि अबधि भरि बड़ि कठिनाई ॥

जानि तुम्हहि मृदु कहउँ कठोरा । कुसमयँ तात न अनुचित मोरा ॥  
होहिँ कुठायँ सुचंद्रु सहाए । ओड़िअहिँ हाथ असनिहुँ केषाए ॥

दो०—सेवक कर पद नयन से मुख सों साहिबु होइ ।

तुलसी प्रीति किरीति मुनि मुकवि सराहहिँ सोइ ॥३०६॥

सभा सकल मुनि रघुवण वानी । प्रेम पयोधि अमिअँ जनु सानी ॥  
सिथिल समाज सनेह सयाधी । देखि दसा चुप सारद साथी ॥  
भरतहि भयउ परस संतोषू । सनमुखम्यामि विजुख दुखदोषू ॥  
मुख प्रसन्न मन मिटा त्रिपादू । भा जनु गूँगेहि गिरा प्रसादू ॥  
कीन्ह सप्रेम प्रनामु बहोरी । बोले पानि पंकरुह जोरी ॥  
नाथ भयउ सुखु साथ गए को । लहेउँ लाहु जग जनमु भए को ॥  
अव कृपाल जस आयसु होई । करों सीस धरि सादर सोई ॥  
सो अवलंब देव माँहि देई । अवधि पारु पावाँ जेहि सेई ॥

दो०—देव देव अभिषेक हित गुर अनुसासनु पाइ ।

आनेउँ सब तीरथ सलिलु तेहि कहँ काह रजाइ ॥३०७॥

एकु मनोरथु बड़ मन माहीं । सभयँ सक्रोध जात कहि नाही ॥  
कहहु तात प्रभु आयसु पाई । बोले वानि सनेह सुहाई ॥  
चित्रकूटमुचिथल तीरथ वन । स्वग मृग सरसरि निश्रंर गिरिगन ॥  
प्रभु पद अंकित अचनि विसेपी । आयसु होइ त आवाँ देखी ॥  
अवसि अत्रि आयसु सिर धरहु । तात विगतभय कानन चरहु ॥  
मुनि प्रसाद वनु मंगल दाता । पावन परम मुहावन आता ॥  
रिपिनायकु जहँ आयसु देहीं । राखेहु तीरथ जलु थल तेहीं ॥  
मुनि प्रभु वचन भरत मुखु पावा । मुनि पद कमल मुदित सिरु नावा ॥

दो०—भरत राम संवादु सुनि सकल सुमंगल मूल ।

सुर स्वारथी सराहि कुल वरपत सुरतरु फूल ॥३०८॥

धन्य भरत जय राम गोसाईं । कहत देव हरपत बरिआईं ॥  
 मुनि मिथिलेस सभाँ सब काहू । भरतवचन सुनि भयउ उछाहू ॥  
 भरत राम गुन ग्राम सनेहू । पुलकि प्रसंसत राउ विदेहू ॥  
 सेवक स्वामि सुभाउ सुहावन । नेमु पेमु अति पावन पावन ॥  
 मति अनुसार सराहन लागे । सचिव सभासद सब अनुरागे ॥  
 सुनि सुनि राम भरत संवादू । दुहु समाजु हियँ हरपु विपादू ॥  
 राम मातु दुखु सुखु समजानी । कहि गुन राम प्रवोधीं रानी ॥  
 एक कहहिं रघुवीर बड़ाई । एक सराहत भरत भलाई ॥

दो०—अत्रि कहेउ तव भरत सन सैल समीप सुकूप ।

राखिअ तीरथ तौय तहँ पावन अमिअ अनूप ॥३०९॥

भरत अत्रि अनुसासन पाई । जल भाजन सब दिए चलाई ॥  
 सानुज आपु अत्रि मुनि साधू । सहित गए जहँ कूप अगाधू ॥  
 पावन पाथ पुन्यथल राखा । प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाषा ॥  
 तात अनादि सिद्ध थल एहू । लोपेउ काल विदित नहिं केहू ॥  
 तव सेवकन्ह सरस थलु देखा । कीन्ह सुजल हित कूप विसेषा ॥  
 विधिवस भयउ विख उपकारु । सुगम अगम अति धर्म विचारु ॥  
 भरतकूप अत्र कहिहहिं लोगा । अति पावन तीरथ जल जोगा ॥  
 प्रेम सनेम निमज्जत ग्रानी । होइहहिं विमल करम मनवानी ॥  
 दो०—कहत कूप महिमा सकल गए जहाँ रघुराऊ ।

अत्रि सुनायउ रघुवरहि तीरथ पुन्य प्रभाउ ॥३१०॥

कहत धरम इतिहास सप्रीती। भयउ भोरु निसिसो सुखवीती ॥  
 नित्य निबाह भरत दोउ भाई। राम अत्रि गुर आयसु पाई ॥  
 सहित समाज साज सब सादें। चले राम बन अटन पयादें ॥  
 कोमल चरन चलत बिनु पनहीं। भइ मृदु भूमि सकुचि मन मनहीं  
 कुस कंटक काँकराँ कुराई। कटुक कठोर कुवस्तु दुराई ॥  
 सहि मंजुल मृदु मारग कीन्हे। बहत समीर त्रिविध सुखलीन्हे ॥  
 सुमन वरषि सुर घन करि छाहीं बिटप फूलि फलि तन मृदुताहीं ॥  
 मृग विलोकि खग बोलि सुवानी। सेवहिँ सकल राम प्रिय जानी ॥  
 दो०—सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु राम कहत जमुहात ।

राम प्रानप्रिय भरत कहँ यह न होइ वडि व ॥३११॥

एहि विधि भरतु फिरत बन माहीं। नेमु प्रेमु लखि मुनि सकुचाहीं ॥  
 पुन्य जलाश्रय भूमि विभागा। खग मृग तरु तन गिरि बन वागा ॥  
 चारु विचित्र पवित्र त्रिसेपी। ब्रह्मत भरतु दिव्य सब देखी ॥  
 सुनि मन मुदित कहत रिषिराऊ। हेतु नाम गुन पुन्य प्रभाऊ ॥  
 कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रनामा। कतहुँ विलोकत मन अभिरामा ॥  
 कतहुँ वैठि मुनि आयसु पाई। सुमिरत सीय सहित दोउ भाई ॥  
 देखि सुभाउ सनेहु सुसेवा। देहिँ असीस मुदित बनदेवा ॥  
 फिरहिँ गएँ दिनु पहर अढ़ाई। प्रभु पद कमल विलोकहिँ आई ॥  
 दो०—देखे थल तीरथ सकल भरत पाँच दिन माझ ।

कहत सुनत हरिहर सुजसु गयउ दिवसु भइ साँझ ॥३१२॥

भोर न्हाइ सनु जुरा समाजू। भरत भूमिसुर तेरहुति राजू ॥  
 भल दिन जाजु जानि मन माहीं। रामु कृपाल कहत सकुचाहीं ॥

गुर नृप भरत सभा अवलोकी । सकुचि राम फिरि अवनि विलोकी  
 सील सराहि सभा सब सोची । कहूँ न राम सम स्वामिसँकोची ॥  
 भरत सुजान राम रुख देखी । उठि सप्रेम धरि धीर विसेपी ॥  
 करि दंडवत कहत कर जोरी । राखीं नाथ सकल रुचि मोरी ॥  
 मोहि लागि सहेउ सबहिं संतापू । बहुत भाँति दुखु पावा आपू ॥  
 अब गोसाइँ मोहि देउ रजाई । सेवों अवध अवधि भरि जाई ॥  
 दो०—जेहि उपाय पुनि पाय जनु देखै दीनदयाल ।

सो सिख देइअ अवधि लागि कोसलपाल कृपाल ॥३१३॥

पुरजन परिजन प्रजा गोसाइँ । सब सुचि सरस सनेहँ सगाई ॥  
 राउर वदि भल भव दुख दाहू । प्रभु विनु वादि परम पद लाहू ॥  
 स्वामि सुजानु जानि सब ही की । रुचि लालसा रहनि जन जी की ॥  
 प्रनतपालु पालिहि सब काहू । देउ दुहू दिमि ओर निवाहू ॥  
 असमोहि सब विधि भूरि भरोसो । किएँ वि वारु न सोनु खरो सो ॥  
 आरति मोर नाथ कर छोहू । दुहूँ मिलि कान्ह ढीठु हठि मोहू ॥  
 यह बड़ दोषु दूरि करि स्वामी । तजि सकाच मिखइअ अनुगामी ॥  
 भरत विनय सुनि सबहिं प्रसंसी । खीर नीर विवग्न गति हंसी ॥  
 दो०—दीनबंधु मुनि बंधु के बचन दीन छन्दहीन ।

देस काल अवसर सरिस बान्हे गमृ प्रवीन ॥३१४॥

तात तुम्हारि मोरि परिजन की । चिंता गुगहि नृपहि घरवन की ॥  
 माथे पर गुर मुनि मिथिलेसू । हमहि तुम्हहि सपनेहुँ न कलेसू ॥  
 मोर तुम्हार परम पुरुपारथु । स्वारथु सुजसु धरथु परमारथु ॥  
 पितु आयसु पालिहिं दुहू भाई । लोक बेद भल भूप भलाई ॥





मुनिगन गुर धुर धीर जनक से । ग्यान अनल मन कसें कनक से ॥  
जे विरंचि निरलेप उपाए । पदुम पत्र जिमि जग जल जाए ॥

दो०—तेउ विलोकि रघुवर भरत प्रीति अनूप अपार ।

भए मगन मन तन बचन सहित पिराग विचार ॥३१७॥

जहाँ जनक गुर गति मति भोरी । प्राकृत प्रीति कहत बड़ि खोरी ॥  
अरनत रघुवर भरत वियोगू । मुनि कठोर कवि जानिहि लोगू ॥  
सो सकोच रसु अकथ सुबानी । समउ सनेहु सुभिरि सकुचानी ॥  
भेंटि भरतु रघुवर समुझाए । पुनि रिपुदवनु हरपि हियँ लाए ॥  
सेवक सचिव भरत रुख पाई । निज निज काज लगे सब जाई ॥  
मुनि दारुन दुखु दुहूँ समाजा । लगे चलन के साजन साजा ॥  
प्रभु पद पदुम वंदि दोउ भाई । चले सोस धरि राम रजाई ॥  
मुनि तापस वनदेव निहोरो । सब सनमानि बहोरि बहोरी ॥

दो०—लखनहि भेंटि प्रनामु करि सिर धरि सिय पद धरि ।

चले सप्रेम असोस मुनि सकल मुमंगल मूरि ॥३१८॥

सानुज राम नृपहि सिर नाई । कोन्हि बहुत विधि विनय बढाई ॥  
देव दया बस बड़ि दुखु पायउ । सहित समाज काननहिँ आयउ ॥  
पुर पगु धारिअ देइ असोसा । कोन्हि धीर धरि गवनु महीसा ॥  
मुनि महिदेव साधु सनमाने । विदा किए हरि हर सम जाने ॥  
सासु समीप गए दोउ भाई । फिरे वंदि पग आसिप पाई ॥  
कौस्तिक वामदेव जायाली । पुरजन परिजन सचिव सुचाली ॥  
जथा जोगु करि विनय प्रनामा । विदा किए सप सानुज राम ॥  
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे । सब सनमानि कृपानिधि



मुनि महिसुर गुर भरत भुआलू । राम त्रिरहँ सबु साजु विहालू ॥  
 प्रभु गुन ग्राम गनत मन माहीं । सब चुपचाप चले मग जाहीं ॥  
 जमुना उत्तरि पार सबु भयऊ । सो वासरु त्रिनु भोजन गयऊ ॥  
 उत्तरि देवसरि दूसर वास । रामसखाँ सब कीन्ह सुपास ॥  
 सई उत्तरि गोमती नहाए । चौथें दिवस अवधपुर आए ॥  
 जनकु रहे पुर वासर चारी । राज काज सब साज सँभारी ॥  
 सौंपि सचिव गुर भरतहि राजू । तेरहुति चले साजि सबु साजू ॥  
 नगर नारि नर गुर सिख मानी । बसे सुखेन राम रजधानी ॥  
 दो०—राम दरस लगि लोग सब करत नेम उपवास ।

तजि तजि भूपन भोग सुख जिअत अवधि कीं आस ॥३२२॥

सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे । निज निज काज पाइ सिख ओधे ॥  
 पुनि सिख दीन्हि बोलि लघु भाई । सौंपी सकल मातु सेवकाई ॥  
 भूसुर बोलि भरत कर जोरे । करि प्रनाम वय विनय निहोरे ॥  
 ऊँच नीच कारजु भल पोचू । आयसु देव न करव सँकोचू ॥  
 परिजन पुरजन प्रजा बोलाए । समाधानु करि सुवस वसाए ॥  
 सानुज गे गुर गेहँ बहोरी । करि दंडवत कहत कर जोरी ॥  
 आयसु होइ त रहीं सनेमा । बोले मुनि तन पुलकि सपेमा ॥  
 समुझव कहव करव तुम्ह जोई । धरम सारु जग होइहि सोई ॥  
 दो०—मुनि सिख पाइ असीस बड़ि गनक बोलि दिनु साधि ।

सिंघासन प्रभु पादुका बैठारे निरुपाधि ॥३२३॥

रामु मातु गुर पद सिरु नाई । प्रभु पद पीठ रजायसु पाई ॥  
 नंदिगावँ करि परन कुटीरा । कीन्ह निवासु धरम धुर धीरा ॥

जटाजूट सिर मुनिपट धारी। महि नि कुस साँथरो सँवारी ॥  
 असन वसन वासन व्रत नेमा। करत ठिन रिषिधरम सप्रे ॥  
 भूपन वसन भोग सुख भूरी। मन तन वचन तजे तिन तूरी ॥  
 अवध राजु सुर राजु सिशई। दसरथ धनु सुनि धनदु लजाई ॥  
 तेहिँ पुर वसत भरत त्रिनुरागा। चंचरोक जिमि चंपक वागा ॥  
 रमा विलासु राम अनुरागी। तजतवमन जिमिजन वड़ भागी ॥

दो०—राम पेम भाजन भरतु वड़े न एहिँ कररूति ।

चातक हंस सराहिअत टेंक विवेक विभू ॥३२४॥

देह दिनहुँ दिन दूरि होई। घट्ट तेजु बलु मुखउवि सोई ॥  
 नित नव राम प्रेम पनु पीना। वढ़त धरमदलु मनु नमलीना ॥  
 जिमि जलु निघटत सरद प्रकासे। विलसत वेतस वनज विका ॥  
 सम दम संजम नियम उपासा। नखत भरत हिय विमल अकासा ॥  
 ध्रुव विखासु अवधि राका सो। स्वामिसुरति सुखीथि विक ॥  
 राम पेम विधु अचल अदोषा। सहित समाज सोह नित चो ॥  
 भरत रहनि समुझनि कररूतो। भगति विरति गुन विमल विभूतो ॥  
 वरनत सकल सुकवि सकुचाहीं। सेस गनेस गिरा गगु नाहीं ॥  
 दे०—नित पूजत प्रभु पाँवरो प्रीति न हृदयँ समाति ।

मागि मागि आयसु करत राज काज बहु भाँति ॥३२५॥

पुलक गात हियँ सिय रघुवीरू। जोह नामु जप लोचन नीरू ॥  
 लखन राम सिय कानन वसहीं। भरतु भवन वसितपतनु कसहीं ॥  
 दोउदिसिस मुझि कहत सनु लोगू। सत्र विधि भरत सराहन जोगू ॥  
 सुनि व्रत नेम साधु सकुचाहीं। देखि दसा मुनिराज लजाहीं ॥

परम पुनीत भरत आचरनू। मधुर मंजु मुद मंगल करनू॥  
हरन कठिन कलि कलुप कलेख्। महामोह निसि दलन दिनेख्॥  
पाप पुंज कुंजर मृगराजू। समन सकल संताप समाजू॥  
जन रंजन भंजन भव भारू। राम सनेह सुधाकर सारू॥

छं०—सिय राम प्रेम पियूष पूरन होत जनमु न भरत को ॥  
मुनि मन अगमजम नियम सम दम विषम व्रत आचरत को ॥  
दुख दाह दारिद्र दंभ दूपन सुजस मिस अपहरत को ॥  
कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि राम सनमुख करत को ॥

सो०—भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं ।  
सीय राम पद पेमु अवसि होइ भव रस विरति ॥३२६॥

मासपारायण, इक्कीसवाँ विश्राम



इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुपविध्वंसने  
द्वितीयः सोपानः समाप्तः  
( अयोध्याकाण्ड समाप्त )



## सुतीक्ष्णजी रामके ध्यानमें



अतिसय प्रीति देखि रघुवीरा ।

प्रगटे हृदयँ हरन भव भीरा ॥

# श्रीरामचरितमानस

तृतीय सोपान

( अरण्यकाण्ड )

श्लोक

मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं  
वैराग्याम्युजभास्करं ह्यवधनध्वान्तापहं तापहम् ।  
मोहाम्भोधरप्रगपाटनविधौ स्वःसम्भवं शङ्करं  
वन्दे ब्रह्मकुलं कलङ्कशमनं श्रीरामभूप्रियम् ॥ १ ॥  
सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुं पीताम्बरं सुन्दरं  
पाणौ वाणशरासनं कटिलसत्तूणीरभारं वरम् ।  
राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं  
सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥ २ ॥

सो०—उमा राम गुण गूढ पंडित मुनि पावहिं विरति ।

पावहिं मोह विमूढ जे हरि विमुख न धर्म रति ॥

पुर नर भरत प्रीति में गाई। मति अनुरूप अनूप सुहाई ॥

अन प्रभु चरित सुनहु अति पावन । करत जेवन सुर नर मुनि भावन



एक वार चुनि कुसुम सुहाए। निज कर भूपन राम बनाए ॥  
 सीतहि पहिशाए प्रभु सादर। बैठे फटिक सिला पर सुंदर ॥  
 सुरपति सुत धरि वायस देषा। सठ चाहत रघुपति बल देखा ॥  
 जिमि पिपीलिका सागर थाहा। महा मंदमति पावन चाहा ॥  
 सीता चरन चोंच हति भागा। मूढ़ मंदमति कारन कागा ॥  
 चला रुधिर रघुनायक जाना। सीक धनुष सायक संधाना ॥  
 दो०—अति कृपाल रघुनायक सदा दीन पर नेह ।

ता सन आइ कीन्ह छलु सूरख अवगुन गेह ॥ १ ॥

प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर थावा। चला भाजि वायस भय पावा ॥  
 धरि निज रूप गयउ पितु पाहीं। राम विमुख राखा तेहि नाहीं ॥  
 भा निरास उपजी मन त्रासा। जथा चक्र भय रिपि दुर्वासा ॥  
 ब्रह्मधाम सिवपुर सब लोका। फिरा श्रमितव्याकुल भय सोका ॥  
 काहूँ बैठन कहा न ओही। राखि को सकइ राम कर द्रोही ॥  
 मातु मृत्यु पितु समन समाना। सुधा होइ विप सुनु हरिजाना ॥  
 मित्र करइ सत रिपु कै करनी। ता कहँ विबुधनदी वैतरनी ॥  
 सबजगु ताहि अनलहु ते ताता। जो रघुवीर विमुख सुनु आता ॥  
 नारद देखा विकल जइता। लागि दया क्रोमल चित संता ॥  
 पठवा तुरत राम पहिं ताही। कहेसि पुकारि प्रनत हित पाही ॥  
 आतुर सभय गहेसि पद जाई। त्राहि त्राहि दयाल रघुराई ॥  
 अतुलित बल अतुलित प्रभुताई। मैं मतिमंद जानि नहिं पाई ॥  
 निज कृत कर्म जनित फल पायउँ। अब प्रभु पाहि सरन तकि आयउँ ॥  
 सुनि कृपाल अति आरत वानी। एक नयन करि तजा भवानी ॥

सो०—कीन्ह मोह वस द्राह जद्यपि तेहि कर वध उचित ।

प्रभु छाड़ेउ करि छोह को कृपाल रघुवोर सम ॥ २ ॥

रघुपति चित्रकूट वसि नाना । चरित किए श्रुति सुधासमाना ॥

बहुरि राम अस मन अनुमाना । होइहि भोर मरहि मोहि जाना ॥

सकल मुनिन्ह सन विदा कराई । सीता सहित चले द्वौ भाई ॥

अत्रि के आश्रम जब प्रभु गयऊ । मुनत महामुनि हरपित भयऊ ॥

पुलकित गात अत्रि उठि धाए । देखि रामु आतुर चलि आए ॥

करत दंडवत मुनि उर लाए । प्रेम चारि द्वौ जन अन्हवाए ॥

देखि राम छवि नयन जुड़ाने । सादर निज आश्रम तब आने ॥

करि पूजा कहि वचन मुझाए । दिए मूल फल प्रभु मन भाए ॥

सो०—प्रभु आसन आसीन भरि लोचन सोभा निरखि ।

मुनिवर परम प्रमान जोरि पानि अस्तुति करत ॥ ३ ॥

छ०—नमामि भक्त वत्सलं । कृपालु शील कोमलं ॥

भजामि ते पदांबुजं । अकामिनां स्वधामदं ॥

निकाम श्याम सुदरं । भगाम्बुनाथ मंदरं ॥

प्रफुल्ल कंज लोचनं । मदादि दोष मोचनं ॥

प्रलंब बाहु विक्रमं । प्रभोऽप्रमेय वैभवं ॥

निपंग चाप सायकं । भरं त्रिलोक नायकं ॥

दिनेश वंश मंडनं । महेश चाप खंडनं ॥

मुनींद्र संत रंजनं । सुरारि वृंद भंजनं ॥

मनोज वैरि वेदितं । अजादि देव सेवितं ॥

निशुद्ध बोध विग्रहं । समस्त दूषणापहं ॥

नमामि इंदिरा पतिं । सुखाकरं सतां गतिं ॥  
 भजे सशक्ति सानुजं । शची पति प्रियानुजं ॥  
 त्वदंघ्रि मूल ये नराः । भजंति हीन मत्सराः ॥  
 पतंति नो भवार्णवे । वितर्क वीचि संकुले ॥  
 विविक्त वासिनः सदा । भजंति मुक्तये मुदा ॥  
 निरस्य इंद्रियादिकं । प्रयांति ते गतिं स्वकं ॥  
 तमेकमद्भुतं प्रभुं । निरीहमीश्वरं विभुं ॥  
 जगद्गुरुं च शाश्वतं । तुरीयमेव केवलं ॥  
 भजामि भाव बल्लभं । कुयोगिनां सुदुर्लभं ॥  
 स्वभक्त कल्प पादपं । समं सुसेव्यमन्वहं ॥  
 अनूप रूप भूपतिं । नतोऽहमुर्विजा पतिं ॥  
 प्रसीद मे नमामि ते । पदाब्ज भक्ति देहि मे ॥  
 पठंति ये स्तवं इदं । नरादरेण ते पदं ॥  
 व्रजंति नात्र संशयं । त्वदीय भक्ति संयुताः ॥  
 दो०—विनती करि मुनि नाइ सिरु कह कर जोरि बहोरि ।

चरन सरोरुह नाथ जनि कवहुँ तजै मति मोरि ॥ ४ ॥

अनुसुइया के पद गहि सीता । मिली बहोरि सुसील विनीता ॥  
 रिपिपतिनी मन सुख अधिकार्ई । आसिप देइ निकट वैठार्ई ॥  
 दिव्य वसन भूपन पहिराए । जे नित नूतन अमल सुहाए ॥  
 कह रिपिवधु सरस मृदु वानी । नारिधर्म कलु व्याज बखानी ॥  
 मातु पिता भ्राता हितकारी । मितप्रद सब सुनु राजकुमारी ॥  
 अमित दानि भर्ता वयदेही । अधम सो नारि जो सेव न तेही ॥  
 धीरज धर्म मित्र अरु नारी । आपद काल परिखिअहिं चारी ॥

वृद्ध रोगवस जड़ धनहीना। अंध बधिर क्रोधी अति दीना ॥  
 ऐसेहु पति कर किएँ अपमाना। नारि पाव जमपुर दुख नाना ॥  
 एकड़ धर्म एक व्रत नेमा। कायँ वचन मन पति पद प्रेमा ॥  
 जग पतिव्रता चारिविधि अहहीं। वेद पुरान संत सब कहहीं ॥  
 उत्तम के अस वस मन माहीं। सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं ॥  
 मध्यम परपति देखइ कैसैं। भ्राता पिता पुत्र निज जैसेँ ॥  
 धर्म विचारि समुझि कुल रहई। सो निकिष्ट त्रिय श्रुति अस कहई  
 विनु अवसर भय तें रह जोई। जानेहु अधम नारि जग सोई ॥  
 पति बंचक परपति रति करई। रौरव नरक कल्प सत परई ॥  
 छन सुख लागि जनम सत कोटी। दुखन समुझ तेहि सम को खोटी ॥  
 विनु श्रम नारि परम गति लहई। पतिव्रत धर्म छाड़ि छल गहई ॥  
 पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई। विधवा होइ पाइ तरुनाई ॥

सो०—सहज अपात्रनि नारि पति सेवत सुभ गति लहइ ।

जसु गावत श्रुति चारि अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिया ॥५(क)॥

सुनु सीता तव नाम सुमिरि नारि पतिव्रत करहिं ।

तोहि प्रानप्रिय राम कहिउँ कथा संसार हित ॥५(ख)॥

मुनि जानकी परम सुखु पावा। सादर तासु चरन सिरु नावा ॥

तव मुनि सन कह कृपानिधाना। आयसु होइ जाउं वन आना ॥

संतत मो पर कृपा करेहू। सेवक जानि तजेहु जनि नेहू ॥

धर्म धुरंधर प्रभु कै वानी। मुनि सप्रेम बोले मुनि ग्यानी ॥

जासु कृपा अत्र सिव सनकादी। चहत सकल परमारथ वादी ॥

ते सुम्ह राम अकाम विशारे। दीन बंधु मृदु बचन उचारे ॥

अब जानी मैं श्री चतुराई । भजी तुम्हहि सब देव विहाई ॥  
 जेहि समान अतिसय नहिं कोई । ता वर सील कस न अस होई ॥  
 केहि बिधि कहीं जाहु अब स्वामी । कहहु नाथ तुम्ह अंतरजामी ॥  
 अस कहि प्रभु बिलोकि मुनि धीरा । लोचन जल बह पुलक सरीरा ॥

छं०—तन पुलक निर्भर त्रेम पूरन नयन मुख पंकज दिए ।

मन ग्यान गुन गोतीत प्रभु मैं दीख जप तप का किए ॥

जप जोग धर्म समूह तें नर भगति अनुपम पावई ।

रघुबीर चरित पुनीत निसि दिन दास तुलसी गावई ॥

दो०—कलिमल समन दमन मन राम सुजस सुखसूल ।

सादर सुनहिं जे तिन्ह पर राम रहहिं अनुकूल ॥६(क)॥

सो०—कठिन काल मल कोस धर्म न ग्यान न जोग जप ।

परिहरि सकल भरोस रामहि भजहिं ते चतुर नर ॥६(ख)॥

मुनि पद कमल नाइ करि सीसा । चले वनहि सुर नर मुनि ईसा ॥

आगें राम अनुज पुनि पाछें । मुनि वर वेप वने अति काछें ॥

उभय बीच श्री सोहइ कैसी । ब्रह्म जीव बिच साया जैसी ॥

सरिता वन गिरि अवघट घाटा । पति पहिचानि देहिं वर बाटा ॥

जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया । करहिं येघ तहँ तहँ नभ छाया ॥

मिला असुर विराध मग जाता । आवतहीं रघुबीर निपाता ॥

तुरतहिं रुचिर रूप तेहिं पावा । देखि दुखी निज धाम पठावा ॥

पुनि आए जहँ मुनि सरभंगा । सुंदर अनुज जानकी संगी ॥

दो०—देखि राम मुख पंकज मुनिवर लोचन भृंग ।

सादर पान करत अति धन्य जन्म सरभंग ॥ ७ ॥

कह मुनि सुनु रघुवीर कृपाला। संकर मानस राजमराला ॥  
जात रहेउं विरंवि के धामा। सुनेउं श्रवन वन ऐहहिं रामा ॥  
चितवत पंथ रहेउं दिन रातो। अत्र प्रभु देखि जुड़ानो छातो ॥  
नाथ सकल साधन मैं हीना। कोन्ही कृपा जानि जन दीना ॥  
सो कछु देव न मोहि निहोरा। निज पन राखेउ जन मन चोरा ॥  
तत्र लगि रहहु दीन हित लागी। जव लगि मिलौं तुम्हहि तनु त्यागी ॥  
जोग जग्य जप तप व्रत कोन्हा। प्रभु कहँ देइ भगति वर लीन्हा ॥  
एहि विधि सररचि मुनि सरभंगा। बैठे हृदयँ छाड़ि सब संगी ॥

दो०—सीता अनुज समेत प्रभु नील जलद तनु स्याम ।

मम हियँ बसहु निरंतर सगुनरूप श्रीराम ॥ ८ ॥

अस कहि जोग अग्नि तनु जारा। राम कृपाँ वैकुण्ठ सिधारा ॥  
ताते मुनि हरि लीन न भयऊ। प्रथमहिं भेद भगति वर लयऊ ॥  
रिषि निकाय मुनिवर गति देखी। सुखी भए निज हृदयँ विसेपी ॥  
अस्तुति करहिं सकल मुनि वृन्दा। जयति प्रनत हित करुना कंदा ॥  
पुनि रघुनाथ चले वन आगे। मुनिवर वृन्द त्रिपुल संग लागे ॥  
अस्यि समूह देखि रघुनाया। पूछी मुनिन्ह लागि अति दाया ॥  
जानतहँ पूछिअ कस स्वामी। सबदरसी तुम्ह अंतरजामी ॥  
निसिचर निकर सकल गुनि खाए। मुनि रघुवीर नयन जल छाए ॥

दो०—निसिचर हीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह ।

सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाइ जाइ सुख दीन्ह ॥ ९ ॥

मुनि अगस्ति कर सिन्ध सुजाना। नाम सुतोछन रति भगवाना ॥  
मन क्रम बचन राम पद सेवक। सपनेहुँ आन भरोस न ट्रेक ॥

प्रभु आगवन्दु श्रवन मुनि पावा । करत मनोरथ आतुर धावा ॥  
 हे विधि दीनबंधु रघुराया । मो से सठ पर करिहहिं दाय्या ॥  
 सहित अनुज मोहि राम गोसाई । मिलिहहिं निज सेवक की नाई ॥  
 मोरे जियँ भरोस दृढ़ नाहीं । भगति विरति न ग्यान मन माहीं ॥  
 नहिं सतसंग जोग जप जागा । नहिं दृढ़ चरन कमल अनुरागा ॥  
 एक वानि करुनानिधान की । सो प्रिय जाकें गति न आन की ॥  
 होईहें सुफल आजु मम लोचन । देखि वदन पंकज भव मोचन ॥  
 निर्भर प्रेम मगन मुनि ग्यानी । कहि न जाइ सो दसा भवानी ॥  
 दिसि अरु विदिसि पंथ नहिं स्रज्जा । को में चलेउँ कहाँ नहिं वृज्जा ॥  
 कवहुँक फिरि पाछें पुनि जाई । कवहुँक नृत्य करइ गुन गाई ॥  
 अचिरल प्रेम भगति मुनि पाई । प्रभु देखें तरु ओट लुकाई ॥  
 अतिसय प्रीति देखि रघुवीरा । प्रगटे हृदयँ हरन भव भीरा ॥  
 मुनि मग माझ अचल होइ वैसा । पुलक सरीर पनस फल जैसा ॥  
 तव रघुनाथ निकट चलि आए । देखि दसा निज जन मन भाए ॥  
 मुनिहि राम बहु भाँति जगावा । जाग न ध्यान जनित सुख पावा ॥  
 भूप रूप तब राम दुरावा । हृदयँ चतुर्भुज रूप देखावा ॥  
 मुनि अकुलाइ उठा तव कैसैं । विकल हीन मनि फनिचर जैसैं ॥  
 आगें देखि राम तन स्यामा । सीता अनुज सहित सुख धामा ॥  
 परेउ लकुट इव चरनन्हि लागी । प्रेम मगन मुनिवर वड़भागी ॥  
 भुज विसाल गहि लिए उठाई । परम प्रीति राखे उर लाई ॥  
 मुनिहि मिलत अस सोह कृपाला । कनक तरुहि जनु भेंट तमाला ॥  
 राम घदनु विलोक मुनि ठाढ़ा । मानहुँ चित्र माझ लिखि काढ़ा ॥

दो०—तत्र मुनि हृदयँ धीर धरि गहि पद चारहि चार ।

निज आश्रम प्रभु आनि करि पूजा विविध प्रकार ॥ १० ॥

कह मुनि प्रभु सुनु विनती मोरी । अस्तुति करौं कवन विधि तोरी ॥  
 महिमा अमित मोरि मति थोरी । रवि सन्मुख खद्योत अँजोरी ॥  
 श्याम तामरस दाम शरीरं । जटा मुकुट परिधन मुनिचीरं ॥  
 पाणि चाप शर कटि तूणीरं । नौमि निरंतर श्रीरघुवीरं ॥  
 मोह विषिन घन दहन कृशानुः । संत सरोरुह कानन भानुः ॥  
 निशिचर करि वरूथ मृगराजः । त्रातु सदा नो भव खग बाजः ॥  
 अरुण नयन राजीव सुवेशं । सीता नयन चकोर निशेशं ॥  
 हर हृदि मानस बाल मरालं । नौमि राम उर बाहु विशालं ॥  
 संशय सर्प ग्रसन उरगादः । शमन सुकर्कश तर्क विपादः ॥  
 भव भंजन रंजन सुर यूथः । त्रातु सदा नो कृपा वरूथः ॥  
 निर्गुण सगुण विषम सम रूपं । ज्ञान गिरा गोतीतमनूपं ॥  
 अमलमखिलमनवद्यमपारं । नौमि राम भंजन महि भारं ॥  
 भक्त कल्पपादप आरामः । तर्जन क्रोध लोभ मद कामः ॥  
 अति नागर भव सागर सेतुः । त्रातु सदा दिनकर कुल केतुः ॥  
 अतुलित भुज प्रताप बल धामः । कलि मल विपुल विभंजन नामः ॥  
 धर्म वर्म नर्मद गुण ग्रामः । संतत शं तनोतु मम रामः ॥  
 जदपि विरज व्यापक अविनासी । सब के हृदयँ निरंतर वासी ॥  
 तदपि अनुज श्री सहित खरारी । वसतु मनसि मम काननचारी ॥  
 जे जानहिं ते जानहुँ स्वामी । सगुन अगुन उर अंतरजामी ॥  
 जो कोसल पति राजिव नयना । करउ सो राम हृदय मम अयना ॥



अस अभिमान जाइ जनि भोरे। मैं सेवक रघुपति पति मोरे ॥  
 मुनि मुनि वचन राम मन भाए। बहुरि हरपि मुनिवर उर लाए ॥  
 परम प्रसन्न जानु मुनि मोही। जो वर मागहु देउँ सो तोही ॥  
 नि कह मैं वर कवहुँ न जाचा। समुझि न परइ झूठ साचा ॥  
 तुम्हहि नीक लागै रघुराई। सो मोहि देहु दास सुखदाई ॥  
 अविरल भगति विरति विग्याना। होहु सकल गुन ग्यान निधाना ॥  
 प्रभु जो दीन्ह सो वरु मैं पावा। अब सो देहु मोहि जो भावा ॥

दो०—अनुज जानकी सहित प्रभु चाप वान धर राम ।

मम हिय गगन इंदु इव वसहु सदा निहकाम ॥ ११ ॥

एवमस्तु करि रमानिवासा। हरपि चले कुंभज रिपि पासा ॥  
 बहुत दिवस गुर दरसनु पाएँ। भए मोहि एहि आश्रम आएँ ॥  
 अब प्रभु संग जाउँ गुर पाहीं। तुम्ह कहँ नाथ निहोरा नाहीं ॥  
 देखि कृपानिधि मुनि चतुराई। लिए संग त्रिहसे द्वौ भाई ॥  
 पंथ कहत निज भगति अनूपा। मुनि आश्रम पहुँचे सुरभूषा ॥  
 तुरत सुतीछन गुर पहिँ गयऊ। करि दंडवत कहत अस भयऊ ॥  
 नाथ कोसलाधोस कुमारा। आए मिलन जगत आधारा ॥  
 राम अनुज समेत वैदेही। निसि दिनु देव जपत हहु जेही ॥  
 सुनत अगस्ति तुरत उठि धाए। हरि विलाकि लोचन जल छाए ॥  
 मुनि पद कमल परे द्वौ भाई। रिपि अति प्रीति लिए उर लाई ॥  
 सादर कुसल पूछि मुनि ग्यानी। आसन वर वैठारे आनी ॥  
 पुनि करि बहु प्रकार प्रभु पूजा। मोहि सम भाग्यवंत नहिँ दूजा ॥  
 जहँ लागि रहे अपर मुनि वृंदा। हरषे सब विलाकि सुखकंदा ॥

दो०—मुनि समूह महें बैठे सन्मुख सब की ओर ।

सरद इंदु तन चित्तवत मानहुँ निकर चकोर ॥ १२ ॥

तव रघुवीर कहा मुनि पाहीं । तुम्ह सन प्रभु दुराव कछु नाहीं ॥  
 तुम्ह जानहु जेहि कारन आयउँ । ताते तात न कहि समुझायउँ ॥  
 अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही । जेहि प्रकार मारौं मुनिद्रोही ॥  
 मुनि मृसुकाने सुनि प्रभुवानी । पूछेहु नाथ मोहि का जानी ॥  
 तुम्हरेई भजन प्रभाव अघारी । जानउँ महिमा कछुक तुम्हारी ॥  
 ऊमरि तरु बिसाल तव माया । फल ब्रह्मांड अनेक निकाया ॥  
 जीव चराचर जंतु समाना । भीतर बसहिं न जानहिं आना ॥  
 ते फल भच्छक कठिन कराला । तव भयें डरत सदा सोड काला ॥  
 ते तुम्ह सकल लोकपति साई । पूछेहु मोहि मनुज की नाई ॥  
 यह वर मागउँ कृपानिकेता । बसहु हृदयें श्री अनुज समेता ॥  
 अविरल भगति विरति सतसंगा । चरन सरोरुह प्रीति अभंगा ॥  
 जद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता । अनुभव गम्य भजहिं जेहि संता ॥  
 अस तव रूप बखानउँ जानउँ । फिरि फिरि सगुन ब्रह्म रति मानउँ ॥  
 संतत दासन्ह देहु बडाई । ताते मोहि पूछेहु रघुराई ॥  
 है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ । पावन पंचवटी तेहि नाऊँ ॥  
 दंडक वन पुनीत प्रभु करहु । उग्र साप मुनिवर कर हरहु ॥  
 घास करहु तहँ रघुकुल राया । कीजे सकल मुनिन्ह पर दाया ॥  
 चले राम मुनि आयसु पाई । तुरतहि पंचवटी निअराई ॥

दो०—गीधराज सैं भेंट भइ बहु विधि प्रीति बड़ाइ ।

गोदावरी निकट प्रभु रहे परन गृह छाइ ॥ १३ ॥

सीतहि चितइ कही प्रभु बाता। अहइ दुआर मोर लघु भ्राता ॥  
 गइ लछिमन रिपु भगिनी जानी। प्रभु विलोकि बोले मृदु बानी ॥  
 सुंदरि सुनु मैं उन्ह कर दासा। पराधीन नहिं तोर सुपासा ॥  
 अ समर्थ कोसलपुर राजा। जो कछु करहिं उनहि सब छाजा ॥  
 सेवक सुख चह मान भिखारी। व्यसनी धन सुभ गति विभिचारी ॥  
 लोभी जसु चह चार गुमानी। नभ दुहि दूध चहत ए प्राणी ॥  
 पुनि फिरि राम निकट सो आई। प्रभु लछिमन पहिं वहुरि पठाई ॥  
 लछिमन कहा तोहि सो बरई। जो तन तोर लाज परिहरई ॥  
 खिसिआनि राम पहिं गई। रूप भयंकर प्रगटत भई ॥  
 सीतहि सभय देखि रघुराई। कहा अनुज सन सयन बुझाई ॥

दो०—लछिमन अति लाघवँ सो नाक कान विनु कीन्हि ।

ताके कर रावन कहँ मनौ चुनौती दीन्हि ॥ १७ ॥

नाक कान विनु भइ विकरात

सैल गेरु कै धारा ॥

खर दूपन पहिं गइ विलपात

पौन आता ॥

सैल गेरु सब कहेसि दुःख

ई ॥

र निकर बरु

॥

नानाव.

लै जानकिहि जाहु गिरि कंदर । आवा निसिचर कटक भयंकर ॥  
 रहेहु सजग सुनि प्रभु कै बानी । चले सहित श्री सर धनु पानी ॥  
 देखि राम रिपुदल चलि आवा । विशि कठिन कोदंड चढ़ावा ॥

छं०—कोदंड कठिन चढ़ाइ सिर जट जूट बाँधत सोह क्यों ।  
 मरकत सयल पर लरत दामिनि कोटि सौं जुग भुजग ज्यों ॥  
 कटि कसि निपंग विसाल भुज गहि चाप विसिख सुधारि कै ॥  
 चितवत मनहुँ मृगराज प्रभु गजराज घटा निहारि कै ॥

सो०—आइ गए वगमेल धरहु धरहु धावत सुभट ।  
 जथा विलोकि अकेल बाल रविहि घेरत दनुज ॥ १८ ॥

प्रभु विलोकि सर सकहि न डारी । थकित भई रजनीचर धारी ॥  
 सचिव बोलि बोले खर दूपन । यह कोउ नृपबालक नर भूपन ॥  
 नाग असुर सुर नर मुनि जेते । देखे जिते हते हम केते ॥  
 हम भरि जन्म सुनहु सब भाई । देखी नहिं असि सुंदरताई ॥  
 जद्यपि भगिनी कीन्हि कुरूपा । वध लायक नहिं पुरुष अनूपा ॥  
 देहु तुरत निज नारि दुराई । जीअत भवन जाहु द्वौ भाई ॥  
 मोर कहा तुम्ह ताहि सुनावहु । तामु वचन सुनि आतुर आवहु ॥  
 दूतन्ह कहा राम सन जाई । सुनत राम बोलै मुमुकाई ॥  
 हम छत्री मृगया वन करहीं । तुम्ह से खल मृग खोजत फिरहीं ॥  
 रिपु बलवंत देखि नहिं डरहीं । एक बार कालहु सन लरहीं ॥  
 जद्यपि मनुज दनुज कुल घालक । मुनि पालक खल सालक बालक ॥  
 जाँ न होइ बल घर फिरि जाहू । समर त्रिमुख में हतउँ न काहू ॥  
 रन चढ़ि करिअ कपट चतुराई । रिपु पर कृपा परम कदराई ।

दूतन्ह जाइ तुरत सब कहेऊ। सुनि खर दूपन उर अति दहेऊ ॥

छं०—उर दहेउ कहेउ कि धरहु धाए विकट भट रजनीचरा।  
सर चाप तोमर सक्ति सुल कृपान परिघ परसु धरा ॥  
प्रभु कीन्हि धनुष टकोर प्रथम कठोर घोर भयावहा।  
भए बधिर व्याकुल जातुधान न ग्यान तेहि अवसर रहा ॥

दो०—सावधान होइ धाए जानि सबल आराति।  
लागे वरपन राम पर अस्त्र सस्त्र बहु भाँति ॥१९(क)॥  
तिन्ह के आयुध तिल सम करि काटे रघुवीर।  
तानि सरासन श्रवन लागि पुनि छाँड़े निज तीर ॥१९(ख)॥

छं०—तव चले वान कराल। फुंकरत जनु बहु व्याल ॥  
कोपेउ समर श्रीराम। चले विसिख निसित निकाम ॥  
अवलोकि खरतर तीर। मुरि चले निसिचर वीर ॥  
भए क्रुद्ध तीनिउ भाइ। जो भागि रन ते जाइ ॥  
तेहि वधव हम निज पानि। फिरे मरन मन महुँ ठानि ॥  
आयुध अनेक प्रकार। सनमुख ते करहिँ प्रहार ॥  
रिपु परम कोपे जानि। प्रभु धनुष सर संधानि ॥  
छाँड़े विपुल नाराच। लगे कटन विकट पिसाच ॥  
उर सीस भुज कर चरन। जहँ तहँ लगे महि परन ॥  
चिकरत लागत वान। धर परत कुधर समान ॥  
भट कटत तन सत खंड। पुनि उठत करि पापंड ॥  
नभ उड़त बहु भुज मुंड। विनु मौलि धावत रुंड ॥  
खग कंक सृगाल। कटकटहिँ कठिन कराल ॥



पंचवटी वसि श्रीरघुनायक । करत चरित सुरमुनि सुखदायक ॥  
 धुआँ देखि खरदूषन केरा । जाइ सुपनखाँ रावन भेरा ॥  
 बोली वचन क्रोध करि भारी । देस कोस कै सुरति विसारी ॥  
 करसि पान सोवसि दिनु राती । सुधि नहिं तव सिर पर आराती ॥  
 राज नीति विनु धन विनु धर्मा । हरिहि समर्पे विनु सतकर्मा ॥  
 विद्या विनु विवेक उपजाएँ । श्रम फल पढ़ेँ किएँ अरु पाएँ ॥  
 संग तेँ जती कुमंत्र ते राजा । मान ते ग्यान पान तेँ लाजा ॥  
 प्रीति प्रनय विनु मद ते गुनी । नासहिं बेगि नीति अस सुनी ॥

सो०—रिपु रुज पावक पाप प्रभु अहि गनिअन छोट करि ।

अस कहि विविध विलाप करि लागी रोदन करन ॥२१(क) ॥

दो०—सभा माझ परि व्याकुल बहु प्रकार कह रोइ ।

तोहि जिअत दसकंधर मोरि कि असि गति होइ ॥२१(ख) ॥

सुनत सभासद उठे अकुलाई । समुझाई गहि बाँह उठाई ॥  
 कह लंकेस कहसि निज वाता । केइँ तव नासा कान निपाता ॥  
 अवध नृपति दसरथ के जाए । पुरुष सिंध वन खेलन आए ॥  
 समुझि परी मोहि उन्ह कै करनी । रहित निसाचर करिहि धरनी ॥  
 जिन्ह कर भुजवल पाइ दसानन । अभय भए विचरत मुनि कानन ॥  
 देखत वालक काल समाना । परम धीर धन्वी गुन नाना ॥  
 अतुलित बल प्रताप द्वौ भ्राता । खल बध रत सुर मुनि सुखदाता ॥  
 सोभा धाम राम अस नामा । तिन्ह के संग नारि एक स्यामा ॥  
 रूप रासि विधि नारि सँवारी । रति सत कोटि तामु बलिहारी ॥  
 तामु अनुज काटे श्रुति नासा । सुनि तव भगिनि करहिं परिहासा ॥

खर दूपन सुनि लगे पुकारा। छन महुँ सकल कटक उन्ह मारा ॥

खर दूपन तिसिरा कर घाता। सुनि दससीस जरे सब गाता ॥

दो०—सूपनखहि समुझाइ करि बल बोलेसि बहु भाँति।

गयउ भवन अति सोचवस नीद परइ नहिं राति ॥ २२ ॥

सुर नर असुर नाग खग माहीं। मोरे अनुचर कहँ कोउ नाहीं ॥

खर दूपन मोहि सम बलवंता। तिन्हहि को मारइ विनु भगवंता ॥

सुर रंजन भंजन महि भारा। जाँ भगवंत लीन्ह अवतारा ॥

ताँ में जाइ वैरु हठि करऊँ। प्रभु सर प्रान तजँ भय तरऊँ ॥

होइहि भजनु न तामस देहा। मन क्रम वचनं मंत्र दृढ़ एहा ॥

जाँ नररूप भूपसुत कोऊ। हरिहउँ नारि जीति रने दोऊ ॥

चला अकेल जान चढ़ि तहवाँ। वस मारीच सिंधु तट जहवाँ ॥

इहाँ राम जसि जुगुति वनाई। सुनहु उमा सो कथा सुहाई ॥

दो०—लछिमन गए वनहिं जय लेन मूल फल कंद।

जनकसुता सन बोले विहसि कृपा सुख बृंद ॥ २३ ॥

सुनहु प्रिया व्रत रुचिर सुसीला। मैं कछु करवि ललित नरलीला ॥

तुम्ह पावक महुँ करहु निवासा। जाँ लागि करौं निसाचर नासा ॥

जबहिं राम सब कहा दरवानी। प्रभु पद धरि हिये अनल समानी ॥

निज प्रतिधिं राखि तहँ सीता। तैसइ सील रूप सुविनीता ॥

लछिमनहँ यह मरमु न जाना। जो कछु चरित रचा भगवाना ॥

दसमुख गयउ जहाँ मारीचा। नाइ माथ स्वारथ रत नीचा ॥

नवनि नीच कै अति दुखदाई। जिमि अंकुम धनु उरग विलाई ॥

भयदायक खल कै प्रिय वानी। जिमि अकाल के कुसुम भवार्द ॥



दो०—करि पूजा मारीच तव सादर पूछी बात।

कवन हेतु मन व्यग्र अति अकसर आयहु तात ॥ २४ ॥

दसमुख सकल कथा तेहि आगें । कही सहित अभिमान अभागें ॥

होहु कपट मृग तुम्ह छलकारी । जेहि विधि हरि आनों नृपनारी ॥

तेहिं पुनि कहा सुनहु दससीसा । ते नररूप चराचर ईसा ॥

तासों तात बयरु नहिं कीजै । मारें मरिअ जिआएँ जीजै ॥

मुनि मुख राखन गयउ मारा । बिनु फर सर रघुपति मोहि मारा ॥

जोजन आयउँ छन माहीं । तिन्ह सन बयरु किएँ भल नाहीं ॥

भइ मम कीट भृंग की नाई । जहँ तहँ मैं देखउँ दोउ भाई ॥

जौं नर तात तदपि अति स्ररा । तिन्हहि विरोधि न आइहि पूरा ॥

दो०—जेहिं ताड़का सुबाहु हति खंडेउ हर कोदंड ।

स्वर दूषन तिसिरा बघेउ मनुज कि अस बरिबंड ॥ २५ ॥

हु भवन कुल कुसल विचारी । सुनत जरा दीन्हिसि बहु गारी ॥

गुरु जिमि सूढ़ करसि मम बोधा । कहु जग मोहि समान को जोधा ॥

तव मारीच हृदयँ अनुमाना । नवहि विरोधें नहिं कल्याना ॥

सखी मर्मी प्रभु सठ धनी । वैद बंदि कवि भानस गुनी ॥

भाँति देखा निज मरना । तत्र ताकिसि रघुनायक सरना ॥

उतरु देत मोहि बधव अभागें । कस न मरौं रघुपति सर लागें ॥

अस जियँ जानि दसानन संगी । चला राम पद प्रेम अभंगा ॥

सन अति हरष जनाव न तेही । आजु देखिहउँ परम सनेही ॥

छं०—निज परम प्रीतम देखि लोचन नुफल करि सुख पाइहौं ।

श्री सहित अनुज समेत रूपानिकेत पद मन लाइहौं ॥

निर्वान दायक क्रोध जा कर भगति अवसहि बसकरी ।

निज पानि सर संधानि सो मोहि बधिहि सुखसागर हरी ॥

दो०—मम पाछें धर धावत धरें सरासन वान ।

फिरि फिरि प्रभुहि विलोकिहउँ धन्य नमो समआन ॥ २६ ॥

तेहि वन निकट दसानन गयऊ । तव मारीच कपटमृग भयऊ ॥

अति विचित्र कछु बरनि न जाई । कनक देह मनि रचित बनाई ॥

सीता परम रुचिर मृग देखा । अंग अंग सुमनोहर बेपा ॥

सुनहु देव रघुवीर कृपाला । एहि मृग कर अति सुंदर छाला ॥

सत्यसंध प्रभु बधि करि एही । आनहु चर्म कहति वैदेही ॥

तव रघुपति जानत सब कारन । उठे हरपि सुर काजु सँवारन ॥

मृग विलोकि कटि परिकर बाँधा । करतल चाप रुचिर सर साँधा ॥

प्रभु लछिमनहि कहा समुझाई । फिरत त्रिपिन निसिचर बहु भाई ॥

सीता केरि करेहु रखवारी । बुधि विवेक बल समय विचारी ॥

प्रभुहि विलोकि चला मृग भाजी । धाए रामु सरासन साजी ॥

निगम नेति सिव ध्यान न पावा । मायामृग पाछें सो धावा ॥

कवहुँ निकट पुनि दूरि पराई । कवहुँक प्रगटइ कवहुँ छपाई ॥

प्रगटत दुरत करत छल भूरी । एहि विधि प्रभुहि गयउ लै दूरी ॥

तव तकि राम कठिन सर मारा । धरनि परेउ करि घोर पुकारा ॥

लछिमन कर प्रथमहिँ लै नामा । पाछें सुमिरेसि मन महुँ रामा ॥

प्राण तजत प्रगटेसि निज देहा । सुमिरेसि रामु समेत सनेहा ॥

अंतर प्रेम तासु पहिचाना । मुनि दुर्लभ गति दीन्हि सुजाना ॥

दो०—विपुल सुमन सुर वरपहिं गावहिं प्रभु गुन गाथ ।

निज पद दीन्ह अमुर कहँ दीनबंधु रघुनाथ ॥ २७ ॥

खल वधि तुरत फिरं रघुवीरा । साह चाप कर कटि तूनीरा ॥  
 आरत गिरा मुनी जव सीता । कहललछिमनसन परमसभोता ॥  
 जाहु वेगि संकट अति आता । लछिमनविहसिकहा सुनुमाता ॥  
 भृकुटि विलास सृष्टि लय होई । सपनेहुँ संकट परइ कि सोई ॥  
 मरम वचन जव सीता बोला । हरि प्रेरित लछिमन मन डोला ॥  
 वन दिसि देव सांपि सब काहू । चले जहाँ रावन ससि राहू ॥  
 सून बीच दसकंधर देखा । आवा निकट जता कें वेया ॥  
 जाकें डर सुर अमुर डेराहीं । निसिन लीद दिन अन्नन खाहीं ॥  
 सो दससीस स्यान की नाई । इत उत चितइ चला भड़िहाई ॥  
 इमि कुपंथ पग देत खगेसा । रह न तेजतन वृधि बल लेसा ॥  
 नाना विधि करि कथा सुदाई । राजनीति भय प्रीति देखाई ॥  
 कह सीता सुनु जती गोसाई । बोलेहु वचन दुष्ट की नाई ॥  
 तव रावन निज रूप देखाया । भई सभय जव नाम सुनाया ॥  
 कह सीता धरि धीरजु गाढ़ा । आइ गयउ प्रभुरहु खल ठाढ़ा ॥  
 जिमि हस्त्रिधुहि छुद्र सस चाहा । भगसि कालवस निसिचरनाहा ॥  
 सुनत वचन दससीस रिसाना । मन महुँ चरन बंदि सुख माना ॥

दो०—क्रोधबंध तव रावन लीन्हिसि रथ बैठाइ ।

चला गगनपथ आतुर भयँ रथ हाँकि न जाइ ॥ २८ ॥

हा जग एक वीर रघुराया । केहि अपराध विसारेहु दाया ॥  
 आरति हरन सरन सुखदायक । हा रघुकुल सरोज दिननायक ॥

हा लछिमन तुम्हार नहिं दोसा । सो फलु पायउँ कीन्हेउँ रोसा ॥  
 विविध विलाप करति वैदेही । भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही ॥  
 विपति मोरि को प्रभुहि सुनावा । पुरोडास चह रासभ खावा ॥  
 सीता कै विलाप सुनि भारी । भए चराचर जीव दुखारी ॥  
 गीधराज सुनि आरत वानी । रघुकुलतिलक नारि पहिचानी ॥  
 अधम निसाचर लीन्हें जाई । जिमि मलेछ बस कपिला गाई ॥  
 सीते पुत्रि करसि जनि त्रासा । करिहउँ जातुधान कर नासा ॥  
 धावा क्रोधवंत खग कैसें । छूटइ पवि परबत कहूँ जैसें ॥  
 रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही । निर्भय चलेसिन जानेहि मोही ॥  
 आवत देखि कृतांत समाना । फिरि दसकंधर कर अनुमाना ॥  
 की मैनाक कि खगपति होई । मम बल जान सहित पति सोई ॥  
 जाना जरठ जटायू एहा । मम कर तीरथ छाँड़िहि देहा ॥  
 सुनत गीध क्रोधातुर धावा । कह सुनु रावन मोर सिखावा ॥  
 तजि जानकिहि कुसल गृह जाहू । नाहिं त अस होइहि बहुवाहू ॥  
 राम रोष पावक अति घोरा । होइहि सकल सलभ कुल तोरा ॥  
 उत्तरु न देत दसानन जोधा । तत्रहिं गीध धावा करि क्रोधा ॥  
 धरि कच विरथ कीन्ह महि गिरा । सीतहि राखि गीध पुनि फिरा ॥  
 चोचन्ह मारि विदारैसि देही । दंड एक भइ मुरुछा तेही ॥  
 तब सक्रोध निसिचर खिसिआना । काटैसि परम काल कृपाना ॥  
 काटैसि पंख परा रग धरनी । सुमिरि राम करि अद्भुत कर्णी ॥  
 सीताहि जान चढ़ाइ बहोरी । चला उताइल त्रास न धोरी ॥  
 करति विलाप जाति नभ सीता । ब्याध विषस जनु मृगी सर्भाता ॥

गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी । कहि हरि नाम दीन्ह पट डारी ॥  
 एहि विधि सीतहि सो लै गयऊ । बन असोक महँ राखत भयऊ ॥  
 दो०—हारि परा खल बहु विधि भय अरु प्रीति देखाइ ।

तव असोक पादप तर राखिसि जतन कराइ ॥२९(क)॥

नवाह्नपारायण, छठा विश्राम

जेहि विधि कपट कुरंग सँग धाइ चले श्रीराम ।

सो छवि सीता राखि उर रटति रहति हरिनाम ॥२९(ख)॥

रघुपति अनुजहि आवत देखी । बाहिज चिंता कौन्हि विसेषी ॥  
 जनकसुता परिहरिहु अकेली । आयहु तात वचन मम पेली ॥  
 निसिचर निकर फिरहिँ बन माहीं । मम मन सीता आश्रम नाहीं ॥  
 गहि पद कमल अनुज कर जोरी । कहेउ नाथ कछु सोहि न खोरो ॥  
 अनुज समेत गए प्रभु तहवाँ । गोदावरि तट आश्रम जहवाँ ॥  
 आश्रम देखि जानकी हीना । भए विकल जस प्राकृत दीना ॥  
 हा गुन खानि जानकी सोता । रूप सील व्रत नेम पुनीता ॥  
 लछिमन समुझाए बहु भाँती । पूछत चले लता तरु पाँती ॥  
 हे खग मृग हे मधुकर श्रेणी । तुम्ह देखी सीता मृगनैनी ॥  
 खंजन सुक कपोत मृग मीना । मधुप निकर कोकिला प्रवीना ॥  
 कुंद कली दाड़िम दामिनी । कमल सरद ससि अहिभामिनी ॥  
 बरुन पास मनोज धनु हंसा । गज केहरि निज सुनत प्रसंसा ॥  
 श्रीफल कनक कदलि हरषाहीं । नेकु न संक सकुच मन माहीं ॥  
 सुनु जानकी तोहि बिनु आजू । हरषे सकल पाइ जनु राजू ॥



पाथोद गात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं ।  
 नित नौमि रामु कृपाल बाहु विसाल भव भय मोचनं ॥ १ ॥  
 बलमप्रमेयमनादिमजसव्यक्तमेकमगोचरं ।  
 गोविंद गोपर द्वंद्वहर विग्यानघन धरनीधरं ॥  
 जे राम मंत्र जपंत संत अनंत जन मन रंजनं ।  
 नित नौमि राम अकाम प्रिय कामादि खल दल गंजनं ॥ २ ॥  
 जेहि श्रुति निरंजन ब्रह्म व्यापक विरज अज कहि गावहीं ।  
 करि ध्यान ग्यान विराग जोग अनेक मुनि जेहि पावहीं ॥  
 सो प्रगट करुना कंद सोभा वृंद अग जग मोहई ।  
 मम हृदय पंकज भृंग अंग अनंग बहु छवि सोहई ॥ ३ ॥  
 जो अगम सुगम सुभाव निर्मल असम सग सीतल सदा ।  
 पस्यंति जं जोगी जतन करि करत मन गो बस सदा ॥  
 राम रमा निवास संतत दास बस त्रिभुवन धनी ।  
 मम उर बसउ सो समन संसृति जासु कीरति पावनी ॥ ४ ॥

दो०—अविरल भगति मागि वर गीध गयउ हरिधाम ।

तेहि की क्रिया जथोचित निज कर कीन्ही राम ॥३२॥

कोमल चित अति दीनदयाला । कारन विनु रघुनाथ कृपाला ॥  
 गीध अधम रूग आसिप भोगी । गति दीन्ही जो जाचत जोगी ॥  
 सुनहु उमा ते लोग अभागी । हरितजिहोहिं विषय अनुरागी ॥  
 पुनि सीतहि खोजत द्वौ भाई । चले विलोकत बन बहुताई ॥  
 संकुल लता घिटप घन कानन । बहु खग मृग तहें गजपंचानन ॥  
 आवत पंथ कदंध निपाता । तेहि सब वही साप कै वाता ॥





नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं । सावधान सुनु धरु मन माहीं ॥  
प्रथम भगति संतन्ह कर संगी । दूसरि रति मम कथा प्रसंगी ॥

दो०—गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान ।

चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान ॥ ३५ ॥

मंत्र जाप मम दृढ़ विस्वासा । पंचम भजन सो वेद प्रकासा ॥  
छठ दम सील विरति बहु करमा । निरत निरंतर सजन धरमा ॥  
सातवँ सम मोहि मय जग देख्वा । मोतें संत अधिक करि लेखा ॥  
आठवँ जथालाभ संतोषा । सपनेहुँ नहिं देखइ परदोषा ॥  
नवम सरल सब सन छलहीना । मम भरोस हियँ हरष न दीना ॥  
नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई । नारि पुरुष सचराचर कोई ॥  
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें । सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें ॥  
जोगि वृंद दुरलभ गति जोई । तो कहूँ आजु सुलभ भइ सोई ॥  
मम दरसन फल परम अनूपा । जीव पाव निज सहज सरूपा ॥  
जनकसुता कह सुधि भामिनी । जानहि कहु करिवरगामिनी ॥  
पंपा सरहि जाहु रघुराई । तइँ होइहि सुग्रीव मितार्ई ॥  
सो सब कहिहि देव रघुवीरा । जानतहूँ पूछहु मतिधीरा ॥  
वार वार प्रभु पद सिरु नाई । प्रेम सहित सब कथा सुनाई ॥

छं०—कहि कथा सकल विलोकि हरि मुख हृदयँ पद पंकज धरे ।

तजि जांग पावक देह हरि पद लीन भइ जहँ नहिं फिरे ॥

नर विविध कर्म अधर्म बहु मत सोकग्रद सब त्यागहू ।

विस्वास करि कह दास तुलसी राम पद अनुरागहू ॥



कूजत पिक मानहुँ गज माते । ठेक महोख ऊँट विसराते ॥  
 मोर चकोर कीर बर वाजी । पारावत मराल सब ताजी ॥  
 तीतिर लावक पदचर जूथा । वरनि न जाइ मनोज वरूथा ॥  
 रथ गिरि सिला दुंदुभीं झरना । चातक बंदी गुन गन वरना ॥  
 मधुकर मुखर भेरि सहनाई । त्रिविध बयारि बसीठीं आई ॥  
 चतुरंगिनी सेन संग लीन्हें । विचरत सवहि चुनौती दीन्हें ॥  
 लछिमन देखत अनीका । रहहिं धीर तिन्ह कै जग लीका ॥  
 एहि कें एक परम बल नारी । तेहि तें उबर सुभट सोइ भारी ॥

दो०—तात तीनि अति प्रबल खल क्रोध अरु लोभ ।

मुनि विग्यान धाम मन करहिं निमिष महुँ छोभ ॥३८( )॥

लोभ कें इच्छा दंभ बल काम कें केवल नारि ।

क्रोध कें परुष वचन बल मुनिवर कहहिं विचारि ॥३८( )॥

गुनातीत सचराचर स्वामी । राम उमा सब अंतरजामी ॥  
 कामिन्ह कै दीनता देखाई । धीरन्ह कें मन विरति दृढ़ाई ॥  
 क्रोध मनोज लोभ मद माया । छूटहिं सकल राम कीं दाया ॥  
 सो नर इंद्रजाल नहिं भूला । जा पर होइ सो नट अनुकूला ॥  
 उमा कहउँ मैं अनुभव अपना । सत हरि भजनु जगत सब सपना ॥  
 पुनि प्रभु गए सरोवर तीरा । पंथा न सुभग गंभीरा ॥  
 संत हृदय जस निर्मल वारी । बाँधे घाट मनोहर चारी ॥  
 जहँ तहँ पिअहिं त्रिविध मृग नीरा । जनु उदार गृह जाचक भीरा ॥



मोर साप करि अंगीकारा । सहत राम नाना दुख भारा ॥  
 ऐसे प्रभुहि विलोकउँ जाई । पुनि न बनिहि अस अवसरु आई ॥  
 यह विचारि नारद कर बीना । गए जहाँ प्रभु सुख आसीना ॥  
 गावत राम चरित मृदु बानी । प्रेम सहित बहु भाँति बखानी ॥  
 करत दंडवत लिए उठाई । राखे बहुत बार उर लाई ॥  
 खांगत पूँछि निकट वैठारे । लछिमन सादर चरन पल्लारे ॥

दो०—नाना विधि विनती करि प्रभु प्रसन्न जिधँ जानि ।

नारद बोले वचन तत्र जोरि सरोरुह पानि ॥ ४१ ॥

सुनहु उदार सहज रघुनायक । सुंदर अगम सुगम बर दायक ॥  
 देहु एक बर मागउँ स्वामी । जद्यपि ज त अंतरजामी ॥  
 जानहु मुनि तुम्ह मोर सुभाऊ । जन सन कबहुँ कि करउँ दुराऊ ॥  
 कवन वस्तु असि प्रिय मोहि लागी । जो मुनिवर न सकहु तुम्ह मागी ॥  
 जन कहूँ कछु अदेष नहिँ मोरें । अस बिस्वास तजहु जदि भोरें ॥  
 तब नारद बोले हरपाई । अरु बर मागउँ करउँ दिठार्ह ॥  
 जद्यपि प्रभु के नाम अनेका । श्रुति कह अधिक एक तें, एका ॥  
 राम सकल नामन्ह ते अधिका । होउ नाथ अध स्वयं गन अधिका ॥

दो०—राका रजनी भगति तव राम नाम सोइ सोम ।

अपर नाम उडगन निमल बसहुँ भगत उर व्योम ॥ ४२ (क) ॥

एवमस्तु मुनि सन कहेउ कृपासिंधु रघुनाथ ।

तव नारद मन हरष अति प्र पद नाथ उ माथ ॥ ४२ (ख) ॥









भगवान् रामकी सुग्रीवसे मैत्री



सखा सोच त्यागहु बल मोरें ।

सब विधि घटव काज में तोरें ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

# श्रीरामचरितमानस

चतुर्थ सोपान

( किष्किन्धाकाण्ड )



श्लोक

कुन्देन्दीवरसुन्दरायतिबलौ विज्ञानधामाङ्गुभौ  
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ ।  
मायामानुपरूपिणौ रघुवरौ सद्गर्मवर्मा हितौ  
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥ १ ॥  
ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं  
श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुमुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा ।  
संसारामयमेपजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं  
धन्यास्ते कृतिनः पितृन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥ २ ॥

तो०-शुक्ति जन्म महि जानि ग्यान खानि अघ हानि कर ।  
जहं वस संभु भवानि सां कासो सेइअ कय न ॥  
जरत सकल मुर वृंद विपम गरल जेहिं पान फिय ।  
तेहि न भजसि मन मंद को कृपाल संकर सरिस ॥

चले बहुरि रघुराया। रिष्यसूक पर्वत निअराया॥  
 तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा। आवत देखि अतुल बल सींवा॥  
 अति सभीत कह सुनु हनुमाना। पुरुष जुगल बल रूप निधाना॥  
 धरि बटु रूप देखु तैं जाई। कहेसु जानि जियँ सयन बुझाई॥  
 पठए बालि होहिं मन मैला। भागौं तुरत तजौं यह सैला॥  
 विप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ। माथ नाइ पूछत अस भयऊ॥  
 को तुम्ह स्यामल गौर सरीत। छत्री रूप फिरहु वनवीरा॥  
 कठिन भूमि क्रोमल पद गामी। कवन हेतु विचरहु वन स्वामी॥  
 शृदुल मनोहर सुंदर गाता। सहत दुसह वन आतप वाता॥  
 की तुम्ह तीनि देव महँ कोऊ। नर नारायन की तुम्ह दोऊ॥

दो०—जग कारन तारन भव भंजन धरनी भार ।

की तुम्ह अखिल भुवन पति लीन्ह मनुज अवतार ॥ १ ॥

कोसलेस दसरथ के जाए। हम पितु वचन मानि वन आए॥  
 राम लछिमन दोउ भाई। संग नारि सुकुमारि सुहाई॥  
 इहाँ हरी निसिचर वैदेही। विप्र फिरहिं हम खोजत तेही॥  
 आपन चरित कहा हम गाई। कहहु विप्र निज कथा बुझाई॥  
 प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना। सो सुख उमा जाइ नहिं वरना॥  
 पुलकित तन मुख आवन वचना। देखत रुचिर वेप कै रचना॥  
 पुनि धीरजु धरि अस्तुति कीन्ही। हरष हृदयँ निज नाथहि चीन्ही॥  
 मोर न्याउ मैं पूछा साई। तुम्ह पूछहु कस नर की नाई॥  
 तव माया वस फिरउँ भुलाना। ता ते मैं नहिं प्रभु पहिचाना॥



क्रीन्हि प्रीति कलु वीच न राखा । लल्लिमन राम चरित सब भाषा ॥  
 कह सुग्रीव नयन भरि वारी । मिलिहि नाथ मिथिलेसकुमारी ॥  
 मंत्रिन्ह सहित इहाँ एक वारा । बैठ रहेउँ मैं करत विचारा ॥  
 गगन पंथ देखी मैं जाता । परबस परी बहुत विलपाता ॥  
 राम राम हा राम पुकारी । हमहि देखि दीन्हेउ पट डारी ॥  
 मागा राम तुरत रोहिं दीन्हा । पट उर लाइ सोच अति क्रीन्हा ॥  
 कह सुग्रीव सुनहु रघुवीरा । तजहु सोच मन आनहु धीरा ॥  
 सब प्रकार करिहउँ खैवकाई । जेहि विधि मिलिहि जानकी आई ॥

दो०—सखा वचन सुनि हरषे कृपालिधु बलसीव ।

कारन कवन बसहु वन मोहि कहहु सुग्रीव ॥ ५ ॥

नाथ बालि अरु मैं द्यौ भाई । प्रीति रही कलु वरनि न जाई ॥  
 मय सुत मायात्री तैहि नाऊँ । आवा सो प्रभु हमरें गाऊँ ॥  
 अर्ध राति पुर द्वार पुकारा । वाली रिपु बल सहै न पारा ॥  
 धावा बालि देखि सो भागा । मैं पुनि गयउँ बंधु संग लागा ॥  
 गिरिवर गुहाँ पैठ सो जाई । तव वाली मोहि कहा बुझाई ॥  
 परिखेसु मोहि एक पखवारा । नहिं आवौं तव जानेसु मारा ॥  
 मास दिवस तहँ रहेउँ खरारी । निसरी रुधिर धार तहँ भारी ॥  
 बालि हतेसि मोहि सारिहि आई । सिला देइ तहँ चलेउँ पराई ॥  
 मंत्रिन्ह पुर देखा विनु साई । दीन्हेउ मोहि राज बरिआई ॥  
 वाली ताहि सारि गृह आवा । देखि मोहि जियँ भेद बढ़ावा ॥  
 रिपु सम मोहि मारेसि अति भारी । हरि लीन्हेसि सर्वसु अरु नारी ॥  
 ताकें भय रघुवीर कृपाला । सकल भुवनमें फिरेउँ विहाला ॥



लि परम हित जासु प्रसादा। मिलेहु तुम्ह बिषादा॥  
 सपनें जेहि होइ लराई। जे स मन सकुचाई॥  
 अब प्र पाकरहु एहि भँी। सब तजि भजनु रौं दिन राती॥  
 सुनि विराग संजुत कपि बानी। बोले बिहँसि रा धनुपानी॥  
 कछु कहेहु सत्य सब सोई। सखा बचन मृषा न होई॥  
 नट मरकट इव सबहि नचावत। रामु ेस बेद अस गावत॥  
 लै सुग्रीव रघुनाथा। चले चाप गहि हाथा॥  
 रघुपति ग्रीव पठावा। गर्जेसि जाइ निकट पावा॥  
 सुनत बालि क्रोधातुर धावा। गहि कर चरन नारिसमुझावा॥  
 पति जिन्हहि मिलेउ सुग्रीवा। ते द्वौ बंधु तेज बल सींवा॥  
 कोसलेस सुत लछिमन रामा। कालहु जीति सकहि संग्रामा॥  
 दो०—कह वाली भीरु प्रिय समदरसी रघुनाथ ।

जौं कदाचि मोहि मारहिं तौ पुनि होउँ सनाथ ॥ ७ ॥

अस कहि चला महा अभिमानी। तन सुग्रीवहि जानी॥  
 भिरे उभौ वाली अति तर्जा। मुठिका मारि महाधुनि गर्जा॥  
 तव सुग्रीव विकल होइ भागा। मुष्टि प्रहार वज्र सम लगा॥  
 मैं जो कहा रघुवीर कृपाला। बंधु न होइ मोर यह काला॥  
 एकरूप तुम्ह भ्राता दोऊ। तेहि भ्रम तें नहिं मारेउँ सोऊ॥  
 कर परसा सुग्रीव सरीरा। तनु भा कुलिस गई सब पीरा॥  
 मेली कंठ सुमन कै माला। पठावा पुनि बल देइ विसाला॥  
 पुनि नाना विधि भई लराई। विटप ओट देखहिं रघुराई॥

दो०—बहु छल बल सुग्रीव कर हियँ हारा भय मानि ।

मारा बालि राम तव हृदय माझ सर तानि ॥ ८ ॥

परा बिकल महि मर के लागें । पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगें ॥

स्याम गात सिर जटा बनाएँ । अरुन नयन सर चाप चढ़ाएँ ॥

पुनि पुनि चितइ चरन चित दीन्हा । सुफल जन्म माना प्रभु चीन्हा

हृदयँ प्रीति मुख वचन कठोरा । बौला चितइ राम की ओरा ॥

धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईं । मारेहु मोहि व्याध की नाईं ॥

मैं वैरी सुग्रीव पिआरा । अवगुन कवन नाथ मोहि मारा ॥

अनुज बधू भगिनी सुत नारी । सुनु सठ कन्या सम ए चारी ॥

इन्हहि कुदृष्टि त्रिलोकइ जोई । ताहि बधे कछु पाप न होई ॥

मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना । नारि सिखावन करसि न काना ॥

मम भुजबल आश्रित तेहि जानी । मारा चहसि अधम अभिमानी ॥

दो०—सुनहु राम स्वामी सन चल न चातुरी मोरि ।

प्रभु अजहँ मैं पापी अंतकाल गति तोरि ॥ ९ ॥

सुनत राम अति कोमल बानी । बालि सीस परसेउ निज पानी ॥

अचल करीं तनु राखहु प्राना । बालि कहा सुनु कृपानिधाना ॥

जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं । अंत राम कहि आवत नाहीं ॥

जासु नाम बल संकर कासी । देत सवहि सम गति अविनासी ॥

मम लोचन गोचर सोइ आवा । बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा

छं०—सो नयन गोचर जासु गुन नित नेति कहि श्रुति गावहीं ।

जिति पवन मन गो निरम करि मुनि ध्यान करहुँ कपावहीं ॥



बालि परम हित जासु प्रसादा । मिलेहु राम तुम्ह समन बिषादा ॥  
 सपनें जेहि होइ लराई । जँस मन सकुचाई ॥  
 अब प्रभु कृपाकरहु एहि भँगी । सब तजि भजनु रौं दिन राती ॥  
 सुनि विराग संजुत कपि बानी । बोले विहँसि रा धनुपानी ॥  
 कछु कहेहु सत्य सब सोई । वचन मृषा न होई ॥  
 नट मरकट इव सबहि नचावत । रामु वेद अस गावत ॥  
 लै सुग्रीव रघुनाथा । चले चाप गहि हाथा ॥  
 तब रघुपति ग्रीव पठावा । गर्जेसि जाइ निकट पावा ॥  
 सुनत बालि क्रोधातुर धावा । गहि कर चरन नारि समुझावा ॥  
 पति जिन्हहि मिलेउ सुग्रीवा । ते द्वौ बंधु तेज बल सींवा ॥  
 कोसलेस सुत लछिमन रामा । कालहु जीति सकहि संग्रामा ॥

दो०—कह वाली भीरु प्रिय समदरसी रघुनाथ ।

जौं कदाचि मोहि मारहि तौ पुनि होउँ सनाथ ॥ ७ ॥

अस कहि चला महा अभिमानी । तन समान सुग्रीवहि जानी ॥  
 भिरे उभौ वाली अति तर्जा । मुठिका मारि महाधुनि गर्जा ॥  
 सुग्रीव विकल होइ भागा । मुष्टि प्रहार वज्र सम लागा ॥  
 मैं जो कहा रघुवीर कृपाला । बंधु न होइ मोर यह काला ॥  
 एकरूप तुम्ह भ्राता दोऊ । तेहि भ्रम तें नहिं मारेउँ सोऊ ॥  
 कर परसा सुग्रीव सरीरा । तनु भा कुलिस गई सब पीरा ॥  
 मेली कंठ सुमन कै माला । पठवा पुनि बल देइ विसाला ॥  
 पुनि नाना विधि भई लराई । विटप ओट देखहिं रघुराई ॥

दो०—बहु छल बल सुग्रीव कर हियँ हारा भय मानि ।

मारा बालि राम तब हृदय भाङ्ग सर तानि ॥ ८ ॥

परा विकल महि सर के लागें। पुनि उठि पैठ देखि प्रभु आगें ॥

स्याम गात सिर जटा बनाएँ। अरुन नयन सर चाप चढ़ाएँ ॥

पुनि पुनि चितइ चरन चित दीन्हा। सुफल जन्म माना प्रभु चीन्हा

हृदयँ प्रीति मुख बचन कठोरा। घोला चितइ राम की ओरा ॥

धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईं। मारेहु मोहि व्याध की नाई ॥

मैं वैरी सुग्रीव पिआरा। अघगुन कवन नाथ मोहि मारा ॥

अनुज बधू भगिनी सुत नारी। सुनु सठ कन्या सम ए चारी ॥

इन्हहि कुट्टि विलोकइ जोई। ताहि बधे कछु पाप न होई ॥

मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना। नारि सिखावन करसि न काना ॥

मम भुजबल आश्रित तेहि जानी। मारा चहसि अधम अभिमानी ॥

दो०—सुनहु राम स्वामी सन चल न चातुरी मोरि।

प्रभु अजहूँ मैं पापी अंतकाल गति तोरि ॥ ९ ॥

सुनत राम अति कोमल बानी। बालि सीस परसेउ निज पानी ॥

अचल करौं तनु राखहु प्राणा। बालि कहा सुनु कृपानिधाना ॥

जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं। अंत राम कहि आरत नाहीं ॥

जासु नाम बल संकर कारी। देत सबहि सम गति अविनामी ॥

मम लोचन गोचर सोइ आवा। बहुरि कि प्रभु अन बनिहि बनावा

छं०—सो नयन गोचर जासु गुन नित नेति काहि श्रुति गावहीं।

जिति पवन मन गो निरम काहि मृनि ध्यान कदई क नावहीं ॥





वरषहिं जलद भूमि निअराएँ। जथा नवहिं बुध विद्या पाएँ ॥  
 बूँद अघात सहहिं गिरि कैसेँ। खल के वचन संत सह जैसेँ ॥  
 द्र नदीं भरि चलीं तोराई। जस थोरेहुँ धन खल इतराई ॥  
 भूमि परत भा ढावर पानी। जनु जीवहि माया लपटानी ॥  
 समिटि समिटि जल भरहिं तलावा। जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा  
 सरिता जल जलनिधि महुँ जाई। होइ अचल जिमि जिव हरि पाई ॥

दो०—हरित भूमि तृन संकुल समुझि परहिं नहिं पंथ ।

जिमि पाखंड बाद तें गुप्त होहिं सदग्रंथ ॥ १४ ॥

दादुर धुनि चहु दिसा सुहाई। वेद पढ़हिं जनु वटु समुदाई ॥  
 नव पल्लव भए विटप अनेका। साधक मन जस मिलें विवेका ॥  
 अर्क जवास पात विनु भयऊ। जस सुराज खल उद्यम गयऊ ॥  
 खोजत हुँ मिलइ नहिं धूरी। करइ क्रोध जिमि धरमहि दूरी ॥  
 ससि संपन्न सोह महि कैसेी। उपकारी कै संपति जैसेी ॥  
 निसि घन खद्योत विराजा। जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा ॥  
 महावृष्टि चलि फूटि किआरीं। जिमि सुतंत्र भएँ विगरहिं नारीं ॥  
 शूषी निरावहिं चतुर किसाना। जिमि बुध तजहिं मोह मद माना ॥  
 देखिअत चक्रवाक खग नाहीं। कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं ॥  
 ऊपर वरपइ तृन नहिं जामा। जिमि हरिजन हियँ उपज न का  
 निविध जंतु संकुल महि भ्राजा। प्रजा वाढ़ जिमि पाइ सुराजा ॥  
 जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना। जिमि इंद्रिय गन उपजें ग्याना ॥

दो०—कनहुँ प्रदल वह मारुत जहँ तहँ येघ निलाहिं ।

जिमि कपूत के उपजें कुल सद्धर्म नसाहिं ॥ १५(क) ॥



दो०—भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रितु पाइ ।

सदगुर मिलें जाहिं जिमि संसय भ्रम समुदाइ ॥ १७ ॥

वरषा गत निर्मल रितु आई। सुधि न तात सीता कै पाई ॥  
 एक बार कैसेहुँ सुधि जानौं। कालहुँ जीति निमिष महुँ आनौं ॥  
 कतहुँ रहउ जौं जीवति होई। तात जतन करि आनउँ सोई ॥  
 सुग्रीवहुँ सुधि मोरि विसारी। पात्रा राज कोस पुर नारी ॥  
 जैहिं सायक सारा मैं वाली। तेहिं सर हतौं सूढ़ कहँ काली ॥  
 जासु कृपाँ छूटहिं मद मोहा। ता कहँ उमा कि सपनेहुँ कोहा ॥  
 जानहिं यह चरित्र मुनि ग्यानी। जिन्ह रघुवीर चरन रति मानी ॥  
 लल्लिमन क्रोधवंत प्रभु जाना। धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ॥

दो०—तव अनुजहि समुझावा रघुपति करुना सीव ।

भय देखाइ लै आवहु तात सखा सुग्रीव ॥ १८ ॥

इहाँ पवनसुत हृदयँ विचारा। राम काजु सुग्रीवँ विसारा ॥  
 निफट जाइ चरनन्हि सिरु नावा। चारिहु विधि तेहि कहि समुझावा  
 सुनि सुग्रीवँ परम भय माना। विषयँ मोर हरि लीन्हेउ ग्याना ॥

मारुतसुत दूत समूहा। पठवहु जहँ तहँ बानर जूहा ॥  
 कहहु पाख महुँ आव न जोई। मोरें कर ता कर बध होई ॥  
 तव हनुमंत बोलाए दूता। सब कर करि सनमान बहूता ॥  
 भय अरु प्रीति नीति देखराई। चले सकल चरनन्हि सिर नाई ॥  
 एहि अवसर लल्लिमन पुर आए। क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाए ॥

दो०—धनुष चढ़ाइ कहा तव जारि करउँ पुर छार ।

न्याकुल नगर देखि तव आयउ वालिकुमार ॥ १९ ॥

चरन नाइ सिरु विनती कीन्ही । लछिमन अभय बाँह तेहि दीन्ही ॥  
 क्रोधवंत लछिमन सुनि काना । कह कपीस अति भयँ अकुलाना ॥  
 सुनु हनुमंत संग लै तारा । करि विनती समुझाउ कुमारा ॥  
 तारा सहित जाइ हनुमाना । चरन वंदि प्रभु सुजस वखाना ॥  
 करि विनती मंदिर लै आए । चरन पखारि पलंग बैठाए ॥  
 तब कपीस चरनन्हि सिरु नावा । गहि भुज लछिमन कंठ लगावा ॥  
 नाथ विषय सम मद कछु नाहीं । मुनि मन मोह करइ छन माहीं ॥  
 सुनत विनीत वचन सुख पावा । लछिमन तेहि बहुविधि समुझावा  
 पवन तनय सब कथा सुनाई । जेहि विधि गए दूत समुदाई ॥  
 दो०—हरपि चले सुग्रीव तब अंगदादि कपि साथ ।

रामानुज आगें करि आए जहँ रघुनाथ ॥ २० ॥  
 नाइ चरन सिरु कह कर जोरी । नाथ मोहि कछु नाहिन खोरी ॥  
 अतिसय प्रबल देव तब माया । छूटइ राम करहु जौं दाया ॥  
 विषय बस्य सुर नर मुनि स्वामी । मैं पावँर पसु कपि अति कामो ॥  
 नारि नयन सर जाहि न लाग़ा । धोर क्रोध तम निसि जो जागा ॥  
 लोभ पाँस जेहिं गर न बँधाया । सो नर तुम्ह समान रघुराया ॥  
 यह गुन साधन तें नहिं होई । तुम्हरी कृपाँ पाव कोइ कोई ॥  
 तब रघुपति बोले मुसुकाई । तुम्ह प्रिय मोहि भरत जिमि भाई ॥  
 अब सोइ जतनु करहु मन लाई । जेहि विधि सीता कै सुधि पाई ॥

दो०—एहि विधि होत बतकही आए बानर जूथ ।

नाना चरन सकल दिसि देखिअ कीस बरूथ ॥ २१ ॥

बानर कटक उमा मैं देखा । सो मूरुख जो करन चह लेखा ॥



आइ राम पद नावहिं माथा । निरि बदनु सब होहिं ॥

कपि एक न सेना माहीं । राम कुसल जेहि पूछी नाहीं ॥  
 यह कछु नहिं प्रभुकइ अधिकार्इ । बिस्वरूप ब्यापक रघुरार्इ ॥  
 ठाढ़े जहँ तहँ आयसु पाई । कह सुग्रीव सबहि समुझार्इ ॥  
 राम काजु अरु मोर निहोरा । बानर जूथ जाहु चहुँ ओरा ॥  
 जनकसुता कहँ खोजहु जाई । स दिवस महँ आएहु भाई ॥  
 अवधि मेदिजो विनु सुधि पाएँ । आवइ बनिहि सो मोहि मराएँ ॥

दो०—बचन सुनत सब बानर जहँ तहँ चले तुरंत ।

तव सुग्रीवँ बोलाए अंगद नल हनुमंत ॥ २२ ॥

सुनहु नील अंगद हनुमाना । जामवंत मतिधीर सुजाना ॥  
 सकल सुभट मिलि दच्छिन जाहु । सीता सुधि पूँछेहु सब काहु ॥

क्रमबचन सो ज विचारेहु । रामचंद्र कर काजु सँवारेहु ॥  
 भानु पीठि सेइअ उर आगी । स्वामिहि सर्व भाव छल त्यागी ॥

तजि माया सेइअ परलोका । मिटहिं स भवसंभव सो ॥

देह धरे कर यह फलु भाई । भजिअ राम सब म विहाई ॥

सोइ गुनग्य सोई बढभागी । जो रघुवीर चरन अनुरागी ॥

आयसु मागि चरन सिरु नाई । चले हरपि सुमिरत रघुरार्इ ॥

पाछे पवन तनय सिरु नावा । जानि काज प्रभु निकट बोलावा ॥

परसा सीस सरोरुह पानी । करमुद्रिका दीन्हि जन जानी ॥

बहु प्रकार सीतहि समुझाएहु । कहि बल विरह वेगि तुम्ह आएहु ॥

हनुमत जन्म सुफल करि माना । चलेउ हृदयँ धरि कृपानिधाना ॥

जद्यपि प्रभु जानत सब ता । राजनीति राखत सुरत्राता ॥

दो०—चले सकल घन खोजत सरिता सर गिरि खोह ।

राम काज लयलीन मन विसरा तन कर छोह ॥ २३ ॥

कतहुँ होइ निसिचर मैं भेटा । प्रान लेहिं एक एक चपेटा ॥  
 बहु प्रकार गिरि कानन हेरहिं । कोउ मुनि मिलइ ताहि सब घेरहिं ॥  
 लागि तृषा अतिसय अबुलाने । मिलइ न जल घन गहन भुलाने ॥  
 मन हनुमान कीन्ह अनुमाना । मरन चहत सब विनु जल पाना ॥  
 चढ़ि गिरि सिखर चहुँ दिसि देखा । भूमि विवर एक कौतुक पेखा ॥  
 चक्रवाक यक हंस उड़ाहीं । बहुतक खग प्रविसहिं तेहि माहीं ॥  
 गिरि ते उतरि पवनसुत आवा । सब कहुँ ल सोइ विवर देखावा ॥  
 आगें कै हनुमंतहि लीन्हा । पैठे विवर विलंबु न कीन्हा ॥

दो०—दीख जाइ उपवन वर सर विगसित बहु कंज ।

मंदिर एक रुचिर तहँ वैठि नारि तप पुंज ॥ २४ ॥

दूरि ते ताहि सबन्हि सिरु नावा । पूछे निज वृत्तांत सुनावा ॥  
 तेहि तब कहा करहु जल पाना । खाहु सुरस सुंदर फल नाना ॥  
 मज्जनु कीन्ह मधुर फल खाए । तासु निकट पुनि सब चलि आए ॥  
 तेहि सब आपनि कथा सुनाई । मैं अब जाव जहाँ रघुनाई ॥  
 मूदहु नयन विवर तजि जाहू । पैहहु सीतहि जनि पछिताहू ॥  
 नयन मूदि पुनि देखहिं वीरा । ठाढ़े सकल सिंधु कें तीरा ॥  
 सो पुनि गई जहाँ रघुनाथा । जाइ कमल पद नाएसि माथा ॥  
 नाना भाँति विनय तेहि कीन्ही । अनपायनी भगति प्रभु दीन्ही ॥

दो०—बदरीवन कहुँ सो गई प्रभु अग्या धरि सीस ।

उर धरि राम चरन जुग जे वंदत अज ईस ॥

आइ राम पद नावहिं माथा । निरि बदनु होहिं ॥  
 अस कपि एक न सेना माहीं । राम कुसल जेहि पूछी नाहीं ॥  
 यह कछु नहिं प्रभु कइ अधिकार्ई । विस्वरूप ब्यापक रघुराई ॥  
 ठाढ़े जहँ तहँ आयसु पाई । कह सुग्रीव सबहि समुझाई ॥  
 राम काजु अरु मोर निहोरा । बानर जूथ जाहु चहुँ ओरा ॥  
 जनकसुता कहँ खोजहु जाई । स दिवस महँ आएहु भाई ॥  
 अवधि मेटिजो विनु सुधि पाएँ । आवइ बनिहि सो मोहि मराएँ ॥

दो०—वचन सुनत सब बानर जहँ तहँ चले तुरंत ।

तब सुग्रीवँ बोलाए अंगद नल हनुमंत ॥ २२ ॥

सुनहु नील अंगद हनुमाना । जामवंत मतिधीर सुजाना ॥  
 सकल सुभट मिलि दच्छिन जाहू । सीता सुधि पूँछेहु सब काहू ॥  
 क्रमवचनसो ज विचारेहु । रामचंद्र कर जु सँवारेहु ॥  
 भानु पीठि सेइअ उर आगी । स्वामिहि सर्व भाव छल त्यागी ॥  
 तजि माया सेइअ परलोका । मिटहिं स भवसंभव ॥  
 देह धरे कर यह फलु भाई । भजिअ राम सब म विहाई ॥  
 सोइ गुनग्य सोई वढ़भागी । जो रघुवीर चरन अनुरागी ॥  
 आयसु मागि चरन सिरु नाई । चले हरपि सुमिरत रघुराई ॥  
 पाछे पवन तनय सिरु नावा । जानि काज प्रभु निकट बोलावा ॥  
 परसा सीस सरोरुह पानी । करमुद्रिका दीन्हि जन जानी ॥  
 बहु प्रकार सीतहि समुझाएहु । कहि वल विरह वेगि तुम्ह आएहु ॥  
 हनुमत जन्म सुफल करि माना । चलेउ हृदयँ धरि कृपानिधाना ॥  
 जद्यपि प्रभु जानत सब । राजनीति राखत सुरत्राता ॥

राम काज कारन तनु त्यागी । हरि पुर गयउ परम वड़भागी ॥  
 सुनि खग हरप सोक जुत बानी । आवा निकट कपिन्ह भय मानी ॥  
 तिन्हहि अभय करि पूछेसि जाई । कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई ॥  
 सुनि संपाति बंधु कै करनी । रघुपति महिमा बहुविधि वरनी ॥  
 दो०—मोहि लै जाहु सिंधुतट देउँ तिलांजलि ताहि ।

वचन सहाइ करवि में पैहहु खोजहु जाहि ॥ २७ ॥

अनुज क्रिया करि सागर तीरा । कहि निज कथा सुनहु कपि बीरा ॥  
 हम द्वौ बंधु प्रथम तरुनाई । गगन गए रवि निकट उड़ाई ॥  
 तेज न सहि सक सो फिरि आवा । में अभिमानी रवि निअरावा ॥  
 जरे पंख अति तेज अपारा । परेउँ भूमि करि घोर चिकारा ॥  
 मुनि एक नाम चंद्रमा ओही । लागी दया देखि करि मोही ॥  
 बहु प्रकार तेहि म्यान सुनावा । देह जनित अभिमान छड़ावा ॥  
 ब्रैताँ ब्रह्म मनुज तनु धरिही । तासु नारि निसिचर पति हरिही ॥  
 तासु खोज पठइहि प्रभु दूता । तिन्हहि मिलें तैं होव पुनीता ॥  
 जमिहहि पंख करसि जनि चिंता । तिन्हहि देखाइ देहेसु तैं सीता ॥  
 मुनि कइ गिरा सत्य भइ आजू । सुनि मम वचन करहु प्रभु काजू ॥  
 गिरि त्रिकूट उपर बम लंका । तहँ रह रावन सहज असंका ॥  
 तहँ असोक उपवन जहँ रहई । सीता वैठि सोच रत अहई ॥  
 दो०—में देखउँ तुम्ह नाही गीधहि दृष्टि अपार ।

चूड़ भयउँ न त करतेउँ कलुक सहाय तुम्हार ॥ २८ ॥

जो नाथइ सत जोजन सागर । करइसो रामकाज मति आगर ॥  
 मोहि विलोकि धरहु मनधीरा । राम कृपाँ कस भयउ सरीरा ॥

इहाँ विचारहिं पि मन माहीं । बीती अवधि काज कछु नाहीं ॥  
 सब मिलि कहहिं परस्पर वाता । विनु सुधि लएँ करव का आता ॥  
 कह अंगद लोचन भरि वारी । दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी ॥  
 इहाँ न सुधि सीता कै पाई । उहाँ गएँ मारिहि कपिराई ॥  
 पिता वधे पर मारत मोही । राखा राम निहोर न ओही ॥  
 पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं । मरन भयउ कछु संसय नाहीं ॥  
 अंगद वचन सुनत कपि वीरा । बोलि न सकहिं नयन वह नीरा ॥  
 छन एक सोच मगन होइ रहे । पुनि अस वचन कहत सब भए ॥  
 हम सीता कै सुधि लीन्हें विना । नहिं जैहें जुवराज प्रवीना ॥  
 अस कहि लवन सिंधु तट जाई । बैठे कपि सब दर्भ डसाई ॥  
 जामवंत अंगद दुख देखी । कहीं कथा उपदेस विसेपी ॥  
 तात राम कहुँ नर जनि मानहु । निर्गुन ब्रह्म अजित अज जानहु ॥  
 हक सब सेवक अति बड़भागी । संतत सगुन ब्रह्म अनुरागी ॥  
 दो०—निज इच्छाँ प्रभु अवतरइ सुर महि धो द्विज लागि ।

सगुन उपासक संग तहँ रहहिं सोच्छ सब त्यागि ॥ २६ ॥

एहि विधि कथा कहहिं बहु भाँती । गिरि कंदराँ सुनी संपाती ॥  
 नाहेर होइ देखि बहु कीसा । मोहि अहार दीन्ह जगदीसा ॥  
 आजु सबहि कहँ भच्छन करऊँ । दिन बहु चले अहार विनु मरऊँ ॥  
 कबहुँ न मिल भरि उदर अहार । आजु दीन्ह विधि एकहिं वारा ॥  
 उरपे गीथ वचन सुनि क्राना । अब भा मरन सत्य हम जाना ॥  
 कपि सब उठे गीथ कहँ देखी । जामवंत मन सोच विसेपी ॥  
 कह अंगद विचारि मन माहीं । धन्य जटायू सम कोउ नाहीं ॥

राम काज कारन तनु त्यागी । हरि पुर गयउ परम बड़भागी ॥  
 सुनि खग हरप सोक जुत वानी । आवा निकट कपिन्ह भय मानी ॥  
 तिन्हहि अभय करि पूछेसि जाई । कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई ॥  
 सुनि संपाति बंधु कै करनी । रघुपति महिमा बहुविधि बरनी ॥

दो०—मोहि लै जाहु सिंधुतट देउँ तिलांजलि ताहि ।

वचन सहाइ करवि मैं पैहहु खोजहु जाहि ॥ २७ ॥

अनुज क्रिया करि सागर तीरा । कहि निज कथा सुनहु कपि वीरा ॥  
 हम द्वौ बंधु प्रथम तरुनाई । गगन गए रवि निकट उड़ाई ॥  
 तेज न सहि सक सो फिरि आवा । मैं अभिमानी रवि निअरावा ॥  
 जरे पंख अति तेज अपारा । परेउँ भूमि करि घोर चिकारा ॥  
 मुनि एक नाम चंद्रमा ओही । लागी दया देखि करि मोही ॥  
 बहु प्रकार तेहिं ग्यान सुनावा । देह जनित अभिमान छड़ावा ॥  
 जेताँ ब्रह्म मनुज तनु धरिही । तासु नारि निसिचर पति हरिही ॥  
 तासु खोज पठइहि प्रभु दूता । तिन्हहि मिलेँ तैं होव पुनीता ॥  
 जमिहहिं पंख करसि जनि चिंता । तिन्हहि देखाइ देहेसु तैं सीता ॥  
 छुनि कइ गिरा सत्य भइ आजू । सुनि मम वचन करहु प्रभु काजू ॥  
 गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका । तहँ रह रावन सहज असंका ॥  
 तहँ असोक उपवन जहँ रहई । सीता वैठि सोच रत अहई ॥  
 दो०—मैं देखउँ तुम्ह नाहीं गीधहि दृष्टि अपार ।

बूढ़ भयउँ न त करतेउँ कछुक सहाय तुम्हार ॥ २८ ॥

जो नाथइ सत जोजन सागर । करइ सो रामकाज मति आगर ॥

मोहि विलोकि धरहु मनधीरा । राम कृपाँ कसु भयउ सरीरा ॥

पापिउ जा कर नाम सुमिरहीं । अति अपार भवसागर तरहीं ॥  
 तामु दूत तुम्ह तजि कदराई । राम हृदयँ धरि करहु उपाई ॥  
 अस कहि गरुड़ गीध जब गयऊ । तिन्ह के मन अति विसमय भयऊ ॥  
 निज निज बल सब काहूँ भापा । पार जाइ कर संसय राखा ॥  
 जरठ भयउँ अब कहइ रिछैसा । नहिँ तनरहा प्रथम बल लेसा ॥  
 जबहिँ त्रिविक्रम भए खरारी । तब मैं तरुन रहेउँ बल भारी ॥  
 दो०—बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ सौं तनु वरनि न जाइ ।

उभय घरी महँ दीन्हों सात प्रदच्छिन धाइ ॥ २९ ॥

अंगद कहइ उँ मैं पारा । जियँ संसय कछु फिरती व ॥  
 जामवंत कह तुम्ह सब लायक । पठइअ किमि सबही कर ॥  
 कहइ रीछपति सुनु हनुमाना । का चुप साधि रहेहु बलवाना ॥  
 पवन तनय बल पवन समाना । बुधि विवेक विग्यान निधाना ॥  
 कवन सो काज कठिन जग माहीं । जो नहिँ होइ तात तुम्ह पाहीं ॥  
 राम काज लागि तव अवतारा । सुनतहिँ भयउ पर्वताकारा ॥  
 कनक वरन तन तेज विराजा । मानहुँ अपर गिरिन्ह कर राजा ॥  
 सिंहनाद करि वारहिँ वारा । लीलहिँ नाघउँ जलनिधि खारा ॥  
 सहित सहाय रावनहि मारी । आनउँ इहाँ त्रिकूट उपारी ॥  
 जामवंत मैं पूँछउँ तोही । उचित सिखावनु दीजहु मोही ॥  
 एतना करहु तात तुम्ह जाई । सीतहि देखि कहहु सुधि आई ॥  
 तब निज भुज बल राजिव नैना । कौतुक लागि संग कपि सेना ॥

छं०—कपि सेन संग सँघारि निसिचर रागु सीतहि आनिहैं ।  
 त्रैलोक पावन सुजसु सुर मुनि नारदादि बखानिहैं ॥

जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावई ।

रघुवीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावई ॥

दो०—भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरु नारि ।

तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिसिरारि ॥३०(क)॥

सो०—नीलोत्पल तन स्याम काम कोटि सोभा अधिक ।

सुनिअ तासु गुन ग्राम जासु नाम अघ खग बधिक ॥३०(ख)॥

मासपारायण, तेईसवाँ विश्राम



इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुपविध्वंसने

चतुर्थः सोपानः समाप्तः ।

( किष्किन्धाकाण्ड समाप्त )





## शरणागत विभीषण



श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रष्टु भंजन भवभीर ।  
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुवीर ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीनहो विजयते

# श्रीरामचरितमानस

पञ्चम सोपान

( सुन्दरकाण्ड )



श्लोक

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं  
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ।  
रामारख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं  
वन्देऽहं करुणाकरं रघुरं भूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥  
नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये  
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।  
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुञ्ज्व निर्भरां मे  
कामादिदोषरहितं उरु मानसं च ॥ २ ॥  
अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं  
दनुजननकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।

सकलगुणनिधानं

वानराणामधीशं

रघुपतिप्रियभक्तं

वातजातं

नमामि ॥ ३ ॥

जामवंत के वचन सुहाए । सुनि हनुमंत हृदय अति भाए ॥  
 तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई । सहि दुख कंद मूल फल खाई ॥  
 जब लगि आवौं सीतहि देखी । होइहि जु मोहि हरष विसेपी ॥  
 यह कहि नाइ सवन्हि कहूँ माथा । चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा ॥  
 सिंधु तीर एक भूधर सुंदर । कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर ॥  
 बार बार रघुवीर सँभारी । तरकेउ पवनतनय बल भारी ॥  
 जेहि गिरि चरन देइ हनुमंता । चलेउ सो गा पाताल तुरंता ॥  
 जिमि अमोघ रघुपति कर वाना । एही भाँति चलेउ हनुमाना ॥  
 जलनिधि रघुपति दूत विचारी । तैं मैनाक होहि श्रमहारी ॥

दो०—हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम ।

रामकाजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ विश्राम ॥ १ ॥

जात पवनसुत देवन्ह देखा । जानै कहूँ बल बुद्धि विसेपा ॥  
 सुरसा नाम अहिन्ह कै माता । पठइन्हि आइ कही तेहि वाता ॥  
 आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा । सुनत वचन कह पवनकुमारा ॥  
 राम काजु करि फिरि मैं आवौं । सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं ॥  
 तव तव वदन पैठिहउँ आई । सत्य कहउँ मोहि जान दे माई ॥  
 कवनेहुँ जतन देइ नहिँ जाना । ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना ॥  
 जोजन भरि तेहि वदनु पसारा । कपि तनु कीन्ह दुगुन विस्तारा ॥  
 सोरह जोजन मुख तेहि ठयऊ । तुरत पवनसुत वत्तिस भयऊ ॥  
 जस सुरसा वदनु वढ़ावा । तासु दून कपि रूप देखावा ॥



कहँ माल देह विसाल सैल समान अतिबल गर्जहीं ।  
 नाना अखारेन्ह भिरहिं बहुविधि एक एकन्ह तर्जहीं ॥ २ ॥  
 करि जतन भट कोटिन्ह विकट तन नगर चहुँ दिसि रच्छहीं ।  
 कहँ महिप मानुष धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं ॥  
 एहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछु एक है कही ।  
 रघुवीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिं सही ॥३॥

दो०—पुर रखवारं देखि बहु कपि मन कीन्ह विचार ।

अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार ॥ ३ ॥

यत्नक अमान रूप कपि धरी । लंकाहि चलेउ सुमिरि नरहरी ॥  
 नाम लंकिनी एक निसिचरी । सो कह चलेसि मोहि निंदरी ॥  
 जानैहि नहीं सरसु सठ मोरा । मोर अहार जहाँ लागि चोरा ॥  
 सुठिका एक महा कपि हनी । रुधिर वमत धरनीं ठनसनी ॥  
 पुनि संघारि उठी सो लंका । जोरि पानि कर विनय ससंका ॥  
 वच शबनहिं ब्रह्म वर दीन्हा । चलत विरंचिकहा मोहि चीन्हा ॥  
 विकल होसि नैं कपि कैं सारे । तव जानेसु निसिचर संघारे ॥  
 जात मोर अति पुन्य बहता । देखेउँ नयन राम कर दूता ॥

दो०—तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग ।

तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग ॥ ४ ॥

प्रनिसि नगर कीजे सब काजा । हृदयँ राखि कोसलपुर राजा ॥  
 गरल सुधा रिपु करहिं मितार्ई । गोपद सिंधु अनल मितलाई ॥  
 गरुड़ सुभेरु रेनु सम ताही । राम कृपा करि चितवा जाही ॥  
 अति लघु रूप धरेउ हनुमाना । पैठा नगर सुमिरि भगवाना ॥

मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा । देखै जहँ तहँ अगनित जोधा ॥  
 गयउ दसानन मंदिर माहा । अति विचित्र कहि जात सो नार्हा ॥  
 सयन किएँ देखा कपि तेही । मंदिर महँ न दीखि बैदेही ॥  
 भवन एक पुनि दीख सुहाया । हरि मंदिर तहँ भिन्न बनाया ॥  
 दो०—रामायुध अंजित गृह मोभा वरनि न जाड ।

नव तुलसिना वृंढ तहँ देखि हरप कपिराइ ॥ ५ ॥  
 लंका निसिचर निरुन निगसा । इहाँ ऊहाँ सजन कर चासा ॥  
 मन महँ तरक करै कपि लागा । तेहों समय विभीषनु जागा ॥  
 राम राम तेहि सुमिरन कीन्हा । हृदयँ हरप कपि सजन चीन्हा ॥  
 एहि सन हठि करि उँ पहिचानी । मातु ते होड न कारज हानी ॥  
 विप्र रूप धरि वचन मुनाए । भूत विभीषन उठि तहँ आए ॥  
 करि प्रनाम पूछी कुमलाई । विप्र कहहु निज कथा बुझाई ॥  
 की तुम्ह हरि दासन्ह महँ कोर्ड । मोरें हृदय प्रीति अति होर्ड ॥  
 की तुम्ह रामु दीन अनुरागी । आयहु मोहि करन बडभागी ॥  
 दो०—तत्र हनुमंत वही सत्र राम कथा निज नाम ।

सुन्त जुगल तन पुलक मन मगन सुमिरि गुन ग्राम ॥ ६ ॥  
 सुनहु पवनसुत रहनि हमारी । जिमिठसनन्हि महँ जीभ पिचारी  
 तात वचहु मोहि जानि अनाथा । करिहहि कृपा भानुकुल नाथा ॥  
 तामस तनु बह्यु साधन नाहीं । प्रीतिन पड सरोज मन भारी ॥  
 अब मोहि भा भरोस हनुमता । प्रिनुहरिकृपा मिलहि नहि मता ॥  
 जाँ रघुवीर अनुग्रह कीन्हा । ताँ तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा ॥  
 सुनहु विभीषन प्रभु कै गीती । करहि सदा सेनक पर प्रीति ॥

कहहु कवन मैं परम कुलीना । कपि चंचल सबहीं विधि हीना ॥  
लेइ जो नाम हमारा । तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा ॥

दो०—अस मैं अधम सखा सुनु मोहू पर रघुवीर ।  
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर ॥ ७ ॥

जानतहूँ अस स्वामि बिसारी । फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी ॥  
एहि विधि कहत राम गुन ग्रामा । पावा अनिर्वाच्य विश्रामा ॥  
पुनि सब कथा विभीषन कही । जेहि विधि जनकसुता तहँ रही ॥  
तव हनुमंत कहा सुनु भ्राता । देखी चहउँ जानकी माता ॥  
जुगुति विभीषन सकल सुनाई । चलेउ पवनसुत बिदा कराई ॥  
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ । वन असोक सीता रह जहवाँ ॥  
देखि मनहि महुँ कीन्ह प्रनामा । बैठेहिं वी जात निसि जामा ॥  
कृस तनु सीस जटा एक बेनी । जपति हृदयँ रघुपति गुन श्रेनी ॥

दो०—निज पद नयन दिँएँ मन राम पद कमल लीन ।

परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन ॥ ८ ॥

तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई । करइ विचार करौं का भाई ॥  
तेहि अवसर रावनु तहँ आवा । संग नारि बहु किएँ बनावा ॥  
वहु विधि खल सीतहि समुझावा । साम दान भय भेद देखावा ॥  
कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी । मंदोदरी आदि सब रानी ॥  
तव अनुचरीं करउँ पन मोरा । एक वार विलोकु मम ओरा ॥  
तुन धरि ओट कहति वैदेही । सुमिरि अवधपति परम सनेही ॥  
सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा । कवहुँ कि नलिनी करइ विकासा ॥  
अस मन समुझ कहति जानकी । खल सुधि नहिं रघुवीर वान की ॥

सठ सनै हरि आनेहि मोही । अधम निलज लाज नहि तौही ॥

दो०—आपुहि सुनि खद्योत सम रामहि भानु समान ।

परुष वचन सुनि काढ़ि असि बोला अति खिसिआन ॥ ९ ॥

सीता तैं मम कृत अपमाना । कटिहउँ तव सिर कठिन कृपाना ॥

नाहि त सपदि मानु मम बानी । सुमुखि होति न त जीवन हानी ॥

स्याम सरोज दाम सम सुंदर । प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर ॥

बो भुज कंठ कि तव असि घोरा । सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा ॥

चंद्रहास हरु मम परितापं । रघुपति विरह अनल संजातं ॥

सीतल निसित बहसि वर धारा । कह सीता हरु मम दुख भारा ॥

सुनत वचन पुनि मारन धावा । मयतनयाँ कहि नीति युझावा ॥

कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई । सीतहि बहु विधि त्रासहु जाई ॥

मास दिवस महँ कहा न माना । तौ मैं मारवि काढ़ि कृपाना ॥

दो०—भवन गयउ दसकंधर इहाँ पिसाचिनि चूंद ।

सीतहि त्रास देखावहिं धरहिं रूप बहु मंद ॥ १० ॥

त्रिजटा नाम राच्छसी एका । राम चरन रति निपुन विवेका ॥

संयन्हौ बोलि सुनाएसि सपना । सीतहि सेइ करहु हित अपना ॥

सपनै वानर लंका जारी । जातुधान सेना सब मारी ॥

खर आरुढ़ नगन दससीसा । मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ॥

एहि विधि सो दच्छिन दिसि जाई । लंका मनहुं विभीषन पाई ॥

नगर फिरी रघुवीर दोहाई । तव प्रभु सीता बोलि पठाई ॥

यह सपना मैं कहउँ पुकारै । होइहि सत्य गएँ दिन चारै ॥

तासु वचन सुनि ते सब डरिं । जनकसुता के चरन ॥





श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई । कहा सा प्रगट हाति किन भाई ॥  
 तत्र हनुमंत निरुट् चलि गयऊ । किणि पैठी मन विसमय भयऊ ॥  
 राम दूत मे मातु जानसी । मत्य सरथ करुनानिधान को ॥  
 यह मुद्रिका मातु मे आनी । दोन्दिगम तुम्ह रुई मडिदानी ॥  
 नर वानरहि संग कहु कैपे । कहो कया भड सगति जैमे ॥

दो०—कपि के वचन मप्रेम मुनि उपजा मन विस्वास ।

जाना मन क्रम वचन यह द्रुपामिनु का दास ॥ १३ ॥

हरिजन जानि प्रीति अति गाडो । नजरु नयन पुलकावलि पाडो ॥  
 बूडत मिग्ह जलपि हनुमाना । भयहु तात मा कहुँ जलजाना ॥  
 अत्र कहुँ कृसरु जाउ बलिहाग । अनुजमहित मुल भरन स्वगी ॥  
 कोमलचित कृपाल रघुराई । कपि केहि हेतु धरो निद्राई ॥  
 सहज वानि सेनक मुखदायक । करहुँक मुगति कात रघुनायक ॥  
 करहुँ नयन मम मातरु ताता । हाइहहिं निरखि स्याममृदु गाता ॥  
 वचनु न आय नयन भरे प्राग । अहह नाथ हा निपट विसारी ॥  
 देखि परम विरहाकुल सोता । बोला कपि मृदु वचन विनोता ॥  
 मातु कुमल प्रभु अनुज समेता । तव दुख दुखी सुकृपा निकेता ॥  
 जनि जननी मानहुँ जियँ उला । तुम्ह ते प्रेषु राम के दना ॥

दो०—रघुपति कर सङ्गु अत्र मुनु जनना धरि धीर ।

अत्र कहि कपि गद्गद भयउ भर विलाचन नाग ॥ १४ ॥

कहेउ राम वियोग तत्र माता । मो कहुँ मरुतु भए विपरोता ॥  
 नत्र तरु किमउष मनहुँ कृनान् । करुनिमा मम निमि ममि भान् ॥  
 कुपलय विपिन हुं वरन मरिमा । रागिद तरत तेरु जनु वरिमा ॥



अजर अमर गुननिधि सुत होहू । करहुँ बहुत रघुनायक छोहू ॥  
 करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना । निर्भर प्रेम भगन हनुमाना ॥  
 बार बार नाएसि पद सीसा । बोला बचन जोरि कर कोसा ॥  
 अब कृतकृत्य भयउँ में माता । आसिप तव अमोघ विख्याता ॥  
 सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा । लागि देखि सुंदर फल रुखा ॥  
 सुनु सुत करहिं निपिन रखारो । परम सुभट रजनीचर भारी ॥  
 तिन्ह कर भय माता मोहि नार्ही । जाँतुम्ह सुख मानहु मन माहीं ॥  
 दो०—देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकी जाहु ।

रघुपति चरन हृदयें धरि तात मधुर फल खाहु ॥ १७ ॥

चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा । फल खाएमि तरु तांरें लागा ॥  
 रहे तहाँ बहु भट रखारो । कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ॥  
 नाथ एक आना कपि भारी । तेहिं असोक वाटिका उजारो ॥  
 खाएसि फल अरु विटप उपारे । रच्छक मदिं मदिं महि डारे ॥  
 सुनि रागन पठए भट नाना । तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना ॥  
 सन रजनीचर कपि संघारे । गए पुकारत कछु अधमारे ॥  
 पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमारा । चला संग लै सुभट अपारा ॥  
 आयत देखि विटप गहि तर्जा । ताहि निपाति महापुनि गर्जा ॥  
 दो०—कछु मारेसि कछु मरेमि कछु मिलएमि धरि धूमि ।

कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मरुट बल भूमि ॥ १८ ॥

सुनि सुत बध लंकेम रिसाना । पठएमि भेघनाद बलवाना ॥  
 मारसि जनि सुत बाँधेसु ताही । देखिअ कपिहि कहाँ कर आही ॥  
 चला इंद्रजित अवलित जोधा । बंधु निभन सुनि उपजा क्रोधा ॥



जाकेँ बल विरंचि हरि ईसा । पालत सृजत हरत दससीसा ॥  
 जा बल सीस धरत सहसानन । अंडकोस समेत गिरि कानन ॥  
 धरइ जो विविध देह सुरत्राता । तुम्ह सेसठन्ह सिखावनु दाता ॥  
 हर कोदंड कठिन जेहि भंजा । तेहि समेत नृप दल मद गंजा ॥  
 खर दूपन त्रिसिरा अरु बाली । बधे सकल अतुलित बलसाली ॥

श्लोक—जाकेँ बल लबलेस तें जितेहु चराचर झारि ।

तासु दूत में जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि ॥ २१ ॥

जानउं में तुम्हारि प्रभुताई । सइसवाहु सन परी लराई ॥  
 समर बालि सन करि जपु पावा । मुनि कपि बचन विशसि विश्रावा ॥  
 खायउं फल प्रभु लागी भूँखा । कपि सुभाव तें तोरेउं रूखा ॥  
 सब केँ देह परम प्रिय स्वामी । मारहिं मोहि कुमारग गामी ॥  
 जिन्ह मोहि मारा ते में मारे । तेहि पर बाँधेउं तनयँ तुम्हारे ॥  
 मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा । कोन्ह चहउं निज प्रभु कर काजा ॥  
 विनतो करउं जोरि कर रावन । मुनहु मान तजि मोर सिखावन ॥  
 देखहु तुम्ह निज कुलहि विचारो । अम तजि भजहु भगत भय हारो ॥  
 जाकेँ डर अति काल डेगई । जां मुर अमुर चराचर खाई ॥  
 तासों बयरु कवहुँ नहिं काँजै । मोरे कइँ जानको दीजै ॥

श्लोक—प्रनतपाल रघुनायक कहना सिंधु ग्वरारि ।

गाँ सरन प्रभु राखिहँ तव अपराध विसारि ॥ २२ ॥

राम चरन पंकज उर धरहू । लंकाँ अचल राजु तुम्ह करहू ॥  
 रिपि पुलस्ति जमु विमल मयंका । तेहि ससि महुँ जनि होहु कलंका ॥  
 राम नाम बिनु गिरा न सोहा । देखु विचारि त्यागि मद मोहा ॥



रहा न नगर बसन घृत तेला । चाड़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला ॥  
 कौतुक कहँ आए पुरवासी । मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी ॥  
 बाजहिं ढोल देहिं सब तारी । नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी ॥  
 पात्रक जगत देखि हनुमंता । भयउ परम लघुरूप तुरंता ॥  
 निचुकि चढ़ेउ कपिकनक अटारी । भईं समीत निसाचर नारी ॥

दो०—हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास ।

करि गर्जा कपि बड़ि लाग अकास ॥२५॥

देह बिताल परम हरुआई । मंदिर तें मंदिर चढ़ धाई ॥  
 जरइ नगर भा लोग बिहाला । झपट लपट बहु कोटि कराला ॥  
 तात मातु हा मुनिअ पुकारा । एहिं अवसर को हमहि उपारा ॥  
 हमजो कहा यह कपि नहिं होई । वानर रूप धरें सुर कोई ॥  
 साधु अवग्या कर फलु ऐसा । जरइ नगर अनाथ कर जैसा ॥  
 जारा नगरु निमिष एक माहीं । एक विभीषन कर गृह नाही ॥  
 ता कर दूत अनल जेहिं सिरिजा । जरा न सो तेहि कारन गिरिजा ॥  
 उलटि पलटि लंका सब जारी । क्रुदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥

दो०—पूँछ बुझाइ खोइ थ्रम धरि लघु रूप बहोरि ।

जनकसुता कें आगे ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥२६॥

मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा । जैसे रघुनायक मोहि दीन्हा ॥  
 चूड़ामनि उतारि तब दयऊ । हरप समेत पवनसुत लयऊ ॥  
 कहेहु तात अस मौर प्रनामा । सब प्रकार प्रभु पूरनकामा ॥  
 दीन दयाल बिरिदु संभारी । हरहु नाथ मम संकट भारी ॥  
 तात सकसुत कथा मुनापहु । बान प्रताप प्रभुहि समुझाएहु ॥



मास दिवस भहुँ नाथु न आवा । तौ पुनि मोहि जिअत नहिं पावा ॥  
 कहु कपि केहि विधि राखौं प्राना । तुम्हहू तात कहत अब जाना ॥  
 तोहि देखि सीतलि भइ छाती । पुनि मो कहुँ सोइ दिनु सो राती ॥

दो०—जनकसुतहि समुझाइ करि बहु विधि धीरजु दीन्ह ।

चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह ॥२७॥

चलत महाधुनि गर्जेसि भारी । गर्भस्रवहिं सुनि निसिचर नारी ॥  
 नाधिं सिंधु एहि पारहि आवा । सबद किलिकिला कपिन्ह सुनावा  
 हरषे सब त्रिलोकि हनुमाना । नूतन जन्म कपिन्ह तत्र जाना ॥  
 मुख प्रसन्न तन तेज विराजा । कीन्हेसि रामचंद्र कर काजा ॥  
 मिले सकल अति भए सुखारी । तलफत मीन पाव जिमि वारी ॥  
 चले हरषि रघुनायक पासा । पूँछत कहत नवल इतिहासा ॥  
 तत्र मधुवन भीतर सब आए । अंगद संमत मधु फल खाए ॥  
 रखवारे जब बरजन लागे । मुष्टि प्रहार हनत सब भागे ॥

दो०—जाइ पुकारे ते सब वन उजार जुवराज ।

सुनि सुग्रीव हरष कपि करि आए प्रभु काज ॥२८॥

जौं न होति सीता सुधि पाई । मधुवन के फल सकहिं कि खाई ॥  
 एहि विधि मन विचार कर राजा । आइ गए कपि सहित समाजा ॥  
 आइ सबन्हि नावा पद सीसा । मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा ॥  
 पूँछी कुसल कुसल पद देखी । राम कृपाँ भा काजु बिसेपी ॥  
 नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना । राखे सकल कपिन्ह के प्राना ॥  
 सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ । कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ  
 राम कपिन्ह जब आवत देखा । किएँ काजु मन हरष बिसेपा ॥

फटिक सिला बैठे द्रौ भाई। परे सकल कपि चरनन्हि जाई ॥

दो०—प्रीति सहित सब भेटे रघुपति करुना पुंज ।

पूँछी कुसल नाथ अच कुसल देखि पद कंज ॥ २९ ॥

जामवंत कह सुनु रघुराया। जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया ॥

ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर। सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥

सोइ विजई विनई गुन सागर। तासु सुजसु त्रैलोक उजागर ॥

प्रभु की कृपा भयउ सबु काजू। जन्म हमार सुफल भा आजू ॥

नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी। सहसहुँ मुख न जाइ सो चरनी ॥

पवनतनय के चरित सुहाए। जामवंत रघुपतिहि सुनाए ॥

सुनत कृपानिधि मन अति भाए। पुनि हनुमान हरपि हियँ लाए ॥

कहहु तात केहि भौंति जानकी। रहति करति रच्छा स्वप्राण की ॥

दो०—नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट ।

लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्राण केहिं चाट ॥ ३० ॥

चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही। रघुपति हृदयँ लाइ सोइ लीन्ही ॥

नाथ जुगल लोचन भरि बारी। बचन कहे कलु जनककुमारी ॥

अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना। दीन बंधु प्रनतारति हरना ॥

मन क्रम बचन चरन अनुरागी। केहिं अपराध नाथ हीं त्यागी ॥

अवगुन एक मोर मैं माना। विछुरत प्राणन कीन्ह पयाना ॥

नाथ सो नयनन्हि को अपराधा। निसरत प्राण करहिं हठि बाधा ॥

घिरह अर्गनि तनु दूल समीरा। खास जरइ छन माहिं सीरा ॥

नयन स्रवाहिं जलु निज हित लागी। जरँ न पाव देह विरहागी ॥

सीता कै अति विपति विसाला। विनहिं कहे भलि दीन ॥

दो०—निमिप निमिप करुनानिधि जाहिं कलप सम वीति ।

वेगि चलिअ प्रभु आनिअ भुज बल खल दल जीति ॥ ३१ ॥

सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना । भरि आए जल राजिव नयना ॥  
 वचन कायँ मन मम गति जाही । सपनेहुँ बूझिअ विपति कि ताही ॥  
 कह हनुमंत विपति प्रभु सोई । जव तव सुमिरन भजन न होई ॥  
 केतिक वात प्रभु जातुधान की । रिपुहि जीति आनिबी जानकी ॥  
 सुनु कपि तोहि समान उपकारी । नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी ॥  
 प्रति उपकार करौं का तोरा । सनमुख होइ न सकत मन मोरा ॥  
 सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं । देखेउँ करि विचार मन माहीं ॥  
 पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता । लोचन नीर पुलक अति गाता ॥

दो०—सुनि प्रभु वचन विलोकि मुख गात हरपि हनुमंत ।

चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत ॥ ३२ ॥

वार वार प्रभु चहइ उठावा । प्रेम मगन तेहि उठव न भावा ॥  
 प्रभु कर पंकज कपि कें सीसा । सुमिरिसो दसा मगन गौरीसा ॥  
 सावधान मन करि पुनि संकर । लागे कहन कथा अति सुंदर ॥  
 कपि उठाइ प्रभु हृदयँ लगावा । कर गहि परम निकट वैठावा ॥  
 कहु कपि रावन पालित लंका । केहि विधि दहेउ दुर्ग अति वंका ॥  
 प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना । बोला वचन विगत अभिमाना ॥  
 साखामृग कै बड़ि मनुसाई । साखा तें साखा पर जाई ॥  
 नाधि सिंधु हाटकपुर जारा । निसिचर गन वधि विपिन उजारा ॥  
 तव प्रताप रघुराई । नाथ न कहू मोरि प्रभुताई ॥

दो०-ता कहूँ प्रभु कछु अगम नहिं जा परतुम्ह अनुकूल ।

तव प्रभावं बड़वानलहिं जारि सकइ खलु तूल ॥३३॥

नाथ भगति अति सुखदायनी । देहु कृपा करि अनपायनी ॥

सुनि प्रभु परम सरल कपिवानी । एवमस्तु तव कहेउ भवानी ॥

उमा राम सुभाउ जैहिं जाना । ताहि भजनु तजि भावन आना ॥

यह संवाद जासु उर आवा । रघुपति चरन भगति सोइ पावा ॥

सुनि प्रभु वचन कहहिं कपिवृंदा । जय जय जय कृपाल सुखकंदा ॥

तव रघुपति कपिपतिहिं बोलावा । कहा चलै कर करहु बनावा ॥

अब विलंबु केहि कारन कीजे । तुरत कपिन्ह कहूँ आयसु दीजे ॥

कौतुक देखि सुमन बहु चरपी । नभ तें भवन चले सुर हरपी ॥

दो०-कपिपति बेगि बोलाए आए जूथप जूथ ।

नाना चरन अतुल बल बानर भालु बरूथ ॥३४॥

प्रभु पद पंकज नावहिं सीसा । गर्जहिं भालु महाबल कीसा ॥

देखी राम सकल कपि सेना । चितइ कृपा करि राजिव नैना ॥

राम कृपा बल पाइ कपिदा । भए पच्छजुत मनहुँ गिरिदा ॥

हरपि राम तव कीन्ह पयाना । सगुन भए सुंदर सुभ नाना ॥

जासु सकल मंगलमय कीती । तानु पयान सगुन यह नीती ॥

प्रभु पयान जाना वैदेही । फरकि धाम अँग जनु कहि देहौ ॥

जोइ जोइ सगुन जानकिहिं होई । असगुन भयउ रावनहिं सोई ॥

चला कटकु को चरनें पारा । गर्जहिं बानर भालु अपारा ॥

नख आयुध गिरि पादपधारी । चले गगन महि इच्छाचारी ॥

केहरिनाद भालु कपि कतहौं । डगमगाहिं दिग्गज चिक्करी ॥

छं०—चिकरहिं दिग्गज डोल महि गिरिलाल सागर खरभरे ।  
 मन हरष सभ गंधर्व सुर मुनि नाग किंनर दुखटरे ॥  
 कटकटहिं मर्कट विकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं ।  
 जय राम प्रवल प्रताप कोसलनाथ गुन गन गावहीं ॥ १ ॥  
 सहि सक न भार उदार अहिपति वार वारहिं मोहई ।  
 गह दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ट कठोर सो किमि सोहई ॥  
 रघुवीर रुचिर प्रयान प्रस्थिति जानि परम सुहावनी ।  
 जनु कमठ खर्पर सर्पराज सो लिखत अविचल पावनी ॥ २ ॥

दो०—एहि विधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर ।  
 जहँ तहँ लागे खान फल भालु विपुल कपि वीर ॥३५॥

उहाँ निसाचर रहहिं ससंका । जव तें जारि गयउ कपि लंका ॥  
 निज निज गृहँ सब करहिं विचारा । नहिं निसिचर कुल के उवारा ॥  
 जासु दूत बल वरनि न जाई । तेहि आएँ पुर कवन भलाई ॥  
 दूतिन्ह पुरजन बानी । मंदोदरी अधिक अकुलानी ॥  
 रहसि पग लागी । न नोति रस पागी ॥  
 कंत वरिहरहू । हित हियँ धरहू ॥  
 समुझत करनी । र वरनी ॥  
 तासु ना । भलाई ॥  
 तव कुल । आई ॥  
 उ ना । कोन्हें ॥

श्रवन सुनी सठ ता करि बानी। मिहसा जगत विदित अभिमानी  
 सभय सुभाउ नारि कर साचा। मंगल महँ भय मन अति काचा ॥  
 जौं आयड मर्कट कटकाई। जिअहिं पिचारे निसिचर खाई ॥  
 कंपहिं लोकष जाका त्रासा। तासु नारि सभित बडि हासा ॥  
 अस कहि मिहसिताहि उरलाई। चलेउ सभों ममता अधिकाई ॥  
 मंदोदरी हृदयें कर चिंता। भयउ कंत पर विधि पिपरीता ॥  
 बैठेउ सभा खगरि असि पाई। सिंधु पार सेना सत्र आई ॥  
 ब्रह्मेसि सचिउचित मत कहहू। ते सत्र हँसे मष्ट करि रहहू ॥  
 जितेहु सुरासुर तत्र श्रम नाही। नर वानर केहि लेखे माहीं ॥

दो०—सचिउ वैद गुर तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस ।

राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास ॥३७॥

सोइ रामन कहँ वनी सहाई। अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई ॥  
 अपसर जानि विभीषनु आया। भ्राता चरन सीसु तेहिं नाया ॥  
 पुनि सिरु नाइ वैठ निज आसन। बोला वचन पाइ अनुसासन ॥  
 जौ कृपाल पूँछिहु मोहि वाता। मति अनुरूप कहँ हित ताता ॥  
 जो आपन चाहै कल्याना। सुजसु सुमति सुभगति सुख नाना  
 सो परनारि लिलार गोसाईं। तजउ चउथि के चंद फि नाई ॥  
 चौदह भुवन एक पति होई। भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई ॥  
 गुन सागर नागर नर जोऊ। अल्प लोभ भल कहइ न कोऊ ॥

दो०—काम क्रोध मद लोभ सत्र नाथ नरक के पंथ ।

सत्र परिहरि रघुनीरहि भजहु भजहिं जेहि संत ॥३८॥

तात गम नहिं नर भूपाला। भुवनेश्वर कालहु कर काला ॥

अनामय अज भगवंता । व्यापक अजित अनादि अनंता ॥  
 गो द्विज धेनु देव हितकारी । कृपा सिंधु मानुष तनुधारी ॥  
 जन रंजन भंजन खल ब्राता । वेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता ॥  
 ताहि वयरु तजि नाइअ माथा । प्रनतारति भंजन रघुनाथा ॥  
 देहु नाथ प्रभु कहँ वैदेही । भजहु राम विनु हेतु सनेही ॥  
 सरन गएँ प्रभु ताहु न त्यागा । विख द्रोह कृत अघ जेहि लागा ॥  
 जासु नाम त्रय ताप नसावन । सोइ प्रभु प्रगट समुझु जियँ रावन ॥

दो०—बार बार पद लागउँ चिनय करउँ दससीस ।

परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस ॥३९(क)॥

मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई यह चात ।

तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाइ सुअवसरु तात ॥३९(ख)॥

माल्यवंत अति सचिव सयाना । तासु वचन मुनि अति सुख माना  
 तात अनुज तव नीति विभूषन । सो उर धरहु जो कहत विभीषन ॥  
 रिपु उतकरप कहत सठ दोऊ । दूरि न करहु इहाँ हइ कोऊ ॥  
 माल्यवंत गृह गयउ वहोरी । कहइ विभीषनु पुनि कर जोरी ॥  
 सुमति कुमति सब कें उर रहहीं । नाथ पुरान निगम अस कहहीं ॥  
 जहाँ सुमति तहँ संपति नाना । जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना ॥  
 तव उर कुमति बसी विपरीता । हित अनहित मानहु रिपु ग्रीता ॥  
 कालराति निसिचर कुल केरी । तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥

दो०—तात चरन गहि मागउँ राखहु मार दुलार ।

सीता देहु राम कहँ अहित न होइ तुम्हार ॥ ४० ॥

पुरान श्रुति संमत बानी । कही विभीषन नीति बखानी ॥

सुनत दसानन उठा रिसाई। खल तोहि निकट मृत्यु अत्र आई ॥  
 जिअसि सदा सठ मोर जिआवा। रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा ॥  
 कहसि न खल अस को जग माहीं। भुज बल जाहि जिता में नाहीं ॥  
 मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती। सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती ॥  
 अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा। अनुज गहे पद चारहिं वारा ॥  
 उमा संत कइ इहइ बड़ाई। मंद करत जो करइ भलाई ॥  
 तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा। रामु भजें हित नाथ तुम्हारा ॥  
 सचिव संग लै नभ पथ गयऊ। सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ ॥

दो०—रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि ।

में रघुवीर सरन अब जाऊँ देहु जनि खोरि ॥ ४१ ॥

अस कहि चला विभीषनु जवहीं। आयूहीन भए सब तवहीं ॥  
 साधु अवग्या तुरत भवानी। कर कल्याण अखिल कैहानी ॥  
 रावन जवहिं विभीषन त्यागा। भयउ विभव विनु तवहिं अभागा ॥  
 चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं। करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥  
 देखिहउँ जाइ चरन जलजाता। अरुन मृदुल सेवक सुखदाता ॥  
 जे पद परसि तरी रिपिनारी। दंडक कानन पावनकारी ॥  
 जे पद जनकसुताँ उर लाए। कपट कुरंग संग धर धाए ॥  
 हर उर सर सरोज पद जेई। अहोभाग्य में देखिहउँ तेई ॥

दो०—जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि भरतु रहे मन लाइ ।

ते पद आजु विलोकिहउँ इन्ह नयनन्हि अब जाइ ॥ ४२ ॥

एहि विधि करत सप्रेम विचारा। आयउ सपदि सिंधु एहिं पारा ॥  
 कपिन्ह विभीषनु आवत देखा। जाना कोउ रिपु दूत विसेपा ॥





भुज प्रलंब कंजारुन लोचन । स्यामल गात प्रनत भय मोचन ॥  
 सिंघ कंध आयत उर सोहा । आनन अमित मदन मन मोहा ॥  
 नयन नीर पुलकित अति गाता । मन धरि धीर कही मृदु वाता ॥  
 नाथ दसानन कर मैं भ्राता । निसिचर वंस जनम सुरवाता ॥  
 सहज पापप्रिय तामस देहा । जथा उल्लूकहि तम पर नेहा ॥

दो०—श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर ।

त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुवीर ॥ ४५ ॥

अस कहि करत दंडवत देखा । तुरत उठे प्रभु हरष विसेपा ॥  
 दीन वचन सुनि प्रभु मन भावा । भुज विसाल गहि हृदयँ लगावा ॥  
 अनुज सहित मिलि ढिग वैठारी । बोले वचन भगत भयहारी ॥  
 कहु लंकैस सहित परिवारा । कुसल कुठाहर वास तुम्हारा ॥  
 खल मंडलीं बसहु दिनु राती । सखा धरम निवहइ केहि भाँती ॥  
 मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती । अति नय निपुन न भाव अनीती ॥  
 वरु भल वास नरक कर ताता । दुष्ट संग जनि देइ विधाता ॥  
 अब पद देखि कुसल रघुराया । जौ तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया ॥

दो०—तव लागि कुसल न जीव कहँ सपनेहुँ मन विश्राम ।

जव लागि भजत न राम कहँ सोक धाम तजि काम ॥ ४६ ॥

तव लागि हृदयँ बसत खल नाना । लोभ मोह मच्छर मद माना ॥  
 जव लागि उर न बसत रघुनाथा । धरँ चाप सायक कटि भाथा ॥  
 ममता तरुन तमी अँधिआरी । राग द्वेष उल्लूक सुखकारी ॥  
 तव लागि बसति जीव मन माहीं । जव लागि प्रभु प्रताप रवि नाहीं ॥  
 अब मैं कुसल मिटे भय भारे । देखि राम पद कमल तुम्हारे ॥



एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा। मागा तुरत सिंधु कर नीरा ॥  
जदपि सखा तव इच्छा नाहीं। मोर दरसु अमोघ जग माहीं ॥  
अस कहि राम तिलक तेहि सारा। सुमन घृष्टि नभ भई अपारा ॥

दो०—रावन क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड ।

जरत विभीपनु राखेउ दीन्हेउ राजु अखंड ॥४९(क)॥

जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिऐँ दस माथ ।

सोइ संपदा विभीपनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ ॥४९(ख)॥

अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना। ते नर पसु त्रिनु पूँछ विषाना ॥  
निज जन जानि ताहि अपनावा। प्रभु सुभाव कपिकुल मन भावा ॥  
पुनि सर्वग्य सर्व उर वासी। सर्वरूप सब रहित उदासी ॥  
बोले वचन नीति प्रतिपालक। कारन मनुज दनुज कुल घालक ॥  
सुनु कपीस लंकापति वीरा। केहि विधितरिअ जलधि गंभीरा ॥  
संकुल मकर उरग शप जाती। अति अगाध दुस्तर सब भाँती ॥  
कह लंकेस सुनहु रघुनायक। कोटि सिंधु सोपक तव सायक ॥  
जद्यपि तदपि नीति असि गाई। विनय करिअ सागर सन जाई ॥

दो०—प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि कहिहि उपाय विचारि ।

त्रिनु प्रयास सागर तरिहि सकल भालु कपिधारि ॥ ५० ॥

सखा कही तुम्ह नीकि उपाई। करिअ दैव जौं होइ महाई ॥  
मंत्र न यह लछिमन मन भावा। राम वचन सुनि अति दुख पावा ॥  
नाथ दैव कर कवन भरोसा। सोपिअ सिंधु करिअ मन रोमा ॥  
कादर मन कहुँ एक अधारा। दैव दैव आलसी पुकारा ॥  
सुनत विहसि बोले रघुवीरा। ऐसेहिं करव धरहु मन धीरा ॥

अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई। सिंधु समीप गए रघुराई ॥  
 प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई। बैठे पुनि तट दर्भ डसाई ॥  
 जबहिं विभीषन प्रभु पहिं आए। पाछें रावन दूत पठाए ॥  
 दो०—सकल चरित तिन्ह देखे धरें कपट कपि देह ।

प्रभु गुन हृदयँ सराहहिं सरनागत पर नेह ॥ ५१ ॥

प्रगट बखानहिं राम सुभाऊ। अति सप्रेम गा विसरि दुराऊ ॥  
 रिपु के दूत कपिन्ह तत्र जाने। सकल बाँधि कपीस पहिं आने ॥  
 कह सुग्रीव सुनहु सब बानर। अंग भंग करि पठवहु निसिचर ॥  
 सुनि सुग्रीव वचन कपि धाए। बाँधि कटक चहु पास फिराए ॥  
 बहु प्रकार मारन कपि लागे। दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥  
 जो हमार हर नासा काना। तेहि कोसलाधीस कै आना ॥  
 सुनि लछिमन सब निकट बोलाए। दयालागि हँसि तुरत छोड़ाए ॥  
 रावन कर दीजहु यह पाती। लछिमन वचन बाचु कुलघाती ॥

दो०—कहेहु मुखागर मूढ़ सन मम संदेसु उदार ।

सीता देइ मिलहु न त आवा कालु तुम्हार ॥ ५२ ॥

तुरत नाइ लछिमन पद माथा। चले दूत वरनत गुन गाथा ॥  
 कहत राम जसु लंकाँ आए। रावन चरन सीस तिन्ह नाए ॥  
 विहसि दसानन पूँछी वाता। कहसिन सुक आपनि कुसलाता ॥  
 पुनि कहु खवरि विभीषन केरी। जाहि मृत्यु आई अति नेरी ॥  
 करत राज लंका सठ त्यागी। होइहि जब कर कीट अभागी ॥  
 पुनि कहु भालु कीस कटकाई। कठिन काल प्रेरित चलि आई ॥  
 जिन्ह के जीवन कर रखवारा। भयउ मृदुल चित सिंधु विचारा ॥

कहु तपमिन्ह के इन्द्र इन्द्रे जे के इन्द्र इन्द्र उति नोरी ॥

दो०-की भड भेटे लि लिनि इन्द्र इन्द्र इन्द्र इन्द्र इन्द्र ॥

कहमि न सिद्ध इन्द्र इन्द्र इन्द्र इन्द्र इन्द्र इन्द्र ॥५३॥

नाथ कृपा करि इच्छे इच्छे इच्छे इच्छे इच्छे इच्छे ॥

मिला जाड जव जनु जनु जनु जनु जनु जनु नेदि नाग ॥

रामन दूत हमहि नुलि चन्द्र चन्द्र चन्द्र चन्द्र चन्द्र चन्द्र ॥

श्रवन नामिका कटि नमो नमो नमो नमो नमो नमो ॥

पूँछिहु नाथ गम कटि कटि कटि कटि कटि कटि ॥

नाना वगन भावु करि धरि विच्छन्न निमाल भयकारी ॥

जेहिं पुर दहेउ हतेउ सुत तेग। मज्ज करिन्ह मट तेहि बलु थोरा ॥

अमित नामभट कठिन जगला। जग्नि नागइल विपुल विमाला ॥

दो०-द्विजिद मयंद नील नल जंगद गद विक्रमामि ।

दप्रिमुख केइनि निमठ मठ जामवंत उलगामि ॥५४॥

ए कपि सत्र सुग्रीव ममाना। इन्ह मम कोटिन्ह गनड कोनाना ॥

राम कृपा अतुलित उल तिन्हर्हा। तून ममान त्रैलोकहि गनर्हा ॥

उम मे सुना श्रवन दमकंश। पदुम अठागह जयप वेदर ॥

नाथ कटक महँ मो कपि नार्हा। जान तुम्हहि जीते रन मारहा ॥

परम प्रोध मीजहि सत्र हाथा। जायसु पै न दहि रजुनाथा ॥

सोपहि सिधु सहित झप ज्याला। पृगहि न त भरिकुपर प्रिसाला ॥

मदि गर्द मिलयहि दसमीमा। ऐसेइ उचन रहहि सत्र कीसा ॥

गर्जहि तर्जहि महज उमरा। मानहु ग्रमन चहत हहिलरा ॥

दो०—सहज खर कपि भालु सब पुनि सिर पर प्रभु राम ।

रावन काल कोटि कहूँ जीति सकहिं संग्राम ॥ ५५ ॥

राम तेज बल बुधि विपुलाई । सेष सहस सत सकहिं न गाई ॥  
 शक सर एक सोपि सत सागर । तव भ्रातहि पूँछेउ नय नागर ॥  
 तासु वचन सुनि सागर पाहीं । मागत पंथ कृपा मन माहीं ॥  
 सुनत वचन विहसा दससीसा । जौं असि मति सहाय कृत कीसा ॥  
 सहज भीरु कर वचन दृढ़ाई । सागर सन ठानी मचलाई ॥  
 मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई । रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई ॥  
 सचिव समीत विभीषन जाकें । विजय विभूति कहाँ जग ताकें ॥  
 सुनि खल वचन दूत रिस बाढ़ी । समय विचारि पत्रिका काढ़ी ॥  
 रामानुज दीन्हीं यह पाती । नाथ वचाइ जुड़ावहु छाती ॥  
 विहसि वाम कर लीन्ही रावन । सचिव बोलि सठ लाग वचावन ॥

दो०—ब्रातन्ह मनहि रिझाइ सठ जनि घालसि कुल खीस ।

राम विरोध न उवरसि सरन विष्णु अज ईस ॥ ५६(क) ॥

की तजि मान अनुज इव प्रभु पद पंकज भृंग ।

होहि कि राम सरानल खल कुल सहित पतंग ॥ ५६(ख) ॥

सुनत सभय सन मुख मुसुकाई । कहत दसानन सवहि सुनाई ॥  
 भूमि परा कर गहत अकासा । लघु तापस कर वाग विलासा ॥  
 कह मुक नाथ सत्य सब वानी । समुझहु छाड़ि प्रकृति अभिमानी ॥  
 सुनहु वचन मम परिहरि क्रोधा । नाथ राम सन तजहु विरोधा ॥  
 अति कोमल रघुनीर सुभाऊ । जद्यपि अखिल लोक कर राऊ ॥

मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिही । उर अपराध न एकउ धरिही ॥  
 जनकसुता रघुनाथहि दीजे । एतना कहा मोर प्रभु कीजे ॥  
 जब तेहि कहा देन वैदेही । चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही ॥  
 नाइ चरन सिरु चला सो तहाँ । कृपासिंधु रघुनायक जहाँ ॥  
 करि प्रनामु निज कथा सुनाई । राम कृपाँ आपनि गति पाई ॥  
 रिषि अगस्ति कीं साप भवानी । राछस भयउ रहा मुनि ग्यानी ॥  
 बंदि राम पद चारहि चारा । मुनि निज आश्रम कहुँ पगु धारा

दो०—विनय न मानत जलधि जड़ गएतीनि दिन बीति ।

बोले राम सकोप तब भय निनु होइ न प्रीति ॥५७॥

लछिमन वान सरासन आनू । सोपों वारिधि विसिख कृसानू ॥  
 सठ सन विनय कुटिल सन प्रीती । सहज कृपन सन सुंदर नीती ॥  
 ममता रत सन ग्यान कहानी । अति लोभी सन विरति बखानी ॥  
 क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा । उत्तर बीज वएँ फल जथा ॥  
 अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा । यह मत लछिमन के मन भावा ॥  
 संधानेउ प्रभु विसिख कराला । उठी उदधि उर अंतर ज्वाला ॥  
 मकर उरग झप गन अकुलाने । जरत जंतु जलनिधि जव जाने ॥  
 कनक धार भरि मनि गन नाना । विप्र रूप आयउ तजि माना ॥

दो०—काटेहि पइ कदरी फरइ कौटि जतन कोउ सींच ।

विनय न मान खगेस मुनु टाटेहि पइ नव नीच ॥ ५८ ॥

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे । छमहु नाथ सब अवगुन मेरे ॥  
 गगन समीर अनल जल धरनी । इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी ॥





दो०-सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ।  
सादर मुनर्हि ते तरर्हि भव सिंधु विना जलजान ॥ ६० ॥

मासपारायण, चौवीसवाँ विश्राम

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकटुपविध्वंसने  
पञ्चमः सांपानः समाप्तः ।

( सुन्दरकाण्ड समाप्त )





श्रीभगवान नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

# श्रीरामचरितम स



पष्ठ सोपान



( लङ्काकाण्ड )



श्लोक

रामं कामारिसेच्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं  
योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारम् ।  
मायातीतं सुरेशं स्वलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दकदेवं  
वन्दे कन्दावदातं सरसिजनयनं देवपूर्वाशरूपम् ॥ १ ॥

शङ्खेन्द्राभमतीवसुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं  
कालव्यालकरालभूपगधरं गङ्गाशशाङ्कप्रियम् ।  
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं  
नौमीत्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं कन्दर्पहं शङ्करम् ॥ २ ॥

यो ददाति भक्तां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभम् ।

खलानां दण्डकृत्योऽर्मा शङ्करः शं तनोतु मे ॥ ३ ॥

दो०—लव निमेष परमानु जुग वरप कल्प मर चंड ।

भजसि न मन तेहि राम को फालु जामु फादंड ॥



सिव द्रोही मम भगत कहावा । सो नर सपनेहुँ मोहि न पावा ॥  
 संकर विमुख भगति चह मोरी । सो नारकी मूढ़ मति थोरी ॥  
 दो०—संकरप्रिय मम द्रोही सिव द्रोही मम दास ।

ते नर करहि कल्प भरि घोर नरक महुँ वास ॥ २ ॥

जे रामेस्वर दरसनु करिहहिं । ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं ॥  
 जो गंगाजलु आनि चढ़ाइहि । सो साजुज्य मुक्ति नर पाइहि ॥  
 होइ अकाम जो छल तजि सेइहि । भगति मोरि तेहि संकर देइहि ॥  
 मम कृत सेतु जो दरसनु करिही । सो विनु थम भवसागर तरिही ॥  
 राम वचन सव के जिय भाए । मुनिवर निज निज आश्रम आए ।  
 गिरिजा रघुपति कै यह रीती । संतत करहिं प्रनत पर प्रीती ॥  
 चाँधा सेतु नील नल नागर । राम कृपाँ जसुं भयउ उजागर ॥  
 बूढ़हिं आनहि वोरहिं जेई । भए उपल वोहित सम तेई ॥  
 महिमा यह न जलधि कइ वरनी । पाहन गुन न कपिन्ह कइ करनी ॥

दो०—श्री रघुवीर प्रताप ते सिंधु तरे पापान ।

ते मतिमंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन ॥ ३ ॥

चाँधि सेतु अति मुटढ़ बनावा । देखि कृपानिधि के मन भावा ॥  
 चली सेन कलु वरनि न जाई । गर्जहिं मर्कट भट समुदाई ॥  
 सेतुबंध डिग चढ़ि रघुसाई । चितव कृपाल सिंधु बहुताई ॥  
 देखन कहुँ प्रभु करुना कंदा । प्रगट भए सव जलचर वृंदा ॥  
 मकर नक्र नाना श्लष व्याला । सत जोजन तन परम विसाला ॥  
 अइसेउ एक तिन्हहि जे खाहीं । एकन्ह के डर तेपि डेराहीं ॥  
 प्रभुहि विलोकहिं दरहिं न टारे । मन हरपित सव भए सुखारे ॥



अति बल मधु कँठभ जेहि मारै । महापीर दितिमुत सघार ॥  
 जेहि बलि बंधि सहस भुज मारा । सोइ अन्तरेउ हरन महि भारा ॥  
 तासु विरोध न कीजिअ नाथा । काल करम जिय जाके हाथा ॥  
 दो०—रामहि सौपि जानकी नाइ कमल पद माथ ।

सुत कहँ राज समर्पि बन जाइ भजिअ रघुनाथ ॥ ६ ॥

नाथ दीनदयाल रघुराई । वाघउ मनमुख गाँ न खाई ॥  
 चाहिअ करन सो सत्र करि धीते । तुम्ह सुर असुर चगचर जीते ॥  
 संत कहहि असि नीति दसानन । चौथे पन जाइहि नृप कानन ॥  
 तासु भजनु कीजिअ तहँ भर्ता । जो वर्ता पालक सहर्ता ॥  
 सोइ रघुपीर प्रनत अनुरागी । भन्हु नाथ ममतासत्र त्यागी ॥  
 मुनिपर जतनु करहि जेहि लागी । भूप राजु तजि होहि विरागी ॥  
 सोइ कोसलाधीस रघुराया । आयउ करन तोहि पर टाया ॥  
 जौं पिय मानहु मोर सिखावन । मुजसु होइ तिहु पुर अति पावन ॥  
 दो०—अस कहि नयन नीर भरि गहि पद कपित गात ।

नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होइ अहिनात ॥ ७ ॥

तत्र रावन मयमुता उठाई । कहँ लाग खल निज प्रभुताई ॥  
 सुनु ते प्रिया वृथा भय माना । जग जोधा को मोहि समाना ॥  
 बरुन बुनेर पवन जम काला । भुज बल तैउ सफल दिगपाला ॥  
 देव दनुज नर सत्र वस मोरें । कवन हेतु उपजा भय तोरें ॥  
 नाना विधितेहि कहेसि चुहाई । सभौ बहोरि पैठ सो जाई ॥  
 मंदोदरी इदयँ अस जाना । काल वस्य उपजा अभिमाना ॥  
 सभौ जाइ मनिन्ह तेहि वृक्षा । करव कवन विधि रिपु स जूक्षा ॥





लंका सिखर उपर आगारा। अति विचित्र तहँ होइ अखारा ॥  
 बैठ जाइ तेहि मंदिर गवन। लागे किंनर गुन गन गावन ॥  
 बाजहिं ताल पखाउज बोना। नृत्य करहिं अपठग प्रबोना ॥  
 दो०—मुनासीर सत सरित सो मंतत करइ विलास ।

परम प्रवल रिपु सीस पर तद्यपि मोच न त्रास ॥१०॥

इहाँ सुबेल पै ल रघुवीर। उतरे सेन सहित अति भीर ॥  
 सिखर एक उत्तंग अति देखी। परम रम्य सम सुभ्र विसेपी ॥  
 तहँ तरु किमलय सुमन सुहाए। लठिमन रचि निज हाथ डसाए ॥  
 ता पर रुचिर मृदुल मृगजाला। तेहिं आमन आमोन कृपाला ॥  
 प्रभु कृत सीस कपीस उडंगा। वाम दहिनि दिमि चाप निपंगा ॥  
 दुहुँ कर कमल सुधारत वाना। कह लंकेम मंत्र लगि काना ॥  
 बड़भागी जंगद हनुमाना। चमन कमल चापत विधिनाना ॥  
 प्रभु पाछे लठिमन बौरासन। कटि निपंग कर वान सरासन ॥  
 दो०—एहि विधिकृपा रूप गुन धाम रामु आसीन ।

धन्य तेनर एहिं ध्यान जे रहत मदा लयलीन ॥११(क)॥

पूरव दिसा त्रिलोकि प्रभु देखा उदित मयंक ।

कहतसरहि देवहु समिहि मृगपति सरिम अयंक ॥११(ख)॥

पूरव दिमि गिरिगुहा निवासो। पाम प्रताप तेज बल रामो ॥  
 मत्त नाग तम कुंभ सिदागी। ममि केपगी गगन वन चागे ॥  
 निधुरे नभ मुकुताइल तारा। निमि सुंदरी केर सिंगाग ॥  
 कह प्रभु समि महुँ मेचरुताई। कहहु काइ निज निज मति भाई ॥  
 कह सुग्रीव मुनहु रघुराई। ससि महुँ प्रगट भूमि कै साई ॥

मारेउ राहु ससिहि वह कोई । उर महँ परी स्यामता सोई ॥  
 कोउ कह जव विधिरति मुख कीन्हा । सार भाग ससि कर हरि लीन्हा  
 छिद्र सो प्रगट इंदु उर माहीं । तेहि मग देखिअ नभ परिछाहीं ॥  
 प्रभु कह गरल बंधु ससि केरा । अति प्रिय निज उर दीन्ह वसेरा ॥  
 विष संजुत कर निकर पसारी । जारत विरहवंत नर नारी ॥  
 दो०—कह हनुमंत सुनहु प्रभु ससि तुम्हार प्रिय दास ।

तव मूरति विधु उर बसति सोइ स्यामता अभास ॥१२(क)॥

नवाह्नपारायण, सातवाँ विश्राम

पवन तनय के वचन सुनि विहँसे राम सुजान ।

दाँच्छन दिसि अवलोकि प्रभु बोले कृपानिधान ॥१२(ख)॥

देखु विभीषन दाँच्छन आसा । घन घमंड दामिनी विलासा ॥

मधुर मधुर गरजइ घन घोरा । होइ वृष्टि जनि उपल कठोरा ॥

कहत विभीषन सुनहु कृपाला । होइ न तड़ित न वारिद माला ॥

लंका सिखर उपर आगारा । तहँ दसकंधर देख अखारा ॥

मेघढंवर सिर धारी । सोइ जनु जलद घटा अति कारी ॥

मंदोदरी श्रवन ताटंका । सोइ प्रभु जनु दामिनी दमंका ॥

बाजहिं ताल मृदंग अनूपा । सोइ रव मधुर सुनहु सुरभूपा ॥

प्रभु मुसुकान समुझि अभिमाना । चाप चढ़ाइ वान संधाना ॥

दो०—छत्र मुकुट ताटंक तव हते एकहीं वान ।

सब कें देखत महि परे मरमु न कोऊ जान ॥१३(क)॥

अस कौतुक करि राम सर प्रविसेउ आइ निबंग ।

रावन सभा ससंक सब देखि महा रसभंग ॥१३(ख)॥

कंप न भूमि न मरुत वितेपा । अह्न मत्त कञ्चु नयन न देखा ॥  
 सोचहिं सत्र निज हृदय मशारो । असगुन भयउ भयंकर भारो ॥  
 दसमुख देखि सभा भय पाई । विहसि बचन कह जुगुति वनाई ॥  
 सिरउ गिरे संतत सुभ जाही । मुकुट परे कस अपगुन ताही ॥  
 सयन करहु निज निज गृह जाई । गवने भवन सकल सिर नाई ॥  
 मंदोदरी सोच उर बसेऊ । जब ते श्रवनपूर महि खसेऊ ॥  
 सजल नयन कह जुग कर जोरी । मुनहु प्रानपति विनतो मोरी ॥  
 कंत राम विरोध परिहरहु । जानि मनुज जनि हठ मन धरहु ॥  
 दो०—विश्वरूप रघुवंस मनि काहु वनर विश्वासु ।

लोक कल्पना वेद कर अंग अंग प्रति जासु ॥१४॥

षड पाताल सीस अज धामा । अर लोक अंग अंग विशासा ॥  
 भृकुटि विलास भयंकर काला । नयन दिवाकर हव घन माला ॥  
 जासु घान अम्बिनी सुमारा । निसि प्रह दिवस निमेष अगारा ॥  
 श्रवन दिसा दस वेद बखानी । मारुत घास निगम निज बानी ॥  
 अधर लोभ जम दनन काला । माया हास बाहु दिग माला ॥  
 आनन अनल अंबुपति जोहा । उतरति पालन प्रलय समोहा ॥  
 रोम राजि अष्टादस भाग । श्रव्य मंत्र मरिता नस जारा ॥  
 उदर उदधि अधगो जातना । जगमय प्रभु का बहु कल्पना ॥

दो०—अहंकार सित्र बुद्धि अज मन ससि चित्त महान ।

मनुज वात्त सचराचर रूप राम भगवान ॥१५(क)॥

अस विचारि मुनु प्रानपति प्रभु मन बयर विशद ।

प्रीति करहु रघुवीर पद सम अहिवात न जाइ ॥१५(ख)॥

बिहँसा नारि बचन सुनि काना। अहो मोह महिमा बलवाना ॥  
 नारिसुभाउ सत्य सब कहहीं। अवगुन आठ सदा उर रहहीं ॥  
 साहस अनृत चपलता माया। भय अबिवेक असौच अदाया ॥  
 रिपु कर रूपसकल तैं गावा। अति विसालभय मोहि सुनावा ॥  
 सो सब प्रिया सहज बस मोरें। समुझि परा प्रसाद अब तोरें ॥  
 जानिउँ प्रिया तोरि चतुराई। एहि विधि कहहु मोरि प्रभुताई ॥  
 तव वतकही गूढ़ मृगलोचनि। समुझत सुखद सुनत भय मोचनि ॥  
 मंदोदरि मन महुँ अस ठयऊ। पियहि काल बस मतिभ्रम भयऊ ॥

दो०—एहि विधि करत विनोद बहु प्रात प्रगट दसकंध ।

सहज असंक लंकपति सभाँ गयउ मद अंध ॥१६(क)॥

सो०—फूलइ फरइ न वेत जदपि सुधा वरपहिं जलद ।

मूरुख हृदयँ न चेत जौँ गुर मिलहिं विरंचि सम ॥१६( )॥

इहाँ प्रात जागे रघुराई। पूछा मत सब सचिव बोलाई ॥  
 कहहु वेगि का करिअ उपाई। जामवंत कह पद सिरु नाई ॥  
 सुनु सर्वग्य सकल उर बासी। बुधि बल तेज धर्म गुन रासी ॥  
 मंत्र कहउँ निज मतिअनुसारा। दूत पठाइअ बालिकुमारा ॥  
 नीक मंत्र सब के मन माना। अंगद सन कह कृपानिधाना ॥

लितनय बुधिवल गुनधामा। लंका जाहु तात मम कामा ॥  
 बहुत बुझाइ तुम्हहि का कहऊँ। परम चतुर मैं जानत अहऊँ ॥  
 काजु हमार तासु हित होई। रिपु सन करेहु वतकही सोई ॥

सो०—प्रभु अग्या धरि सीस चरन बंदि अंगद उठेउ ।

सोइ गुन सागर ईस राम कृपा जापर करहु ॥१७(क)॥

स्वयंमिद्व मय काज नाथ माहि आदरु दियउ ।

अस निचारि जुमराज तन पुलकित हरपित दियउ ॥१७(ख)॥

बंदि चरन उर धरि प्रभुताई । अंगद चलेउ सयहि मिरु नाई ॥

प्रभु प्रताप उर सहज अमंका । रन बॉङ्गरा वालिसुत पंका ॥

पुर पैठत रामन कर वेठा । खेलत रहा मो होइ गै भेटा ॥

चातहिं चात करप वडि आई । जुगल अतुल बल पुनितरुनाई ॥

तेहिं अंगद कहूँ लात उठाई । गहि पद पटकेउ भूमि भगाई ॥

निमिचर निकर देखि भट भारी । जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी ॥

एक एक सन भरमु न कहहीं । मगुझितामु प्रथ चुप करिरहहीं ॥

भयउ कोलाहल नगर मझारी । आया कपि लंका जेहिं जारी ॥

अन धाँ कहा करिहि करतारा । अति मभात मय करहिं निचाग ॥

मिनु पछें मगु देहिं दिग्याई । जेहि विलोक सोइ जाइ सुखाई ॥

दो०—गयउ सभा दग्धार तय सुमिरि राम पद कंज ।

मिंह टपनि इत उत चित्त धोर वीर बल पुंज ॥ १८ ॥

तुरत निमाचर एक पठाया । समाचार रामनि जनावा ॥

सुनत विहेंमि बोला दसमोमा । आनहु बोलि कइँ कर कोमा ॥

आयसु पाइ दूत बहु धाए । कपिकुंजरहि बोलि लै आए ॥

अंगद दीख दमानन वंमै । सहित प्राण कञ्जलगिरि जैमै ॥

धुजा पिटप मिर सुंग समाना । रोभायली लता जनु नाना ॥

मुख नामिका नयन अरु काना । गिरि कंदरा खोह अनुमाना ॥

गयउ मभौं मन नेकु न मुरा । वालिननय अतिरल बॉङ्गरा ॥

उठे मभायद कपि कहूँ देखी । गवन उ भा काथ बिसेपा ॥

दो०—जथा मत्त गज जूथ महुँ पंचानन चलि जाइ ।

राम प्रताप सुमिरि मन बैठ सभाँ सिरु नाइ ॥ १९ ॥

कह दसकंठ कवन तैं बंदर।मैं रघुवीर दूत दसकंधर ॥  
मम जनकहि तोहि रही मितार्ई। तव हित कारन आयउँ भाई ॥  
उत्तम कुल पुलस्ति कर नाती। सिव बिरंचि पूजेहु बहु भाँती ॥  
वर पायहु की-हेहु सब काजा। जीतेहु लोकपाल सब राजा ॥  
नृप अभिमान मोह वस किंबा। हरि आनिहु सीता जगदंबा ॥  
अब सुभ कहा सुनहु तुम्ह मोरा। सब अपराध छमिहि प्रभु तोरा ॥  
दसन गहहु वृन कंठ ठारी। परिजन सहित संग निज नारी ॥  
सादर जनकसुता करि आगें। एहि विधि चलहु सकल भय त्य ॥

दो०—प्रनतपाल रघुवंसमनि त्राहि त्राहि अब मोहि ।

आरतगिरा सुनत प्रभु अभय करैगो तोहि ॥ २० ॥

रे कपिपोत बोलु संभारी। मूढ़ न जानेहि मोहि सुरारी ॥  
कहु निज नाम जनक कर भाई। केहि नातें मानिये मितार्ई ॥  
अंगद नाम बालि कर बेटा। तासों कबहुँ भई ही भेटा ॥  
अंगद बचन सुनत सकुचाना। रहा बालि वानर मैं जाना ॥  
अंगद तहीं बालि कर बालक। उपजेहु बंस अनल कुल घालक ॥  
गर्भ न गयहु व्यर्थ तुम्ह जायहु। निज मुख तापस दूत कहायहु ॥  
अब कहु कुसल बाल कहैं अहई। विहँसि बचन तव अंगद ई ॥  
दिन दस गएँ बालि पहिं जाई। बूझेहु कुसल सखा उर लाई ॥  
राम विरोध कुसल जसि होई। सो सब तोहि सुनाइहि सोई ॥  
सुनु सठ भेद होइ मन ताकें। श्रीरघुवीर हृदय नहिं जाकें ॥

दो०—हम कुल घालक सत्य तुम्ह कुल पालक दममोम ।

अंधउ बधिर न अस कहहि नयन कान तव वीम ॥ २१ ॥

सिव विरंचि मुर मुनि समुदाई । चाहत जागु चरन सैरकाई ॥

तासु दूत होइ हम कुल वीरा । अडमिहुँ मति उर विहर न तोरा ॥

सुनि कठोर वानी कपि केरी । कहत दमानन नयन तरेरो ॥

खल तत्र कठिन वचन सत्र सहऊँ । नीति धर्म भैं जानत अहऊँ ॥

कह कपि धर्ममीलता तोरी । हमहुँ सुनी कृत पर त्रिय चोरो ॥

देखी नयन दूत ररगारी । बूढ़ि न मगहु धर्म वनधारी ॥

कान नाक त्रिनु भगिनि निशरो । छमा कोन्हि तुम्ह धर्म विचारी ॥

धर्मसोलता तत्र जग जागी । पात्रा दरसु हमहुँ बड़भागी ॥

दो०—जनि जल्पसि जड़ जंतु कपि मठ त्रिलोकु मम बाहु ।

लोकपाल बल त्रिपुल ममि प्रमन हेतु मव राहु ॥ २२(क) ॥

पुनि नभ सर मम कर निरु कर्मलन्हि पर करि वाम ॥

सोभत भयउ मराल इन संभु सहित कैलाम ॥ २२(ख) ॥

तुम्हरे कटक माझ सुनु अंगद । मो सन भिरिहि कवन जांधावदा ॥

तव प्रभु नारि विरहैं बलहीना । अनुज तामु दरु दुखो मर्शना ॥

तुम्ह सुग्रीव हलदुम दोऊ । अनुज हमार भीरु अनि सोऊ ॥

जामरंत मंत्री अति बूढ़ा । मो कि होइ अब ममराम्दा ॥

सिलिप कर्म जानहि नल नीला । है कपि एरु महा बलमोला ॥

आत्रा प्रथम नगरु जेहि जारा । मुनन वचन कह बालिहृमारा ॥

सत्य वचन कहु निमिचर नाहा । माँचेहुँ कीम कीन्ह पुर दाहा ॥

रावन नगर अल्प कपि दहई । मुनि अस वचन सत्य को कहई ॥



जो अति सुभट सराहेहु रावन । सो सुग्रीव केर लघु धावन ॥  
चलइ बहुत सो वीर न होई । पठवा खवरि लेन हम सोई ॥

दो०—सत्य नगरु कपि जारेउ विनु प्रभु आयसु पाइ ।

फिरि न गयउ सुग्रीव पहिं तेहिं भय रहा लुकाइ ॥२३(क)॥

सत्य कहहि दसकंठ सब मोहि न सुनि कछु कोह ।

कोउ न हमारें कटक अस तो सन लरत जो सोह ॥२३(ख)॥

प्रीति विरोध समान सन करिअ नीति असि आहि ।

जौं मृगपति बध मेडुकन्हि भल कि कहइ कोउ ताहि ॥२३(ग)॥

जद्यपि लघुता राम कहुँ तोहि वधें वड़ दोष ।

तदपि कठिन दसकंठ सुनु छत्र जाति कर रोष ॥२३(घ)॥

वक्र उक्ति धनु वचन सर हृदय दहेउ रिपु कीस ।

प्रतिउत्तर सङ्गसिन्ह मनहुँ काढ़त भट दससीस ॥२३(ङ)॥

हँसि बोलेउ दसमौलि तव कपि कर वड़ गुन एक ।

जो प्रतिपालइ तासु हित करइ उपाय अनेक ॥२३(च)॥

धन्य कीस जो निज प्रभु काजा । जहँ तहँ नाचइ परिहरि लाजा ॥

नाचि कूढि करि लोग रिझाई । पति हित करइ धर्म निपुनाई ॥

अंगद स्वामिभक्त तव जाती । प्रभु गुन कस न कहसि एहि भाँती ॥

मैं गुन गाहक परम सुजाना । तव कटु रटनि करउँ नहिं काना ॥

कह पे तव गुन गाहकताई । सत्य पवनसुत मोहि सुनाई ॥

वन विधंसि सुत वधि पुर जारा । तदपि न तेहिं कछु कृत अपकारा ॥

सोइ विचारि तव प्रकृति सुहाई । दसकंधर मैं कीन्हि ढिठाई ॥

देखैउँ आइ जो कछु कपि भाषा । तुम्हरें लाज न रोष न माखा ॥

जौ अमि मति पितु खाए कीया । कहि अम वचन हैसा दमनीया ॥  
 पितहि खाइ खातेउँ पुनि तोही । अउहीं ममुझि परा कटु मोही ॥  
 बालि निमल जस भाजन जानी । हतउँ न तोहि अधम अभिमानी ॥  
 कहु रावन रावन जग केते । मै निज श्रवन गुने गुनु जेते ॥  
 बलिहि जितन एक गवउ पताला । राखेउ बाधि मिसुन्ह हयमाला  
 खेलहि बालक मारहि जाई । दया लागि बलि दीन्ह छोड़ाई ॥  
 एक बहोरि सहस्रभुज देखा । धाड धरा जिमि जंतु निसेपा ॥  
 कौतुक लागि भयन लँ आया । सो पुलन्ति मुनि जाइ छोड़ावा ॥  
 दो०—एक कहत मोहि सकुच अति रहा बालि कीं काँख ।

इन्ह महुँ रावन तँ कवन सत्य बदाहि तजि माख ॥ २४ ॥

सुनु सठ सोइ रावन बलसीला । हरगिरि जान जासु भुज लीला ॥  
 जान उमा मति जासु गुराई । पूजेउँ जेहि मिर सुमन चढ़ाई ॥  
 सिरसरोज निज रुन्दि उतारो । पूजेउँ अमित धार त्रिपुरारी ॥  
 भुज विग्रम जानहि दिगपाला । मठ अजहूँ जिन्ह कँ उर साला ॥  
 जानहि दिग्गज उर कठिनाई । जय जय भिरउँ जाइ चरिआई ॥  
 जिन्ह के दसन कराल न फूटे । उर लागत मूलक इन टूटे ॥  
 जासु चलत डोलति इमि धरनी । चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरनी ॥  
 सोइ रावन जग विद्रित प्रतापी । मुनेहि न श्रवन अलीक प्रलापी ॥  
 दो०—तेहि रावन कहँ लघु कहमि नर कर करमि बखान ।

रे कपि चरै खरै खल अउ जाना तर ग्यान ॥ २५ ॥

सुनि अंगद सक्रोप कह चानी । बोलु सँभारि अधम अभिमानी ॥  
 सहस्रबाहु भुज गहन अपारा । दहन अनल सम जासु कुठारा ॥

जासु परसु सागर खर धारा। बूड़े नृप अगनित बहु बारा॥  
 तासु गर्व जेहि दे त भागा। सो नर क्यों दससीस अभागा॥  
 राम मनुज कस रे सठ बंगा। धन्वी कामु नदी पुनि गंगा॥  
 पसु सुरधेनु कलतरु रूखा। अन्न दान अरु रस पीयूषा॥  
 वैनतेय खग अहि सहसानन। चिंतामनि पुनि उपल दसानन॥  
 सुनु मतिमंद लोक बैकुंठा। लाभ किरघुपति भगति अकुंठा॥  
 दो०—सेन सहित तव मान मयि बन उजारि पुर जारि।

कस रे मठ हनुमान कपि गयउ जो तव सुत मारि ॥ २६ ॥

सुनु रावन परिहरि चतुराई। भजसि न पासिंधु रघुराई॥  
 जौ खल भएसि राम कर द्रोही। ब्रह्म रुद्र सकरारि न तोही॥  
 मूढ़ वृथा जनि मारसि गाला। राम वयर अस होइहि हाला॥  
 तव सिर निकर कपिन्हू के आगें। परिहहि धरनि राम सर लागें॥  
 ते तव सिर कंदुक सम नाना। खेलिहहिं भालु कीस चौगाना॥  
 जबहिं समर कोपिहिरघुनायक। छुटिहहिं अति कराल बहु प्रायका॥  
 तव कि चलिहि अस गाल तुम्हारा। अस विचारि भजुर उदारा॥  
 सुनत बचन रावन परजरा। जरत महानल जनु घृत परा॥  
 दो०—कुंभकरन अस बंधु मम सुत प्रसिद्ध स रि।

मोर पराक्रम नहिं सुनेहि जितेउँ चराचर झारि ॥ २७ ॥

सठ साखामृग जोरि सहाई। बाँधा सिंधु इहइ प्रभुताई॥  
 घहिं खग अनेक वारी। सूर न होहिं ते सुनु सब कीसा॥

भुज सागर बल जल पूरा। लहँ बूड़े बहु सुर नर सारा॥

किस पयोधि अगाध अपारा। वीर जो पाइहि पारा॥

दिगपाल-ह में नीर भरावा। मूप मुजस खल मोहि मुनावा ॥  
 बीं पै समर सुभट तव नाथा। पुनि पुनि कहसि जामु गुन गाथा ॥  
 ती वसीठ पठवत केहि काजा। रिपु सन प्रीति करत नहिं लाजा ॥  
 हरगिरि मथन निरखु मम बाहू। पुनि सठ कपि निज प्रभुहि सराहू।  
 दो०—सूर कवन रावन सरिस स्वकर काटि जेहिं सीस ।

हुने अनल अति हरप बहु वार साखि गौरीस ॥ २८ ॥

जरत बिलोकैउं जवहि व पाला। विधि के लिखे अंक निज भाला ॥  
 नर कें कर आपन बध चाँची। हसेउं जानि विधि गिरा असाँची ॥  
 सोउ मन समुझि प्रास नहिं मोरें। लिखा बिरंचि जरठ मति भोरें ॥  
 आन वीर बल सठ मम आगें। पुनि पुनि कहसि लाज पति त्यागें ॥  
 कह अंगद सलज्ज जग माहीं। रावन तोहि समान काँउ नाहीं ॥  
 लाजवंत तव सहज सुभाऊ। निज मुख निज गुन कहसि न काऊ ॥  
 सिर अरु सैल कथा चित रही। ताते वार बीस तैं कशी ॥  
 सो भुजबल राखेहु उर घाली। जीतेहु सहसबाहु बलि घाली ॥  
 सुनु मतिमंद देहि अब पूरा। काटें सीस कि होइअ छग ॥  
 इंद्रजालि कहूँ कहिअ न वीरा। काटइ निज कर मकल सरीरा ॥  
 दो०—जरहिं पतंग मोह बस भार बहहिं खरपुंद ।

ते नहिं छर बहावहिं समुझि देगु मतिमंद ॥ २९ ॥

अब जानि बतवदाव खल करटी। गुनु मम बचन मान परिहरही ॥  
 दसमुख में न बसीठी आयउँ। अस विचारि रघुवीर पठावउँ ॥  
 वार वार अम कहइ कृपाला। नहिं गजारि जगु यथे सुवाला ॥  
 मन महुँ समुझि बचन प्रभु कैरे। सहेउं कठोर बचन सठ तरे ॥ --

नाहिं त करि मुख भंजन तोरा । लैं जातेउँ सीतहि वरजोरा ॥  
 जानेउँ तव बल अधम सुरारी । सुलैं हरि आनिहि परनारी ॥  
 तैं निसिचर पति गर्ब बहूता । मै रघुपति सेवक कर दूता ॥  
 जौं न राम अपमानहि डरऊँ । तोहि देखत अस कौतुक करऊँ ॥

दो०—तोहि पटक महि सेन हँ चौपट करि तव गाउँ ।

तव जुवतिन्ह समेत सठ जनकसुतहि लैं जाउँ ॥ ३० ॥

जौं अस करौं तदपि न बड़ाई । मुएहि वधें नहिं क मनुसाई ॥  
 कौल कासवस कृपिन विमूढ़ा । अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा ॥  
 सदा रोगवस संतत क्रोधी । शिष्नु विमुख श्रुति संत विरोधी ॥  
 तनु पोषक निंदक अध खानी । जीवत सब सम चौदह प्राणी ॥  
 अस विचारि खल वधउँ न तोही । अत्र जनि रिस उपजावसि मोही ॥  
 सुनि सक्रोप कह निसिचर नाथा । अधर दसन दसि मीजत हाथा ॥  
 रे कपि अधम मरन अब चहसी । छोटे वदन बात बड़ि कहसी ॥  
 कटु जल्पसि जड़ कपि बल जाकें । बल प्रताप बुधि तेज न ताकें ॥

दो०—अगुन अमान जानि तेहि दीन्ह पिता वनवास ।

सौ दुख अरु जुवती रह पुनि निसि दिन मम त्रास ॥ ३१(क) ॥

जिन्ह कै बल कर गर्ब तोहि अइसे मनुज अनेक ।

खाहिं निसाचर दिवस निसि मूढ़ समुच्च तजि टेक ॥ ३१(ख) ॥

जव तेहिं कीन्हि राम कै निंदा । क्रोधवत अति भयउ कपिंदा ॥

हरि हर निंदा सुनइ जो काना । होइ पाप गोघात समाना ॥

कटकटान कपिकुंजर भारी । दुहु भुजदंड तमकि महि मारी ॥

डोलत धरनि सभासद खसे । बले नि मारुब प्रसे ॥

गिरत मँभागि उठा दमकंधर । भूतल परं मुकुट अति सुंदर ॥  
 कछु तेहिँ लँ निज सिरन्हि सँवारे । कछु अंगद प्रष्टु पाम पवारे ॥  
 आपत मुकुट देखि कपि भागे । दिनहीं लूक परन विधि लागे ॥  
 की रावन करि कोप चलाए । कुलिस चारि आपत अति धाए ॥  
 कह प्रभु हँसि जनि हृदयँ डेराह । लूक न अमनि केतु नहिँ राह ॥  
 ए किरीट दसकंधर कैरे । आवत चालितनय के प्रेरे ॥

श्लो०—तरकि पवनसुत कर गहे आनि धरे प्रभु पाम ।

कौतुक देखहिँ भालु कपि दिनकर मरिस प्रकाम ॥३२(क)॥

उहाँ मकोपि दसानन सव मन कहत रिमाइ ।

धरहु कपिहि धरि मारहु सुनि अंगद मुमुकाइ ॥३२(ख)॥

एहि बधि बेगि सुभट मव धायहु । खाहु भालु कपि जहँ जहँ पावहु  
 मर्कटहीन करहु महि जाई । जियत धरहु तापम द्वी भाई ॥  
 पुनि सकोप बोलेउ जुवराजा । गाल वजावन तोहि न लाजा ॥  
 मरु गर काटि निलज कुनधाती । बन् विलोकि विहरति नहिँ छाती  
 रे त्रिय चोर कुमारग गामी । खल मल गसि मंदमति कामी ॥  
 सन्यपात जल्पनि दुर्वादा । भएमि काल वस खल मनुजादा  
 याको फलु पायहिगो आगें । दानर भालु चपेटन्हि लागें ॥  
 रामु मनुज बोलत अमि बानी । गिरहिँ न तव रमना अभिमानो ॥  
 गिरिहिँ रमना मंमथ नाही । गिरन्हि समेत ममर महि माही ॥

श्लो०—सो नर क्यों दमकंध बालि बभ्यो जेहिँ एक सर ।

बीमहँ लोचन बंध भिग तव नन्म कुजाति जड़ ॥३३(क)

तव सोनित की प्यास तृपित राम सायक निकर ।

तजउँ तोहि तेहि त्रास कटु जल्पक निसिचर अधमा ३३( )।

मैं तव दसन तोरिबे लायक । आयसु मोहि न दीन्ह रघुनायक ।।  
 असि रिस होति दसउ मुख तोरौं । लंका गहि समुद्र महुँ बोरौं ।।  
 गूलरि फल समान तव लंका । वसहु मध्य तुम्ह जंतु असंका ।।  
 मैं बानर फल खात न बारा । आयसु दीन्ह न राम उदारा ।।  
 जुगति सुनत रावन मुसुकाई । मूढ़ सिखिहि कहँ बहुत झुठाई ।।  
 बालिन कबहुँ गाल अस मारा । मिलि तपसिन्ह नै भएसि लबारा ।।  
 चहुँ मैं लवार भुज बीहा । जौं न उपारिउँ तव दस जीहा ।।  
 समुझि राम प्रताप कपि कोपा । सभा माझ पन करि पद रो ।।  
 जौं मम चरन सकसि सठ टारी । फिरहिं रामु सीता मैं हारी ।।  
 सुनहु सुभट सब कह दससीसा । पद गहि धरनि पछारहु की ।।  
 इंद्रजीत आदिक बलवाना । हरपि उठे जहँ तहँ भट नाना ।।  
 झपटहिं करि बल विपुल उपाई । पद न टरइ बैठहिं सिरु नाई ।।  
 पुनि उठि झपटहिं सुर आर गी । टरइ न कीस चरन एहि भाँती ।।  
 पुरुष कुजोगी जिमि उरगारी । मोह बिटप नहिं सकहिं उपारी ।।

दो०—क्रोटिन्ह मेघनाद सम सुभट उठे हरषाइ ।

झपटहिं टरै न कपि चरन पुनि बैठहिं सिर नाइ ॥ ३४(क) ॥

भूमि न छाँडत कपि चरन देखत रिपु मद भाग ।

क्रोटि बिघ्न ते संत कर मन जिमि नीतिन त्यागा ॥ ३४( ) ॥

कपि बल देखि सकल हियँ हारे । उठा आपु कपि कें परचारे ।।

गहत चरन कह बालिकुमारा । मम पद गहें न तोर उबारा ।।

गहसि न राम चरन सठ जाई। सुनत फिरा मन अति सकुचाई।  
 भयउ तेजहत श्री सत्र गई। मध्य दिवस जिमिससि सोहई ॥  
 सिंघासन बैठेउ सिर नाई। मानहुँ संपति सकल गँवाई ॥  
 जगदातमा प्राणपति रामा। तासु विमुख किमिलह विश्रामा  
 उमा राम की भृकुटि विलासा। होइ विश्व पुनि पावइ नासा ॥  
 वृन ते कुलिस कुलिस वृन करई। तासु दूत पन कहु किमि टरई ॥  
 पुनि कपि कही नीति विधि नाना। मान न ताहि कालु निअराना ॥  
 रिपु मद मथि प्रभु सुजसु सुनायो। यह कहि चलयो वालि नृप जायो  
 हतों न खेत खेलाइ खेलाई। तोहि अघहिं का करों बढाई ॥  
 प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा। सो सुनि रावन भयउ दुखारा ॥  
 जातुधान अंगद पन देखी। भय व्याकुल सत्र भए विसेपी ॥

दो०—रिपु बल धरपि हरपि कपि बालितनय बल पुंज ।

पुलक सरीर नयन जल गहे राम पद कंज ॥३५(क)॥

साँझ जानि दसकंधर भवन गयउ विलखाइ ।

मंदोदरीं रावनहि बहुरि कहा समुझाइ ॥३५(ख)॥

कंत समुझि मन तजहु कुमतिही। सोह न समर तुम्हहि रघुपतिही।  
 रामानुज लघु रेख खचाई। सोउ नहिं नावेहु असि मनुसाई।  
 पिय तुम्ह ताहि जितव संग्रामा। जाके दूत केर यह कामा ॥  
 कौतुक सिधु नाधि तत्र लंका। आयउ कपि केहरी अमंका ॥  
 रखवारे हति विपिन उजारा। देखत तोहि अच्छ तेहिं मारा ॥  
 जारि सकल पुर कीन्हेसिछारा। कहाँ रहा बल गर्व तुम्हारा ॥  
 अब पति मृषा गाल जनि मारहु। मोर कहा कछु हृदय विचारहु ॥



पति रघुपतिहि नृपति जनि मानहु । अगजग नाथ अतुल बल जानहु  
 बान प्रताप जान मारीचा । तासु कहा नहिं मानेहि नीचा ॥  
 जनक सभाँ अगनित भूपाला । रहे तुम्हउ बल अतुल विसाला ॥  
 भंजि धनुष जानकी विआही । तव संग्राम जितेहु किन ताही ॥  
 सुरपति सुत जानइ बल थोरा । राखा जिअत आँखि गहि फोरा ॥  
 सपनखा कै गति तुम्ह देखी । तदपि हृदयँ नहिं लाज विसेपी ॥

दो०—बधि विराध खर दूषनहि लीलाँ हत्यो कबंध ।

बालि एक सर मारयो तेहि जानहु दसकंध ॥३६॥

जेहि जलनाथ बंधायउ डेला । उतरे प्रभु दल सहित सुबेला ॥  
 कारुनीक दिनकर कुल केतू । दूत पठायउ तव हित हेतू ॥  
 सभा माझ जेहिं तव बल मथा । करि बरूथ महुँ मृगपति जथा ॥  
 अंगद हनुमत अनुचर जाके । रन बाँकुरे वीर अति बाँके ॥  
 तेहि कहँ पिय पुनि पुनि नर कहहू । सुधा मान ममता मद वहहू ॥  
 अहह कंत कृत राम विरोधा । काल विवस मन उपज न बोधा ॥  
 काल दंड गहि काहु न मारा । हरइ धर्म बल बुद्धि विचारा ॥  
 निकट काल जेहि आवत साई । तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाई ॥

दो०—दुइ सुत मरे दहेउ पुर अजहुँ पूर पिय देहु ।

कृपासिंधु रघुनाथ भजि नाथ विमल जसु लेहु ॥३७॥

नारि बचन सुनि विसिष समाना । सभाँ गयउ उठि होत विहाना ॥  
 बैठ जाइ सिंघासन फूली । अति अभिमान त्रास सब भूली  
 इहाँ राम अंगदहि बोलावा । आइ चरन पंकज सिरु नावा ॥  
 अबि आदर समीप बैठारी । बोले किँसि कृपाल खरारी ॥

बालितनय कौतुक अति मांही । तात सत्य कहु पूछउँ तोही ॥  
 रामनु जातुधान कुल टीका । भुजबल अतुल जामु जग लीका ॥  
 तासु मुहुट तुम्ह चारि चलाए । कहहु तात कननी विधि पाए ॥  
 सुनु सर्ग्य प्रनत सुखकारी । मुकुट न होहिं भूप गुन चारी ॥  
 साम दान अरु दंड विमेदा । नृप उर बसहिं नाथ कह बेटा ॥  
 नीति धर्म के चरन मुहाए । अस जियँ जानि नाथ पहिं आए ॥

दो०—धर्महीन प्रभु पद विमुख काल विनस दससीस ।

तेहि परिहरि गुन आए सुनहु कोसलाधीस ॥३८(क)॥

परम चतुरता श्रम सुनि विहँसे राम उदार ।

समाचार पुनि सन कहे गढ़ के बालिकुमार ॥३८(ख)॥

रिपु के समाचार जन पाए । राम सचि मत्र निकट बोलाए ॥

लंका बाँके चारि दुआरा । केहि विधिलागि अकरहु विचारा ॥

तब कपीस रिच्छेम विभीषन । सुमिरि हृदयँ दिनकर कुरु भूपन ॥

करि विचार तिन्ह मत्र दृढ़ारा । चारि अनी कपि कटकु बनाया ॥

जयाजोग सेनापति कीन्हे । जूथप सकल बोलि तन लीन्हे ॥

प्रभु प्रताप कहि मत्र समुझाए । सुनि कपि मियनाद करि धाए ॥

हरपित राम चगन मिर नायहिं । गहि गिरि सिखर वीर सन धावहिं ॥

गर्जहि तर्जहिं भालु कपीसा । जय रघुवीर कोसलाधीसा ॥

जानत परम दुर्ग अति लंका । प्रभु प्रताप कपि चले अमंका ॥

घटाटोप करि चहुँ टिमि घेरी । मुसहिं निमान बजावहिं मेरी ॥

दो०—जयति राम जय लछिमन जय कपीम सुग्रीव ।

गर्जहिं मियनाद कपि भालु महा बल सीव ॥ ३९ ॥

लंकाँ भयउ कालाहल भारा । सुना दसानन अति अहँकारी ॥  
 देखहु वनरन्ह केरि ढिठाई । बिहँसि निसाचर सेन ेलाई ॥  
 आए कीस काल के प्रेरे । छुधावंत सब निचर मेरे ॥  
 अस कहि अट्टह सठ कीन्हा । गृह बैठे अहार विधि दीन्हा ॥  
 सुभट सकल चारिहुँ दिसि जाहू । धरि धरि भालु कीस सब खाहू ॥  
 उमा रावनहि अस अभिमाना । जिमि टिट्टिभ खग सूत उताना ॥  
 चले निसाचर आयसु मागी । गहि कर भिडिपाल बर साँगी ॥  
 तोमर मुद्गर परमु प्रचंडा । खल कृपान परिघ गिरिखंडा ॥  
 जिमि अरुनोपल निकल निहारी । धावहिं सठ खग मांस अहारी ॥  
 चोंच भंग दुख तिन्हहि न सूझा । तिमि धाए मनुजाद अबूझा ॥

दो०—नानायुध सर चाप धर जातुधान बल वीर ।

कोट कँगूरन्हि चढ़ि गए कोटि कोटि रनधोर ॥ ४० ॥

कोट कँगूरन्हि सोहहिं कैसे । मेरु के सुंगनि जनु घन बैसे ॥

बाजहिं ढोल निसान जुझाऊ । सुनि धुनि होइ भटन्हि मन चाऊ ॥

जहिं भेरि नफीरि अपारा । सुनि कादर उर जाहिं दरारा ॥

देखिन्ह जाइ कपिन्ह के ठट्टा । अनि विसाल तनु भालु सुभट्टा ॥

धावहिं गनहिं न अवघट घाटा । पर्यंत फोरि करहिं गहि वाटा ॥

कटकटाहिं कोटिन्ह भट गर्जाहें । दसन ओठ काटहिं अति तर्जहिं ॥

उत रावन इत राम दोहाई । जयति जयति जय परी लराई ॥

निसिचर सिखर समूह ढहावहिं । कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं ॥

छं०—धरि धर खंड प्रचंड मकट भालु गढ़ पर डारहीं ।

झपटहिं चरन गहि पटक महि भजि चलत बहुरि पचारहीं ॥

अति तरल तरुन प्रताप तरपहिं तमकि गढ़ चढ़ि च  
कापि भालु चढ़ि भंदिरन्ह जहँ तहँ राम जसु गाः

दो०—एकु एकु निसिचर गहि पुनि कापि चले पराइ  
ऊपर आपु हेठ भट गिरहिं धरनि पर आइ

राम प्रताप प्रबल कपिजूथा। मरिहिं निसिचर सुभट  
चढ़े दुर्ग पुनि जहँ तहँ वानर। जय रघुवीर प्रताप  
चले निसाचर निकर पराइ। प्रबल पवनजिमि घन  
हाहाकार भयउ पुर भारी। रोवहिं बालक आतुः  
सब मिलि देहिं रावनहि गारी। राज करत एहिं मृत्यु  
निज दल विचल सुनी तेहिं काना। फेरि सुभट लंकैस  
जो रन विमुख सुना भँ काना। सो भँ हतब कराल  
सर्वसु खाइ भांग करि नाना। समर भूमि भए बल्लभ  
उग्र वचन सुनि सकल डेराने। चले क्रोध करि सुभट  
सन्मुख मरन वीर कै सोभा। तब तिन्ह तजापान

दो०—बहु आयुध धर सुभट सब भिरहिं पचारि पचारि  
व्याकुल किए भालु कपि परिघ त्रिसूलन्ह मारि

भय आतुर कपि भागन लागे। जद्यपि उमा जीतिह  
कोउ कह कहे अंगद हनुमंता। कहँ नल नील दुविद  
निज दल विकल सुना हनुमाना। पच्छिम द्वार रहा  
मेघनाद तहँ कण्ड लराई। टूट न द्वार परम  
पवनतनय मन भा अति क्रोधा। गजेउ प्रबल काल र  
कूदि लंक गढ़ ऊपर आवा। गहि गिरि मेघनाद

लंकाँ भयउ कालाहल भारा । सुना दसानन अति अहँकारी ॥  
 देखहु वनरन्ह केरि ढिठाई । बिहँसि निसाचर सेन ेलाई ॥  
 आए कीस काल के प्रेरे । छुधावंत सब निसिचर मेरे ॥  
 अस कहि अट्टह सठ कीन्हा । गृह बैठेँ अहार विधि दीन्हा ॥  
 सुभट सकल चारिहुँ दिसि जाहू । धरि धरि भालु कीस सब खाहू ॥  
 उमा रावनहि अस अभिमाना । जिमि टिट्टिभखग सूत उताना ॥  
 चले निसाचर आयसु मागी । गहि कर भिंडिपाल बर साँगी ॥  
 तोमर सुद्वर परमु प्रचंडा । सूल कृपान परिष गिरिखंडा ॥  
 जिमि अरुनोपल निकल निहारी । धावहिँ सठ ग मांस अहारी ॥  
 चोंच भंग दुख तिन्हहि न सझा । तिमि धाए मनुजाद अबूझा ॥

दो०—नानायुध सर चाप धर जातुधान बल वीर ।

कोट कँगूरन्हि चढ़ि गए कोटि कोटि रनधोर ॥ ४० ॥

कोट कँगूरन्हि सोहहिँ कैसे । मेरु के सृंगनि जनु घन वैसे ॥  
 बाजहिँ ढोल नि न जुझाऊ । सुनि धुनि होइ भटन्हि मन चाऊ ॥  
 बाजहिँ भेरि नफीरि अपारा । सुनि कादर उर हिँ दराता ॥  
 देखिन्ह जाइ कपिन्ह के ठट्टा । अनि विसाल तनु भालु सुभट्टा ॥  
 धावहिँ गनहिँ न अघट घाटा । पर्यत फोरि करहिँ गहि बाटा ॥  
 कटकटाहिँ कोटिन्ह भट गर्जाहँ । दसन ओठ काटहिँ अति तर्जहिँ ॥

रावन इत राम दोहाई । जयति जयति जय परी लराई ॥  
 निसिचर सिखर समूह ढहावहिँ । कूदि धरहिँ कपि फेरि चलावहिँ ॥

छं०—धरि धर खंड प्रचंड मर्कट भालु गढ़ पर डारहीं ।  
 झपटहिँ चरन गहि पटक महि भजि चलत बहुरि पचारहीं ॥

अति तरल तरुन प्रवार तरपईं तनकि गड़ चड़ि चड़ि गए ।  
कापि भालु चड़ि मंदिरन्ह जहँ तहँ राम जसु गावत भए ॥

दो०—एक एक निस्सिचर गहि पुनि कपि चले पराइ ।

ऊपर आपु हँठ भट गिरहिं धरनि पर आइ ॥ ४१ ॥

राम प्रताप प्रबल करिजूथा । मर्दहिं निस्सिचर सुभट चरूथा ॥  
चढ़े दुर्ग पुनि जहँ तहँ बानर । जय रघुबीर प्रताप दियाकर ॥  
चले निसाचर निकर पराई । प्रबल पवन जिमि घन समुदाई ॥  
हाहाकार भयठ पुर भारी । रोवहिं बालक आतुर नारी ॥  
सब मिलि देहिं रावनहि गारी । राज करत एहिं मृत्यु हँकारी ॥  
निज दल विचल सुनी तेहिं काना । फेरि सुभट लंकेस रिसाना ॥  
बो रन विमुख सुना में काना । सो में हतब कराल कृपाना ॥  
सर्वसु खाइ भोग करि नाना । समर भूमि भए बल्लभ प्राना ॥  
उग्र वचन सुनि सकल डेराने । चले क्रोध करि सुभट लजाने ॥  
सन्मुख मरन बीर कै सोभा । तब तिन्ह तजा प्रान कर लोभा ॥

दो०—बहु आयुध धर सुभट सब भिरहिं पचारि पचारि ।

व्याकुल किए भालु कपि परिष विघलन्हि गारि ॥ ४२ ॥

भय आतुर कपि भागन लागे । जद्यपि उमा जीतिदहिं आगे ॥  
कोउ कह कहँ अंगद हनुमंता । कहँ नल नील दुधिद पलवता ॥  
निज दल विचल सुना हनुमाना । पच्छिम द्वार रदा पलवाना ॥  
मेघनाद तहँ करड लगई । टूट न द्वार परम कठिनाई ॥  
पवनतनय मन भा अति क्रोधा । गजेंउ प्रबल काल राम जोधा ॥  
कूदि लंक गड़ ऊपर आवा । गहि गिरि मेघनाद फट्टे धावा ॥

भंजेउ रथ सारथी निपाता । ताहि हृदय महुँ मारेसि लाता ॥  
दुसरें सत बिकल तेहि जाना । स्यंदन घालि तुरत गृह आना ॥

दो०—अंगद सुना पवनसुत गढ़ पर गयउ अकेल ।

रन बाँकुरा बालिसुत तरकि चढ़ेउ कपि खेल ॥ ४३ ॥

जुद्ध बिरुद्ध क्रुद्ध द्रौ बंदर । राम प्रताप सुमिरि उर अंतर ॥  
रावन भवन चढ़े द्रौ धाई । करहिं कोसलाधीस दोहाई ॥  
कलस सहित गहि भवनु ढहावा । देखि निसाचरपति भय पावा ॥  
नारि वृंद कर पीटहिं छाती । अब दुइ कपि आए उतपाती ॥  
कपि लीला करि तिन्हहि डेरावहिं । रामचंद्र कर सुजसु सुनावहिं ॥  
पुनि कर गहि कंचन के खंभा । कहेन्हि करिअ उतपात अरंभा ॥  
गर्जि परे रिपु कटक मझारी । लागे मर्दैं भुज बल भारी ॥  
काहुहि लात चपेटन्हि केहू । भजहु न रामहि सो फल लेहू ॥

दो०—एक एक सों मर्दहिं तोरि चलावहिं मुंड ।

रावन आगें परहिं ते जनु फूटहिं दधि कुंड ॥ ४४ ॥

अहा महा सुखिआ जे पावहिं । ते पद

कहइ बिभीषनु तिन्ह के नामा । दे

खल सनुजाद द्विजामिष भोगी ।

उमा राम मृदुचित करुनाकर ।

देहिं परम गति सो जियँ ज

प्रभु सुनि न भजहिं भ्र

अंगद अरु हनुमंत

लंकाँ द्रौ कपि सो

दो०—भुज बल रिपु दल दलमलि देखि दिवस कर अंत ।

कूदे जुगल विगत श्रम आए जहँ भगवंत ॥ ४५ ॥

प्रभु पद कमल सीस तिन्ह नाए । देखि सुभट रघुपति मन भाए ॥  
 राम कृपा करि जुगल निहारे । भए विगतश्रम परम सुखारे ॥  
 गए जानि अंगद हनुमाना । फिरे भालु मर्कट भट नाना ॥  
 जातुधान प्रदोष बल पाई । धाए करि दससीस दोहाई ॥  
 निसिचर अनी देखि कपि फिरे । जहँ तहँ कटकटाइ भट भिरे ॥  
 द्वौ दल प्रबल पचारि पचारी । लरत सुभट नहिँ मानहिँ हारी ॥  
 महावीर निसिचर सब कारे । नाना वरन बलीमुख भारे ॥  
 सबल जुगल दल समबल जोधा । कौतुक करत लरत करि क्रोधा ॥  
 प्राविट सरद पयोद घनेरे । लरत मनहुँ मारुत कै प्रेरे ॥  
 अनिप अकंपन अरु अतिकाया । विचलत सेन कीन्हि इन्ह माया ॥  
 भयउ निमिप महँ अति अंधिआरा । चृष्टि होइ रुधिरापल छारा ॥

दो०—देखि निविड तम दसहुँ दिसि कपिदल भयउ खभार ।

एकहि एक न देखई जहँ तहँ करहिँ पुकार ॥ ४६ ॥

सकल मरगु रघुनायक जाना । लिपे बोलि अंगद हनुमाना ॥  
 समाचार सब कहि समुझाए । मुनत कोपि कपिकुंजर धाए ॥  
 पुनि कृपाल हंसि चाप चढ़ावा । पावक सायक सपदि चलावा ॥  
 भयउ प्रकास कतहुँ तम नाहीं । ग्यान उदयें जिमि मंसय जाहीं ॥  
 भालु बलीमुख पाद प्रकासा । धार हरष विगत श्रम वामा ॥  
 हनुमान अंगद रन गाजे । हाँक मुनत रजनीचर भाजे ॥  
 भागत भट पटकहिँ धरि धरनी । करहिँ भालु कपि अद्भुत करनी ॥



गहि पद डारहिं सागर माह। मकर उरग श्व वरे धरें खाह॥

दो०—कलु मारे कलु घायल कलु गढ़ चढ़े पराइ ।

गर्जहिं भालु बलोमुख रिगु दल बल विचलाइ ॥ ४७ ॥

निसा जानि कपि चारिउ अनी। आए जहाँ कोसला धनी ॥

राम कृपा करि चितवा सबहो। भए विगतश्रम बानर तबहो ॥

उहाँ दसानन सचिव हँकारे। सब सन कहेसि सुभट जे मारे ॥

आधा कटकु कपिन्ह संघारा। कहहु बेगि का हरिअ विचारा ॥

माख्यवंत अति जरठ निसाचर। रावन मातु पिता मंत्री वर ॥

ेला बचन नीति अति पावन। सुनहु तात कहु मोर सिखावन ॥

जब ते तुम्ह सोता हरि आनी। असगुन होहिं न जाहिं बखानी ॥

बेद पुरान जासु जसु गायो। राम बिमुख काहुँ न सुख पायो ॥

दो०—हिरन्याच्छ भ्राता सहित मधु कैटभ बरवान ।

जेहिं मारे सोइ अवतरेउ कृपासिंधु भगवान ॥४८( )॥

मासपारायण, पच्चीसवाँ विश्राम

कालरूप खल वन दहन गुनागार घनबोध ।

सिव विरंचि जेहि सेवहिं तासों कवन विरोध ॥४८( )॥

परिहरि बयरु देहु बैदेही। भजहु कृपानिधि परस सनेही ॥

कै वचन बान सम लागे। करिआ मुह करि जाहि अभागे ॥

बूढ़ भएसि न त मरतेउं तोही। अब जनि नयन देखेवासि मोही ॥

तेहिं अपने मन अस अनुमाना। बध्यो चहत एहि कृपानिधाना ॥

सो उठि गयउ कहत दुर्वादा। तव सक्रोप ेलेउ घननादा ॥



ब्रह्मसैल एक तुरत उपारा। अति रिस मेघनाद पर डारा ॥  
 आवत देखि गयउ नभ खोई। रथ सारथी तुरग सब खोई ॥  
 बार बार पचार हनुमाना। निकट न आव मरमु सो जाना ॥  
 रघुपति निकट गयउ घननादा। नाना भँति करेसि दुर्वादा ॥  
 अस्त्र सस्त्र आयुध सब डारे। कौतुकहीं प्रभु काटि निवारे ॥  
 देखि प्रताप मूढ़ खिसिआना। करै लाग माया विधि नाना ॥  
 जिमिकोउ करै गरुड़सँ खेला। डरपावै गहि स्वल्प सपेला ॥

दो०—जासु प्रबल माया वस सिव विरंचि वड़ छोट ।

ताहि दिखावइ निसिचर निज माया मति खोट ॥ ५१ ॥

नभ चढ़ि वरप त्रिपुल अंगारा। महि ते प्रगट होहिं जलधारा ॥  
 नाना भँति पिसाच पिसाची। मारु काहु धुनि बोलहिं नाची ॥  
 विष्टा पूय रुधिर कच हाड़ा। वरपइ कवहुँ उपल बहु छाड़ा ॥  
 बरपि धूरि कीन्हेसि अँधिआरा। खुल्ल न आपन हाथ पसारा ॥  
 कपि अकुलाने माया देखें। सब कर मरन वना एहि लेखें ॥  
 कौतुक देखि राम मुमुकाने। भए समीत सकल कपि जाने ॥  
 एक वान काटी सब माया। जिमि दिनकर हर तिमिर निकाया ॥  
 कृपादृष्टि कपि भालु बिलोके। भए प्रबल रन रहहिं न रोके ॥  
 दो०—आयसु मागि राम पहिं अंगदादि कपि साथ ।

लछिमन चले क्रुद्ध हाँइ वान सरामन हाथ ॥ ५२ ॥

छतज नयन उर बाहु विसाला। हिमगिरि निभ तनु कछु एक लाला ॥  
 इहाँ दसानन सुभट पठाए। नाना अस्त्र सस्त्र गहि धाए ॥  
 भूधर नख विटपायुध धारी। धाए कपि जय राम पुकारी ॥

भिरे सकल जोरिहि सन जोरी । इत उत जय इच्छा नहिं थोरी ॥  
 मुठिकन्ह लातन्ह दातन्ह काटहिं । कपि जय सील मारि पुनि डाटहिं  
 मारु मारु धरु धरु धरु मारु । सीस तोरि गहि भुजा उपारु ॥  
 असि रव पूरि रही नव खंडा । धावहिं जहँ तहँ रुंड प्रचंडा ॥  
 देखहिं कांतुक नभ सुर वृंदा । कवहुँक विसमय कवहुँ अनंदा ॥

दो०—रुधिर गाड़ भरि भरि जम्यो ऊपर धूरि उड़ाइ ।

जनु अंगार रासिन्ह पर मृतक धूम रह्यो छाइ ॥ ५३ ॥

घायल वीर विराजहिं कैसे । कुसुमित किसुक के तरु जैसे ॥  
 लछिमन मेघनाद द्वाँ जोधा । भिरहिं परसपर करि अतिक्रोधा ॥  
 एकहि एक सकइ नहिं जीती । निसिचर छल बल करइ अनीती ॥  
 क्रोधवंत तव भयउ अनंता । भंजेउ रथ सारथी तुरंता ॥  
 नाना विधि प्रहार कर सेपा । राच्छस भयउ प्रान अवसेपा ॥  
 रावन सुत निज मन अनुमाना । संकठ भयउ हरिहि मम प्राना ॥  
 वीरघातिनी छाड़िसि साँगी । तेज पुंज लछिमन उर लागी ॥  
 मुरुछा भई सक्ति के लागें । तव चलि गयउ निकट भय त्यागें ॥

दो०—मेघनाद सम कोटि सत जोधा रहे उठाइ ।

जगदाधार सेप किमि उठै चले खिसिआइ ॥ ५४ ॥

मुनु गिरिजा क्रोधानल जाम्ब । जारइ भुवन चारिदस आम्ब ॥  
 सक संग्राम जीति को ताही । सेवहिं सुर नर अग जग जाही ॥  
 यह कांतूहल जानइ सोई । जा पर कृपा राम कै होई ॥  
 संघ्या भइ फिरि द्वाँ वाहनी । लगे सँभारन निज निज अनी ॥  
 आपक ब्रह्म अजित भुवनेस्वर । लछिमन कहाँ बूझ करुनाकर ॥

लगि लै आयउ हनुमाना । अनुज देखि प्रभु अति दुख माना ।  
जामवंत कह वैद सुपेना । लंकाँ रहइ को पठई लेना ॥  
धरि लघु रूप गयउ हनुमंता । आनेउ भवन समेत तुरंता ॥  
दो०—राम पदारविंद सिर नायउ आइ सुपेन ।

कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन ॥ ५५ ॥

राम चरन सरसिज उर राखी । चला प्रभंजनसुत बल भाषी ॥  
उहाँ दूत एक मरमु जनावा । रावनु कालनेमि गृह आवा ॥  
दसमुख कहा मरमु तेहि सुना । पुनि पुनि कालनेमि सिरु धुना ॥  
देखत तुम्हहि नगरु जेहिं जारा । तासु पंथ को रोकन पारा ॥  
भजि रघुपति करु हित आपना । छाँड़हु नाथ मृषा जल्पना ॥  
नील कंज तनु सुंदर स्यामा । हृदयँ राखु लोचनाभिरामा ॥  
मैं तैं मोर मूढ़ता त्यागू । महा मोह निसि छतत जागू ॥  
काल ब्याल कर भच्छक जोई । सपनेहुँ समर कि जीतिअ सोई ॥  
दो०—सुनि दसकंठ रिसान अति तेहिं मन कीन्ह विचार ।

राम दूत कर मरौं बरु यह खल रत मल भार ॥ ५६ ॥

कहि चला रचिसि मग माया । सर मंदिर वर वाग वनाया ॥  
तसुत देखा सुभ आश्रम । मुनिहि बूझि जल पियौं जाइ श्रम ॥  
राच्छस कपट बेष तहँ सोहा । माथापति दूतहि चह मोहा ॥  
जाइ पवनसुत नायउ माथा । लाग सो कहै राम गुन गाथा ॥  
होत महा रन रावन रामहिं । जितिहहिं राम न संसय या महिं ॥  
इहाँ भएँ मैं देखउँ भाई । ग्यानदृष्टि बल मोहि अधिकारै ॥  
मागा जल तेहि दीन्ह कमंडल । इह कपि नहिं अघाउँ थोरें जल ॥

सर मञ्जन करि आतुर आवहु । दिच्छा देउँ ग्यान जेहि पावहु ॥

दो०—सर पैठत कपि पद गक्ष मकरीं तव अकुलान ।

मारो मो धरि दिव्य तनु चलो गगन चढ़ि जान ॥ ५७ ॥

कपि तव दरस भइउँ निष्पाश । मिटा तात मुनिवर कर सापा ॥  
 मुनि न होइ यह निसिचर घोरा । मानहुँ सत्य वचन कपि मोरा ॥  
 अस कहि गई अपछरा जवहीं । निसिचर निकट गयउ कपि तवहीं  
 कह कपि मुनि गुरदछिना लेहू । पाछें हमहि मंत्र तुम्ह देहू ॥  
 सिर लंगूर लपेटि पछारा । निज तनु प्रगटेसि भरतो वारा ॥  
 राम राम कहि छाड़ेसि प्राणा । सुनि मन हरपि चलेउ हनुमाना ॥  
 देखा सैल न औपध चीन्हा । सहसा कपि उरारि गिरि लोन्हा ॥  
 गहि गिरि निसि नभ धावत भयऊ । अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ ॥

दो०—देखा भरत बिसाल अति निसिचर मन अनुमानि ।

बिनु फर सायक मारेउ चाप श्रवन लगि तानि ॥ ५८ ॥

परेउ मुरुछि महि लागत सायक । मुमिरत राम राम रघुनायक ॥  
 सुनि प्रिय वचन भरत तव धाए । करि समोप अति आतुर आए ॥  
 विकल बिलोकि कीस उर लावा । जागत नहिं बहू भाँति जगावा ॥  
 मुख मञ्जन मन भए दुखारो । कइत वचन भरि लोचन वारी ॥  
 जेहि बिधि राम त्रिमुख मोहि कोन्हा । तेहिं पुनि यह दारुन दुख दीन्हा ॥  
 जौं मोरे मन वच अरु काया । प्रीति राम पद कमल अमाया ॥  
 तौं कपि होउ विगत श्रम सूला । जौं मो पर ग्यु शति अनुकूला ॥  
 सुनत वचन उठि बैठ करांवा । कहि जय जयनि कोसलायोसा ॥

सो०—लीन्ह कपिहि उर लाइ पुलकित तनु लोचन सजल ।

प्रीति न हृदयँ समाइ सुमिरि राम रघुकुलतिलक ॥५९॥

तात कुसल कहु सुखनिधान की । सहित अनुज अरु मातु जानकी ॥

कपि सब चरित समास बखाने । भय दुखी मन महुँ पछिताने ॥

अहह दैव मैं कत जग जायउँ । प्रभु के एकहु काज न आयउँ ॥

जानि कुअवसरु मन धरि धीरा । पुनि कपि सन बोले बलवीरा ॥

तात गहरु होइहि तोहि जाता । काजु नसाइहि होत प्रभाता ॥

चहुँ मम सायक सैल समेता । पठवौँ तोहि जहँ कृपानिकेता ॥

सुनि कपि मन उपजा अभिमाना । मोरें भार चलिहि किमि वाना ॥

राम प्रभाव विचारि बहोरी । बंदि चरन कह कपि कर जोरी ॥

दो०—तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहउँ नाथ तुरंत ।

अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चलेउ ह मंत ॥६०(क)॥

भरत बाहु बल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार ।

मन महुँ जात सराहत पुनि पुनि पवनकुमार ॥६०(ख)॥

उहाँ राम लछिमनहि निहारी । बोले वचन मनुज अनुसारी ॥

अर्थ राति गइ कपि नहिं आयउ । राम उठाइ अनुज उर लायउ ॥

सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ । बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ ॥

मम हित लागि तजेहु पितु माता । सहेहु विपिन हिम आतप बाता ॥

अनुराग कहाँ अब भाई । उठहु न सुनि मम बच विकलाई ॥

जौँ जनतेउँ वन बंधु विछोहू । पिता वचन मनतेउँ नहिं ओहू ॥

सुत वित नारि भवन परिवारा । होहिं जाहिं जग वारहिं वारा ॥

अस विचारि जियँ जागहु ताता । मिलइन जगत सहोदर भ्राता ॥

जथा पंख विनु खग अति दीना । मनि विनु फनि करिवर कर हीना  
 अस मम जिवन बंधु विनु तोही । जौं जड़ दैव जिआवै मोही ॥  
 जैहउँ अवध कौन मुहु लाई । नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई ॥  
 बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं । नारि हानि विसेप छति नाहीं ॥  
 अब अपलोकु सोकु सुत तोरा । सहिहि निरुर कठोर उर मोरा ॥  
 निज जननी के एक कुमारा । तात तासु तुम्ह प्रान अधारा ॥  
 सीपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी । सब विधि सुखद परम हित जानी  
 उतरु काह दैहउँ तेहि जाई । उठि किन मोहि सिखावहु भाई ॥  
 बहु विधि सोचत सोच विमोचन । स्रवत सलिल राजिव दल लोचन  
 उमा एक अखंड रघुराई । नर गति भगत कृपाल देखाई ॥

सो०—प्रभु प्रलाप सुनि कान विकल भए वानर निकर ।

आइ गयउ हनुमान जिमि करुना महँ वीर रस ॥६१॥

हरपि राम भेटेउ हनुमाना । अतिकृतग्य प्रभु परम सुजाना ॥  
 तुरत वैद तव कीन्हि उपाई । उठि बैठे लछिमन हरपाई ॥  
 हृदयँ लाइ प्रभु भेटेउ भ्राता । हरपे सकल भालु कपि ब्राता ॥  
 कपि पुनि वैद तहाँ पहुँचावा । जेहि विधि तवहिं ताहि लइ आवा  
 यह वृत्तांत दसानन सुनेऊ । अति विपाद पुनि पुनि सिर घुनेऊ ॥  
 व्याकुल कुंभकरन पहिं आवा । विविध जतन करि ताहि जगावा ॥  
 जागा निसिचर देखिअ कैसा । मानहुँ कालु देह धरि वैसा ॥  
 कुंभकरन ब्रह्मा कहु भाई । काहे तव मुख रहे सुखाई ॥  
 कथा कही सय तेहिं अभिमानी । जेहि प्रकार सीता हरि आनी ॥  
 तात कपिन्ह सय निसिचर मारे । महा महा जोधा संघारे ॥



दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी। भट अतिक्राय अंपन री ॥  
अपर महोदर आदिक बीरा। परे समर महि रनधीरा ॥

दो०—सुनि दसकंधर बचन तब भकरन विलान ।

जगदं हरि आनि अब सठ चाहत ल्यान ॥६२॥

भलन कीन्ह तै निसिचर नाहा। अब मोहि आइ जगाएहि ॥  
अजहूँ तात त्यागि अभिमाना। भजहु राम होइहि कल्या ॥  
हैं दससोस मनुज रघुनायक। जाके हनूम पाय ॥  
अहह बंधु तै कीन्हि खोटाई। प्रथमहि मोहिन सुनाएहि आई ॥  
कीन्हेहु प्रभु विरोध तेहि देवक। सिव विरंचि सुर जाके से ॥  
नारद मुनि मोहि ग्यान जो कहा। कहतेउँ तोहि समय निरबहा ॥  
अब भरि अंक भेंडु मांहि भाई। लावन सुफल करौं मैं जाई ॥  
स्याम गात सरसोरुह लोचन। देखौं जाइ तापत्रय चन ॥

दो०—राम रूप गुन सुमिरत मगन भयउ छन एक ।

रावन मागेउ कोटि घट मद अरु महिष अनेक ॥६३॥

महिष खाइ करि मदिरा पाना। गर्जा बज्राघात स ना ॥  
कुंभकरन दुर्मद रन रंगा। चला दुर्ग तजि खेन न सं ॥  
देखि विभीषनु आगे आयउ। परेउ चरन निज नाम सुनायउ ॥  
अनुज उठाइ हृदयँ तेहि लायो। रघुपति भ जानि मन भायो ॥  
लात रावन मोहि मारा। कहत परम हित मंत्र विचारा ॥  
तेहिं गलानि रघुपति पहिं आयउँ। देखि दीन प्रभु के मन भायउँ ॥  
सुनु सुत भयउ कालवस रावन। सो कि मान अब परम सिखा ॥  
धन्य धन्य तै धन्य विभोषन। भयहु निसिचर कुल ना ॥

बंधु बंस तै कीन्ह उजागर । भजेहु राम सोभा सुख सागर ॥

दो०—बचन कर्म मन कपट तजि भजेहु राम रनधीर ।

जाहु न, निज पर स्रस्र मोहि भयउँ कालवस बीर ॥ ६४ ॥

बंधु बचन सुनि चला विभीषन । आयउ जहँ त्रैलोक निभूपन ॥

नाथ भूधराकार सरीरा । कुंभकरन आयत रनधीरा ॥

एतना कपिन्ह सुना जव काना । किलकिलाइ धाए बलमाना ॥

लिए उठाइ विटप अरु भूधर । कटकटाइ डारहिं ता ऊपर ॥

कोटि कोटि गिरि सिखर प्रहारा । करहिं भालु कपि एक एक वारा ॥

मुखो न मनु तनु टरयो न टारयो । निमिगन अरु फन्नि को मारयो ॥

तब मारुतमुत मुठिका हन्यो । परयो धरनि व्याकुल सिर घुन्यो ॥

पुनि उठि तेहिं मारेउ हनुमंता । घुर्मित भूतल परेउ तुरंता ॥

पुनि नल नीलहि अनि पठारेसि । जहँ तहँ पटक पटक भट टारेसि ॥

चली बलीमुख्य सेन पराई । अति भय तसित न कोउ समुहाई ॥

दो०—अंगदादि कपि मुरुछित करि समेत सुग्रीव ।

काँख दावि कपिराज कहँ चला अमित बल सीवा ॥ ६५ ॥

उमा करत रघुपति नरलीला । खेरुत गरुड जिमि अहिगन मीला ॥

भृकुटिभंग जो कालहि खाई । ताहि कि सोहइ ऐसि लराई ॥

बग पावनि कीरति निस्तरिहहिं । गाइ गाइ भयनिधि नर तरिहहिं ॥

मुरुछा गइ मारुतमुत जागा । सुग्रीवहि तन खानन लागा ॥

सुग्रीवहु कै मुरुछा चीता । नियुकि गयउ तेहिं मृतक प्रीती ॥

काटेसि दसन नामिका काना । गरजि अक्राम चलउ तेहिं चाना ॥

गहेउ चरन गहि भूमि पठारा । अति लाघवँ उठि पुनि तेहि मारा ॥

पुनि आयउ प्रभु पहिँ बलवाना । जयति जयति जय कृपानिधाना ॥  
 नाक कान काटे जयँ जानी । फिरा क्रोध करि भइ मन ग्लानी ॥  
 सहज भीम पुनि विनु श्रुति नासा । देखत कपि दल उपजी त्रासा ॥  
 दो०—जय जय जय रघुवंस मनि धाए कपि दै हूह ।

एकहि वार तासु पर छाडेन्हि गिरि तरु जूह ॥ ६६ ॥

भकरन रन रंग विरुद्धा । सन्मुख चला काल जनु क्रुद्धा ॥  
 कोटि कोटि कपि धरि धरि खाई । जनु टीड़ी गिरि गुहाँ समाई ॥  
 कोटिन्ह गहि सरीर सन मर्दा । कोटिन्ह मीजि मिलव महि गर्दा ॥  
 सु नासा श्रवनन्हि कीं बाटा । निसरि पराहिँ भालु कपि ठाटा ॥  
 रन मद मत्त निसाचर दर्पा । विख ग्रसिहि जनु एहि विधि अर्पा ॥  
 मुरे सुभट सब फिरहिँ न फेरे । खल्ल न नयन नहिँ नहिँ टेरे ॥  
 कुंभकरन कपि फौज विडारी । सुनि धाई रचनाचर धारी ॥  
 देखी राम विकल कटकाई । रिपु अनीक नाना विधि आई ॥

दो०—सुनु सुग्रीव विभीषन अनुज संभारेहु सैन ।

मैं देखउँ खल बल दलहि बोले राजिवनैन ॥ ६७ ॥  
 कर सारंग साजि कटि भाथा । अरि दल दलन चले रघुनाथा ॥  
 प्रथम कीन्हि प्रभु धनुष टँकोरा । रिपु दल बधिर भयउ सुनि सोरा ॥  
 सत्यसंध छाँडे सर लच्छा । कालसर्प जनु चले सपच्छा ॥  
 जहँ तहँ चले विपुल नाराचा । लगे कटन भट विकट पिसाचा ॥  
 कटहिँ चरन उर सिर भुजदंडा । बहुतक वीर होहिँ सत खंडा ॥  
 घुमिँ घुमिँ घायल महि परहीं । उठि संभारि सुभट पुनि लरहीं ॥  
 लागत वान जलद जिमि गाजहिँ । बहुतक देखि कठिन सर भाजहिँ ॥

रुंड प्रचंड मुंड विनु धावहि । धरु धरु मारु मारु धुनि गावहि ॥

दो०—छन महुँ प्रभु के सायकन्हि काटे विकट विसाव ।

पुनि रघुवीर निपंग महुँ प्रविसे सर नाराव ॥ ६८ ॥

कुंभकरन मन दीख विचारी । हति छन माझ निसाचर धारी ॥

भा अति क्रुद्ध महाबल चोरा । कियो मृगनायक नाद गँभीरा ॥

कोपि महीधर लेइ उपासी । डारइ जई मरुट भट भारी ॥

आवत देखि सैल प्रभु भारे । सान्हिकाटिरजसम हरि डारे ॥

पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक । छाँड़े अति काल बहू सायक ॥

तनु महुँ प्रविसि निसरि सर जाही । जिमि दामिनि घन माझ समाही ॥

सोनित स्रवत मोह तनु कारे । जनु कज्जु गिरि गेह पनारे ॥

विकल विलोकि भालु कपि धार । विहँसा जवहि निकट कपि आर ॥

दो०—महानाद करि गर्ना कोटि कोटि गहि कीस ।

महि पटकइ गजराज इन सपथ काइ दमसोस ॥ ६९ ॥

भागे भालु बलामुख जूथा । बृहु विलोकि जिमि मेर बरुथा ॥

पले भागि कपि भालु भयानो । विरुज पृथग्न आरत यानो ॥

यइ निसिचर दुहाल सम अइई । कपिहुज देम परन अर चइई ॥

कृपा वारिधर राम खगरी । पादि पाहि प्रनतारनि हाठी ॥

सररुन बचन सुनत भगराजा । चले सुधारि मगमन वाना ॥

राम सेन निज पाछे गालो । चले मरुप मशयलवाना ॥

खँचि धनुष सर सत संधाने । छूटे तीर सतीर समाने ॥

लगत मर धारा सि भग । कुभ्र डगमगत डोलति धरा ॥

लोन्ह एक तेहि सैल उपाटी । रघुकुलतिलरुभुजासोइ काटा ॥

। बाम बाहु गिरि धारी । प्रभु उभुजाकाटि महि णरी ॥  
 काटें भुजा सोह खल कैसा । पच्छहीन मंदर गिरि ॥ १ ॥  
 उग्र बिलोकनि प्रभुहि बिलोका । ग्रसन चहत मानहुँ त्रैलोका ॥  
 दो०—करि चिकार घोर अति धावा बदन प. रि।

गगन सिद्ध सुर त्रासित हा हा हेति पुकारि ॥ ७० ॥

य देव करुनानिधि जान्यो । श्रवन प्रजंत सरासनु तान्यो ॥  
 बिसिख निकर निसिचर मुख भरेऊ । तदपि महाबल भूमि न परेऊ ॥  
 सरन्हि भरा मुख सन्युख धावा । काल त्रौन सजीव जनु आवा ॥  
 तब प्रभु कोपि तीव्र सर लीन्हा । धर ते भिन्न तासु सिर कीन्हा ॥  
 सो सिर परेउ दसानन आगें । बिकल भयउ जिमि फनि मनि त्यागें ॥  
 धरनि धसइ धर धाव प्रचंडा । तब प्रभु काटि कीन्ह दुइ खंडा ॥  
 परे भूमि जिमि नभ तें भूधर । हेठ दाबि कपि भालु निसाचर ॥

सु तेज प्र बदन समाना । सुर मुनि सबहिं अचंभव माना ॥  
 सुर दुंहुभीं बजावहिं हरषहिं । अस्तुति करहिं सुमन बहु बरषहिं ॥  
 करि बिनती सुर सकल सिधाए । तेही समय देवरिषि आए ॥  
 णणनोपरि हरि धुन गन गाए । रुचिर वीररस प्रभु मन भाए ॥  
 बैगि हतहु खल कहि मुनि गए । राम समर महि भेत भए ॥

छं०—संग्राम भूमि बिराज रघुपति अतुल कोसल धनी ।

श्रम बिंदु मुख राजीव लोचन अरुन तन सोनित कनी ॥

भुज जुगल फेरत सरसर न भालु कपि चहु दिसि बने ।

कह दास तुलसी कहि न सक छवि स्रेष जेहि आनन घने ॥



मारुतसुत अंगद नल नीला । कीन्हेसि बिकल सकल बलसीला ॥  
 पुनि लछिमन सुग्रीव विभीषन । सरन्हि मारि कीन्हेसि जर्जर तन ॥  
 पुनि रघुपति सैं जूझै लागा । सर छाँड़इ होइ लागहिं नागा ॥  
 व्याल पास बस भए खरारी । खबस अनंत एक अधिकारी ॥  
 नट इव कपट चरित कर नाना । सदा स्वतंत्र एक भगवाना ॥  
 रन सोभा लागि प्रभुहिं बँधायो । नागपास देवन्ह भय पायो ॥  
 दो०—गिरिजा जासु नाम जपि मुनि काटहिं भव पास ।

कि बंध तर आवइ व्यापक बिस्व निवास ॥७३॥  
 चरित राम के सगुन भवानी । तर्किन जाहिं बुद्धि बल बानी ॥  
 विचारि जे तम्य विरागी । रामहि भजहिं तर्क सब त्यागी ॥  
 व्याकुल कटकुकीन्ह घननादा । पुनि भा प्रगट कहइ दुर्वादा ॥  
 वंत कह खल रहु ठाढ़ा । सुनि करि ताहि क्रोध अतिबाढ़ा ॥  
 बूढ़ जानि सठ छाँड़ेउँ तोही । लागेसि अधम पचारै मोही ॥  
 कहि तरल त्रिसल चलायो । जामवंत कर गहि सोइ धायो ॥  
 मारिसि मेघनाद कै छाती । परा भूमि घुर्मित सुरघाती ॥  
 पुनि रिसान गहि चरन फिरायो । महि पछारि निज बल देखरायो ॥  
 बर प्रसाद सो मरइ न मारा । तब गहि पद लंका पर डारा ॥  
 इहाँ देवरिषि गरुड़ पठायो । राम समीप सपदि सो आयो ॥  
 दो०—खगपति सब धरि खाए माया नाग बरूथ ।

माया विगत भए सब हरषे नर जूथ ॥७४( )॥  
 गहि गिरि पादप उपल नख धाए कीस रिसाइ ।  
 चले तमीचर बिकलतर गढ़ पर चढ़े पराइ ॥७४( )॥

मेघनाद केँ मुरछा जागो । पितहि विलोकि लाज अतिलागी ॥  
 तुरत गयउ गिरिवर कंदरा । करौ अजय मख अस मन धरा ॥  
 इहाँ विभीषन मंत्र विचारा । मुनहु नाथ बल अतुल उदारा ॥  
 मेघनाद मख करइ अपावन । खल मायावी देव सतावन ॥  
 जौँ प्रभु सिद्ध होइ सो पाइहि । नाथ बेगि पुनि जीति न जाइहि ॥  
 मुनि रघुपति अतिसय सुख माना । बोलै अंगदादि कपि नाना ॥  
 लठिमन संग जाहु सब भाई । करहु विधंस जग्य कर जाई ॥  
 तुम्ह लठिमन मारेहु रन ओही । देखि सभय सुर दुख अति मोही ॥  
 मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई । जेहि छीजै निसिचर मुनु भाई ॥  
 जामवंत सुग्रीव विभीषन । सेन समेत रहेहु तीनिउ जन ॥  
 जब रघुवीर दोन्हि अनुसासन । कटि निपंग कसि साजि सरासन ॥  
 प्रभु प्रताप उर धरि रनधीरा । बोलै धन इव गिरा गँभीरा ॥  
 जौँ तेहि आजु बधे विनु आगौँ । तौ रघुपति सेवक न कहावौँ ॥  
 जौँ सत संकर करहिँ सहाई । तदपि हतउँ रघुवीर दोहाई ॥  
 दो०—रघुपति चरन नाइ सिरु चलेउ तुरंत अनंत ।

अंगद नील मयंद नल संग सुभट हनुमंत ॥ ७५ ॥

जाइ कपिन्ह सो देखा वैसा । आहुति देत रुधिर अरु भैसा ॥  
 कौन्ह कपिन्ह मर जग्य विधंसा । जच न उठइ तत्र करहिँ प्रमंसा ॥  
 तदपि न उठइ धरेन्हि कच जाई । लानन्हि हति हति चले पराई ॥  
 लै त्रिगुल धाग कपि भागे । आए जई रामानुज आगे ॥  
 आग पगम क्रोध कर मारा । गर्ज घोर ग्य चागहिँ चाग ॥  
 कोपि मरुतमुत अंगद धाप । हति त्रिगुल उर धरनि गिगए ॥



प्रभु कहँ छाँड़ेसि सूल प्रचंडा । सर हति कृत अनंत जुग खंडा ॥  
 ठठि बहोरि मारुति जुवराजा । हतहिं कोपि तेहि घाउ न बाजा ॥  
 फ़िरे वीर रिपु मरइ न मारा । तव धावा करि घोर चिकारा ॥  
 आवत देखि छ जनु काला । लछिमन छाड़े विसिख कराला ॥  
 देखेसि आवत पवि सम वाना । तुरत भयउ खल अंतरधाना ॥  
 विविध वेष धरि करइ लगाई । कबहुँक प्रगट कबहुँ दुरि जाई ॥  
 देखि अजय रिपु डरपै कीसा । परम क्रुद्ध तव भयउ अहीसा ॥  
 लछिमन मन अस मंत्र ददावा । एहि पापिहि मैं बहुत खेलावा ॥  
 सुमिरि कोसलाधीस प्रतापा । सर संधान कीन्ह दापा ॥  
 छाड़ा वान माझ उर लागा । मरती बार कपटु सब त्यागा ॥

दो०—रामानुज कहँ रामु कहँ अस कहि छाँड़ेसि प्रान ।

धन्य धन्य तव जननी कह अंगद हनुमान ॥ ७६ ॥

विनु प्रयास हनुमान उठायो । लंका द्वार राखि पुनि आयो ॥  
 तासु मरन सुनि सुर गंधर्वा । चढ़ि बिमान आए नभ सर्वा ॥  
 बरषि सुमन दुंदुभीं बजावहिं । श्रीरघुनाथ विमलजसु गावहिं ॥  
 जय अनंत जय जगदाधारा । तुम्ह प्रभु सब देवन्हि निस्तारा ॥  
 अस्तुति करि सुर सिद्ध सिधाए । लछिमन कृपासधु पहि आए ॥  
 सुत बध सुना दसानन जवहीं । गुरुछित भयउ परेउ महि तवहीं ॥  
 मंदोदरी रुदन कर भारी । उर ताड़न बहु भाँति पुकारी ॥  
 नगर लोग सब व्याकुल सोचा । सकल कहहिं दसकंधर पोचा ॥

दो०—तब दसकंठ विविधि विधि समुझाई सब नारि ।

रूप

देखहु हृदयँ विचारि ॥ ७७ ॥

तिन्हहि ग्यान उपदेसा रावन। आपुन मर कथा सुभ पावन ॥  
 पर उपदेस कुसरु बहुतेरे। जे आचरहिं ते नर न घनेरे ॥  
 निसा सिरानि भयउ भितुसारा। लगे भालु कपि चारिहुँ द्वारा ॥  
 सुभट बोलाइ दसानन बोला। रन सन्मुख जाकर मन डोला ॥  
 सो अवहीं वरु जाउ पराई। संजुग विमुख भएँ न भलाई ॥  
 निज भुज बल में वयरु बढ़ाया। देइउं उतरु जो रिपु चढ़ि आया ॥  
 अस कहि मरुत वेग रथ साजा। बाजे सकल जुझाऊ बाजा ॥  
 चले घोर सब अतुलित बली। जनु कज्जल कै आँधो चली ॥  
 असगुन अमित होहिं तेहि काला। गनइन भुज बल गर्व विसाला ॥

८०—अति गर्व गनइनसगुन असगुन सत्रहिं आयुध हाथ ते ।

भट गिरत रथ ते बाजि गज चिह्नरत भाजहिं साथ ते ॥

गामाय गोध कराल खर रव खान बोलहिं अति घने ।

जनु कालदूत उलूक बोलहिं वचन परम भयावने ॥

दो०—ताहि कि संपति सगुन सुभ सपनेहुँ मन विश्राम ।

भूत द्रोह रत मोह बस राम विमुख रति काम ॥ ७८ ॥

चलेउ निसाचर कटक अगारा। चतुरंगिनी अनी बहु धारा ॥

विविधि भाँति बाहन रथ जाना। विपुल वरन पताक ध्वज नाना ॥

चले मत गज जूथ घनेरे। प्राविट जलद मरुत जनु प्रेरे ॥

वरन वरन विरदँत निकाया। समर सर जानहिं बहु माया ॥

अति विचित्र बाहिनी विराजो। घोर वसंत सेन जनु साजो ॥

चलत कटक दिगसिंधुर डगड़ी। लुभित पयाधि कुधर डगमगड़ी ॥

उठी रेनु रनि गयउ छपाई। मरुत धकित बसुधा अह्लाई ॥

पनव निसान घोर रव बाजहिं । प्रलय समय के घन जनु गाजहिं ॥  
 भेरि नफ़ीरि बाज सहनाई । सारू राग सुभट सुखदाई ॥  
 केहरि नाद वीर सब करहीं । निज निज बल पौरुष उच्चरहीं ॥  
 कहइ दसानन सुनहु सुभट्टा । मर्दहु भालु कपिन्ह के ठट्टा ॥  
 हौं मारिहउं भूष द्रौ भाई । अस कहि सन्मुख फौज रेंगाई ॥  
 यह सुधि सकल कपिन्ह जब पाई । धाए करि रघुवीर दोहाई ॥

छं०—धाए विसाल कराल मर्कट भालु काल समान ते ।  
 मानहुँ सपच्छ उड़ाहिं भूधर बृंद नाना वान ते ॥  
 नख दसन सैल महाद्रुमायुध सबल संक न मानहीं ।  
 जय राम रावन मत्त गज मृगराज सुजसु बखानहीं ॥

दो०—दुहु दिसि जय जयकार करि निज निज जोरी जानि ।

भिरे वीर इत रामहि उत रावनहि बखानि ॥७९॥

रावनु रथी विरथ रघुवीरा । देखि विभीषन भयउ अधीरा ॥  
 अधिक प्रीति मन भा संदेहा । बंदि चरन कह सहित सनेहा ॥  
 नाथ नरथ नहिं तन पद व्राना । केहि विधि जितव वीर बलवाना ॥  
 सुनहु सखा कह पानिधाना । जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना ॥  
 सौरज धीरज तेहि रथ चाका । सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका ॥  
 बल विवेक दम परहित घोरे । छ कृपा सम रजु जोरे ॥  
 ईस भजनु सारथी सुजाना । विरति चर्म संतोष कृपाना ॥  
 दान परसु बुधि सि प्रचंडा । बर विग्यान कठिन कोदंडा ॥  
 अमल अचल मन त्रोन समाना । सम जम नियम सिलीमुख नाना ॥  
 कवच अमेद विप्र गुर पूजा । एहि संम विजय उपाय न दूजा ॥

सखा धर्ममय अस रथ जाके। जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके॥

दो०—महा अजय मंसार रिपु जीति सकइ सो वीर ।

जाके अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर ॥८०(क)॥

सुनि प्रभु वचन विभीषन हरपि गहे पद कंज ।

एहि मिस मोहि उपदेसेहु राम कृपा सुख पुंज ॥८०(ख)॥

उत पचार दसकंधर इत अंगद हनुमान ।

लरतनिसाचरभालु कपि करिनिज निज प्रभु आन ॥८०(ग)॥

सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना । देखत रन नभ चढ़े विमाना ॥

हमहु उमा रहे तेहि संग्गा । देखत राम चरित रन रंग्गा ॥

सुभट समर रस दुहु दिसि माते । कपि जयसील राम बल ताते ॥

एक एक सन भिरहिं पचारहिं । एकन्ह एक मर्दिं महि पारहिं ॥

मारहिं काटहिं धरहिं पट्टारहिं । सीस तोरि सीसन्ह सन मारहिं ॥

उदर विदारहिं भुजा उपारहिं । गहि पद अबनि पटकि भट डारहिं ॥

निसिचर भट महि गाड़हिं भालू । ऊपर डारि देहि बहु बालू ॥

वीर बलीमुख जुद्ध विरुद्धे । देखिअत विपुल काल जनु क्रुद्धे ॥

दं०—क्रुद्धे कृतांत समान कपि तन स्रवत सोनित राजर्ही ।

मर्दिहिं निमाचर कटक भट बलवंत घन जिमि गाजर्ही ॥

मारहिं चपेटन्हि डाटि दातन्ह काटि लातन्ह मीजर्ही ।

चिकरहिं मर्कट भालु छल बल करहिं जेहिं खल छीजर्ही ॥१॥

धरि गाल फारहिं उर विदागहिं गल अँतावरि मेलर्ही ।

प्रह्लादपति जनु विविध तनु धरि ममर अंगन खेलर्ही ॥

धरु मारु काडु पछारु घोर गिरा महि भरि रही ।

जय राम जो वृन ते कुलिस कर कुति ते सही ॥ २ ॥

दो०—निज दल विचलत देखेसि बीस भुजाँ दस ।

रथ चढ़ि चलेउ दसानन फिरहु फिरहु करि दाप ॥ ८१ ॥

धायउ परम क्रुद्ध दसकंधर । सन्मुख चले हूह दै बंदर ॥

गहि कर पादप उपल पहारा । डारेन्हि पर एकहि ॥

लागहि सैल बज्र तन तास्र । खंड उड होइ टहि ॥

चला न अचल रहा रथ रोपी । रन दुर्मद रावन अति कोपी ॥

इतउत झपटि दपटि कपि जोधा । मदैँ लाग भयउ अति क्रोधा ॥

चले पराइ भालु कपि नाना । त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना ॥

पाहि पाहि रघुवीर गोसाई । यह खाइ की ॥

तेहि देखे कपि सकल पराने । दसहुँ संधाने ॥

छं०—संधानि धनु सर निकर छाड़ेसि उरग जिमि उड़ि लागहीं ।

रहे पूरि सर धरनी गगन दिसि बिदिसि कहँ कपि भागहीं ॥

भयो अति कोलाहल विकल कपि दल भा वालहिँ आतुरे ।

रघुवीर करुना सिंधु आरत बंधु जन रच्छक हरे ॥

दो०—निज दल विकल देखि काटि कसि निपंग धनु हाथ ।

लछिमन चले क्रुद्ध होइ नाइ राम पद माथ ॥ ८२ ॥

रे ल का मारसि कपि भालू । तेहि बिलो तोर मैं कालू ॥

रहेउँ तोहि तधाती । आजु निपाति जुड़ावउँ ॥

कहि छाड़ेसि प्रचंडाल मन किए सकल सत ॥

तोटिन्ह आयुध रावन डारे । तिल करि काटि नि रे ॥

पुनि निज चानन्ह कीन्ह प्रहारा । स्यंदनु भंजि सारथी मारा ॥  
 सत सत सर मारे दस भाला । गिरि सृंगन्ह जनु प्रविसहिं व्याला ॥  
 पुनि सत सर मारा उर माहीं । परेउ धरनि तल सुधिकहु नाही ॥  
 उठा प्रबल पुनि मुरुष्टा लागी । छाड़िसि ब्रज दीन्हि जो सांगी ॥

छं०—सो ब्रह्म दत्त प्रचंड सक्ति अनंत उर लागी सही ।  
 परघो पीर विकल उठाव दसमुख अतुल बल महिमा रही ॥  
 ब्रह्मांड भवन विराज जाकेँ एक सिर जिमि रज कनी ।  
 तेहि चह उठावन मूढ़ रावन जान नहिं त्रिभुवन भनी ॥

दो०—देखि पवनसुत धायउ बोलत बचन कठोर ।  
 आवत कपिहि हन्यो तेहिं मुष्टि प्रहार प्रघोर ॥ ८३ ॥

झानु टेकि कपि भूमि न गिरा । उठा सैभारि बहुत रिस भरा ॥  
 मुठिका एक ताहि कपि माग । परेउ सैल जनु बज्र प्रहारा ॥  
 मुरुष्टा गै बहोरि सो जागा । कपि बल विपुल सराहन लागी ॥  
 बिग धिग मम पौरुष धिग मोही । जाँ तै जिअत रहेमि मुरडोही ॥  
 वस कहि लटिमन कहूँ कपि ल्यायो । देखि दसानन विसमय पायो ॥  
 कह रघुवीर समुष्टु जियै आता । तुम्ह कृतांत भच्छक मुर घाता ॥  
 सुनत बचन उठि बैठ कृपाला । गई गगन सो सकति कगला ॥  
 पुनि कोदंड चान गहि धाए । रिपु सन्मुख अति आतुर आए ॥

छं०—आतुर बहोरि विभंजि स्यंदन छत दति व्यावृल कियो ।  
 गिरयो धरनि दसदंधर विबलतर चान सत बेण्यो हियो ॥  
 सागधी दूसर घाल रथ तेहि तुरत लंका लै गयो ।  
 रघुवीर बंधु प्रताप पुंज बहोरि प्रष्टु चरनन्हि नयो ॥

धरु मारु काटु पछारु घोर गिरा महि भरि रही ।

जय राम जो तृन ते कुलिस ति ते तृन सही ॥ २ ॥

दो०—निज दल विचलत देखेसि बीस दस ।

रथ चढ़ि चलेउ दसानन फिर फिरहु करि दाप ॥ ८१ ॥

धायउ परम क्रुद्ध दसकंधर । सन्मुख चले हूह दै ॥

गहि कर पादप उ पहारा । डारेन्हि पर एकहि ॥

लागहि सैल बज्र तन तासू । खंड ड होइ टहि ॥

चला न अचल रहा रथ रोपी । रन दुर्मद रावन अति कोपी ॥

इत झपटि दपटि कपि जोधा । मदै भयउ अति क्रोधा ॥

चले पराइ भालु कपि नाना । हि त्राहि अंगद हनुमाना ॥

पाहि पाहि रघुबीर गोसाई । यह खाइ की ॥

तेहि देखे कपि पराने । दसहुँ संधाने ॥

छं०—संधानि धनु सर निकर छाड़ेसि जिमि उरि लागहीं ।

रहे पूरि सर धरनी गगन दिसि विदिसि कपि ॥

भयो अति कोलाहल विकल कपि दल भा बालहि आतुरे ।

रघुबीर करुना सिंधु आरत बंधु हरे ॥

दो०—निज दल विकल देखि कटि कसि निषंग धनु हाथ ।

लछिमन चले क्रुद्ध होइ नाइ राम पद ॥ ८२ ॥

रे खल का मारसि कपि भालू । मोहि बिलो र मैं कालू ॥

रहेउँ तोहि तघाती । आजु निपाति जुड़ावउँ ॥

अस कहि छाड़ेसि प्रचंडा । लछिमन किएस सत ॥

कोटिन्ह आयुध रावन डारे । तिल करि काटि निवारे ॥

पुनि निज बानन्ह कीन्ह प्रहारा । स्पंदनु भंजि सारथी मारा ॥  
 सत सत सर मारे दस भाला । गिरि सुंगन्ह जनु प्रविसहिं व्याला ॥  
 पुनि सत सर मारा उर माहीं । परेउ धरनि तल सुधिकछु नाहीं ॥  
 उठा प्रयल पुनि मुरुछा जागी । छाड़िसि ब्रह्म दीन्हि जो साँगी ॥

छं०—सो ब्रह्म दत्त प्रचंड सक्ति अनंत उर लागी सही ।  
 परयो वीर विकल उठाव दसमुख अतुल बल महिमा रही ॥  
 ब्रह्मांड भवन चिराज जाकेँ एक सिर जिमि रज कनी ।  
 तेहि चह उठावन मूढ़ रावन जान नहिं त्रिभुजन भनी ॥

दो०—देखि पवनसुत धायउ बोलत बचन कठोर ।  
 आवत कपिहि हन्यो तेहिं मुष्टि प्रहार प्रघोर ॥ ८३ ॥

झानु टेकि कपि भूमि न गिरा । उठा सँभारि बहुत रिस भरा ॥  
 मुठिका एक ताहि कपि मारा । परेउ सैल जनु बज्र प्रहारा ॥  
 मुरुछा गै बहोरि सो जागा । कपि बल विपुल सराहन लागा ॥  
 धिग धिग मम पौरुष धिग मोही । जाँ तैं जिअत रहेसि सुरद्रोही ॥  
 अस कहि लल्लिमन कहूँ कपि ल्यायो । देखि दसानन विसमय पायो ॥  
 कह रघुवीर समुष्टु जियै आता । तुम्ह कृतांत भच्छक सुर त्राता ॥  
 सुनत बचन उठि बैठ कृपाला । गई गगन सो सकति कराला ॥  
 पुनि कोदंड बान गहि धाए । रिपु सन्मुख अति आतुर आए ॥

छं०—आतुर बहोरि विभंजि स्पंदन सत हति व्याकुल कियो ।  
 गिरयो धरनि दसकंधर विकलतर बान सत बेध्यो हियो ॥  
 सारथी दूसर घालि रथ तेहि तुरत लंका लै गयो ।  
 रघुवीर बंधु प्रताप पुंज बहोरि प्रभु चरनन्हि नयो ॥



दो०—उहाँ दसानन जागि करि करै लाग कछु जग्य ।

राम विरोध जय चह सठ हठ बस अति अग्य ॥ ८४ ॥

इहाँ विभीषन सब सुधि पाई । सपदि जाइ रघुपतिहि सुनाई ॥

नाथ करइ रावन एक गा । सिद्ध भएँ नहिं मरिहि अभागा ॥

पठवहु नाथ बेगि भट बंदर । करहिं बिंस आव दसकंधर ॥

होत प्रभु सुभट पठाए । हनुमदादि अंगद सब धाए ॥

कौतुक कूदि चढ़े कपि लं । पैठे रावन भवन असंका ॥

जग्य करत जबहीं सो दे । सकल कपिन्ह भा क्रोध बिसेषा ॥

रन ते निलज भाजि गृह आवा । इहाँ आइ बक ध्यान लगावा ॥

अस कहि अंगद मारा लाता । चितवन सठ रथ मन राता ॥

छं०—नहिं चितव जब करि कोप कपि गहि दसन लातन्ह मारहीं ।

धरि केस नारि नि रि बाहेर तेऽतिदीन पुकारहीं ॥

तव उठेउ क्रुद्ध कृतांत सम गहि चरन बानर डारई ॥

एहि बीच कपिन्ह बिधंस कृत मख देखि मन महुँ हारई ॥

दो०—जग्य बिधंसि कुसल कपि आए रघुपति पास ।

चलेउ निसाचर क्रुद्ध होइ त्यागि जिवन कै आस ॥ ८५ ॥

चलत होहिं अति असुभ भयंकर । बैठहिं गीध उड़ाइ सिरन्ह पर ॥

भयउ कालवस काहु न माना । कहेसि बजावहु जुद्ध निसाना ॥

चली तमीचर अनी अपारा । बहु गज रथ पदाति असवारा ॥

प्रभु सन्मुख धाए खल कैशें । सलभ समूह अनल कहँ जैशें ॥

इहाँ देवतन्ह अस्तुति कीन्ही । दारुन विपति हमहि एहिं दीन्ही ॥

अब जनि राम खेलावहु एही । अतिसय दुखित होति वैदेही ॥

देव वचन सुनि प्रभु मुसुकाना। उठि रघुवीर सुधारे वाना ॥  
जटा जूट दृढ़ बाँधे माथे। सोहहिं सुमन बीच विचगाथे ॥  
अरुन नयन वाग्दि तनु स्यामा। अखिल लोक लोचनाभिरामा ॥  
कटितट परिकर कस्यो निपंगा। कर कोदंड कठिन सारंगा ॥

छं०—सारंग कर सुंदर निपंग सिलीमुखाकर कटि कस्यो।  
भुजदंड पीन मनोहरायत उर धरासुर पद लस्यो ॥  
कह दास तुलसी जबहिं प्रभु सर चाप कर फेग्न लगे।  
ब्रह्मांड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूधर डगभगे ॥

दो०—सोभा देखि हरपि सुर चरपहिं सुमन अपार।  
जय जय जय करुनानिधि छवि बल गुन आगार ॥८६॥

एही बीच निमाचर अनी। कसमसात आई अति घनी ॥  
देखि चले सन्मुख कपि भट्टा। प्रलयकाल के जनु घन घट्टा ॥  
पहु कृपान तरवारि चमंकहिं। जनु दहँ दिसि दामिनीं दमंकहिं ॥  
गजरथ तुरग चिकार कठोरा। गर्जहिं मनहुँ बलाहक घोरा ॥  
कपि लंगूर त्रिपुल नभ छाए। मनहुँ इंद्रधनु उए सुहाए ॥  
उठइ धूरि मानहुँ जलधारा। वान बुंद भै वृष्टि अपारा ॥  
दुहुँ दिसि पर्वत करहिं प्रहारा। बज्रपात जनु चारहिं वारा ॥  
रघुपति कोपि वान झरि लाई। घायल भै निमिचर समुदाई ॥  
लागत वान घोर चिक्कहीं। घुमि घुमि जहँ तहँ महि परहीं ॥  
सबहिं मेल जनु निशर भारी। मोनित सगि कादर भयकारी ॥

छं०—कादर भयंकर रुधिर सगिता चली परम अपावनी।  
दोउ कूल दल रथ रेत चक्र अचरत चदति भयावनी ॥

बलजंतु गज पदचर तुरग खर विविध वाहन को गने ।

सर सक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने ॥

दो०—बीर परहिं जनु तीर तरु मज्जा बहु बह फेन ।

कादर देखि डरहिं तहँ सुभटन्ह के मन चैन ॥८७॥

बजहिं श्रुत पिसाच वेताला । प्रमथ महा झोटिंग कराला ॥

काक कंक लै भुजा उड़ाहीं । एक ते छीनि एक लै खाहीं ॥

एक कहहिं ऐसिउ सौंघाई । सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई ॥

फहैरत भट घायल तट गिरे । जहँ तहँ मनहुँ अर्धजल परे ॥

खैचहिं गीध आँत तट भए । ज बंसी खेलत चित दए ॥

बहु भट बहहिं चढ़े खग जाहीं । जनु वरि खेलहिं सरि माहीं ॥

जोगिनि भरि भरि खप्पर संचहिं । श्रुतपिसाच बधु नभ नंचहिं ॥

भट कपाल करताल बजावहिं । चामुंडा नाना विधि गावहिं ॥

जंबुक निकर कटकट बट्टहिं । खाहिं हुआहिं अघाहिं दपट्टहिं ॥

कोटिन्ह रुंड मुंड विनु डोछहिं । सीस परे महि जय जय बोछहिं ॥

छं०—दोल्लहिं जो जय जय मुंड रुंड प्रचंड सिर विनु धावहीं ।

खप्परिन्ह खगग अलुज्झ जुज्झहिं सुभट भटन्ह ढहावहीं ॥

वानर निसाचर निकर मर्दहिं राम बल दर्पित भए ।

सं स अंगन सुभट सोवहिं राम सर निकरन्हि हए ॥

दो०—रावन हृदयँ बिचारा भा निसिचर संघार ।

मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौं अपार ॥८८॥

देवन्ह प्रभुहि पयादें देखा । उपजा उर अति भ विसेषा ॥

सुरपति निज रथ तुरत पठा । हरष सहित मातलि लै आवा ॥

तेज पुंज रथ दिव्य अनूपा । हराप चढ़ कासलपुर भूषा ॥  
 चंचल तुरग मनोहर चारी । अजर अमर मन सम गतिकारी ॥  
 रथारूढ़ रघुनाथहि देखी । धाए कपि बलु पाइ निसेपी ॥  
 सही न जाइ कपिन्ह कै मारी । तव रावन माया निस्तारी ॥  
 सो माया रघुबीरहि बाँची । लछिमन कपिन्ह सो मानी साँची ॥  
 देखी कपिन्ह निसाचर अनी । अनुज सहित बहू कोसलधनी ॥

छं०—बहु राम लछिमन देखि मर्कट भालु मन अति अपडरे ।  
 जनु चित्र लिखित समेत लछिमन जहँ सो तहँ चितवहिं खरे ॥  
 निज सेन चक्रित बिलोकि हँसि सर चाप मजि कोसल धनी ।  
 माया हरी हरि निर्मिप महुँ हरपी सकल मर्कट अनी ॥

दो०—बहुरि गम सब तन चितइ बोले बचन गंभीर ।  
 इंद्रजुद्ध देखहु सकल श्रमित भए अति वीर ॥८९॥

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा । विप्र चरन पंकज सिरु नावा ॥  
 तव लंकेम क्रोध उर छावा । गर्जत तर्जत सन्मुख धावा ॥  
 जीतेहु जे भट संजुग माहीं । सुनु तापस मैं तिन्ह सम नाहीं ॥  
 रावन नाम जगत जस जाना । लोकरु जाके बंदीखाना ॥  
 स्वर दूपन निराव तुम्ह मारा । बघेहु व्याध श्ववालिविचारा ॥  
 निर्मिचर निकर सुभटसंधारेहु । कुंभकरन घननादहि मारेहु ॥  
 आजु बयरु सयु लेउँ निवाही । जाँ रन भूप भाजि नहि जाही ॥  
 आजु करउँ खलु कारु हवाले । परेहु कठिन रावन के पाले ॥  
 सुनि दुर्यचन कालवस जाना । तिहाँसि बचन कह कृपानिधाना ॥  
 सत्य सत्य सब तव प्रभुताई । जल्पसि जनि देखाउ मनुसाई ॥

०—जनि जल्पना करि सुजसु नासहि नीति सुनहि करहि छमा ।  
 संसार महँ पूरुष त्रिविध पाटल रसाल पनस समा ॥  
 एक सुमनप्रद एक सुमन फल एक फलइ केवल लागहीं ।  
 एक कहहिं कहहिं करहिं अपर एक करहिं कहत न बागहीं ॥

दो०—राम बचन सुनि बिहँसा मोहि सिखावत ग्यान ।  
 बयरु करत नहिं तब डरे अब प्रिय ॥९०॥

कहि दुर्बचन क्रुद्ध द र । कुलिस समान लाग ँडै सर ॥  
 नानाकार सिलीमु धाए । दिसि अरु बिदिसि गगन महि छाए ॥  
 सर ँडेउ रघुबीरा । छन महँ जरे निसाचर तीरा ॥  
 छाडिसि तीव्र सक्ति खिसि आई । बान संग प्रभु फेरि चलाई ॥  
 कोटिन्ह चक्र त्रिसल पवारै । विनु प्रय प्रभु काटि निवारै ॥  
 निफल होहिं रावन सर कैसें । खल के सकल मनोरथ जैसें ॥  
 तब बान सारथी मारेसि । परेउ भूमि जय राम पुकारेसि ॥  
 कृपा करि सत उठावा । तब प्रभु परमक्रोध कहँ पावा ॥

०—भए क्रुद्ध जुद्ध बिरुद्ध रघुपति त्रोन यक कसमसे ।  
 कोदंड धुनि अति चंड सुनि मनुजाद सब मारुत ग्रसे ॥  
 मंदोदरी उर कंप कंपति कमठ भू भूधर त्रसे ।  
 चिकरहिं दिग्गज द गहि महि देरि कौतुक सुर हँसे ॥

दो०—तानेउ चाप श्रवन लागि ँडे बिसि कराल ।  
 राम मारगन गन चले लहलह जनु ब्याल । ९१ ॥

चले बान सपच्छ जनु उरगा । प्रथमहिं हतेउ सारथी तुरगा ॥  
 बिभंजि हति केतु पताका । गर्जा अति अंतर बल थाका ॥

तुरत आन रथ चढ़ि खिसिआना । अस्र सस्र छाँड़ेसि विधि नाना ॥  
 निफल होहिं सव उद्यम ताके । जिमि परद्रोह निरत मनसा के ॥  
 तव रावन दस सुल चलावा । बाजि चारि महि मारि गिरावा ॥  
 तुरग उठाइ कोपि रघुनायक । खँचि सरासन छाँड़े सायक ॥  
 रावन सिर सरोज वनचारी । चलि रघुवीर सिलीमुख धारी ॥  
 दस दस वान भाल दस मारे । निसरि गए चले रुधिर पनारे ॥  
 स्रवत रुधिर धायउ बलवाना । प्रभु पुनि कृत धनु सर संधाना ॥  
 तीस तीर रघुवीर पवारै । भुजन्हि समेत सीस महि पारे ॥  
 काटतहीं पुनि भए नवीने । राम बहोरि भुजा सिर छीने ॥  
 प्रभु बहु वार बाहु सिर हए । कटत झटिति पुनि नूतन भए ॥  
 पुनि पुनि प्रभु काटत भुज सीसा । अति कौतुकी कोसलाधीसा ॥  
 रहे छाइ नभ सिर अरु बाहू । मानहुँ अमित केतु अरु राहू ॥

छ०—जनु राहु केतु अनेक नभ पथ स्रवत सोनित धावहीं ।  
 रघुवीर तीर प्रचंड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं ॥  
 एक एक सर सिर निकर छेदे नभ उड़त इमि सोहहीं ।  
 जनु कोपि दिनकर कर निकर जहँ तहँ विधुंतुद पोहहीं ॥

दो०—जिमि जिमि प्रभु हर तासु सिर तिमि तिमि होहिं अपार ।

सेवत विषय विवर्ध जिमि नित नित नूतन मार ॥९२॥

दसमुख देखि सिरन्ह कै बाढ़ी । विसरा मरन भई रिस गाढ़ी ॥  
 गर्जेउ मूढ़ महा अभिमानी । धायउ दसहु सरावन तानी ॥  
 समर भूमि दसकंधर कोप्यो । वरषि वान रघुपति रथ तोप्यो ॥  
 दंड शक रथ देखि न परेऊ । जनु निहार महुँ दिनकर दुरेऊ ॥

हाहाकार सुरन्ह जब कीन् । तत्र प्रभु कोपि कारमुक लीन्हा ॥  
सर निवारि रिपु के सिर ३। ते दिसि बिदिसि गगन महि पाटे ॥

टे सिर नभ मारग धावहिं । जय जय धुनि करि भय उपजावहिं ॥  
कहँ लछिमन सुग्रीव कपीसा । कहँ रघुवीर कोसलाधीसा ॥

छं०—कहँ रामु कहि सिर निकर धाए देखि मरुट भजि चले ।

संधानि धनु रघुवंसमनि हँसि सरन्हि सिर बेधे भले ॥

सिर लिका कर कालिका गहि वृंद वृंदन्हि बहु मिरिं ।

करि रुधिर सरि मज्जनु मनहुँ संग्राम बट पूजन चलीं ॥

दो०—पुनि दसकंठ क्रुद्ध होइ छाँडी सक्ति प्रचंड ।

चली बिभी सन्मुख मनहुँ काल कर दंड ॥ ९३ ॥

देखि सरि अति घोरा । प्रनतारति भंजन पन ॥

रत बिभीषन पाछें मेला । सन्मुख राम सहेउ सोइ सेला ॥

गि सक्ति मुरुछा कलु भई । प्रभु कृत खेल सुरन्ह विकलई ॥

देखि बिभीषन प्रभु श्रम पायो । गहि कर गदा द्रु होइ धायो ॥

रे भाग्य सठ मंद कुबुद्धे । तैं सुर नर मुनि नाग विरुद्धे ॥

दर सिव कहुँ सीस चढ़ाए । एक एक के कोटिन्ह पाए ॥

तैहि कारन खल अब लगि बाँच्यो । अब तत्र कालु सीस पर नाच्यो ॥

राम विमुख सठ चहसि संपदा । अस कहि हनेसि माझ उर गदा ॥

छं०—उर माझ गदा प्रहार घोर कठोर लागत महि परचो ।

दस वदन सोनित स्रवत पुनि संभारि धायो रिस भरयो ॥

द्वौ भिरे अतिबल मल्लजुद्ध विरुद्ध एक एकहि हनै ।

रघुवीर दर्पित बिभोष बालि नहिँ कँ गनै ॥

दो०—उमा विभीषणु रावनहि सन्मुख चित्त कि काउ ।

सो अब भिगत काल ज्यों श्रीरघुवीर प्रभाउ ॥ ९४ ॥

देखा अमित विभीषणु भारी। धायउ हनुमान गिरि धारी ॥

रथ तुरंग सारथी निपाता। हृदय माझ तेहि मारेमि लाता ॥

ठाढ़ रहा अति कंपित गाता। गयउ विभीषणु जहँ जनयाता ॥

पुनि रावन कपि हतेउ पचारी। चलेउ गगन कपि पूँउ पसारी ॥

गहिसि पूँछ कपि सहित उढाना। पुनि फिरि भिरेउ प्रवल हनुमाना ॥

लरत अकास जुगल सम जोधा। एकहि एकु हनत करि क्रोधा ॥

सोहहि नभ छल बल बहू करहीं। कञ्जलगिरि मुमेरुजनु लरहीं ॥

बुधि बल निसिचर परइ न पारथो। तत्र मारुतसुत प्रभु संभारथो ॥

छं०—संभारि श्रीरघुवीर धीर पचारि कपि रावनु हन्यो ।

महि परत पुनि उठि लरत देवन्ह जुगल कहुँ जय जय भन्यो ॥

हनुमंत संकट देवि मरुट भालु काधातुर चले ।

रन मत्त रावन मरुल सुभट प्रचंड भुज बल दलमले ॥

दो०—तत्र रघुवीर पचारे धाए कीम प्रचंड ।

कपि बल प्रवल देखि तेहि कीन्ह प्रगट पापंड ॥ ९५ ॥

अंतरधान भयउ छन पचा। पुनि प्रगटे खल रूप अनेका ॥

रघुपति कटक भालु कपि जेते। जहँ तहँ प्रगट दसानन तेते ॥

देखे कपिन्ह अमित दससीसा। जहँ तहँ भजे भालु अरु कीमा ॥

भागो चानर धरहि न धीरा। ग्राहि ग्राहि लठिमन रघुवीर ॥

दहँ दिसि धारहि कोटिन्ह रावन। गर्जहि घोर कटार भयावन ॥

दरे सरल मुग चले पराई। जय कै आस तत्रहु अब भाई ॥



सब सुर जिते एक दसकंधर । अब बहु भए तकहु गिरि कंदर ॥  
रहे विरंचि संभु पुनि ग्यानी । जिन्ह जिन्ह प्र महिमा कछु जानी ॥

छं०—जा प्रताप ते रहे निर्भय कपिन्ह रिपु माने फुरे ।  
चले विचलि मर्कट भालु सकल कृपाल पाहि भयातुरे ॥  
हनुमंत अंगद नील नल अतिबल लरत रन चाँकुरे ।  
मर्दहिं दसानन कोटि कोटिन्ह कपट भू भट अंकुरे ॥

दो०—सुर नर देखे विकल हँस्यो कोसलाधीस ।  
सजि सारंग एक सर हते सकल दससीस ॥ ९६ ॥  
अभु छन महुँ माथा सब काटी । जिमि रवि उएँ जाहिं तम फाटी ॥  
रावनु एकु देखि सुर हरषे । फिरे सुमन बहु प्रभु पर वरषे ॥  
भुज उठाइ रघुपति कपि फेरे । फिरे एक एकन्ह तव टेरे ॥  
अभु बलु पाइ भालु कपि धाए । तरल तमकि संजुग महि आए ॥  
अस्तुति करत देवतन्हि देखें । भयउँ एक में इन्ह के लेखें ॥  
सठहु सदा तुम्ह मोर मरायल । अस कहि पि गगन पर धायल ॥  
हाहाकार करत सुर भागे । खलहु जाहु कहँ मोरें आगे ॥  
देखि विकल सुर अंगद धायो । कूदि चरन गहि भूमि गिरायो ॥

छं०—गहि भूमि पारयो लात मारयो बालिसुत प्रभु पहिं गयो ।  
संभारि उठि दसकंठ घोर कठोर रव गर्जत भयो ॥  
करि दाप चाप चढ़ाइ दस संधानि सर बहु वरपई ।  
किए सकल भट धायल भयाकुल देखि निज बल हरपई ॥

दो०—तव रघुपति रावन के सीस भुजा सर चाप ।  
काटे बहुत बड़े पुनि जिमि तीरथ कर पाप ॥ ९७ ॥

सिर भुज वाढ़ि देखि रिपु केरी । भालु कपिन्ह गिस भई घनेरी ॥  
 मरत न मूढ़ कटेहुँ भुज सीसा । धाए कोपि भालु भट कीसा ॥  
 वालितनय मारुति नल नीला । वानरराज दुविद् चलसीला ॥  
 विटप महोधर करहिं प्रहारा । सोइ गिरि तरु गहि कपिन्ह सो मारा ॥  
 एक नखन्हि रिपु बपुष विदारी । भागि चलहिं एक लातन्ह मारी ॥  
 तय नल नील सिरन्हि चढ़ि गयऊ । नखन्हि लिलार विदारत भयऊ  
 रुधिर देखि विपाद उर भारी । तिन्हहि धरन कहूँ भुजा पसारी ॥  
 गहे न जाहिं करन्हि पर फिरहीं । जनु जुग मधुष कमल बन चरहीं ॥  
 कोपि कूदि द्वाँ धरेसि बहोरी । महि पटकत भजे भुजा मरोरी ॥  
 पुनि सकोप दस धनु कर लीन्हे । सरन्हि मारि घायल कपि कीन्हे ॥  
 हनुमदादि मुरुछित करि चंदर । पाइ प्रदोष हरप दसकंधर ॥  
 मुरुछित देखि सकल कपि वीरा । जामवंत धायउ रनधीरा ॥  
 संग भालु भूधर तरु धारी । मारन लगे पचारि पचारी ॥  
 भयउ क्रुद्ध रावन चलवाना । गहि पद महि पटकइ भट नाना ॥  
 देखि भालुपति निज दल घाता । कोपि माझ उर मारेसि लाता ॥

छं०—उर लात घात प्रचंड लागत विकल रथ ते महि परा ।  
 गहि भालु वीसहुँ कर मनहुँ कमलन्हि वसे निसि मधुकरा ॥  
 मुरुछित विलोकि बहोरि पद हति भालुपति प्रभु पहि गयो ।  
 निसि जानि स्पंदन घालि तेहि तब सत जतनु करत भयो ॥

दो०—मुरुछा विगत भालु कपि गव आए प्रभु पास ।

निसिचर सकल रावनहि घेरि रहे अति त्रास ॥ ९८ ॥

मासपारायण, छव्चीसवाँ विश्राम

तेही निसि सीता पहिं जाई। त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई ॥  
 सिर भुज दि सुनत रिपु केरी। सो उर भइ त्रास घनेरी ॥  
 मुख मलीन उपजी मन चिंता। त्रिजटा सन बोली तव सीता ॥  
 होइहि कहा कहसि किन माता। केहि विधि मरिहि विश्व दुखदाता ॥  
 रघुपति सर सिर कटेहुँ न मरई। विधि विपरीत चरित सब करई ॥  
 मर अभाग्य जिआवत ओही। जेहिं हौं हरि पद कमल विछोही ॥  
 जेहिं कृत कपट कनक मृग झूठा। अजहुँ सो दैव मोहि पर रूठा ॥  
 जेहिं विधि मोहि दुख दुसह सहाए। लछिमन कहुँ कटु वचन कहाए ॥  
 रघुपति विरह सविष सर भारी। तकि तकि मार वार बहु मारी ॥  
 ऐसेहुँ दुख जो राख सम प्राणा। सोइ विधि ताहि जिआव न आना ॥  
 बहु विधि कर बिलाप जानकी। करि करि सुरति कृपानिधान की ॥  
 कह त्रिजटा मुनु राजकुमारो। उर सर लागत मरइ सुरारी ॥  
 प्रभु ताते उर हतइ न तेही। एहि के हृदयँ वसति वैदेही ॥

छं०—एहि के हृदयँ वस जानकी जानकी उर सम वास है।

मम उदर भुअन अनेक लागत वान सन कर नास है ॥

सुनिवचन हरष विषाद मन अति देखि पुनि त्रिजटाँ कहा ।

अब मरिहि रिपु एहि विधि सुनहिं सुंदरि तजहि संसय महा ॥

दो०—काएत सिर होइहि विकल छुटि जाइहि तव ध्यान ।

तव रावनहि हृदय महुँ मरिहिहिं रामु सुजान ॥ ९९ ॥

अस कहि बहुत भाँति समुझाई। पुनि त्रिजटा निज भवन सिधाई ॥

राम सुभाउ सुमिरि वैदेहो। उपजी विरह विथा अति तेहो ॥

निसिहि ससिहि निंदति बहु भाँती। जुग सम भई सिराति न राती ॥

कराति विलाप मनाहें मन भारा । राम विरहें जानको दुखारो ॥  
 वष अति भयउ विरह उर दाह । फरकेउ वाम नयन अरु बाह ॥  
 सगुन विचारि धरी मन धीरा । अब मिलिहहिं कृपाल रघुवीरा ॥  
 इहाँ अर्धनिसि रावनु जागा । निज सारथि सन खीझन लागा ॥  
 सठ रनभूमि छड़ाइसि मोही । धिग धिग अधम मंदमति तोही ॥  
 तेहिं पद गहि बहु विधि समुझावा । भोरु भएँ रथ चढ़ि पुनि धावा ॥  
 सुनि आगवनु दसानन केरा । कपिदल खर भर भयउ घनेरा ॥  
 जहँ तहँ भूधर विटप उपारो । धाए कटकटाइ भट भारी ॥

छं०-धाए जो मर्कट विकट भालु कराल कर भूधर धरा ।  
 अति कोप करहिं ग्रहार मारत भजि चले रजनोचरा ॥  
 विचलाइदल बलवंत कीसन्ह घेरि पुनि रावनु लियो ।  
 चहुँ दिसि चपेटन्हि मारि नखन्हि चिदारितनु व्याकुल कियो

दो०-देखि महा मर्कट प्रबल रावन कोन्ह विचार ।  
 अंतरहित होइ निमिष महँ कृत माया विस्तार ॥१००॥

छं०-जब कीन्ह तेहिं पापेंड । भए प्रगट जंतु प्रचंड ।  
 वेताल भृत पिताच । कर धरें धनु नाराच ॥ १ ॥  
 जोगिनि गहें करवाल । एक हाथ मनुज कपाल ।  
 करि सद्य सोनित पान । नाचहिं करहिं बहु गान ॥ २ ॥  
 धरु मारु बोलहिं घोर । रहि पूरि धुनि चहुँ ओर ।  
 मुख चाइ धावहिं खान । तब लगै कीम पगान ॥ ३ ॥  
 जहँ जाहिं मर्कट भागि । तहँ वरन देखहि आगि ।  
 भए विकल घानर भालु । पुनि लाग वरप चाहु ॥ " ॥

जहँ तहँ थकित करि कीस । गर्जेउ बहुरि दससीस ॥  
 लछिमन कपीस समेत । भए सकल वीर अचेत ॥ ५ ॥  
 हा राम हा रघुनाथ । कहि सुभट मीजहिं हाथ ॥  
 एहि त्रिधि सकल बल तोरि । तेहिं कीन्ह कपट बहोरि ॥ ६ ॥  
 प्रगटैसि विपुल हनुमान । धाए गहे पाषान ॥  
 तिन्ह रामु घेरे जाइ । चहुँ दिसि बरूथ बनाइ ॥ ७ ॥  
 मारहु धरहु जनि जाइ । कटकटहिं पूँछ उठाइ ॥  
 दहँ दिसि लँगूर विराज । तेहिं मध्य कोसलराज ॥ ८ ॥  
 छं०—तेहिं मध्य कोसलराज सुंदर स्याम तन सोभा लही ।  
 जनु इंद्रधनुष अनेक की वर वारि तुंग तमालही ॥  
 प्रभु देखि हरष त्रिपाद उरसुर वदत जयजय जय करी ।  
 रघुवीर एकहिं तीर कोपि निमेष महुँ माया हरी ॥ १ ॥  
 माया विगत कपि भालु हरषे विटप गिरि गहि सत्र फिरो ।  
 सर निकर छाड़े राम रावन बाहु सिर पुनि बहि गिरे ॥  
 श्रीराम रावन समर चरित अनेक कल्प जो गावहीं ।  
 सत सेप सारद निगम कवि तेउ तदपि पार न पावहीं ॥ २ ॥

श्लो०—ताके गुन गन कछु कहे जड़मति तुलसीदास ।  
 जिमि निज बल अनुरूप ते माछी उड़इ अकास ॥ १०१ (क) ॥  
 काटे सिर भुज वार बहु भरत न भट लंकैस ।  
 प्रभु क्रीड़त सुर सिद्ध मुनि व्याकुल देखि कलेस ॥ १०१ (ख) ॥

क्लोटत बड़हिं सीस समुदाई । जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकई ॥  
 सरइ न रिपु श्रम भयउ त्रिसेवा । राम विभोषन तन तत्र देखा ॥

उमा काल मर जाकी ईछा। सो प्रभु जन कर प्रीति परीछा ॥  
 मुनु सरवग्य चराचर नायक। प्रनतपाल मुग मुनि मुखदायक ॥  
 नाभिकुंड पियूप बस याके। नाथ जिअत रावनु बल ताके ॥  
 मुनत विभीषन वचन कृपाला। हरषि गहे कर वान कराला ॥  
 अमुभ होन लागे तव नाना। रोमहिं खर सृकाल बहु म्वाना ॥  
 चोलहिं खग जग आरति हेतू। प्रगट भए नभ जहँ तहँ केतू ॥  
 दस दिसि दाह होन अतिलागा। भयउ परव विनु रवि उपगगा ॥  
 मंदोदरि उर कंपति भारी। प्रतिमा स्रवहिं नयन मग वारी ॥

छं०—प्रतिमा रुदहिं पचिपात नभ अति वात वह डोलनि मही ।  
 वरपहिं बलाहक रुधिर कच रज अमुभ अति सक को कही ॥  
 उतपात अमित विलोकि नभ सुर विकल बालहिं जय जए ।  
 सुर सभय जानि कृपाल रघुपति चार सर जोरत भए ॥

दो०—खंचि सरासन श्रवन लागि छाड़े मर एकतीस ।

रघुनायक सायक चले मानहुँ काल फलोत्त ॥१०२॥

सायक एक नाभि मर सोपा। अपर लगे भुज मिर करि रोपा ॥  
 लै सिर बाहु चले नाराचा। मिर भुज हीन रुंड नहि नाचा ॥  
 धरनि धसइ धर धाय प्रचंडा। तव मर हति प्रभु कृत दुइ खंडा ॥  
 गर्जेउ मरत घोर ग्व भारी। कहौ रामु ग्न हतीं पचारी ॥  
 डोली भूमि गिगत दसकंधर। लुभित सिंगु सति दिग्गज भूधर ॥  
 धरनि परेउ ठौ ग्वंड बड़ाई। चापि भानु मरुट नमुदाई ॥  
 मंदोदरि आगें भुज सीसा। धरि सर चले जहौ जगदीमा ॥  
 प्रविसे सव निपंग महुँ जाई। देरि सुग्द दुंदुभा बजाई ॥



राम विमुख अस हाल तुम्हारा । रहा न कोउ कुल रोवनिहारा ॥  
 तव बस विधि प्रपंच सब नाथा । सभय दिसिप नित नावहि माथा ॥  
 अब तव सिर भुज जंबुक स्वार्हीं । राम विमुख यह अनुचित नाहीं ॥  
 काल विवस पति कहा न माना । अग जग नाथु मनुज करि जाना ॥

छं०—जान्यो मनुज करि दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयं ।  
 जेहि नमत सिव ब्रह्मादि गुर प्रिय भजेहु नहिं करुनामयं ॥  
 आजन्म ते परद्रोह रत पापघमय तव तनु अयं ।  
 तुम्हहू दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं ॥

दो०—अहह नाथ रघुनाथ सम कृपासिंधु नहिं आन ।  
 जोगि बृंद दुर्लभ गति तोहि दीन्हि भगवान ॥१०४॥

मंदोदरी बचन सुनि काना । सुर मुनि सिद्ध सबन्हि सुख माना ॥  
 अज महेस नारद सनकादी । जे मुनिवर परमारथवादी ॥  
 भरि लोचन रघुपतिहि निहारी । प्रेम मगन सब भए सुखारी ॥  
 रुदन करत देखीं सब नारी । गयउ विभोपनु मन दुख भारी ॥  
 चंधु दसा विलोकि दुख कोन्हा । तव प्रभु अनुजहि आयमु दीन्हा ॥  
 लछिमन तेहि बहू विधि समुझायो । बहुरि विभोपन प्रभु पहिं आयो  
 कृपादृष्टि प्रभु ताहि विलाका । करहु क्रिया परिहरि सब सोका ॥  
 कीन्हि क्रिया प्रभु आयमु मानी । विधिनत देस काल जिये जानी ॥  
 दो०—मंदोदरी आदि सब देइ तिलांजलि ताहि ।

भवन गइ रघुपति गुन गन घरनत मन माहि ॥१०५॥  
 आइ विभोपन पुनि सिरु नायो । कृपासिंधु तव अनुज बोलायो ॥  
 तुम्ह कपीस अंगद नल नीला । जामवंत मारुति नयसीला ॥



सब मिलि जाहु विभीषन साथ। सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथ ॥  
 पिता वचन मैं नगर न आवउँ। आपु सरिस कपि अनुज पठावउँ ॥  
 तुरत चले कपि सुनि प्रभु वचना। कीन्ही जाइ तिलक की रचना ॥  
 सादर सिंहासन बैठारी। तिलक सारि अस्तुति अनुसारी ॥  
 जोरि पानि सवहीं सिर नाए। सहित विभीषन प्रभु पहिं आए ॥  
 तब रघुवीर बोलि कपि लीन्हे। कहि प्रिय वचन सु गी सब कीन्हे ॥

छं०—किए सुखी कहि बानी सुधा बल तुम्हारे रिपु हयो।  
 पायो विभीषन र तिहुँ पुर जसु तुम्हारो नित नयो ॥  
 मोहि सहित सुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जो गाइहैं।  
 संसार सिंधु अपार पार प्रयास बिनु नर पाइहैं ॥

दो०—प्रभु के वचन श्रवन सुनि नहिं अघाहिं कपि पुंज।

बार बार सिर नावहिं गहहिं सकल पद कंज ॥१०६॥

पुनि प्रभु बोलि लियउ हनुमाना। लंका जाहु कहेउ भगवाना ॥  
 समाचार जानकिहि सुनावहु। सु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु ॥  
 तब हनुमंत नगर महुँ आए। सुनि निसिचरी निसाचर धाए ॥  
 बहु प्रकार तिन्ह पूजा कीन्ही। जनकसुता देखाइ पुनि दीन्ही ॥  
 दूरिहि ते प्रनाम कपि कीन्हा। रघुपति दूत जानकीं चीन्हा ॥  
 कहहु तात प्रभु कृपानिकेता। कुसल अनुज कपि सेन समेता ॥  
 विधि कुसल कोसलाधीसा। मातु समर जीत्यो दससीसा ॥  
 अविचल राजु विभीषन पायो। सुनि कपि वचन हरष उर छायो ॥

छं०—अति हरष मन तन पुलक लोचन सजल कह पुनि पुनि रमा।

देउँ तोहि त्रैलोक महुँ कपि किमपि नहिं नी समा ॥

सुनु मातु में पायो अखिल जग राजु आजु न संसयं ।

रन जीति रिपुदल बंधु जुत पस्यामि राममनामयं ॥

श्लो०—सुनु सुन मदगुन सकल तव हृदयँ वसहुँ हनुमंत ।

मानुक्ल कौसलपति रहहुँ ममेत अनंत ॥१०७॥

थव सोइ जतन करहु तुम्ह नाता । देखाँ नयन स्वाम मृदु गाता ॥

तव इनुमान राम पहि जाई । जनकमुता कै कुमल सुनाई ॥

सुनि सदैसु भानुकुलभूपन । बोलि लिए जुवराज विभीषन ॥

मारुतमुत के संग सिधावहु । सादर जनकसुतहि लै आवहु ॥

तुरतहि सरल गए जहँ सीता । सेवहिं सव निसिचरीं विनीता ॥

बेगि विभीषन तिन्हहि सिखायो । तिन्ह बहु विधि मज्जन करवायो ॥

बहु प्रकार भूपन पहिराए । सिपिका रुचिर साजि पुनि ल्याए ॥

ता पर हरपि चढ़ी बँदेही । सुमिरि राम सुखधाम सनेही ॥

बेतपानि रच्छक चहु पासा । चले सकल मन परम हुलासा ॥

देसन भालु कीस सब आए । रच्छक कोपि निवारन धाए ॥

कह रघुसीर कहा मम मानहु । सीतहि सखा पयादँ आनहु ॥

देखहुँ कपि जननी की नाई । विहमि कहा रघुनाथ गोसाई ॥

सुनि प्रभु वचन भालु कपि हरपे । नभ ते सुगन्ह सुमन बहु वरपे ॥

सीता प्रथम अनल महुँ राखी । प्रगट कीन्हि चह अंतर साखी ॥

श्लो०—तेहि कारन फरुनानिधि कहे कष्टुक दुर्वाद ।

सुनत जातुधानीं मय लागीं करै रिपाद ॥१०८॥

प्रभु के वचन सीम धरि सीता । बोली मन क्रम वचन पुनीता ॥

लडिमन होहु धरम के नेगी । पावक प्रगट करहु तुम्ह बेगी ॥

सुनि लछिमन सीता कै बानी । बिरह बिबेक धरम निति सानी ॥  
 लोचन सजल जोरि कर दोऊ । प्रभु सन कछु कहि तन ओ  
 देखि राम रुख लछिमन धाए । पावक प्रगटि काठ बहु ॥  
 पावक प्रबल देखि वैदेही । हृदयँ हरष नहिं भय कछु तेही ॥  
 जौं मन बच क्रम मम उर माहीं । तजि रघुबीर आन गति नाहीं ॥  
 तौ कृसानु सब कै गति जाना । कहुँ होउ श्रीखंड समाना ॥

छं०—श्रीखंड सम पावक प्रवेश कियो सुमिरि प्रभु मैथिली ।

जय कोसलेस महेस बंदित चरन रति अति निर्मली ॥

प्रतिबिंब अरु लौकिक प्रचंड पावक महुँ जरे ।

प्रभु चरित काहुँ न लखे नभ सुर सिद्ध मुनि देखहिं खरे ॥ १ ॥

धरिरूप पावक पानि गहि श्री सत्य श्रुति जग विदित ॥

जिमि छीरसागर इंदिरा रामहि समर्पी आनि सो ॥

सो राम बाम विभाग राजति रुचिर अति सोभा भली ।

नव नील नीरज निकट मानहुँ कनक पंकज की कली ॥ २ ॥

दो०—वरषहिं सुमन हरषि सुर वाजहिं गगन निसान ।

गावहिं किंनर सुरबधू नाचहिं चढ़ीं बिमान ॥ १०९ ( ) ॥

जनकसुता समेत प्रभु सोभा अमित अपार ।

देखि भालु कपि हरषे जय रघुपति सुखसार ॥ १०९ ( ) ॥

तब रघुपति अनुसासन पाई । मातलि चलेउ चरन सिरु नाई ॥

आए देव सदा स्वारथी । बचन कहहिं जनु परमारथी ॥

दीन बंधु दयाल रघुराया । देव कीन्हि देवन्ह पर दाया ॥

बिख द्रोहरत यह खल कामी । निज अघ गयउ कुमारगामी ॥

तुम्ह समरूप ब्रह्म अचिनामी । सदा एकस सहज उदामी ॥  
 एकल अगुन अज अनघ अनामय । अजित अमोघमक्ति करुनामय  
 मीन कमठ छकर नरहरी । वामन परसुराम घृषु धरी ॥  
 जब जब नाथ सुरन्ह दुरुनु पायो । नाना तनु धरि तुम्हई नमायो ॥  
 यह खल मलिन मदा सुरद्रोही । काम लोभ मद रत अति कांही ॥  
 अधम सिरोमनि तत्र पद पात्रा । यह हमरें मन निसमय आत्रा ॥  
 हम देवता परम अधिकारी । स्वारथ रत प्रभु भगति निमारी ॥  
 भव प्रवाहें मंतत हम परे । अत्र प्रभु पाहि सरन अनुमरे ॥

दो०—करि विनती सुर सिद्ध सब रहे जहँ तहँ कर जोरि ।

अति सप्रेम तन पुलकि विधि अस्तुतिकरत बहोरि ॥११०॥

छं०—जय राम सदा सुखधाम हरे । रघुनायक सायक चाप धरे ॥  
 भव वारन दारन सिंह प्रभो । गुन सागर नागर नाथ निभो ॥  
 तन काम अनेक अनूप छपी । गुन गात्रत मिद्ध मुनींद्र कपी ॥  
 लसु पावन रावन नाग महा । खगनाथ जथा करि कोप गहा ॥  
 जन रंजन भंजन सोक भयं । गत क्रोध सदा प्रभु बोधमयं ॥  
 अवतार उदार अपार गुनं । महि भार विभंजन ग्यानघनं ॥  
 अज व्यापकमेरुमनादि सदा । करुनाकर राम नमामि मुदा ॥  
 रघुरंग विभूषन रूपन हा । कृत भूप विभीषन हीन रहा ॥  
 गुन ग्यान निधान अमान अजं । नित गम नमामि रिधुं रिरजं  
 ध्वजदंड प्रचंड प्रताप चलं । ग्यल वृंद निरुंद महा कुमलं ॥  
 विनु काग्न दीन दयाल हितं । छनि धाम नमामि रमा महितं  
 भव तारन कारन काज परं । मन संभव दासुन दोष हरं ॥

सर चाप मनोहर त्रोन धरं । जलजारून लोचन भूपबरं ॥  
 सुख मंदिर सुंदर श्रीरमनं । मद मार मुधा ममता समनं ॥  
 अनवद्य अखंड न गोचर गो । सबरूप सदा सब होइ न ॥  
 इति बेद बदांति न दंत कथा । रवि आतप भिन्नसभिन्न जथा ॥  
 कृतकृत्य बिभो सब बानर ए । निरखंति तवानन सादर ए ॥  
 धिग जीवन देव सरीर हरे । तव भक्ति बिना भव भूलि परे ॥  
 अब दीनदयाल दया करिऐ । मति मोरि विभेदकरी हरिऐ ॥  
 जेहि ते विपरीत क्रिया करिऐ । दुख सो सुख मानि सुखी चरिऐ ॥  
 खल खंडन मंडन रम्य । पद पंकज सेवित संभु उमा ॥  
 नृप नायक दे वरदानमिदं । चरनांबुज प्रेमु सदा सुभदं ॥

दो०—बिनय कीन्हि चतुरानन पुलक अति गात ।

सोभासिंधु बिलोकत लोचन नहीं अघात ॥१११॥  
 तेहि अवसर दसरथ तहँ आए । तनय बिलोकि नयन जल छाए ॥  
 अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा । आसिरवाद पिताँ तब दीन्हा ॥  
 तात सकल तव पुन्य प्रभाऊ । जीत्यो अजय निसाचर राऊ ॥  
 सुनि सुत बचन प्रीति अति बाढ़ी । नयन सलिल रोमावलि ठाढ़ी ॥  
 रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना । चितइ पितहि दीन्हेउ दृढ़ ग्याना ॥  
 ताते उमा सोच्छ नहीं पायो । दसरथ भेद भगति मन लायो ॥  
 सगुनोपासक सोच्छ न लेहीं । तिन्ह कहँ राम भगति निज देहीं ॥  
 बार बार करि प्रभुहि प्रनामा । दसरथ हरषि गए सुरधामा ॥

दो०—अनुज जानकी सहित प्रभु कुसल कोसलाधीस ।

सोभा देखि हरषि मन अस्तुति कर सुर ईस ॥११२॥

७०-जय गम सोभा धाम । दायक प्रनत विश्राम ॥  
 धृत त्रोन वर मर चाप । भुजदंड प्रमल प्रताप ॥  
 जय दूपनारि खरारि । मर्दन निमाचर धारि ॥  
 यह दुष्ट मारेउ नाथ । भए देन मकलमनाथ ॥  
 जय हरन धरनी भार । महिमा उदार अपार ॥  
 जय रावनारि कृपाल । किए जातुधान त्रिहाल ॥  
 लंकेस अति बल गर्न । किए वस्य मुर गंधर्न ॥  
 मुनि मिट्ट नर खग नाग । हठि पंथ मत्र कें लाग ॥  
 परद्रोह गत अति दुष्ट । पायो मो फलु पापिष्ट ॥  
 अब सुनहु दीनदयाल । राजीव नयन विमाल ॥  
 मोहि रहा अति अभिमान । नहिं कोउ मोहि समान ॥  
 अब देखि प्रभु पद कंज । गत मान प्रद दुख पुंज ॥  
 कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव । अब्यक्त जेहि श्रुति गाव ॥  
 मोहि भाय कोसल भूप । श्रीराम सगुन मरूप ॥  
 वैदेहि अनुज समेत । मम हृदय करहु निकेत ॥  
 मोहि जानिए निज दाम । दे भक्ति रमानिवाम ॥

७०-दे भक्ति रमानिवाम त्राम हरन मरन सुखदायकं ।  
 सुख धाम रामनमामि काम अनेक छत्रि रघुनायकं ॥  
 मुर वृंद रंजन द्रंद भंजन मनुजतनु अतुलितमलं ।  
 ब्रह्मादि संकर सेव्य राम नमामि करुना कोमलं ॥

दो०-अत्र करि कृपा विलोकि मोहि आयसु देहु कृपाल ।

काह करीं सुनि प्रिय वचन बोले दीनदयाल ॥१०॥

सुनु मुरपति कपि भालु हमारे । परे भूमि निमिचरन्हि रे

हित लागि तजे इन्ह प्राणा । सकल जिआउ सुरेस सुजाना ॥  
 सुनु खगेस प्रभु कै यह बानी । अति अगाध जानहिं मुनि ग्यानी ॥  
 प्रभु सक्रिभुअन मारि जिआई । केवल सक्रहि दीन्हि वड़ाई ॥  
 सुधा बरषि कपि भालु जिआए । हरषि उठे सब प्रभु पहिं आए ॥  
 सुधावृष्टि भै दुहु दल ऊपर । जिए भालु कपि नहिं रजनीचर ॥  
 रामाकार भए तिन्ह के मन । मुक्त भए छूटे भव बंधन ॥  
 सुर अंसिक सब कपि अरु रीछा । जिए सकल रघुपति कीई ॥  
 राम सरिस दीन हितकारी । कीन्हे मु त निसाचर शारी ॥  
 खल धाम काम रत रावन । गति पाई जो मुनिबर पाव न ॥

दो०—सु बरषि सुर चले चढ़ि चढ़ि रुचिर बिमान ।

देखि सुअवसर प्रभु पहिं आयउ संभु सुजान ॥११४( )॥

परम प्रीति कर जोरि जुग नलिन नयन भरि वारि ।

पुलकित तन गदगद गिराँ बिनय करत त्रिपुरारि ॥११४( )॥

छं०—मामभिरक्षय रघुकुल नायक । धृत बर चाप रुचिर कर सायक ॥

मोह महा घन पटल प्रभंजन । संसय विपिन अनल सुर रंजन ॥

अगुन सगुन गुन मंदिर सुंदर । अम तम प्रबल प्रताप दिवाकर ॥

क्रोध मद गज पंचानन । बसहु निरंतर जन मन कानन ॥

विषय मनोरथ पुंज कंज बन । प्रबल तुपार उदार पार मन ॥

भव वारिधि मंदर परमं दर । वारय तारय संसृति दुस्तर ॥

स्याम गात राजीव बिलोचन । दीन बंधु प्रनतारति मोचन ॥

अनुज जानकी सहित निरंतर । बसहु राम नृप उर अंतर ॥

मुनि रं महि मंडन । तुलसिदास प्रभु त्रास विखंडन ॥

शो०—नाथ जवहिं कोसलपुरीं होइहि तिलक तुम्हार ।

कृपामिधु मैं आउव देखन चरित उदार ॥११५॥

करि विनती जव संभु सिधाए । तव प्रभु निकट विभीषनु आए ॥

नाइ चरन मिरु कह मृदु वानी । विनय सुनहु प्रभु सारँगपानी ॥

सकुल सदल प्रभु रावन मारयो । पावन जस विभुवन विन्तारयो ॥

दीन मलीन हीन मति जाती । मो पर कृपा कीन्हि बहु भाँती ॥

अव जन गृह पुनीत प्रभु कीजे । मजनु करिअ ममर थम छीजे ॥

देखि कोम मंदिर मंपदा । देहु कृपाल कपिन्ह कहुँ मुदा ॥

सब विधि नाथ मोहि अपनाइअ । पुनि मोहिं सहित अवधपुर जाइअ

सुनत वचन मृदु दीनदयाला । मजल भए द्यौ नयन विसाला ॥

शो०—तार कोस गृह मोर मव सत्य वचन सुनु भ्रात ।

भरत दसा सुमिरत मोहि निमिष कल्प समजात ॥११६(क)॥

तापस वेप गात कस जपत निरंतर मोहि ।

देखौं बेगि सो जतनु करु सखा निहोरउँ तोहि ॥११६(ख)॥

वीतें अवधि जाउँ जौं जिअत न पावउँ बोर ।

सुमिरत अनुज प्रीति प्रभु पुनि पुनि पुलक सरीर ॥११६(ग)॥

करेहु कल्प भरिराजु तुम्ह मोहि सुमिरेहु मन माहिं ।

पुनि मम धाम पाइहहु जहाँ संत मव जाहिं ॥११६(घ)॥

सुनत विभीषन वचन राम के । हरपि गहे पद कृपाधाम के ॥

धानर भालु मकल हरपाने । गहि प्रभु पद गुन विमल वखाने ॥

बहुरि विभीषन भवन मिधायो । मनि गन वमन विमान भरायो ॥

लै पुष्पक प्रभु आगें राखा । हँमि करि कृपामिधु तव भाषा ॥



चढ़ि बिमान सुनु सखा विभीषन । गगन जाइ बरपहु पट भूषन ॥  
 नभ पर जाइ विभीषन तवही । बरषि दिए मनि अंबर सबही ॥  
 जोइ जोइ मन भावइ सोइ लेहीं । मनि मुख भेलि डारि कपि देहीं ॥  
 हँसै रामु श्री अनुज समेता । परम कौतुकी कृपा निकेता ॥

दा०—सुनि जेहि ध्यान न पावहिं नेति नेति कह वेद ।

कृपासिंधु सोइ कपिन्ह सन करत अनेक विनोद ॥११७(क)॥

उमा जोष जप दान तप नाना मख ब्रत नेम ।

राम कृपा नहिं करहिं तसि जसि निष्केवल प्रेम ॥११७(ख)॥

भालु कपिन्ह पट भूषन पाए । पहिरि पहिरि रघुपति पहिं आए ॥  
 नाना जिनस देखि सब कीसा । पुनि पुनि हँसत कोसलाधीसा ॥  
 चितइ सबन्हि पर क्रीन्ही दाया । बोले मृदुल बचन रघुराया ॥  
 तुम्हरे बल मैं रावनु मारयो । तिलक विभीषन कहँ पुनि सारयो ॥  
 निज निज गृह अब तुम्ह सब जाहू । सुमिरेहु मोहि डरपहु जनि काहू ॥  
 सुनत बचन प्रेमाकुल बानर । जोरि पानि बोले सब सादर ॥  
 प्रभु जोइ कहहु तुम्हहि सब सोहा । हमरे होत बचन सुनि मोहा ॥  
 दीन जानि कपि किए सनाथा । तुम्ह त्रैलोक ईस रघुनाथा ॥  
 सुनि प्रभु बचन लाज हम मरहीं । मसक कहँ खगपति हित करहीं ॥  
 देखि राम रुख बानर रीछा । प्रेम मगन नहिं गृह कै ईछा ॥

दो०—प्रभु प्रेरित कपि भालु सब राम रूप उर राखि ।

हरप विषाद सहित चले बिनय विविध विधि भाषि ॥११८(क)॥

कपिपति नील रीछपति अंगद नल हनुमान ।

सहित विभीषन अपर जे जूथप कपि बलवान ॥११८(ख)॥

कहि न सकहि कछु प्रेम वस भरि भरि लोचन वारि ।

सन्मुख चितवहिं राम तन नयन निशेष निवारि ॥११८(ग)॥

अतिसय प्रीति देखि रघुराई । लीन्हे सकल विमान चढ़ाई ॥

मन महुँ विप्र चरन सिरु नायो । उत्तर दिसिहि विमान चलायो ॥

चलत विमान कोलाहल होई । जय रघुवीर कहइ सबु कोई ॥

सिंहासन अति उच्च मनोहर । श्री समेत प्रभु बैठे ता पर ॥

राजत रामु सहित भामिनी । मेरु संग जनु घन दामिनी ॥

रुचिर विमानु चलेउ अति आतुर । कीन्ही सुमन वृष्टि हरपे सुर ॥

परम सुखद चलि त्रिविध वयारी । सागर सर सरि निर्मल वारी ॥

सगुन होहि सुंदर चहुँ पासा । मन प्रसन्न निर्मल नभ आसा ॥

कह रघुवीर देखु रन सीता । लछिमन इहाँ हत्यो इंद्रजीता ॥

हनुमान अंगद के मारे । रन महि परे निसाचर भारे ॥

कुंभकरन रावन द्रौ भाई । इहाँ हते सुर मुनि दुखदाई ॥

दो०—इहाँ सेतु बाँध्यो अरु थापेउँ सिव सुख धाम ।

सीता सहित कृपानिधि संभुहि कीन्ह प्रनाम ॥११९(क)॥

जहँ जहँ कृपासिंधु बन कीन्ह वास विश्राम ।

सकल देखाए जानकिहि कहे सत्रन्दि के नाम ॥११९(ख)॥

तुरत विमान तहाँ चलि आवा । दंडक बन जहँ परम सुहावा ॥

कुंभजादि मुनिनायक नाना । गए रामु सब केँ अस्थाना ॥

सकल रिपिन्ह सन पाइ असीसा । चित्रकूट आए जगदीसा ॥

तहँ करि मुनिन्ह केर संतोषा । चला विमानु तहाँ ते चोखा ॥

बहुरि राम जानकिहि देखाई । जमुना कलि मल हरनि सुहाई ॥

पुनि देखी सुरसरी पुनीता । र कहा प्रनाम — सीता ॥  
 तीरथपति पुनि देखु प्रयागा । निरखत जन्मकोटिअघभागा ॥  
 देखु परम पावनि पुनि बेनी । हरनि सोक हरि लोक निसेनी ॥  
 नि देखु अवधपुरी अति पावनि । त्रिविध ताप भवरोगनसावनि ॥

दो०—सीता सहित कहूँ कीन्ह कृपाल ।

सज्जल नयन पुलकित पुनि पुनि हरषितर ॥१२०( )॥

नि प्रभु आइ त्रिवेनीं हरषित मज्जनु कीन्ह ।

कपिन्ह सहित बिग्रन्ह कहूँ दान बिबिध बिधि दीन्ह । १२०( )॥

प्र हनुमंतहि कहा बुझाई । धरि बटु रूप अवधपुर जाई ॥  
 भरतहि सल हमारि सुनाएहु । समाचार लै तुम्ह चलि आएहु ॥  
 तुरत पवनसुत गवनत भयऊ । तब प्रभु भरद्वाज पहिँ गयऊ ॥

। बिधि मुनि पूजा कीन्ही । अस्तुति करि पुनि आसिष दीन्ही ॥  
 मुनि पद बंदि जुगल जोरी । चढ़ि बिमान प्रभु चले बहोरी ॥  
 इहाँ निषाद सुना प्रभु आए । नाव नाव कहँ लोग बोलाए ॥  
 सुरसरि नाधि तब आयो । उतरेउ तट प्र आयसु पायो ॥

सीताँ पूजी सुरसरी । बहु पुनि चरनन्हि परी ॥  
 दीन्हि असीस हरषि । सुंदरि अहिवात अभंगा ॥  
 सुनत गुहा धायउ प्रेमाकुल । आयउ निकट परम सुख संकुल ॥  
 प्रभुहि सहित बिलोकि बैदेही । परेउ अवनि तन सुधि नहिँ तेही ॥  
 प्रीति परम बिलोकि रघुराई । हरषि उठाइ लियो उर लाई ॥

छं०—लियो हृदयँ लाइ कृपा निधान सुजान रायँ रमापती ।

बैठारि परम समीप बूझी कुसल सो बीनती ॥

अब कुसल पद पंकज त्रिलोकि त्रिरंचि संकर सेव्य जे ।  
 सुख धाम पूरनकाम राम नमामि राम नमामि ते ॥ १ ॥  
 सब भाँति अधम निपाद सो हरि भरत ज्यों उर लाइयो ।  
 मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोह बस विसराइयो ॥  
 यह रावनारि चर्तत्र पावन राम पद रतिप्रद सदा ।  
 कामादिहर विग्यानकर सुर सिद्ध मुनि गावहिँ मुदा ॥ २ ॥

दो०—समर विजय रघुवीर के चरित जे सुनहिँ सुजान ।  
 विजय विवेक विभूति नित तिन्हहिँ देहिँ भगवान ॥१२१(क)॥  
 यह कलिकाल मलायतन मन करि देखु विचार ।  
 श्रीरघुनाथ नाम तजि नाहिन आन आधार ॥१२१(ख)॥

मासपारायण, सत्ताईसवाँ विश्राम

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुपविष्वंसने

पद्यः सोपानः समाप्तः ।

( लङ्काकाण्ड समाप्त )



## प्रयुक्ता ऐश्वर्य



अमित रूप प्रगटे तेहि काला ।

जथाजोग मिले सवहि कृपाला ॥

श्रीगणेशाय नमः

भीमानकीवल्लभो विजयने

# श्रीरामचरितमानस

सप्तम सोपान

( उत्तरकाण्ड )

श्लोक

कैकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विशपादाञ्जचिह्नं  
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ।  
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं  
नौमीढ्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारुढरामम् ॥ १ ॥

कोसलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलीं कोमलावजमहेशचन्द्रितौ ।  
जानकीफरसरोजलालितौ चिन्ताकस्य मनभृङ्गसङ्गिनौ ॥ २ ॥

कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् ।  
कारुणीककलकञ्जलोचनं नौमि शङ्करमनङ्गभोचनम् ॥ ३ ॥

दो०—रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर ।  
 जहँ तहँ सोचहिं नारि नर कृस तन राम वियोग ॥  
 सगुन होहिं सुंदर सकल मन प्रसन्न सब केर ।  
 प्रभु आगवन जनाव जनु नगर रम्य चहुँ फेर ॥  
 कौसल्यादि मातु सब मन अनंद अस होइ ।  
 आयउ प्रभु श्री अनुज जुत कहन चहत अव कोइ ॥  
 भरत नयन भुज दच्छिन फरकत चारहिं चार ।  
 जानि सगुन मन हरष अति लागे करन विचार ॥

रहेउ एक दिन अवधि अधारा । समुझत मन दुख भयउ अपारा ॥  
 कारन कवन नाथ नहिं आयउ । जानि कुटिल किंवौ मोहि विसरायउ ॥  
 अहह धन्य लछिमन बड़भागी । राम पदारविंदु अनुरागी ॥  
 कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा । ताते नाथ संग नहिं लीन्हा ॥  
 जौं करनी समुझै प्रभु मोरी । नहिं निस्तार कल्प सत कोरी ॥  
 जन अवगुन प्रभु मान न काऊ । दीन बंधु अति मृदुल सुभाऊ ॥  
 मोरे जियँ भरोस दृढ़ सोई । मिलिहहिं राम सगुन सुभ होई ॥  
 बीतैं अवधि रहहिं जौं प्राना । अधम कवन जग मोहि समाना ॥

दो०—राम विरह सागर महुँ भरत मगन होत ।  
 विप्र रूप धरि पवनसुत आइ गयउ जनु पोत ॥१( )॥  
 बैठे देखि कुसासन जटा मुकुट कृस गात ।  
 राम राम रघुपति जपत स्रवत नयन जलजात ॥१( )॥

देखत हनुमान अति हरषेउ । पुलक गात लोचन जल वरषेउ ॥  
 मन महुँ बहुत भाँति सुख मानी । चोलेउ श्रवन सुधा सम वानी ॥

जासु बिरहँ सोचहु दिन राती । रटहु निरंतर गुन गन पाँती ॥  
 रघुकुल तिलक सुजन सुखदाता । आयउ कुसल देव मुनि व्राता ॥  
 रिपु रन जीति सुजस सुर गावत । सीता सहित अनुज प्रभु आवत ॥  
 सुनत बचन विसरे सब दूखा । तृपावंत जिमि पाइ पियूषा ॥  
 को तुम्ह तात कहाँ ते आए । मोहि परम प्रिय वचन सुनाए ॥  
 मारुत सुत मैं कपि हनुमाना । नामु मोर सुनु कृपानिधाना ॥  
 दीनबंधु रघुपति कर किंकर । सुनत भरत भँटेउ उठि सादर ॥  
 मिलत प्रेम नहिँ हृदयँ समाता । नयन स्रवत जल पुलकित गाता ॥  
 कपि तव दरस सकल दुख बीते । मिले आजु मोहि राम पिरीते ॥  
 बार बार वृक्षी कुसलाता । तो कहूँ देउँ काह सुनु आता ॥  
 एहि संदेस सरिस जग माहीं । करि विचार देखेउँ कछु नाहीं ॥  
 नाहिन तात उरिन मैं तोही । अब प्रभु चरित सुनावहु मोही ॥  
 तब हनुमंत नाइ पद माथा । कहे सकल रघुपति गुन गाथा ॥  
 कहू कपि कबहुँ कृपाल गोसाईं । सुमिरहिँ मोहि दास की नाईं ॥

छं०—निज दास ज्यों रघुवंसभूषन कबहुँ मम सुमिरन करयो ।  
 सुनि भरत वचन विनीत अति कपि पुलकि तन चरनन्हि परयो  
 रघुवीर निज मुख जासु गुन गन कहत अग जग नाथ जो ।  
 काहे न होइ विनीत परम पुनीत सदगुन सिंधु सो ॥

दो०—राम प्राण प्रिय नाथ तुम्ह सत्य वचन मम तात ।  
 पुनि पुनि मिलत भरत सुनि हरप न हृदयँ समात ॥२(क)॥

सो०—भरत चरन सिरु नाइ तुरित णयउ कपि राम पहिँ ।  
 कही कुसल सब जाइ हरषि चलेउ प्रभु जान चढ़ि ॥२(ख)॥





अति प्रिय मोहि इहाँ के बासी । मम धामदा पुरी सुख रासी ॥  
हरये सब कपि सुनि प्रभु बानी । धन्य अवध जो राग बखानी ॥

श्लोक—आवत देखि लोग सब कृपासिंधु भगवान ।

नगर निकट प्रभु प्रेरेउ उतरेउ भूमि विमान ॥४ (क) ॥

उतरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि तुम्ह कुबेर पदिं जाहु ।

प्रेरित राम चलेउ सो हरपु विरहु अति ताहु ॥४ (ख) ॥

आए भरत संग सब लोगा । कृस तन श्रीरघुबीर वियोगा ॥  
वामदेव बसिष्ट मुनिनायक । देखे प्रभु महि धरि धनु सायक ॥  
धाइ धरे गुर चरन सरोरुह । अनुज सहित अति पुलकतनोरुह ॥  
भेंटि कुसल बृह्णी मुनिराया । हमरें कुसल तुम्हारिदिं दाया ॥  
सकुल द्विजन्ह मिलि नायउ माथा । धर्म धुरंधर रघुकुलनाथा ॥  
गहे भरत पुनि प्रभु पद पंकज । नमत जिन्हहि गुर मुनि संकर अज ॥  
परे भूमि नहि उठत उठाए । चर करि कृपासिंधु उर लाए ॥  
सामल गात रोम भए ठाढ़े । नव राजीव नयन जल चाढ़े ॥

श्लोक—राजीव लोचन स्रवत जल तन ललित पुलकावलि बनी ।

अति प्रेम हृदयें लगाइ अनुजहि मिले प्रभु त्रिभुजन धनी ॥

प्रभु मिलत अनुजहि सोह मां पदिं जाति नहिं उपमा कही ।

जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि मिले चर मुपमा लही ॥१॥

पूजत कृपानिधि कुसल भरतहि वचन बेगि न आवई ।

सुनु सिवा सो मुख वचन मन वै भिन्न जान जो पावई ॥

अब कुसल कौसलनाथ आरत जानि जन दरसन दियां ।

पूजत विरह बारीस कृपानिधान मोहि कर गहि लियो ॥२॥

दो०—पुनि प्रभु हरषि सत्रुहन भेंटे हृदयँ लगाइ ।

लछिमन भरत मिले परम दोउ भाइ ॥ ५ ॥

भरतानुज लछिमन पुनि भेंटे । दुसह बिरह संभव दुख मेटे ॥

सीता चरन भरत सिरु नावा । अनुज समेत परम सुख ॥

प्रभु बिलोकि हरषे पुरवासी । जनित बियोग बिपति नासी ॥

प्रेमातुर सब लोग निहारी । कौतुक कीन्ह कृपालारी ॥

अमित रूप प्रगटे तेहि काला । जथा जोग मिले सबहि पाला ॥

कृपादृष्टि रघुबीर बिलोकी । किए सकल नर नारि बिसोकी ॥

महिं सबहि मिले भगवाना । उमा मरम यह काहुँ न जाना ॥

एहि बिधि सबहि सुखी करि रामा । आगें चले सील गुन धामा ॥

कौसल्यादि मातु सब धाई । निरखि बच्छ जनु घेनु लवाई ॥

छं०—जनु घेनु बालक बच्छ तजि गृहँ चरन बन परबस ।

दिन अंत पुर रु स्रवत थन हुंकार धावत भई ॥

अति प्रभु सब मातु भेटिं बचन मृदु बहुबिधि ।

गइ बि बिपति बियोग भव तिन्ह हरष सुख अगनित लहे ।

दो०—भेटेउ तनय सुमित्राँ राम चरन रति जानि ।

रामहि मिलत कैकई हृदयँ बहुत सकुचानि ॥ ६ (क) ॥

लछिमन सब मातन्ह मिलि हरषे आसिष पाइ ।

कैकइ कहँ पुनि पुनि मिले मन कर छोभु न जाइ ॥ ६ (ख) ॥

सासुन्ह सबनि मिली बैदेही । चरनन्हि लागि हरषु अति तेही ॥

देहिं असीस बृद्धि कुसलाता । होइ अचल तुम्हार अहिवाता ॥

रघुपति मु बिलोकहिं । जानि नयन जल रोकहिं ॥

कनक धार आरती उतारहिं । चार चार प्रभु गात निहारहिं ॥  
 नाना भाँति निछावरि करहीं । परमानंद हरष उर भरहीं ॥  
 कौसल्या पुनि पुनि रघुवीरहि । चितवति कृपासिंधु रनधीरहि ॥  
 हृदयँ विचारति वारहिं वारा । कवन भाँति लंकापति मारा ॥  
 अति सुकुमार जुगल मेरे वारे । निसिचर सुभट महाबल भारे ॥

दो०—लछिमन अरु सीता सहित प्रभुहि बिलोकति मातु ।

परमानंद मगन मन पुनि पुनि पुलकित गातु ॥ ७ ॥

लंकापति कपीस नल नीला । जामवंत अंगद सुभसीला ॥  
 इनुमदादि सब बानर वीरा । धरे मनोहर मनुज सरीरा ॥  
 भरत सनेह सील व्रत नेया । सादर सब चरनहिं अति प्रेमा ॥  
 देखि नगरवासिन्ह कै रीती । सकल सराहहिं प्रभु पद प्रीती ॥  
 पुनि रघुपति सब सखा बोलाए । मुनि पद लागहु सकल सिखाए ॥  
 गुर बसिष्ट कुलपूज्य हमारे । इन्ह की कृपाँ दनुज रन मारे ॥  
 ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे । भए समर सागर कहँ वेरे ॥  
 मम हित लागि जन्म इन्ह हारे । भरतहु ते मोहि अधिक पिआरे ॥  
 सुनि प्रभु वचन मगन सब भए । निमिप निमिप उपजत सुख नए ॥

दो०—कौसल्या के चरनन्हि पुनि तिन्ह नायउ माथ ।

आसिप दीन्हे हरषि तुम्ह प्रिय मम जिमिरघुनाथ ॥ ८(क) ॥

सुमन वृष्टि नभ संकुल भवन चले सुखकंद ।

चढ़ी अटारिन्ह देखहिं नगर नारि नर बृंद ॥ ८(ख) ॥

कंचन कलस विचित्र सँवारे । सबहिं धरे सजि निज निज द्वारे ॥

पंदनवार पताका केतू । सबन्हि बनाए मंगल हेतू ॥

बीथीं सकल सुगंध सिंचाई । गजमनि रचि बहु चौक पुराई ॥  
 नाना भाँति सुमंगल साजे । हरषि नगर निसान बहु बाजे ॥  
 जहँ तहँ नारि निछावरि करहीं । देहिं असीस हरष उर भरहीं ॥  
 कंचन थार आरतीं नाना । जुबतीं सजेँ करहिं सुभ गाना ॥  
 करहिं आरती आरतिहर केँ । रघुकुल कमल बिपिन दिनकर केँ ॥  
 पुर सोभा संपति कल्याना । निगम सेप सारदा बखाना ॥  
 तैउ यह चरित देखि ठगिरहहीं । उमा तासु गुन नर किमि कहहीं ॥

दो०—नारिकुसुदिनीं अवध सर रघुपति बिरह दिनेस ।

अस्त भएँ बिगसत भईं निरखि राम राकेस ॥ ९(क) ॥

होहिं सगुन सुभ बिबिधि बिधि बाजहिं गगन निसान ।

पुर नर नारि सनाथ करि भवन चले भगवान ॥ ९(ख) ॥

प्रभु जानी कैकई लजानी । प्रथम तासु गृह गए भवानी ॥  
 ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा । पुनि निज भवन गवन हरि कीन्हा  
 कृपासिंधु जब मंदिर गए । पुर नर नारि सुखी सब भए ॥  
 गुर बसिष्ट द्विज लिए बुलाई । आजु सुघरी सुदिन ससुदाई ॥  
 सब द्विज देहु हरषि अनुसासन । रामचंद्र बैठहिं सिंघासन ॥  
 मुनि बसिष्ट के बचन सुहाए । सुनत सकल विप्रन्ह अति भाए ॥  
 कहहिं बचन मृदु विप्र अनेका । जग अभिराम राम अभिषेका ॥  
 अब मुनिबर बिलंब नहिं कीजै । महाराज कहँ तिलक करीजै ॥

दो०—तब मुनि कहेउ सुसंत्र सन सुनत चलेउ हरपाइ ।

अनेक बहु बाजि गज तुरत सँवारे जाइ ॥ १०(क) ॥

जहँ तहँ धावन पठइ पुनि मंगल द्रव्य मगाइ ।

हरय समेत बसिए पद पुनि सिरु नायउ आइ ॥१०(ख)॥

नवाह्नपारायण, आठवाँ विश्राम

अवधपुरी अति रुचिर बनाई । देवन्ह सुमन वृष्टि झरि लाई ॥

राम कहा सेवकन्ह चुलाई । प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई ॥

सुनत बचन जहँ तहँ जन धाए । सुग्रीवादि तुरत अन्हवाए ॥

पुनि करुनानिधि भरतुहँकारे । निज कर राम जटा निरुआरे ॥

अन्हवाए प्रभु तीनिउ भाई । भगत बछल कृपाल रघुराई ॥

भरत भाग्य प्रभु कोमलताई । सेप कोटि सत सकहिं न गाई ॥

पुनि निज जटा राम बिवराए । गुर अनुसासन मागि नहाए ॥

करि मजन प्रभु भूपन साजे । अंग अनंग देखि सत लाजे ॥

दो०—सासुन्ह सादर जानकिहि मजन तुरत कराइ ।

दिव्य वसन वर भूपन अँग अँग सजे बनाइ ॥११(क)॥

राम वाम दिसि सोभति रमा रूप गुन खानि ।

देखि मातु सब हरपीं जन्म सुफल निज जानि ॥११(ख)॥

सुनु खगेम तेहि अवमर ब्रह्मा सिव मुनि वृंद ।

चढ़ि विमान आए मय सुर देखन सुखकंद ॥११(ग)॥

प्रभु विलोकि मुनि मन अनुरागा । तुरत दिव्य सिंघासन मागा ॥

रघि सम तेज सो वगनि न जाई । बैठे राम द्विजन्ह सिरु नाई ॥

जनकसुता समेत रघुराई । पेखि प्रहरपे मुनि समुदाई ॥

वेद मंत्र तव द्विजन्ह उचारै । नभ सुर मुनि जयजयति पुकारै ॥

प्रथम तिलक बसिए मुनि कीन्हा । पुनि सब विप्रन्ह आयसु दीन्हा ॥



जे नाथ करि करुना विलोके त्रिविधि दुख ते निर्वहे ।  
 भव खेद छेदन दच्छ हम कहँ रच्छ राम नमामहे ॥ २ ॥  
 जे ग्यान मान विमत्त तव भव हरनि भक्ति न आदरी ।  
 ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी ॥  
 बिस्वास करि सब आस परिहरि दास तव जे होइ रहे ।  
 जपि नाम तव विनु श्रम तरहिँ भव नाथ सो समरामहे ॥ ३ ॥  
 जे चरन सिव अज पूज्य रज सुभ परसि मुनि पतिनी तरी ।  
 नख निर्गता मुनि बंदिता त्रैलोक पावनि सुरसरी ॥  
 भुज कुलिस अंकुस कंज जुत बन फिरत कंटक किन लहे ।  
 पद कंज द्वंद मुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे ॥ ४ ॥  
 अन्यक्तमूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने ।  
 पट कंध साखा पंच बीस अनेक पर्न सुमन घने ॥  
 फल जुगल विधि कटु मधुर बेलि अकेलि जेहि आश्रित रहे ।  
 पल्लवत फूलत नवल नित संसार विटप नमामहे ॥ ५ ॥  
 जे ब्रह्म अजमद्वैतमनुभवगम्य मनपर भ्यावहीं ।  
 ते कहहुँ जानहुँ नाथ हम तव सगुन जस नित गावहीं ॥  
 करुनायतन प्रभु सदगुनाकर देव यह वर मागहीं ।  
 मन बचन कर्म विकार तजि तव चरन हम अनुरागहीं ॥ ६ ॥  
 दो०—सब के देखत वेदन्ह विनती कीन्हि उदार ।  
 अंतर्धान भए पुनि गए ब्रह्म आगार ॥१३(क)॥  
 बैनतेय सुनु संभु तव आए जहँ रघुवीर ।  
 विनय करत गदगद गिरा पूरित पुलक सरीर ॥१३(ख)॥



छं०—जय राम रमारसनं समनं । भव ताप भयाङ्गुल पाहि जनं ।  
 अवधेस सुरेस रसेस विभो । सरनागत सागत पाहि प्रभो ॥१॥  
 दससीस विनासन बीस भुजा । कृत दूरि महा सहि भूरि रुजा ।  
 रजनीचर वृन्द पतंग रहे । सर पावक तेज प्रचंड दहे ॥२॥  
 सहि मंडल मंडन चारुतरंग । धृत साथक चाप निपंग वरं ।  
 मद मोह महा ममता रजनी । तस्य भुंज दिवाकर तेज अनी ॥३॥  
 मनजात किरात निपात किए । मृग लोग कुभोग सरेन हिए ।  
 हति नाथ अनाथनि पाहि हरे । विपथा बन पावँर भूलि परे ॥४॥  
 बहु रोग वियोगन्हि लोग हए । भवद्रंघ्रि निरादर के फल ए ।  
 भव सिंधु अगाध परे नर ते । पद पंकज प्रेम न जे करते ॥५॥  
 अति दीन मलीन दुखी नितहीं । जिन्ह के पद पंकज प्रीति नहीं ।  
 अवलंब भवंत कथा जिन्ह के । प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह के ॥६॥  
 नहिं राग न लोभ न मान मदा । तिन्ह के सम बैभव वा विपदा ।  
 एहि ते तव सेवक होत सुदा । मुनि त्यागत जोग भरोस सदा ॥७॥  
 करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ । पद पंकज सेवत सुद्व हिएँ ।  
 सम मानि निरादर आदरही । सब संत सुखी विचरंति मही ॥८॥  
 मुनि मानस पंकज भृंग भजे । रघुवीर महा रत्नधीर अजे ।  
 तव नाम जपामि नमामि हरी । भव रोग महागद मान अरी ॥९॥  
 गुन सील कृपा परमायतनं । प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं ।  
 रघुनंद निकंदय द्वंद्ववनं । सहिपाल विलोक्य दीन जनं ॥१०॥

दो०—वार वार वर मागउँ हरपि देहु श्रीरंग ।

पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग ॥१४( )॥

वरनि उमापति गम गुन हरपि गए कैलाम ।

तत्र प्रभु कपिन्ह दिवाए सा विधि मुखप्रद वाम ॥१४(ख)॥

सुनु रम्यपति यह कथा पानी । त्रिविध ताप भय भय दाननी ॥  
 महागज कर मुभ अ.भियेका । गुनत लहहिं नर विरति विवेका ॥  
 जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं । सुख संपति नाना विधि पावहिं ॥  
 सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं । अंतकाल रघुपति पुर जाहीं ॥  
 सुनहि विमुक्त धरत अरु विपई । लहहिं भगति गति मंपति नई ॥  
 खगपति राम कथा मै वरनी । रुमति विलाम शास दुख हरनी ॥  
 विरति विवेक भगति दृढ़ करनी । मोह नदी कहै सुंदर तरनी ॥  
 नित नय मंगल कौसलपुरी । हरपित रहहि लोग सब कुरी ॥  
 नित नड प्रीति राम पद पंकज । सब कें जिन्हहि नमत सिव मुनि अज  
 मंगन बहु प्रकार पहिराए । द्विजन्ह दान नाना विधि पाए ॥

दो०—ब्रह्मानंद मगन कपि सब कें प्रभु पद प्रीति ।

जात न जाने दिवस तिन्ह गए माम पट वीति ॥१५॥

विसरें गृह सपनेहुं सुधि नाहीं । जिमि परद्रोह अंत मन माहीं ॥  
 तब रघुपति मव सखा बोलाए । आइ सनन्हि सादर गिरु नाए ॥  
 परम प्रीति समीप बैठारे । भगत सुखद मृदु वचन उचारे ॥  
 तुम्ह अति कीन्हि मोरि सेवकाई । सुख पर केहि मिथि करौ बडाई ॥  
 ताते मोहि तुम्ह अति प्रिय लागे । मम हित लागि भयन सुख त्यागे  
 अनुज राज मंपति वैदेही । देह गेह परिवार मनेही ॥  
 सब मम प्रिय नहिं तुम्हहि समाना । मृपा न कहउं मोर यह चाना ॥  
 सब कें प्रिय सेवक यह नीती । मोरें अधिक दास पर प्रीती ॥

दो०—अब गृह जाहु सरवा सब भजेहु मोहि दृढ़ नेम ।

सदा सर्वगत सर्वहित जानि करेहु अति प्रेम ॥ १६ ॥

सुनि प्रभु बचन मगन सब भए । को हम कहाँ बिसरि तन गए ॥

एकटक रहे जोरि कर आगे । सकहिं न कछु कहि अति अनुरागे ॥

परम प्रेम तिन्ह कर प्रभु देखा । कहा विविधि विधि ग्यान बिसेषा

प्रभु सन्मुख कछु कहन न पारहिं । पुनि पुनि चरन सरोज निहारहिं ॥

तब प्रभु भूषन बसन मगाए । नाना रंग अनूप सुहाए ॥

सुग्रीवहि प्रथमहिं पहिराए । बसन भरत निज हाथ बनाए ॥

प्रभु प्रेरित लछिमन पहिराए । लंकापति रघुपति मन भाए ॥

अंगद बैठ रहा नहिं डोला । प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोला ॥

दो०—जामवंत नीलादि सब पहिराए रघुनाथ ।

हियँ धरि राम रूप सब चले नाइ पद माथ ॥ १७(क) ॥

तब अंगद उठि नाइ सिरुसजल नयन कर जोरि ।

अति विनीत बोलेउ बचन मनहुँ प्रेम रस बोरि ॥ १७( ) ॥

सुनु सर्वग्य कृपा सुख सिंधो । दीन दयाकर आरत बंधो ॥

मरती बेर नाथ मोहि बाली । गयउ तुम्हारेहि कोंछें घाली ॥

असरन सरन बिरदु संभारी । मोहिजनि तजहु भगत हि री

मोरें तुम्ह प्रभु गुर पितु माता । जाउँ कहाँ तजि पद जलजाता ॥

तुम्हहि विचारि कहहु नरनाहा । प्रभु तजि भवन काज मम काहा ॥

बालक ग्यान बुद्धि बल हीना । राखहु सरन नाथ जन दोना ॥

नीचि टहल गृह कै सब करिहउँ । पद पंकज विलोकि भव तरिहउँ ॥

अस कहि चरन परेउ प्र पाही । अब जनि नाथ कहहु गृह जाही ॥

दो०—अंगद वचन विनीत सुनि रघुपति करुना सीव ।

प्रभु उठाइ उर लायउ सजल नयन राजीव ॥१८(क)॥

निज उर माल बसन मनि बालितनय पहिराइ ।

विदा कीन्हि भगवान तव बहु प्रकार समुझाइ ॥१८(ख)॥

भरत अनुज सौमित्रि समेता । पठवन चले भगत कृत चेता ॥

अंगद हृदयँ प्रेम नहि थोरा । फिरि फिरि चितव रामकी ओरा ॥

घार बार कर दंड प्रनामा । मन अस रहन कहहि मोहि रामा ॥

राम बिलोकनि बोलनि चलनी । सुमिरि सुमिरि सोचत हँसि मिलनी

प्रभु हरख देखि विनय बहु भापी । चलेउ हृदयँ पद पंकज राखी ॥

अति आदर सब कपि पहुँचाए । भाइन्ह सहित भरत पुनि आए ॥

तव सुग्रीव चरन गहि नाना । भाँति विनय कीन्हे हनुमाना ॥

दिन दस करि रघुपति पद सेवा । पुनि तव चरन देखिहउँ देवा ॥

पुन्य पुंज तुम्ह पवनकुमारा । सेवहु जाइ कृपा आगारा ॥

अस कहि कपि सब चले तुरंता । अंगद कहइ सुनहु हनुमंता ॥

दो०—कहेहु दंडवत प्रभु सैं तुम्हहि कहउँ कर जोरि ।

घार बार रघुनायकहि सुरति कराएहु मोरि ॥१९(क)॥

अस कहि चलेउ बालिसुत फिरि आयउ हनुमंत ।

तासु प्रीति प्रभु सन कही मगन भए भगवंत ॥१९(ख)॥

कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि ।

चित्त खगेस राम कर समुझि परइ कहु काहि ॥१९(ग)॥

पुनि रूपाल लियो बोलि निपादा । दीन्हे भूपन बसन प्रसादा ॥

जाहु भवन मम सुमिरन करेह । मन क्रम वचन धर्म अनुसरेह ॥

दो०—अब गृह जाहु सरखा सब भजेहु मोहि दृढ़ नेम ।

मदा सर्वगत सर्वहित जानि करेहु अति प्रेम ॥ १६ ॥

सुनि प्रभु वचन मगन सब भए । को हम कहाँ विसरि तन गए ॥

एकटक रहे जोरि कर आगे । सकहिं न कछु कहि अति अनुरागे ॥

परम प्रेम तिन्ह कर प्रभु देखा । कहा विविधि विधिग्यान विसेषा

प्रभु मन्मुख कछु कहन न पारहिं । पुनि पुनि चरन सरोज निहारहिं ॥

तव प्रभु भूपन वसन मगाए । नाना रंग अनूप सुहाए ॥

सुग्रीवहि प्रथमहिं पहिराए । वसन भरत निज हाथ बनाए ॥

प्रभु प्रेरित लछिमन पहिराए । लंकापति रघुपति मन भाए ॥

अंगद बैठ रहा नहिं डोला । प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोला ॥

दो०—जामवंत नीलादि सब पहिराए रघुनाथ ।

हियँ धरि राम रूप सब चले नाइ पद माथ ॥ १७ (क) ॥

तव अंगद उठि नाइ सिरुसजल नयन कर जोरि ।

अति विनीत बोलेउ वचन मनहुँ प्रेम रस बोरि ॥ १७ ( ) ॥

सुनु सर्वग्य कृपा मुख सिंधो । दीन दयाकर आरत बंधो ॥

मरती बेर नाथ मोहि वाली । गयउ तुम्हारेहि कौँछें घाली ॥

अमरन मरन विरदु संभारी । मोहिजनि तजहु भगत हितकारी

मोरें तुम्ह प्रभु गुर पितु माता । जाउँ कहाँ तजि पद जलजाता ॥

तुम्हहि विचारि कहहु नरनाहा । प्रभु तजि भवन काज मम काहा ॥

बालक ग्यान बुद्धि बल हीना । राखहु सरन नाथ जन दोना ॥

नीचि टहल गृह कै सब करिहुँ । पद पंकज विलोकि भव तरिहुँ ॥

अस कहि चरन परेउ प्रभु पाही । अब जनि नाथ कहहु गृह जाही ॥

दो०—अंगद वचन विनीत सुनि रघुपति करुना सीव ।

प्रभु उठाइ उर लायउ सजल नयन राजीव ॥१८(क)॥

निज उर माल वसन मनि बालितनय पहिराइ ।

विदा कीन्हि भगवान तव बहु प्रकार समुझाइ ॥१८(ख)॥

भरत अनुज सौमित्रि समेता । पठवन चले भगत कृत चेता ॥

अंगद हृदयँ प्रेम नहि थोरा । फिरि फिरि चितव रामकी ओरा ॥

घार बार कर दंड प्रनामा । मन अस रहन कहहि मोहि रामा ॥

राम बिलोकनि बोलनि चलनी । सुमिरि सुमिरि सोचत हँसि मिलनी

प्रभु रुख देखि विनय बहु भापी । चलेउ हृदयँ पद पंकज राखी ॥

अति आदर सब कपि पहुँचाए । भाइन्ह सहित भरत पुनि आए ॥

तब सुग्रीव चरन गहि नाना । भाँति विनय कीन्हे हनुमाना ॥

दिन दस करि रघुपति पद सेवा । पुनि तव चरन देखिहउँ देवा ॥

पुन्य पुंज तुम्ह पवनकुमारा । सेवहु जाइ कृपा आगारा ॥

अस कहि कपि सब चले तुरंता । अंगद कहइ सुनहु हनुमंता ॥

दो०—कहेहु दंडवत प्रभु सैं तुम्हहि कहउँ कर जोरि ।

बार बार रघुनायकहि सुरति कराएहु मोरि ॥१९(क)॥

अस कहि चलेउ बालिसुत फिरि आयउ हनुमंत ।

तासु प्रीति प्रभु सन कही मगन भए भगवंत ॥१९(ख)॥

कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि ।

चित्त खगेस राम कर समुझि परइ कहु काहि ॥१९(ग)॥

पुनि वृपाल लियो बोलि निपादा । दीन्हे भूपन वसन प्रसादा ॥

जाहु भवन मम सुमिरन करेह । मन क्रम वचन धर्म अनुसरेह ॥

तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता । सदा रहेहु पुर आवत जाता ॥  
 वचन सुनत उपजा सुख भारी । परेउ चरन भरि लोचन बारी ॥  
 चरन नलिन उर धरि गृह आवा । प्रभु सुभाउ परिजनन्हि सुनावा ॥  
 रघुपति चरित देखि पुरबासी । पुनि पुनि कहहि धन्य सुखरासी ॥  
 गम राज बैठे त्रैलोका । हरषित भए गए सब सोका ॥  
 वयरु न कर काहू सन कोई । राम प्रताप विपमता खोई ॥

दो०—बरनाश्रम निज निज धरम निरत वेद बथ लोग ।

चलहि सदा पावहि सुखहि नहि भय सोक न रोग ॥ २० ॥

दैहिक दैविक भौतिक तापा । राम राज नहि काहुहि व्यापा ॥  
 सब नर करहि परस्पर प्रीती । चलहि स्वधर्म निरत श्रुति नीती ॥  
 चारिउ चरन धर्म जग माहीं । पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाही ॥  
 राम भगति रत नर अरु नारी । सकल परम गतिके अधिकारी ॥  
 अल्पमृत्यु नहि कवनिउ पीरा । सब सुंदर सब विरुज सरीरा ॥  
 नहि दरिद्र कोउ दुखी न दीना । नहि कोउ अवुध न लच्छनहीना ॥  
 सब निर्दभ धर्मरत पुनी । नर अरु नारि चतुर सब गुनी ॥  
 सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी । सब कृतग्य नहि कपट सयानी ॥

दो०—गम राज नभगेस सुनु सचराचर जग माहिं ।

काल कर्म सुभाव गुन कृत दुख काहुहि नाहिं ॥ २१ ॥

भूमि मत्त सागर मेखला । एक भूप रघुपति कोसला ॥  
 भुअन अनेक राम प्रति जास्र । यह प्रभुता कछु बहुत न तास्र ॥  
 मो महिमा समुझत प्रभु केरी । यह बरनत हीनता घनेरी ॥  
 सोउ महिमा खगेस जिन्ह जानी । फिरि एहिं चरित तिन्हहुँ रति मानी ॥

सोड'जाने कर फल यह लीला । कहिं मझ मुनिवर दमसीला ॥  
 राम राज कर मुख संभदा । वरनिन सकइ कनोसपारदा ॥  
 सब उदार सब पर उपकारो । विप्र चरन सेवक नर नारो ॥  
 एकनारि व्रत रत मव झारो । ते मनवचक्रमपनि हितकारो ॥  
 दो०—दंड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज ।

जीतहु मनहि सुनिअ अस रामचंद्र केँ राज ॥ २२ ॥

फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन । रहिं एक सँग गज पंचानन ॥  
 खग मृग सहज वयरु विसराई । मवन्हि परस्पर प्रोति बढ़ाई ॥  
 कूजहिं खग मृग नाना वृंदा । अभय चरहिं वन करहिं अनंदा ॥  
 सीतल सुरभि पवन वह मंदा । गुंजत अलि लै चलि मकरंदा ॥  
 लता विटप मार्गें मधु चवहीं । मनभावतो धेनु पय स्रवहीं ॥  
 ससि संपन्न सदा रह धरनी । त्रेताँ भइ कृतजुग कै करनी ॥  
 प्रगटीगिरिन्ह विप्रिधि मनि खानो । जगदातमा भूप जग जानी ॥  
 सरिता सकल वहहिं पर चारी । सीतल अमल स्वाद सुखकारी ॥  
 सागर निज मरजादाँ गहहीं । डारहिं रत्न तटन्हि नर लहहीं ॥  
 सरसिज संकुल सकल नडागा । श्रतिप्रवन्नदस दिसा विभागा ॥  
 दो०—विधु महि पूर मधुखन्हि रवि तप जेनेहि काज ।

मार्गें वारिद देहिं जल रामचंद्र केँ राज ॥ २३ ॥

फोटिन्ह वाजिमेध प्रभु कीन्हें । दान अनेक द्विजन्ह कहँ दोन्हें ॥  
 ध्रुति पथ पालक धर्म धुरंधर । गुनातीत अरु भोग पुरंदर ॥  
 पति अनुकूल सदा रह सीता । सोभा खानि सुसाल विनीता ॥  
 जानति कृपासिंधु प्रभुताई । सेवति चरन कमल मन लाई ॥



जद्यपि गृहँ सेवक सेवकिनी । विपुल सदा सेवा विधि गुनी ॥  
 निज कर गृह परिचरजा करई । रामचंद्र आयसु अनुसरई ॥  
 जेहि विधि कृपासिधु सुख मानइ । सोइ कर श्री सेवा विधि जानइ ॥  
 कौसल्यादि सासु गृह माहीं । सेवइ सबन्हि मान मद नाहीं ॥  
 उमा रमा ब्रह्मादि बंदिता । जगदंबा संततमनिदिता ॥  
 दो०—जासु कृपा कटाच्छु सुर चाहत चितव न सोइ ।

राम पदारविंद रति करति सुभावहि खोइ ॥ २४ ॥

सेवहिं सानकूल सब भाई । राम चरन रति अति अधिकारई ॥  
 प्रभु मुख कमल विलोकत रहहीं । कबहुँ कृपाल हमहि कछु कहहीं ॥  
 राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती । नाना भाँति सिखावहिं नीती ॥  
 हरषित रहहिं नगर के लोगा । करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा ॥  
 अहनिसि विधिहि मनावत रहहीं । श्रीरघुवीर चरन रति चहहीं ॥  
 दुइ सुत सुंदर सीताँ जाए । लव कुस बेद पुरानन्ह गाए ॥  
 दोउ विजई विनई गुन मंदिर । हरि प्रतिबिंब मनहुँ अति सुंदर ॥  
 दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे । भए रूप गुन सील घनेरे ॥  
 दो०—ग्यान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार ।

मोइ सच्चिदानंद घन कर नर चरित उदार ॥ २५ ॥

प्रातकाल सरऊ करि मज्जन । बैठहिं सभाँ संग द्विज सज्जन ॥  
 वेद पुरान बसिष्ट बखानहिं । सुनहिं राम जद्यपि सब जानहिं ॥  
 अनुजन्ह संजुत भोजन करहीं । देखि सकल जननीं सुख भरहीं ॥  
 भरत सत्रुहन दोनउ भाई । सहित पवनसुत उपवन जाई ॥  
 वृद्धहिं बैठि राम गुन गाहा । कह हनुमान समति अवगाहा ॥



नाना खग बालकन्हि लिआए । बोलत मधुर उड़ात सुहाए ॥  
 ओर हंस सारस पारावत । भवननि पर सोभा अति पावत ॥  
 जहँ तहँ देखहिं बिज परिछाहीं । बहु विधि कूजहिं नृत्य कराहीं ॥  
 सुक सारिका पढ़ायहिं बालक । कहहु राम रघुपति जनपालक ॥  
 राज दुआर सकल विधि चारु । बीथीं चौहट रुचिर बजारू ॥

छं०--बाजार रुचिर न बनइ वरनत बस्तु बिचु गथ पाइए ।  
 जहँ भूप रमानिवास तहँ की संपदा किसि गाइए ॥  
 बैठे बजाज सराफ बनिक अनेक मनहुँ कुचेर ते ।  
 सब सुखीसब सचरित सुंदर नारि नर सिसु जरठ जे ॥

श्लो०--उत्तर दिसि सरजू वह निर्मल जल गंभीर ।  
 बाँधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर ॥ २८ ॥

दूरि फराक रुचिर सो घाटा । जहँ जल पिअहिं बाजि गज ठाटा ॥  
 पनिघट परम मनोहर नाना । तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना ॥  
 राजघाट सब विधि सुंदर कर । यज्जहिं तहाँ वरन चारिउ नर ॥  
 तीर तीर देवन्ह के मंदिर । चहुँ दिसि तिन्ह के उपवन सुंदर ॥  
 कहुँ कहुँ सरिता तीर उदासी । बसहिं ग्यान रत मुनि संन्यासी ॥  
 तीर तीर तुलसिका सुहाई । वृंद वृंद बहु मुनिन्ह लगाई ॥  
 पुर सोभा कहुँ वरनि न जाई । बाहेर नगर परम रुचिराई ॥  
 देखत पुरी अखिल अध भागा । बन उपवन वायिका तड़ागा ॥

छं०--बापीं तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहहीं ।  
 सोपान सुंदर तीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहहीं ॥

बहु रंग कंज अनेक खग कूजहि मधुप गुंजारहीं ।  
आराम रम्य पिकादि खग ख जनु पथिक हंकारहीं ॥  
दो०—रमानाथ जहँ राजा सो पुर बरनि कि जाइ ।

अनिमादिक सुख संपदा रहीं अवध सब छाइ ॥२९॥

जहँ तहँ नररघुपति गुन गावहिं । वैठि परसपर इहइ सिखावहिं ॥  
भजहु प्रनत प्रतिपालक रामहि । सोभा सील रूप गुन धामहि ॥  
जलज विलोचन स्यागल गातहि । पलकनयन इव सेवक त्रातहि ॥  
धृत सर रुचिर चाप तूनीरहि । संत कंज वन रवि रनधीरहि ॥  
काल कराल ब्याल खगराजहि । नमत राम अकाम ममता जहि ॥  
लोभ मोह मृगजूथ किरातहि । मनसिज करि हरिजन सुखदातहि  
संसय सोक निविड़ तम भानुहि । दनुज गहन घन दहन कृसानुहि ॥  
जनकसुता समेत रघुवीरहि । कस न भजहु भंजन भव भीरहि ॥  
बहु वासना मसक हिम रासिहि । सदा एकरस अज अविनासिहि ॥  
मुनि रंजन भंजन महि भारहि । तुलसिदास के प्रभुहि उदारहि ॥

दो०—एहि विधि नगर नारि नर करहिं राम गुन गान ।

सानुकूल सब पर रहहिं संतत कृपानिधान ॥३०॥

जब ते राम प्रताप खगेसा । उदित भयउ अति प्रचल दिनेसा ॥  
पूरि प्रकास रहेउ तिहुँ लोका । बहुतेन्ह सुख बहुतन मन सोका ॥  
जिन्हहि सोक ते कह्यँ वखानी । प्रथम अविद्या निमा नमानो ॥  
अथ उत्कृक जहँ तहाँ लुकाने । काम क्रोध कैरव सकुचाने ॥  
विविध कर्म गुन काल सुभाऊ । ए चकोर सुख लहहिं न काऊ ॥  
मत्सर मान मोह मद चोरा । इन्ह कर हुनर न कथनिहुँ ओरा ।



विषय अलंपट सील गुनाकर। पर दुख दुख सुख सुख देखे पर ॥  
 सम अभूतरिपु विमद विरागी। लोभामरुप हरप भय त्यागी ॥  
 कोमलचित दीनन्ह पर दाया। मन वच क्रम मम भगति अमाया ॥  
 सबहि मानप्रद आपु अमानी। भरत प्राण सम मम ते प्राणी ॥  
 विगत काम मम नाम परायन। सांति विरति विनती मुदितायन ॥  
 सीतलता सरलता मयत्री। द्विज पद ग्रीति धर्म जनयत्री ॥  
 ए सब लच्छन वसहिं जासु उर। जानेहु तात संत संतत फुर ॥  
 सम दम नियम नीति नहिं डोलहिं। परुप वचन कवहुं नहिं बोलहिं ॥


दो०—निंदा अस्तुति उभय सम ममता मम पद कंज ।

ते सजन मम प्राणप्रिय गुन मंदिर सुख पुंज ॥ ३८ ॥

सुनहु असंतन्ह केर सुभाऊ। भूलेहुं संगति करिअ न काऊ ॥  
 तिन्ह कर संग सदा दुखदाई। जिमि कपिलहि घालइ हरदाई ॥  
 खलन्ह हृदयँ अति ताप विसेपी। जरहिं सदा पर संपति देखी ॥  
 जहँ कहँ निंदा सुनहिं पराई। हरपहिं मनहुं परी निधि पाई ॥  
 काम क्रोध मद लोभ परायन। निर्दय कपटी कुटिल मलायन ॥  
 वयरु अकारन सब काहू सों। जो कर हित अनहित ताहू सों ॥  
 शूठइ लेना शूठइ देना। शूठइ भोजन शूठ चवेना ॥  
 बोलहिं मधुर वचन जिमि मोरा। खाइ महा अहि हृदय कठोरा ॥

दो०—पर द्रोही पर दार रत पर धन पर अपवाद ।

ते नर पाँवर पापमय देह धरें मनुजाद ॥ ३९ ॥

लोभइ ओढ़न लोभइ डासन। सिस्नोदर पर जमपुर त्रास न ॥  
 काहू की जीं सुनहिं बड़ाई। खास लेहिं जनु  आई ॥



नित नव चरित दखि मुनि जाहीं । ब्रह्मलाक सब कथा कहाहीं ॥  
 सुनि विरंचि अतिसय सुख मानहि । पुनि पुनि तात करहु गुन गानहि  
 सनकादिक नारदहि सराहहि । जयपि ब्रह्म निरत मुनि आहहि ॥  
 सुनि गुन गान समाधि विसारी । सादर सुनिहि परम अधिकारी ॥  
 दो०—जीवनमुक्त ब्रह्मपर चरित सुनिहि तजि, ध्यान ।

जे हरिकथाँ न करहि रति तिन्ह के हिय पापान ॥ ४२ ॥

एक चार रघुनाथ बोलाए । गुर द्विज पुरवासी सब आए ॥  
 बैठे गुर मुनि अरु द्विज सजन । बोले वचन भगत भव भंजन ॥  
 सुनहु सकल पुरजन मम बानी । कहउँ न कछु ममता उर अनी ॥  
 नहि अनीति नहि कछु प्रभुताई । सुनहु करहु जो तुम्हहि सोहाई ॥  
 सोइ सेवक प्रियतम मम सोई । मम अनुसासन मानै जोई ॥  
 जों अनीति कछु भापों भाई । तौ मोहि वरजहु भय विसराई ॥  
 चढ़ें भाग मानुष तनु पावा । सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा ॥  
 साधन धाम मोच्छ कर द्वारा । पाइ न जेहि परलोक संवारा ॥  
 दो०—सो परत्र दुख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताइ ।

कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोष लगाइ ॥ ४३ ॥

एहि तन कर फल विषय न भाई । स्वर्गउ म्वल्प अंत दुखदाई ॥  
 नर तनु पाइ विषयें मन देहीं । पलटि सुधा ते सठ विष लेहीं ॥  
 ताहि कबहुँ भरु कइइ न काई । गुंजा ग्रइइ परस मनि खोई ॥  
 आकर चारि लच्छ चौरासो । जॉनि भ्रमन यह जिव अविनासो ॥  
 फिरत सदा माया कर प्रेरा । काल कर्म सुभाव गुन घेरा ॥  
 कबहुँक करि कहना नर देहो । देव ईस बिबु हेतु म्हेनी ॥







जप तप नियम जोग निज धर्या । श्रुति संभव नाना सुभ कर्मा ॥  
 ग्यान दया दम तीरथ मज्जन । जहँ लगि धर्म कहत श्रुति सज्जन ॥  
 आणम निगम पुरान अनेका । पढ़े सुने कर फल प्रभु एका ॥  
 तव पद पंकज प्रीति निरंतर । सब साधन कर यह फल सुंदर ॥  
 छूटइ मल कि मलहि कै धोएँ । घृत कि पाव कोइ चारि विलोएँ ॥  
 प्रेम भगति जल बिनु रघुराई । अभिअंतर मल कबहुँ न जाई ॥  
 सोइ सर्वग्य तग्य सोइ पंडित । सोइ गुन गृह विग्यान अखंडित ॥  
 दच्छ सकल लच्छन जुत सोई । जाकेँ पद सरोज रति होई ॥

दो०—नाथ एक वर मागउँ र कृपा करि देहु ।

जन्म जन्म प्रभु पद कमल कबहुँ घटै जनि नेहु ॥ ४९ ॥

अस कहि मुनि वसिष्ठ गृह आए । कृपासिंधु के मन अति भाए ॥  
 हनुमान भरतादिक आता । संग लिए सेवक सुखदाता ॥  
 मुनि कृपाल पुर बाहेर गए । गज रथ तुरग मगावत भए ॥  
 देखि कृपा करि सकल सराहे । दिए उचित जिन्ह जिन्ह तेइ चाहे ॥  
 हरन सकल श्रम प्रभु श्रम पाई । गए जहाँ सीतल अवर्राई ॥  
 भरत दीन्ह निज बसन डसाई । बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई ॥  
 मारुतसुत तव मारुत करई । पुलक वपुष लोचन जल भरई ॥  
 हनुमान सम नहिं बड़भागी । नहिं कोउ राम चरन अनुरागी ॥  
 गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई । चार बार प्रभु निज मुख गाई ॥

दो०—तेहिं अवसर मुनि नारद आए करतल वीन ।

गावन लगे राम कल कीरति सदा नवीन ॥ ५० ॥

सामवलोक्य पंकज लोचन । कृपा विलोकनि सोच विमोचन ॥

नील तामरस स्याम काम अरि। हृदय कंज मकरंद मधुप हरि ॥  
जातुधान बरूथ बल भंजन। मुनि सजन रंजन अघ गंजन ॥  
भूसुर ससि नव चंद्र बलाहक। असरन सरन दीन जन गाहक ॥  
भुजबल विपुलभार महि खंडित। खर दूपन विराध बध पंडित ॥  
रावनारि सुखरूप भूषवर। जय दसरथ कुल कुमुद सुधाकर ॥  
सुजस पुरान विदित निगमागम। गावत सुर मुनि संत समागम ॥  
कारुणीक न्यलीक मद्र खंडन। सब विधि कुसल कोसला मंडन ॥  
कलि-मल मथन नाम ममताहन। तुलसिदास प्रभु पाहि प्रनत जन ॥  
दो०—प्रेम सहित मुनि नारद चरनि राम गुन ग्राम ।

सोभासिंधु हृदयँ धरि गए जहाँ विधि धाम ॥ ५१ ॥

गिरिजा मुनहु विसद यह कथा। मैं सब कही मोरि मति जथा ॥  
राम चरित सत कोटि अपारा। श्रुति सारदा न बरनै पारा ॥  
राम अनंत अनंत गुनानी। जन्म कर्म अनंत नामानी ॥  
जल सीकर महि रज गनि जाहीं। रघुपति चरित न बरनि सिराहीं ॥  
विमल कथा हरि पद दायनी। भगति होइ सुनि अनपायनी ॥  
उमा कहिउँ सब कथा सुहाई। जो भुसुंड़ि खगपतिहि सुनाई ॥  
कलुक राम गुन कहेउँ बखानो। अब का कहीं सो कहहु भवानी ॥  
मुनि सुभ कथा उमा हरपानी। चालो अति विनीत मृदु बानी ॥  
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी। सुनेउँ राम गुन भव भय हारी ॥

दो०—तुम्हरी कृपाँ कृपायतन अब कृतकृत्य न मोह ।

जानेउँ राम प्रताप प्रभु विदानंद संदोह ॥ ५२ (क) ॥

नाथ तवानन ससि स्रवत कथा सुधा रघुवीर ।

श्रवन पुटन्हि मन पान करि नहिं अघात मति धीर ॥५२( )॥

राम चरित जे सुनत अघाहीं । रस विशेष जाना तिन्ह नाहीं ॥  
जीवनमुक्त महामुनि जेऊ । हरि गुन सुनहिं निरंतर तेऊ ॥  
भव सागर चह पार जो पावा । राम कथा कहँ दृढ़ नावा ॥  
विषइन्ह कहँ पुनि हरि गुन ग्रामा । श्रवन सुखद अरु मन अभिरामा ॥  
श्रवनवंत अस को जग माहीं । जाहि न रघुपति चरित सोहाहीं ॥  
ते जड़ जीव निजात्मक घाती । जिन्हहि न रघुपति कथा सोहाती ॥  
हरिचरित्र मानस तुम्ह गावा । सुनि मैं नाथ अमिति सुख पावा ॥  
तुम्ह जो कही यह कथा सुहाई । कागभसुंड़ि गरुड़ प्रति गाई ॥

दो०—विरति ग्यान विग्यान दृढ़ राम चरन अति नेह ।

वायस तन रघुपति भगति मोहि परम संदेह ॥ ५३ ॥

नर सहस्र महँ सुनहु पुरारी । कोउ एक होइ धर्म व्रतधारी ॥  
धर्मसील कोटिक महँ कोई । विषय विषु विराग रत होई ॥  
कोटि विरक्त मध्य श्रुति कहई । सम्यक ग्यान सकृत उलहई ॥  
ग्यानवंत कोटिक महँ कोऊ । जीवनमुक्त सकृत जग सोऊ ॥  
तिन्ह सह महँ सब सु ॥ दुर्लभ लीन विग्यानी ॥  
धर्मसील विरक्त अरु ग्यानी । जीवनमुक्त ब्रह्मपर प्राणी ॥  
सब ते सो दुर्लभ सुरराया । राम भगति रत गत मद माया ॥  
सो हरिभगति काग किमि पाई । बिखनाथ मोहि कहहु बुझाई ॥

दो०—राम परायन ग्यान रत गुनागार मति धीर ।

नाथ कहहु केहि कारन पायउ काक सरीर ॥ ५४ ॥



दो०—सीतल असल सधुर जल जलज विपुल बहुरंग ।

कूजत कल रव हंस गन गुंजत मंजुल भृंग ॥ ५६ ॥

तेहि गिरि रुचिर वसइ खण सोई । तासु नास कल्पांत न होई ॥  
 माया कृत गुन दोष अनेका । मोह मनोज आदि अबिबेका ॥  
 रहे व्यापि समस्त जग याहीं । तेहि गिरि निकट कबहुँ नहिं जाहीं  
 तहँ बसि हरिहि भजइ जिमि कागा । सो सुनु उमा सहित अजुरागा ॥  
 पीपर तरु तर ध्यान सो धरई । जाप जग्य पाकरि तर करई ॥  
 आँव छाँह कर मानस पूजा । तजि हरि भजनु काजु नहिं दूजा ॥  
 वर तर कह हरि कथा प्रसंगा । आवहिं सुनहिं अनेक विहंगा ॥  
 राम चरित विचित्र विधि नाना । प्रेम सहित कर सादर गाना ॥  
 सुनहिं सकल मति विमल सराला । बसहिं निरंतर जे तेहि ताला ॥  
 जव मै जाइ सो कौतुक देखा । उर उपजा आनंद विशेषा ॥

दो०—तव कछु काल सराल तनु धरि तहँ कीन्ह निवास ।

सादर सुनि रघुपति गुन पुनि आयउँ कैलास ॥ ५७ ॥

गिरिजा कहेउँ सो सब इतिहासा । यै जेहि समय गयउँ खब पासा ॥  
 अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू । बयउ काज पहिं खण कुल कंतू ॥  
 जव रघुनाथ कीन्हि रन क्रीडा । समुझत चरित होति मोहि ब्रीडा ॥  
 इंद्रजीत कर आपु बंधायो । तव नारद मुनि गरुड़ पठायो ॥  
 बंधन काटि गयो उरगादा । उपजा हृदयँ प्रचंड विषादा ॥  
 प्र । त बहु भाँती । १२ उरग आराती ॥  
 पार परसीसा ॥  
 कछु नाहीं ॥





तेहिं मम पद सादर सिरु नावा । पुनि आपन संदेह सुनावा ॥  
 सुनि करि बिनती मृदु बानी । प्रेम सहित मैं कहेउँ भवानी ॥  
 मिलेहु गरुड़ मारग महँ मोही । वन भाँति समु वौं तोही ॥  
 हिं होइ भंगा । जब बहु ल रिअ सं ॥  
 सुनिअ तहाँ हरि था हाई । नाना भाँति निन्ह े गाई ॥  
 जेहि महुँ आदि मध्य अव । प्र प्रतिपाद्य राम भगवाना ॥  
 नि हरि होत जहँ भाई । पठवउँ तहाँ सुनहु तुम्ह जाई ॥  
 जाइहि सुनत संदेहा । राम चरन होइहि अति नेहा ॥

दो०—बिनु न हरि कथा तेहि बिनु मोह न भाग ।

मोह गएँ बिनु राम पद होइ न दृढ़ अनुराग ॥ ६१ ॥

मिलहिं न रघुपति बि अनुगमा । किएँ जोग तप ग्यान विरागा ॥  
 उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीला । तहँ रह काकभुसुंडि सुसीला ॥  
 भगति पथ परम प्रबीना । ग्यानी गुन गृह बहु कालीना ॥  
 राम कथा कहइ निरंतर । सादर सुनहिं विविध विहंगबर ॥  
 जाइ सुनहु तहँ हरि न भूरी । होइहि मोह जनित दुख दूरी ॥  
 मैं तेहि सब कहा बुझाई । चलेउ हरषि मम पद सिरु नाई ॥  
 ताते उमा न मैं समुझावा । रघुपति कृपाँ मरमु मैं पावा ॥  
 होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना । सो खोवै चह कृपानिधाना ।  
 कछु तेहि ते पुनि मैं नहिं राखा । समुझइ खग गही कै भाषा ॥  
 प्र माया बलवंत भवानी । जाहिन मोह कवन अस ग्यानी ॥



भयउ तासु मन परम उछाह। लाग कहै रघुपति गुन गाहा ॥  
 अथमहिं अति अनुराग भवानी। रामचरित सर कहेसि बखानी ॥  
 सुनि नारद कर मोह अपारा। कहेसि बहुरि रावन अवतारा ॥  
 प्रभु अवतार कथा पुनि गाई। तब सिसु चरित कहेसि मन लाई ॥

दो०— चरित कहि विविधि विधि मन महँ परम उछाह।

रिषि आगवन कहेसि पुनि श्री रघुवीर विवाह ॥६४॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा। पुनि नृप बचन राज रस भंगा ॥  
 पुरथासिन्ह कर निरह विषादा। कहेसि राम लछिमन संवादा ॥  
 जिपिन शवन कैवट अनुरागा। सुरसरि उतरि निव प्रयागा ॥  
 घालसीक प्रभु मिलन बखाना। चित्रकूट जिमि बसे भगवाना ॥  
 सचिवागवन नगर नृप मरना। भरतागवन प्रेम बहु बरना ॥  
 करि नृप क्रिया संग पुरवासी। भरत गए जहँ प्रभु सुखरासी ॥  
 पुनि रघुपति बहुविधि समुझाए। लै पादुका अवधपुर आए ॥  
 भरत रहनि सुरपति सुत करनी। प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि बरनी ॥

दो०—कहि विराध बध जेहि विधि देह तजी सरभंग।

बरनि सुतीछन प्रीति पुनि प्रभु अगस्ति सतसंग ॥६५॥

कहि दंडक वन पावनताई। गीध सइत्री पुनि तेहिं गाई ॥  
 पुनि प्रभु पंचवटीं कृत वासा। भंजी सकल पुनिन्ह की त्रासा ॥  
 पुनि लछिमन उपदेस अनूपा। सूपनखा जिमि कीन्हि कुरूप ॥  
 खर दूपन बध बहुरि बखाना। जिमि सब मरसु दसानन जाना ॥  
 दसकंधर मारीच बतकही। जेहि विधि भई सो सब तेहिं कही ॥  
 नि माया सीता कर हरना। श्रीरघुवीर विरह कछु बरना ॥

पुनि प्रभु गांध क्रिया जिमि कोन्ही । वधि कबंध सवरिहि गति दीन्ही  
बहुरि विरह वरनत रघुवीरा । जेहि विधि गए सरोवर तीरा ॥

दो०—प्रभु नारद संवाद कहि मारुति मिलन प्रसंग ।

पुनि सुग्रीव मितार्ई वालि ग्रान कर भंग ॥६६(क)॥

कपिहि तिलक करि प्रभु कृत सैल प्रवरपन वास ।

वरनन वर्षा सरद अरु राम रोष कपि त्रास ॥६६(ख)॥

जेहि विधि कपिपति कीस पठाए । सीता खोज सकल दिसि धाए ॥

विवर प्रवेस कीन्ह जेहि भाँती । कपिन्ह बहोरि मिला संपाती ॥

सुनि सब कथा समीरकुमार । नाघत भयउ पयोधि अपारा ॥

लं काँ कपि प्रवेस जिमि कोन्हा । पुनि सोतहि धोरजु जिमि दीन्हा ॥

वन उजारि रावनहि प्रयोधी । पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी ॥

आए कपि सब जहँ रघुराई । वैदेही की कुसल सुनाई ॥

सेन समेति जथा रघुवीरा । उतरे जाइ वारिनिधि तीरा ॥

मिला विभीषन जेहि विधि आई । सागर निग्रह कथा सुनाई ॥

दो०—सेतु बाँधि कपि सेन जिमि उत्तरी सागर पार ।

गयउ बसोठी वीरवर जेहि विधि वालिकुमार ॥६७(क)॥

निसिचर कीस लराई वरनिसि विविधि प्रकार ।

कुंभकरन घननाद कर वल पौरुष संघार ॥६७(ख)॥

निसिचर निकर मरन विधि नाना । रघुपति रावन समर बखाना ॥

रावन वध मंदोदरि सोका । राज विभीषन देव असोका ॥

सीता रघुपति मिलन बहोरी । सुरन्ह कीन्ही अस्तुति कर जोरी ॥

पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता । अवध चले प्रभु कृपा निकेता ॥

जेहि विधिरामनगरनिज आए । वायस बिसद चरित गाए ॥  
 कहेसि बहोरि राम अभिषेका । पुर चरनत नृपनीति अनेका ॥  
 समस्त भुसुंड बखानी । जो मैं तुम्हसन कही भवानी ॥  
 सुनि सय राम कथा खगनाहा । कहत बचन मन परम उछाहा ॥

सो०—गयउ मोर संदेह सुनेउँ सकल रघुपति चरित ।  
 भयउ राम पद नेह तव प्रसाद वायस तिलक ॥६८(क)॥  
 मोहि भयउ अति मोह प्रभुबंधन रन महुँ निरखि ।  
 चिदानंद संदोह राम विकल कारन कवन ॥६८(ख)॥

देरि चरित अति नर अनुसारी । भयउ हृदयँ मम संसय भारी ॥  
 सोइ भ्रम अब हित करि मैं माना । कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना ॥  
 अति आतप व्याकुल होई । तरु छाया सुख जानइ सोई ॥  
 जौं नहिं होत मोह अति मोही । मिलतेउँ तात कवन विधि तोही ॥  
 सुनतेउँ किमि हरि कथा सुहाई । अति विचित्र बहु विधि तुम्ह गाई ॥  
 निगमागम पुरान मत एहा । कहहिं सिद्ध मुनि नहिं संदेहा ॥  
 संत बिसुद्ध मिलहिं परि तेही । चितवहिं राम कृपा करि जेही ॥  
 कृपाँ तव दरसन भयऊ । तव प्रसाद सव संसय गयऊ ॥

दो०—सुनि बिहंगपति बानी सहित विनय अनुराग ।

पुलक गात लोचन सजल मन हरपेउ अति काव ॥६९(क)॥

श्रोता सुमति सुसील सुचि कथा रसिक हरि दास ।

पाइ उमा अति गोप्यमपि सज्जन करहिं प्रकास ॥६९(ख)॥

मोलेउ काकभसुंड बहोरी । नभन नाथ पर प्रीति न थोरी ॥

निधि नाथ पूज्य तुम्ह मेरे । कृपापात्र रघुनायक केरे ॥

तुम्हहि न संसय मोह न माया । मो परनाथ कीन्हि तुम्ह दाया ॥  
 पठइ मोह मिस खगपति तोही । रघुपति दीन्हि बड़ाई मोही ॥  
 तुम्ह निज मोह कही खग साई । सो नहिं कलु आचरज गोसाई ॥  
 नारद भव विरंचि सनकादी । जे मुनिनायक आतमवादी ॥  
 मोह न अंध कीन्ह केहि केही । को जग काम नचाव न जेही ॥  
 वृस्नाँ केहि न कीन्ह बौराहा । केहि कर हृदय क्रोध नहिं दाहा ॥

दो०—ग्यानी तापस सूर कवि कोविद गुन आगार ।

केहि कै लोभ विडंबना कीन्हि न एहिं संसार ॥७०(क)॥

श्री मद बक्रन कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि ।

मृगलोचनि केनै न सर को अस लाग न जाहि ॥७०(ख)॥

गुन कृत सन्यपात नहिं केही । कोउ न मान मद तजेउ निवेही ॥  
 जोपन ज्वर केहि नहिं बलकावा । ममता केहि कर जसन नसावा ॥  
 मच्छर काहि कलंक न लावा । काहि न सोक समीर डोलावा ॥  
 चिंता साँपिनि को नहिं खाया । को जग जाहि न व्यापी माया ॥  
 कीट मनोरथ दारु सरीरा । जेहि न लाग घुन को अस धीरा ॥  
 सुत पित लोक ईपना तीनी । केहि कै मति इन्ह कृत न मलीनी ॥  
 यह सब माया कर परिवारा । प्रबल अमिति को बरनै पारा ॥  
 सिव चतुरानन जाहि डेराहों । अपर जीव केहि लेखे माहीं ॥

दो०—न्यापि रहेउ संसार महुँ माया कटक प्रचंड ।

सेनापति कामादि भट दंभ कपट पायंड ॥७१(क)॥

सो दासी रघुवीर कै समुझें मिथ्या सोपि ।

छट न राम कृपा विनु नाथ कहउँ पद रोपि ॥७१(ख)॥



दो०—काम क्रोध मद लोभ रत गृहासक्त दुखरूप ।

ते किमि जानहिं रघुपतिहि मूढ़ पढ़े तम कूप ॥७३(क)॥

निर्गुन रूप सुलभ अति सगुन जान नहिं कोइ ।

सुगम अगम नाना चरित सुनि मुनि मन भ्रम होइ ॥७३(ख)॥

सुनु खगेस रघुपति प्रभुताई । कहउँ यथाप्रति कथा सुहाई ॥

जहि विधि मोह भयउ प्रभु मोही । सोउ सब कथा सुनावउँ तोही ॥

राम कृपा भाजन तुम्ह ताता । हरि गुन प्रीति मोहि सुखदाता ॥

ताते नहिं कछु तुम्हहिं दुरावउँ । परम रहस्य मनोहर गावउँ ॥

सुनहु राम कर सहज सुभाऊ । जन अभिमान न राखहिं काऊ ॥

संसृत मूल बलप्रद नाना । सकल सोक दायक अभिमाना ॥

ताते करहिं कृपानिधि दूरी । सेवक पर ममता अति भूरी ॥

जिमि सिसु तन वन होइ गोसाई । मातु चिराव बाठिन की नाई ॥

दो०—जदपि प्रथम दुख पावइ रोवइ गाल अधीर ।

व्याधि नास हित जननी गनति न सो सिसु पीर ॥७४(क)॥

तिमि रघुपति निज दास कर हरहिं मान हित लागि ।

तुलसिदास ऐसे प्रभुहि कसन भजहु भ्रम त्यागि ॥७४(ख)॥

राम कृपा आपनि जइताई । कहउँ खगेस सुनहु मन लाई ॥

जब जब राम मनुज तनु धरहीं । भक्त हेतु लीला बहु करहीं ॥

तम तब अवधपुरी में जाऊँ । बालचरित विलोकि हरपाऊँ ॥

जन्म महोत्सव देखउँ जाई । वरप पाँच तहँ रहउँ लोभाई ॥

इष्टदेव मम बालक रामा । सोभा चपुप कोटि सत कामा ॥

निज प्रभु बदन निहारि निहारी । लोचन सुफल करउँ उरगारी ॥



लघु बायस वपु धरि हरि संग्गा । देखउं बालचरित बहुरंगा ॥

दो०—लरिकाई जहँ जहँ फिरहिँ तहँ तहँ संग उड़ाउँ ।

जूठनि परइ अजिर यहँ सो उठाइ करि खाउँ ॥७५(क)॥

एक बार अतिसय सब चरित किए रघुवीर ।

सुमिरत प्रभु लीला सोइ पुलकित भयउ सरीर ॥७५(ख)॥

कहह भसुंड मुनहु खगनायक । राम चरित सेवक सुखदायक ॥

नृप मंदिर सुंदर सब भाँती । खचित कनक मनि नाना जाती ॥

वरनि न जाइ रुचिर अँगनाई । जहँ खेलहिँ नित चारिउ भाई ॥

बालबिनोद करत रघुराई । विचरत अजिर जननि सुखदाई ॥

मरकत मृदुल कलेवर स्यामा । अंग अंग प्रति छवि बहु कामा ॥

नव राजीव अरुन मृदु चरना । पदज रुचिर नख ससि दुति हरना ॥

ललित अंक कृत्तिसादिक चारो । नूगुर चारु मधुर स्वकारी ॥

चारु पुरट मनि रचित बनाई । कटि किंकिनि कल मुखर सुहाई ॥

दो०—रेखा त्रय सुंदर उदर नाभी रुचिर गँभीर ।

उर आयत भ्राजत विविधि बाल विभूषन चीर ॥ ७६ ॥

अरुन पानि नख करज मनोहर । बाहु विसाल विभूषन सुंदर ॥

कंध बाल केहरि दर ग्रीवा । चारु चिचुक आनन छवि सौंवा ॥

कलबल बचन अधर अरुनारे । दृढ़ दृढ़ दसन विसद वर वारे ॥

ललित कपोल मनोहर नासा । सकल मुखद ससि कर समहासा ॥

नील कंज लोचन भव मोचन । भ्राजत भाल तिलक गोरोचन ॥

विकट भृकुटि सम श्रवन मुहाए । कुंचित कच मेचक छवि लाए ॥

पीत शीनि श्लगुली तन सोही । किलकनि चितवनि भावति मोही ॥

रासि नृप अजिर विहारी । नाचहिं निज प्रतिविंब निहारी ॥  
हे सन करहिं विविधि विधि क्रीड़ा । चरनत मोहि होति अति व्रीडा  
लकत मोहि धरन जव धावहिं । चलउँ भागि तत्र पूष देखावहिं ॥

१०-आवत निकट हँसहिं प्रभु भाजत रुदन कराहिं ।  
जाउँ समीप गहन पद फिरि फिरि चितइ पराहिं ॥७७(क)॥

प्राकृत सिमु इव लीला देखि भयउ मोहि मोह ।  
कवन चरित्र करत प्रभु चिदानंद संदोह ॥७७(ख)॥

एतना मन आनत खगराया । रघुपति प्रेरित व्यापी माया ॥  
सो माया न दुखद मोहि काहीं । आन जीव इव संसृत नाहीं ॥  
नाथ इहाँ कछु कारन आना । सुनहु सो सावधान हरिजाना ॥  
ग्यान अखंड एक सीतावर । माया बस्य जीव सचराचर ॥  
जौं सब कें रह ग्यान एकरस । ईस्वर जीवहिं भेद कहहु कस ॥  
माया बस्य जीव अभिमानी । ईस बस्य माया गुन खानी ॥  
परबस जीव स्ववस भगवंता । जीव अनेक एक श्रीकंठा ॥  
मुधा भेद जद्यपि कृत माया । विनु हरिजाइ न कोटि उपाया ॥

दो०-रामचंद्र के भजन विनु जो चह पद निर्बान ।  
ग्यानवंत अपि सो नर पसु विनु पूँछ विपान ॥७८(क)॥  
राकापति पोड़स उअहिं तारागन समुदाइ ।  
सकल गिरिन्हदव लाइअ विनु रवि राति न जाइ ॥७८(ख)॥

ऐसेहिं हरि विनु भजन खगेसा । मिटइ न जीवन्ह केर कलेसा ॥  
हरि सेवकहिं न व्याप अविद्या । प्रभु प्रेरित व्यापइ तेहि विद्या ॥  
जै राम न होइ दास कर । भेद भगति चाइ चिहंगवर ॥

सांहे लरिकाई मां सन करन लगे पुनि राम ।

कांठि भाँति सगुञ्जावउँ मनु न लहइ विश्राम ॥८२( १)॥

देखि चरित यह सां प्रभुताई । सगुञ्जत देह दसा विसराई ॥

धरनि परेउँ सुख आव न वाता । ग्राहि ग्राहि आरत जन ग्राता ॥

प्रेमाङ्गल प्रभु मोहि विलोकी । निज माया प्रभुता तव रोको ॥

कर सरोज प्रभु मम सिर धरेऊ । दीनदयाल सकल दुख हरेऊ ॥

क्रीन्ह राम मोहि विगत विमोहा । सेवक सुखद कृपा संदोहा ॥

प्रभुता प्रथम विचारि विचारी । मन महँ होइ हरप अति भारी ॥

भगत बछलता प्रभु कै देखी । उपजी मम उर प्रीति विसेपी ॥

सजल नयन पुलकित कर जोरी । क्रीन्हिउँ बहु विधि विनय वहोरी

दो०—सुनि सप्रेम मम बानी देखि दीन निज दास ।

वचन सुखद गंभीर मृदु बोले रमानिवास ॥८३( १)॥

काकभसुंड़ि मागु वर अति प्रसन्न मोहि जानि ।

अनिमादिक सिधि अपर रिधि मोच्छ सकल सुख खानि ॥८३( १)॥

ग्यान विवेक विरति विग्याना । सुनि दुर्लभ गुन जे जग नाना ॥

आजु देउँ सब संसय नाही । मागु जो तोहि भाव मन माहीं ॥

सुनि प्रभु वचन अधिक अनुरागेउँ । मन अनुमान करन तब लागेउँ ॥

प्रभु कह देन सकल सुख सही । भगति आपनी देन न कही ॥

भगति हीन गुन सब सुख ऐसे । लवन बिना बहु विंजन जैसे ॥

भजन हीन सुख कवने काजा । अस विचारि बोलेउँ खगराजा ॥

जौं प्रभु होइ प्रसन्न वर देहू । सो पर करहु कृपा अरु नेहू ॥

मन भावत वर मागउँ स्वामी । तुम्ह उदार उर अंतरजामी ॥

दो०-अविरल भगति विमुद्ध तव श्रुति पुरानजो गाव ।  
 जेहि खोजत जोगीस मुनि प्रभु प्रसाद कोउ पाव ॥८४(क)॥  
 भगत कल्पतरु प्रनत हित कृपा सिंधु सुखधाम ।  
 सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम ॥८४(ख)॥

एवमस्तु कहि रघुकुलनायक । बोले वचन परम सुखदायक ॥  
 सुनु वायस तैं सहज सयाना । काहे न मागसि अस वरदाना ॥  
 सब सुख खानि भगति तैं भागी । नहिं जग कोउ तोहि सम बड़भागी  
 जो मुनि कोटि जतन नहिं लहहीं । जे जप जोग अनल तन दहहीं ॥  
 रीझेउँ देखि तोरि चतुराई । मागेहु भगति मोहि जति भाई ॥  
 सुनु विहंग प्रसाद अब मारें । सब सुभगुन वसिहहिं उर तोरें ॥  
 भगति ग्यान विग्यान विरागा । जोग चरित्र रहस्य विभागा ॥  
 जानव तैं सवही कर भेदा । मम प्रसाद नहिं साधन खेदा ॥

दो०-माया संभव अम सब अब न ब्यापिहहिं तोहि ।  
 जानेसु ब्रह्म अनादि अज अगुन गुनारु मोहि ॥८५(क)॥  
 मोहि भगत प्रिय संतत अस विचारि सुनु काग ।  
 कायँ वचन मन मम पद करेसु अचल अनुराग ॥८५(ख)॥

अब सुनु परम विमल मम वानी । सत्य सुगम निगमादि बखानी ॥  
 निज सिद्धांत सुनाउते तोही । सुनु मन धरु मव तजि भजु मोही ॥  
 मम माया संभव संसारा । जीव चराचर विविधि प्रकारा ॥  
 सब मम प्रिय सब मम उपजाए । सब ते अधिक मनुज मोहि भाए ॥  
 तिन्ह महुँ द्विज द्विज महुँ श्रुतिपारी । तिन्ह महुँ निगम धरम अनुसारी ॥  
 तिन्ह महुँ प्रिय विरक्त पुनि ग्यानी । ग्यानिहु ते अति प्रिय विग्यानी ॥

सोइ लरिकाई मो मन करन लगे पुनि राम ।

कोटि भाँति समुझावउँ मनु न लहइ विश्राम ॥८२(ख)॥

देखि चरित यह सो प्रभुताई । समुझत देह दसा विसराई ॥

धरनि परेउँ मुख आव न बाता । त्राहि त्राहि आरत जन त्राता ॥

प्रेमाकुल प्रभु मोहि विलोकी । निज माया प्रभुता तव रोकौ ॥

कर सरोज प्रभु मम सिर धरेऊ । दीनदयाल सकल दुख हरेऊ ॥

क्रीन्ह राम मोहि विगत विमोहा । सेवक सुखद कृपा संदोहा ॥

प्रभुता प्रथम विचारि विचारी । मन महुँ होइ हरष अति भारी ॥

भगत बछलता प्रभु कै देखी । उपजी मम उर प्रीति विसेषी ॥

सजल नयन पुलकित कर जोरी । क्रीन्हिउँ बहु विधि विनय बहोरी

दो०—सुनि सप्रेम मम वानी देखि दीन निज दास ।

वचन सुखद गंभीर मृदु बोले रमानिवास ॥८३(ग)॥

काकभसुंड़ि मागु वर अति प्रसन्न मोहि जानि ।

अनिमादिक सिधि अपर रिधि मोच्छ सकल सुख खानि ॥८३(घ)॥

ग्यान विवेक विरति विग्याना । सुनि दुर्लभ गुन जे जग नाना ॥

आजु देउँ सब संसय नाहीं । मागु जो तोहि भाव मन माहीं ॥

सुनि प्रभु वचन अधिक अनुरागेउँ । मन अनुमान करन तव लागेउँ ॥

प्रभु कह देन सकल सुख सही । भगति आपनी देन न कही ॥

भगति हीन गुन सब सुख ऐसे । लवन विना बहु विंजन जैसे ॥

भजन हीन सुख कवने काजा । अस विचारि बोलेउँ खगराजा ॥

जौं प्रभु होइ प्रसन्न वर देहू । सो पर करहु कृपा अरु नेहू ॥

मन भावत वर मागउँ स्वामी । तुम्ह उदार उर अंतरजामी ॥



बिनु विग्यान कि समता आवइ । कोउ अवकास कि नभ बिनु पावइ  
 श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई । बिनु महि गंध कि पावइ कोई ॥  
 बिनु तप तेज कि कर बिस्तारा । जल बिनु रस कि होइ संसारा ॥  
 सील कि मिल बिनु बुध सेवकाई । जिमि बिनु तेज न रूप गौंसाई ॥  
 निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा । परस कि होइ बिहीन समीरा ॥  
 कवनिउ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा । बिनु हरि भजन न भव भय नासा  
 दो०—बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न रामु ।

राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह विश्रामु ॥९०(क)॥

सो०—अस विचारि मतिधीर तजि कुतर्क संसय सकल ।

भजहु राम रघुवीर करुनाकर सुंदर सुखद ॥९०(ख)॥

निज मति सरिस नाथ मैं गाई । प्रथु प्रताप महिमा खगराई ॥  
 कहेउँ न कछु करि जुगुति विसेपी । यह सब मैं निज नयनन्हि देखी  
 महिमा नाम रूप गुन गाथा । सकल अमित अनंत रघुनाथा ॥  
 निज निज मति मुनि हरि गुन गावहिं । निगम सेष सिव पार न पावहिं  
 तुम्हहि आदि स्वग मसक प्रजंता । नभ उडाहिं नहिं पावहिं अंता ॥  
 तिमि रघुपति महिमा अवगाहा । तात कवहुँ कोउ पाव कि थाहा ॥  
 रामु काम सत कोटि सुभग तन । दुर्गा कोटि अमित अरि मर्दन ॥  
 सक्र कोटि सत सरिस विलासा । नभ सत कोटि अमित धवकासा ॥  
 दो०—मरुत कोटि सत विपुल बल रवि सत कोटि प्रकास ।

ससि सत कोटि सुसीतल समन सकल भव त्रास ॥९१(क)॥

काल कोटि सत सरिस अति दुस्तर दुर्ग दुरंत ।

धूमकेतु सत कोटि सम दुराधरप भगवंत ॥९१(ख)॥



























ब्रह्मग्यान रत मुनि विग्यानी। सोहि परम अधिकारी जानी ॥  
 लागे करन ब्रह्म उपदेसा। अज अद्वैत अगुन हृदयेसा ॥  
 अकल अनीह अनाम अरूपा। अनुभव गम्य अखंड ॥  
 मन गोतीत अमल अविनासी। निर्बिकार निरवधि सुख रासी ॥  
 सो तैं ताहि तोहि नहिं भेदा। बारि बीचि इव गावहिं वेदा ॥  
 विविधि भाँति मोहि मुनि सद्गुणावा। निर्गुन मत मम हृदयें न ॥  
 पुनि मैं कहेउँ नाइ पद सीसा। सगुन उपासन कहहु सुनीसा ॥  
 राम भगति जल मम मन मीना। किमि बिल गाइ सुनीस प्रवीना ॥  
 सोइ उपदेस कहहु करि दाया। निज नयनन्हि देखौं रघुराया ॥  
 भरि लोचन बिलोकि अवधेसा। तब सुनिहउँ निर्गुन उपदे ॥  
 मुनि पुनि कहि हरिकथा अनूपा। डि सगुन मत अगुन नि ॥  
 तब मैं निर्गुन मत कर दूरी। सगुन निरूपउँ करि हठ भूरी ॥  
 उत्तर प्रतिउत्तर मैं कीन्हा। मुनि तब भए क्रोध के चीन्हा ॥  
 सुनु प्रभु बहुत अवग्या किएँ। उपज क्रोध ग्यानिन्ह के हिणँ ॥  
 अति संघरपन जौं कर कोई। अनल प्रगट चंदन ते होई ॥

दो०—बारंबार सकोप मुनि करइ निरूपन ग्यान ।

मैं अपने मन बैठ तब करउँ विविधि अनुमान ॥१११( )॥

क्रोध कि द्वैतबुद्धि बिनु द्वैत कि बि अग्यान ।

मायाबस परिछिन्न जड़ जीव कि ईस समान ॥१११( )॥

कनहुँ कि दुख सब कर हित ताकें। तेहि कि दरिद्र परस मनि जाकें  
 परद्रोही की होहिं निसंज्ञा। कामी पुनि किरहहिं ॥  
 बंस कि रह द्विज अनहित कीन्हें। कर्म कि होहिं स्वरूपहिं चीन्हें ॥



मम परितोष विविधि विधि कीन्हा । हरपित राममंत्र तव दीन्हा ॥  
 वालकरूप राम कर ध्याना । कहेउ मोहि मुनि कृपानिधाना ॥  
 सुंदर सुखद मोहि अति भावा । सो प्रथमहि मैं तुम्हहि सुनावा ॥  
 मुनि मोहि कछुक काल तहँ राखा । रामचरितमानस तव भाषा ॥  
 सादर मोहि यह कथा सुनाई । पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई ॥  
 रामचरित सर गुप्त सुहावा । संभ्रु प्रसाद तात मैं पावा ॥  
 तोहि निज भगत राम कर जानी । ताते मैं सब कहेउ बखानी ॥  
 राम भगति जिन्ह कें उर नाही । कबहुँ न तात कहिअ तिन्ह पाहीं ॥  
 मुनि मोहि विविधि भँति सखुझावा । मैं सप्रेम मुनि पद सिरुनावा ॥  
 निज कर कमल परसि मम सीसा । हरपित आसिप दीन्ह सुनीसा ॥  
 राम भगति अविरल उर तोरें । वसिहि सदा प्रसाद अब मोरें ॥

दो०—सदा राम प्रिय होहु तुम्ह सुभगुन भवन अमान ।

कामरूप इच्छामरन ग्यान विराग निधान ॥११३(क)॥

जेहि आश्रम तुम्ह बसव पुनि सुमिरत श्रीभगवंत ।

व्यापिहि तहँ न अविद्या जोजन एक प्रजंत ॥११३(ख)॥

काल कर्म गुन दोष सुभाऊ । कछु दुख तुम्हहि न व्यापिहि काऊ  
 राम रहस्य ललित विधि नाना । गुप्त प्रगट इतिहास पुराना ॥  
 विनु श्रम तुम्ह जानव सब सोऊ । नित नव नेह राम पद होऊ ॥  
 जो इच्छा करिहहु मन माहीं । हरि प्रसाद कछु दुर्लभ नाही ॥  
 मुनि मुनि आसिप खुनु मतिधीरा । ब्रह्मगिरा भइ गगन अँभीरा ॥  
 एवमस्तु तव वच मुनि ग्यानी ! यह मम भगत कर्म मन वानी ॥  
 मुनि नभगिरा हरष मोहि भयऊ । प्रेम मगन सब संसय गयऊ ॥

करि विनती मुनि आयसु पाइ । पद मरोज पुनि पुनि सिरु नाई ॥  
 हरप सहित एहिं आश्रम आयउं । प्रभु प्रसाद दुर्लभ वर पायउं ॥  
 इहाँ बसत मोहि सुनु खग ईसा । बीते कल्प सात अरु बीसा ॥  
 करउं सदा रघुपति गुन गाना । सादर सुनहिं त्रिहंग सुजाना ॥  
 जब जब अवधपुरीं रघुवीरा । धरहिं भगत हित मनुज सरीरा ॥  
 तब तब जाइ राम पुर रहऊं । सिसुलीला विलोकि सुख लहऊं ॥  
 पुनि उर राखि राम सिसुरूपा । निज आश्रम आवउं खगभूपा ॥  
 कथा सकल मैं तुम्हहि सुनाई । काग देह जेहिं कारन पाई ॥  
 कहिउं तात सब प्रसन्न तुम्हारी । राम भगति महिमा अति भारी ॥

दो०—ताते यह तन मोहि प्रिय भयउ राम पद नेह ।

निज प्रभु दरसन पायउं गए सकल संदेह ॥११४(क)॥

मासपारायण, उन्तीसवाँ विश्राम

भगति पच्छ हठ करिरहेउं दीन्हि महारिषि साप ।

मुनि दुर्लभ वर पायउं देखहु भजन प्रताप ॥११४(ख)॥

जे असि भगति जानि परिहरहीं । केवल ग्यान हेतु श्रम करहीं ॥

ते जड़ कामधेनु गृहँ त्यागी । खोजन आहु फिरहिं पय लागी ॥

सुनु खगोस हरि भगति त्रिहाई । जे सुख चाहहिं आन उपाई ॥

ते गठ महाविंधु विनु तरनी । परि पार चाहहिं जड़ करनी ॥

गुनि भसुंडि के वचन भवाना । बोलेंउ गरुड तरपि मृदु बानी ॥

तब प्रनाद प्रभु मम उर माहीं । संसय नोक मांह भ्रम नाहीं ॥

सुनेउं पुनीत गम गुन ग्रामा । तुम्हरी कृपाँ लहेउं विश्रामा ॥

एक बात प्रभु पूँहउं तोही । कहहु बुझाइ कृपानिधि सोही ॥  
 कहहि संत मुनि वेद पुराना । नहि कछु दुर्लभ ग्यान समाना ॥  
 सोइ मुनि तुम्ह सन कहेउ गोसाईं । नहि आदरेहु भगति की नाईं ॥  
 ग्यानहि भगतिहि अंतर कैता । सकल कहहु प्रभु कृपा निकैता ॥  
 मुनि उरगारि बचन सुख साना । सादर बोलेउ काण सुजाना ॥  
 भगतिहि ग्यानहि नहि कछु अेदा । उभय हरहि भव संभव खेदा ॥  
 नाथ मुनीस कहहि कछु अंतर । सावधान सोउ सुनु बिहंगबर ॥  
 ग्यान विराग जोग विग्याना । ए तव पुरुष सुनहु हरिजाना ॥  
 पुरुष प्रताप प्रबल सब भोंती । अबला अबल सहज जह जाती ॥

दो०—पुरुष त्यागि सक नारिहि जो बिरक्त मति धीर ।

न तु कामी विषयावस विमुख जो पद रघुवीर ॥११५(क)॥

सो०—सोउ मुनि ग्याननिधान मृगनयनी विधु मुख निरखि ।

विषस होइ हरिजान नारि बिष्नु साया प्रगट ॥११५(ख)॥

इहाँ न पच्छपात कछु राखउं । वेद पुरान संत मत भाषउं ॥  
 सोह न नारि नारि कें रूपा । पन्नगारि यह रीति अनूपा ॥  
 माया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ । नारि बर्ग जानइ सब कोऊ ॥  
 पुनि रघुवीरहि भगति पिआरी । माया खलु नर्तकी विचारी ॥  
 भगतिहि सादुकूल रघुराया । ताते तेहि डरपति अति माया ॥  
 राम भगति निरुपस निरुपाधी । बसइ जासु उर सदा अवाधी ॥  
 वैहि विलोकि माया सकुचाई । करि न सकइ कछु निज प्रभुताई ॥  
 अस विचारि जे मुनि विग्यानी । जाचहिं भगति सकल सुख खानी ॥

दो०—यह रहस्य रघुनाथ कर वेगि न जानइ कोइ ।

जो जानइ रघुपति कृपाँ सपनेहुँ मोह न होइ ॥११६(फ)॥

औरउ ग्यान भगति कर भेद सुनहु सुप्रबोनि ।

जो सुनि होइ गम पद प्रीति सदा अविछोनि ॥११६(ख)॥

सुनहु तात यह अकथ कहानी । समुझत बनइ न जाइ बखानी ॥

ईश्वर अंस जीव अविनासो । चेतन अमल सहज सुख रासी ॥

सो मायावस भयउ गाँसाई । वेंघ्याँ कोर मरकट को नाई ॥

जड़ चेतनहिं ग्रंथि परि गई । जदपि मृषा छूटत कठिनई ॥

तव ते जीव भयउ मंमारी । छूट न ग्रंथि न होइ सुखारी ॥

श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई । छूटन अधिक अधिक अरुपाई ॥

जीव हृदयँ तम माह विसेश । ग्रंथि छूट किमि पगइ न देखो ॥

अस संजोग ईस जव करई । तवहुँ कदाचित साँ निहजरई ॥

सात्त्विक श्रद्धा धेनु सुहाई । जा हरि कृपाँ हृदयँ बस आई ॥

जप तप व्रत जमनियम अशरा । जे श्रुति रुइ मुभ धर्म अचाग ॥

तेइ तन हरित चरै जव गाई । भाव बन्ड सिमु पाइ पेन्हाई ॥

नोइ निवृत्ति पाय निव्यामा । निर्मल मन अहीर निज दासा ॥

परम धर्ममय पय दुहि भाई । अवटै अनल अकाम बनाई ॥

तोप मरुत तव छमाँ जुड़ावै । श्रुति मम जाननु देइ जमावै ॥

मुदिताँ मयै, विचार मथानो । दम अधार रजु सत्य सुयानी ॥

तव मधि काढ़ि लेइ नवनात्त । विमल विगग सुभग मुपुनात्ता ॥

दो०—जोग अगिनि करि प्रगट तव कर्म सुभानुभ लाइ ।

चुद्धि सिरावै ग्यान घृत ममता मल जरि जाइ ॥११७(क)॥





दो०—तव फिरि जीव विविधि विधि पावइ संसृति क्लेश ।

हरि माया अति दुस्तर तरि न जाइ विहगोस ॥११८(क)॥

कहत कठिन समुझत कठिन साधत कठिन विवेक ।

होइ घुनाच्छर न्याय जौं पुनि प्रत्यूह अनेक ॥११८(ख)॥

ग्यान पंथ कृपान कै धारा । परत खगोस होइ नहिं वारा ॥

जो निर्विघ्न पंथ निर्वहई । सो कैवल्य परम पद लहई ॥

अति दुर्लभ कैवल्य परम पद । संत पुरान निगम आगम बद ॥

राम भजत सोइ मुकुति गोसाईं । अनइच्छित आवइ बरिआईं ॥

जिमि थल त्रिनु जल रहिन सकाई । कोटि भाँति कोउ करै उपाई ॥

तथा मोच्छ सुख सुनु खगराईं । रहिन सकइ हरि भगति विहाई ॥

अस विचारि हरि भगत सयाने । मुक्ति निरादर भगति लुभाने ॥

भगति करत त्रिनु जतन प्रयासा । संसृति मूल अविद्या नामा ॥

भोजन करिअ त्रिपिति हित लागी । जिमि सो असन पचवै जठरागी ॥

असि हरि भगति सुगम सुखदाई । को अस मूढ़ न जाहि सोहाई ॥

दो०—सेवक सेव्य भाव त्रिनु भव न तरिअ उरगारि ।

भजहु राम पद पंकज अस सिद्धांत विचारि ॥११९(क)॥

जो चेतन कहैं जड़ करइ जड़हि करइ चैतन्य ।

अस समर्थ रघुनायकहि भजहिं जीव ते धन्य ॥११९(ख)॥

कहेउं ग्यान सिद्धांत बुझाई । सुनहु भगति मनि कै प्रभुताई ॥

राम भगति चिंतामनि सुंदर । बसइ गरुड़ जाके उर अंतर ॥

परम प्रकास रूप दिन राती । नहिं कछु चहिअ दिआ घृत चाती ॥

मोह दरिद्र निकट नहिं आवा । लोभ वात नहिं ताहि बुझावा ॥

तव विग्यानरूपिनी बुद्धि बिसद घृत पाइ ।  
 चित्त दिआ भरि धरै दृढ़ समता दिआटि बनाइ ॥११७(ख)॥  
 तीनि अवस्था तीनि गुन तेहि कपास तें काढ़ि ।  
 तूल तुरीय सँवारि पुनि बाती रै सुगाढ़ि ॥११७(ग)॥

सो०—एहि विधि लेसै दीप तेज रासि विग्यानमय ।  
 जातहिं जासु समीप जरहिं मदादिक सलभ सब ॥११७(घ)॥

सोहमसि इति वृत्ति अखंडा । दीप सिखा सोइ परम प्रचंडा ॥  
 ध्यातम अनुभव सुख सुप्रकासा । तव भव मूल भेद भ्रम नासा ॥  
 प्रबल अबिद्या कर परिवारा । मोह आदि तम मिटइ अपारा ॥  
 तव सोइ बुद्धि पाइ उँजिआरा । उर गृहँ बैठि ग्रंथि निरुआरा ॥  
 छोरन ग्रंथि पाव जौं सोई । तव यह जीव कृतारथ होई ॥  
 छोरत ग्रंथि जानि खगराथा । विघ्न अनेक करइ तव माया ॥  
 रिद्धि सिद्धि प्रेरइ बहु भाई । बुद्धिहि लोभ दिखावहिं आई ॥  
 छल करि जाहिं समीपा । अंचल बात बुझावहिं दीपा ॥  
 होइ बुद्धि जौं परम सयानी । तिन्ह तन चितव न अनहित जानी ॥  
 जौं तेहि विघ्न बुद्धि नहिं बाधी । तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी ॥  
 इंद्री द्वार झरोखा नाना । तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना ॥  
 आवत देखहिं विषय जयारी । ते हठि देहिं कपाट उधारी ॥  
 जब सो प्रभंजन उर गृहँ जाई । तबहिं दीप विग्यान आई ॥  
 ग्रंथि न छूटि मिटा सो प्रकासा । बुद्धि बिकल भइ विषय बतासा ॥  
 इंद्रिन्ह सुरन्ह न ग्यान सोहाई । विषय भोग पर प्रीति सदाई ॥  
 विषय समीर बुद्धि कृत भोरी । तेहि विधि दीप ेवार बहोरी ॥

दो०—तत्र फिरि जीव विविधि विधि पावइ संसृति क्लेश ।

हरि माया अति दुस्तर तरि न जाइ विहगेस ॥११८(क)॥

कहत कठिन समुझत कठिन साधत कठिन विवेक ।

होइ घुनाच्छर न्याय जौं पुनि प्रत्यूह अनेक ॥११८(ख)॥

ग्यान पंथ कृपान कै धारा । परत स्वगेस होइ नहिं बारा ॥

जो निर्विघ्न पंथ निर्वहई । सो कैवल्य परम पद लहई ॥

वति दुर्लभ कैवल्य परम पद । संत पुरान निगम आगम बद् ॥

राम भजत सोइ मुकुति गोसाईं । अनइच्छित आवइ वरिआईं ॥

जिमि थल विनु जल रहिन सकाईं । कोटि भाँति कोउ करै उपाईं ॥

तथा मोच्छ सुख सुनु खगराईं । रहिन सकइ हरि भगति विहाईं ॥

वस विचारि हरि भगत सयाने । मुक्ति निरादर भगति लुभाने ॥

भगति करत विनु जतन प्रयासा । संसृति मूल अविद्या नामा ॥

भोजन करिअ वृषिति हित लागी । जिमि सो असन पचवै जठरागी ॥

असि हरि भगति सुगम सुखदाईं । को अस मूढ़ न जाहि सोहाईं ॥

दो०—सेवक सेव्य भाव विनु भव न तरिअ उरगारि ।

भजहु राम पद पंकज अस सिद्धांत विचारि ॥११९(क)॥

जो चेतन कहँ जड़ करइ जड़हि करइ चैतन्य ।

अस समर्थ रघुनायकहि भजहिं जीव ते धन्य ॥११९(ख)॥

कहेउँ ग्यान सिद्धांत बुझाईं । सुनहु भगति मनि कै प्रभुताईं ॥

राम भगति चिंतामनि सुंदर । वसइ गरुड़ जाके उर अंतर ॥

परम प्रकास रूप दिन राती । नहिं कलु चहिअ दिआ घृत वाती ॥

मोह दरिद्र निकट नहिं आवा । लोभ वात नहिं ताहि बुझावा ॥

प्रबल अविद्या तम मिटि जाई । हारहिं सकल सलभ समुदाई ॥  
 खल कामादि निकट नहिं जाहीं । नसइ भगति जाके उर माहीं ॥  
 गरल सुधासम अरि हित होई । तेहि मनि बिनु सुख पाव न कोई ॥  
 ब्यापहिं मानस रोग न भारी । जिन्ह के बस सब जीव दुखारी ॥  
 राम भगति मनि उर बस जाकें । दुख लवलेस न सपनेहुँ ताकें ॥  
 चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं । जे मनि लागि सुजतन कराहीं ॥  
 सो मनि जदपि प्रगट जग अहई । राम कृपा बिनु नहिं कोउ लहई ॥  
 सुगम उपाय पाइवे केरे । नर हतभाग्य देहिं भटभेरे ॥  
 पावन पर्वत बेद पुराना । राम कथा लचिराकर नाना ॥  
 भर्मी सज्जन सुमति कुदारी । ग्यान बिराग नयन उरगारी ॥  
 भाव सहित खोजइ जो प्रानी । पाव भगति मनि सब सुख खानी ॥  
 सोरें मन प्रभु अस विस्वासा । राम ते अधिक राम कर दासा ॥  
 राम सिंधु घन सज्जन धीरा । चंदन तरु हरि संत समीरा ॥  
 सब कर फल हरि भगति सुहाई । सो बिनु संत न काहूँ पाई ॥  
 अस बिचारि जोइ कर सतसंगा । राम भगति तेहि सुलभ बिहंगा ॥

दो०—ब्रह्म पयोनिधि मंदर ग्यान संत सुर आहिं ।

कथा सुधा मथि काढ़हिं भगति मधुरता जाहिं ॥१२०(क)॥

विरति चर्म असि ग्यान मद लोभ मोह रिपु मारि ।

जय पाइअ सो हरि भगति देखु खगेस विचारि ॥१२०(ख)॥

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ । जौं कृपाल मोहि ऊपर भाऊ ॥  
 नाथ मोहि निज सेवक जानी । सप्त प्रसन्न मम कहहु बखानी ॥  
 प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा । सब ते दुर्लभ कवन सरीरा ॥

बड़ दुख कवन कवन सुख भारी। सोउ संछेपहि कहहु विचारी ॥  
 संत असंत मरम तुम्ह जानहु। तिन्ह कर सहज सुभाव बखानहु  
 कवन पुन्य श्रुति विदित विसाला। कहहु कवन अघ परम कराला ॥  
 मानस रोग कहहु समझाई। तुम्ह सर्वग्य कृपा अधिकारि ॥  
 तात सुनहु सादर अति प्रीती। मैं संछेप कहउँ यह नीती ॥  
 नर तन सम नहि बचनिउ देही। जीव चराचर जाचत तेही ॥  
 नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी। ग्यान विराग भगति सुभदेनी ॥  
 सो तनु धरि हरि भजहि न जे नर। होहि निपय रत मंद मंद तर ॥  
 फाँच फिरिच बढलें ते लेहीं। कर ते डारि परस मनि देहीं ॥  
 नहि दरिद्र सम दुख जग माहीं। संत मिलन सम सुख जग नाही ॥  
 पर उपकार बचन मन काया। संत सहज सुभाउ खगराया ॥  
 संत सहहि दुख पर हित लागी। पर दुख हेतु असंत अभागी ॥  
 भूर्ज तरु सम संत कृपाला। पर हित निति सह निपति विसाला ॥  
 सन इन खल पर बंधन करई। खाल कढ़ाई निपति महि मरई ॥  
 खल विनु स्वारथ पर अपकारी। अहि मूपक डव मुनु उरगारी ॥  
 पर संपदा विनामि नमाहीं। जिमि ससि हति हिम उपल विलाहीं ॥  
 दुष्ट उदय जग आरति हेतू। जथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू ॥  
 संत उदय संतत सुखकारी। विस्व सुखद जिमि इंदु तमारी ॥  
 परम धर्म श्रुति विदित अहिमा। पर निदा सम अघ न गरीमा ॥  
 हर गुर निदक दादुर होई। जन्म सइस पाप तन मोई ॥  
 द्विज निदक घटु नरक भोग कर्मि। जग जनमड प्रायस मगीर धरि ॥  
 सुर श्रुति निदक जे अभिमानी। राँग्य नरक परहि ते प्राणी ॥

होहिं उलूक संत निंदा रत । मोह निसा प्रिय ग्यान भानु गत ॥  
 कै निंदा जे जड़ करहीं । ते चमगादुर होइ अवतरहीं ॥  
 खुनहु तात अब मानस रोगा । जिन्ह ते दुख पावहिं सब लोगा ॥  
 सोह सकल व्याधिन्ह कर मूला । तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु खला ॥  
 काम वात कफ लोभ अपारा । क्रोध पित्त नित छाती जारा ॥  
 प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई । उपजइ सन्यपात दुखदाई ॥  
 विषय मनोरथ दुर्गम नाना । ते सब खल नास को जाना ॥  
 भ्रमता दादु कंडु इरषाई । हरष विषाद गरह बहुताई ॥  
 पर सुख देखि जरनि सोइ छई । कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई ॥  
 अहंकार अति दुखद डमरुआ । दंभ कपट मद मान नेहरुआ ॥  
 वृत्ता उदरवृद्धि अति भारी । त्रिविधि ईपना तरुन तिजारी ॥  
 जुग विधि ज्वर मत्सर अबिबेका । कहँ लगि कहौं कुरोग अनेका ॥

दो०—एक व्याधि बस नर मरहिं ए असाधि बहु व्याधि ।

पीड़हिं संतत जीव कहँ सो किमि लहै समाधि ॥१२१(क)॥

नेम धर्म आचार तप ग्यान जग्य जप दान ।

भेषज पुनि कोटिन्ह नहिं रोग जाहिं हरिजान ॥१२१( )॥

एहि विधि सकल जीव जब रोगी । सोक हरष भय प्रीति वियोगी ॥  
 मानस रोग कलुकु मै भाए । हहिं सब कें लखि बिरलेन्ह पाए  
 जाने ते छीजहिं कलु पापी । नास न पावहिं जन परित्तापी ॥  
 विषय कूपथ्य पाइ अंकुरे । मुनिहु हृदयँ का नर वापुरे ॥  
 राम कृपाँ नासहिं सब रोगा । जौं एहि भाँति बनै संयोगा ॥  
 सद्गुर वैद वचन विस्वासा । संजम यह न विषय कै आसा ॥

रघुपति भगति मजीवन मूरी। अनूपान थद्दा मति पूरी ॥  
 एहि विधि भलेहिं सो रोग नसाहीं। नाहिं तजतन कोटि नहिं जाहीं ॥  
 जानिअ तव मन विरुज गोसाँई। जव उर वल विराग अधिकार्ई ॥  
 सुमति छुधा चाढ़इ नित नई। विषय आन दुर्वलता गई ॥  
 विमल ग्यान जल जव सो नहाई। तव रह राम भगति उर छाई ॥  
 सिव अज सुक सनकादिक नारद। जे मुनि ब्रह्म विचार विसारद ॥  
 सब कर मत खगनायक एहा। करिअ गम पद पंकज नेहा ॥  
 श्रुति पुरान सब ग्रंथ कहाहीं। रघुपति भगति विना सुख नाहीं ॥  
 कमठ पीठ जामहिं वरु वारा। बंध्या सुत वरु काहुहि मारा ॥  
 फूलहिं नभ वरु बहुविधि फूला। जीव न लह सुख हरि प्रतिकूला ॥  
 तृषा जाइ वरु मृगजल पाना। वरु जामहिं सस सीस विपाना ॥  
 अंधकारु वरु रविहि नमावै। राम विमुख न जीव सुख पावै ॥  
 हिम ते अनल प्रगट वरु होई। विमुख राम सुख पाव न कोई ॥

दो०—चारि मयें घृत होइ वरु सिकता ते वरु तेल ।

विनु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धांत अपेल ॥१२२(क)॥

मसकहिं करइ विरंचि प्रभु अजहि ममक ते हीन ।

अस विचारि तजि संसय रामहिं भजहिं प्रवीन ॥१२२(ख)॥

श्लोक—विनिश्चितं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे ।

हरिं नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं तरन्ति ते ॥१२२(ग)॥

कहेउँ नाथ हरि चरित अनूपा। ग्यान ममाम स्वमति अनुरूपा ॥

श्रुति मिट्ठांत इहइ उरगारी। गम भजिअ सब काज विसारी ॥

प्रभु रघुपति तजि सेइअ काही। मोहि से सठ पर ममता जाही ॥



तुम्ह विग्यानरूप नहिं माहा । नाथ कान्हि मो पर अति ेहा ॥  
 पूँछिहु राम कथा अति पावनि । सुक सनकादि संभु मन भावनि ॥  
 सत संगति दुर्लभ संसारा । निमिष दंड भरि एकरु वारा ॥  
 देखु गरुड निज हृदयँ चिचारी । मैं रघुवीर भजन अधिकारी ॥  
 सकुनाधम सब भाँति अपावन । प्रभु मोहि कोन्ह विदित जग पावन  
 दो०—आजु धन्य मैं धन्य अति जद्यपि सब त्रिधि हीन ।

निज जन जानि राम मोहि संत समागम दोन ॥१२३(क)॥

नाथ जथामति भाषेउँ राखेउँ नहिं कछु गोइ ।

चरित सिंधु रघुनाथक थाह कि पावइ कोइ ॥१२३(ख)॥

सुमिरि राम के गुन गन नाना । पुनि पुनि हरष भुसुंडिसुजाना ॥  
 सहिमा निगम नेति करि गाई । अतुलित बल प्रताप प्रभुताई ॥  
 सिव अज पूज्य चरन रघुराई । मो पर कृपा परम मृदुलाई ॥  
 अस सुभाउ कहुँ सुनउँ न देखउँ । केहि खगोस रघुपति सम लेखउँ ॥  
 साधक सिद्ध त्रिबुक्त उदासो । कवि काविइ कृतग्र्य संन्यासी ॥  
 जोगी स्वर सुतापस ग्यानो । धर्म निरत पंडित त्रिग्यानी ॥  
 तरहिं न चिनु सेएँ मम स्वामो । राम नमामि नमामि नमामो ॥  
 सरन गएँ मो से अव रासी । होहिं सुद्ध नमामि अविनासी ॥

दो०—जासु नाम भव भैवज हरन घोर त्रय सूल ।

सो कृपाल मोहि तो पर सदा रहउ अनुहूल ॥१२४(क)॥

सुनि भुसुंडि के वचन सुभ देखि राम पद नेह ।

चोलेउ प्रेम सहित गिरा गरुड विगत संदेह ॥१२४(ख)॥

मैं कृतकृत्य भयउँ तव बानी । सुनि रघुवीर भगति रस सानी ॥

राम चरन नूतन रति भई । माया जनित विपति सब गई ॥  
 मोह जलधि वोहित तुम्ह भए । मो कहँ नाथ विविध सुख दए ॥  
 मो पहिँ होइ न प्रति उपकारा । वंदउँ तव पद चारहिँ वारा ॥  
 पूरन काम राम अनुरागी । तुम्ह समतातन कोउ बड़भागी ॥  
 संत विटप सरिता गिरि धरनी । पर हित हेतु सबन्ह कै करनी ॥  
 संत हृदय नवनीत समाना । कहा कबिन्ह परि कहै न जाना ॥  
 निज परिताप द्रवइ नवनीता । पर दुख द्रवहिँ संत सुपुनीता ॥  
 जीवन जन्म सुफल मम भयऊ । तव प्रसाद संसय सब गयऊ ॥  
 जानेहु सदा मोहि निज किंकर । पुनि पुनि उमा कहइ विहंगवर ॥

दो०—तासु चरन सिरुनाइ करि प्रेम सहित मतिधीर ।

गयउ गरुड वैकुंठ तव हृदयँ राखि रघुवीर ॥१२५(क)॥

गिरिजा संत समागम सम न लाभ कछु आन ।

विनु हरि कृपान होइ सो गावहिँ वेद पुरान ॥१२५(ख)॥

कहेउँ परम पुनीत इतिहासा । सुनत श्रवन छूटहिँ भव पासा ॥  
 प्रनत कल्पतरु करुना पुंजा । उपजइ प्रीति राम पद कंजा ॥  
 मन क्रम बचन जनित अघ जाई । सुनहिँ जे कथा श्रवन मन लाई ॥  
 तीर्थाटन साधन समुदाई । जोग विराग ग्यान निपुनाई ॥  
 नाना कर्म धर्म व्रत दाना । मंजम दम जप तप मख नाना ॥  
 भूत दया द्विज गुरु सेवकाई । विद्या विनय विवेक बड़ाई ॥  
 जहँ लागि साधन वेद बखानी । सब कर फल हरि भगति भवानी ॥  
 सो रघुनाथ भगति श्रुति गाई । राम कृपाँ काहँ एक पाई ॥

दो०—शुनि दुर्लभ हरि भगति नर पावहिं विनहिं प्रयास ।

जे यह कथा निरंतर सुनहिं मानि विस्वास ॥१२६॥  
 सोइ सर्वग्य गुनी सोइ ग्याता । सोइ महि मंडित पंडित दाता ॥  
 धर्म परायन सोइ कुल वाता । राम चरन जा कर मन राता ॥  
 नीति निपुन सोइ परम सयाना । श्रुति सिद्धांत नीक तेहिं जाना ॥  
 सोइ कवि कोविद सोइ रनधीरा । जो छल छाडि भजइ रघुवीरा ॥  
 धन्य देस सो जहँ सुरसरी । धन्य नारि पतिव्रत अनुसरी ॥  
 धन्य सो भूपु नीति जो करई । धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई ॥  
 सो धन धन्य प्रथम गति जाकी । धन्य पुन्य रत मति सोइ पाकी ॥  
 धन्य घरी सोइ जव सतसंगा । धन्य जन्म द्विज भगति अभंगा ॥

दो०—सो कुल धन्य उमा सुनु जगत पूज्य सुपुनीत ।

श्रीरघुवीर परायन जेहिं नर उपज विनीत ॥१२७॥

अति अनुरूप कथा मैं भापी । जद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी ॥  
 तव मन प्रीति देखि अधिकाई । तव मैं रघुपति कथा सुनाई ॥  
 यह न कहिअ सठही हठसीलहि । जो मन लाइ न सुन हरि लीलहि  
 कहिअ न लोभिहि क्रोधिहि कासिहि । जो न भजइ सचराचर स्वामिहि ॥  
 द्विज द्रोहिहि न सुनाइअ कवहूँ । मुरपति सरिस होइ नृप जवहूँ ॥  
 राम कथा कै नेह अधिकारी । जिन्ह केंसत संगति अति प्यारी ॥  
 गुर पद प्रीति नीति रत जेई । द्विज सेवक अधिकारी तेई ॥  
 कहँ यह विक्षेप सुखदाई । जाहि प्रानप्रिय श्रीरघुराई ॥

दो०—राम चरन रति जो चह अथवा पद निर्वाण ।

भाव सहित सो यह कथा करउ श्रवन पुट पान ॥१२८॥

राम कथा गिरिजा में बरनी । कलि मरु ममनि मनोमल हरनी ॥  
 संसृति रोग सजीवन मूरी । राम कथा गावहिं श्रुति सरी ॥  
 एहि महँ रुचिर सप्त सोपाना । रघुपति भगति केर पंधाना ॥  
 अति हरि कृपा जाहि पर होई । पाउँ देइ एहिं मारग सोई ॥  
 मन कामना सिद्धि नर पावा । जे यह कथा कपट तजि गावा ॥  
 कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं । ते गोपद इव भवनिधि तरहीं ॥  
 सुनि सव कथा हृदय अति भाई । गिरिजा बोली गिरा सुहाई ॥  
 नाथ कृपाँ मम गत संदेहा । राम चरन उपजेउ नव नेहा ॥  
 दो०—मैं कृतकृत्य भइउँ अब तव प्रसाद विस्वेस ।

उपजी राम भगति दृढ़ चीते सकल कलेस ॥१२९॥

यह सुभ संभु उमा संवादा । सुख संपादन समन विपादा ॥  
 भव भंजन रंजन संदेहा । जन रंजन सजन प्रिय एहा ॥  
 राम उपासक जे जग माहीं । एहि सम प्रिय तिन्ह कैंकलु नाहीं ॥  
 रघुपति कृपाँ जथामति गावा । मैं यह पावन चरित सुहावा ॥  
 एहिं फलिकाल न माधन दूजा । जोग जग्य जप तप व्रत पूजा ॥  
 रामहि सुमिगिअ गाइअ रामहि । संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि ॥  
 जासु पतिन पावन बड़ धाना । गावहिं कवि श्रुति मंत पुगना ॥  
 ताहि भजहि मन तजि छुटिलार्त । राम भजें गति केहिं नहिं पाई ॥  
 छं०—पाई न केहिं गति पतित पावन राम भजि सुनु सठ मना ।

गनिका अजामिल व्याध गीध गजादि खल तारे घना ॥

धाभीर जमन किरात खस खपचादि अति अघरूप जे।  
 कहि नाय वारक तेपि पावन होहिं राम नमामि ते ॥ १ ॥  
 रघुवंस भूपन चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं।  
 कलि मल मनोमल धोइ बिन्दु श्रम राम धाम सिधावहीं ॥  
 सब पंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरै।

दाहन अविद्या पंच जनित विकार श्री रघुवर हरै ॥ २ ॥  
 सुंदर लुजान कृपा निधान अनाथ पर कर प्रीति जो।  
 सो एक रास अकाम हित निर्वाणप्रद सम आन को ॥  
 जाकी कृपा लवलेस ते मतिमंद तुलसीदासहूँ।  
 बायो परस विश्रामु राम समान प्रभु नाहीं कहूँ ॥ ३ ॥

श्लो०—सो राम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुवीर।

अस विचारि रघुवंस मनि हरहु विषम भव भीर ॥ १३०(क) ॥

कासिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रियजिमि दाम।

तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु सोहि राम ॥ १३०(ख) ॥

श्लो०—यत्पूर्व प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दुर्गमं  
 श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्त्यै तु रामायणम्।

अत्रा तद्रघुनाथनामनिरतं स्वान्तस्तमःशान्तये

भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम् ॥ १ ॥

पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं

भाषासोहमलापहं सुविमलं प्रेमाशुभुपूरं शुभम्।

श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये  
 ते संसारपतङ्गशोरक्रिणैर्दहन्ति नो मानवाः ॥ २ ॥

मासपारायण, तीसवाँ विश्राम ।

नवाह्नपारायण, नवाँ विश्राम ॥

इति श्रीमद्रामचरित्रमानसे सकलकलिकल्पविध्वंसने  
 ( सप्तमः सोपानः समाप्तः )

( उत्तरकाण्ड समाप्त )



## श्रीरामायणजीकी आरती



आरति श्रीरामायणजी की । कीरति कलित ललित सिय पीकी ॥  
गावत ब्रह्मादिक मुनि रद । वालमीक विग्यान बिसारद ॥  
शुक सनकादि सेष अरु सारद । वरनि पवनसुत कीरति नीकी ॥  
गावत वेद पुरान अष्टदस । छओ स्र सब ग्रंथन को रस ॥  
मुनि जन धन संतन को सरवस । सार अंस संमत सबही की ॥  
गावत संतत संभु भवानी । अरु घट संभव मुनि विग्यानी ॥  
व्यास आदि कविवर्ज वखानी । कागधुसुंडि गरुड के ही की ॥  
कलि हरनि विषय रस फीकी । सुभग सिंगार मुक्ति जुवती की ॥  
दलन रोग भव मूरि अमी की । तात मात सय विधि तुलसी की ॥



